Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

SAHITYA SANDESH

G. K. U. 1951

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113024

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनवरी १९६१

साहित्य सन्देश

अगले महीने में हम

प्रगति विशेषाङ्क

निकाल रहे हैं--इस महीने हम कोई अङ्क न निकालने का सूचना पहले ही छाप चुके हैं पर डाकखाने द्वारा आपत्ति उठाने पर जनवरी में हमें यह छोटा सा अङ्क निकालना पड़ा है।

साहित्यरत्न भण्डार, आगरा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

साहित्य-सन्देश की

नौ वर्षों की सजिल्द फाइलों का अनुपम संग्रह

साहित्य-सन्देश हिन्दी साहित्य में एक ऐसा मासिक पत्र है जो अपना विशेष स्थान रखता है इसके प्रत्येक अंक को पाठक बड़ी सावधानी के साथ संग्रह की दृष्टि से रखते हैं। क्योंकि इसमें—

मध्यमा, उत्तमा, विदुषी, सरस्वती, रत्न, भूषण, प्रभाकर-प्रवेशिका, भूषण, साहित्यालङ्कार, विद्यालङ्कार, इण्टर, बी० ए०, एम० ए० तथा शोध कर्त्ताओं के लिये उपयोगी तथा तथ्यपूर्ण सामग्री रहती है। इसके अतिरिक्त—

विभिन्न सम्पादकीय विचार-धारायें, पुस्तकों की आलोचना, पूरे वर्ष में प्रकाशित पुस्तकों की सूची भी इसमें आपको मिलेगी जिससे आपको साहित्य के प्रत्येक क्षेत्र की जानकारी देश के किसी भी भाग में घर बैठे हो सकेगी।

इन फाइलों के सम्बन्ध में हम यहाँ इतना और निवेदन कर दें कि प्रत्येक फाइल में अन्य विषय के अतिरिक्त ५०० पृष्ठ ठोस तथा उपादेय सामग्री के हैं इन्हें यदि पुस्तकाकार में प्रकाशित करें तो १००० पृष्ठ से ऊपर की पुस्तक बने जिसका मूल्य कम से कम १५) रुपये हो। परन्तु साहित्य-सन्देश अपने ग्राहकों से केवल ५) वार्षिक शुल्क लेता है। विषय-सूची छापकर, बसली की मोटी जिल्द तथा कवर चढ़ाकर भी हमने ५) रुपये में ही इन फाइलों को बिना लाभ की दृष्टि से दिया है। केवल १९५७-५८, ५८-५९ तथा ५९-६० की प्रत्येक फाइलों का मूल्य ६) है। पाँच वर्षों की या अधिक फाइलें एक साथ मँगाने पर अपने खर्चे पर हम भेजेंगे।

इन उपयोगी फाइलों के कुछ ही सैट हैं अतः आज अपने विद्यालय के पुस्तकालय तथा निजी ज्ञान-प्राप्त करने के लिये एक सैट का आर्डर भेजकर लाभ उठाइये।

साहित्य-सन्देश के विशेषांकों सहित फाइलों का विवरण

सन्	पाठ्य सामग्री की पृष्ठ संख्या	लेखों की संख्या	विशेषाङ्क जो सम्मिलित हैं	मूल्य	पूरी फाइल का मूल्य	डाकव्यय	[illegible]
१९५१-५२	५३२	१०५	आलोचनाङ्क	१)	५)	१)४५	[illegible]
१९५२-५३	५१८	११४	कहानी अङ्क	१)	५)	१)४२	[illegible]
१९५३-५४	५१८	१०९	आधुनिक काव्याङ्क	१)	५)	१)४२	६)४[illegible]
१९५४-५५	४८[illegible]	९६			५)	१)५१	६)५[illegible]
१९५५-५६	५०१	१०८	अन्तः प्रान्तीय नाटकाङ्क	१)५०	५)	[illegible]	६)४[illegible]
१९५६-५७	५०१	११८	आधुनिक उपन्यास अङ्क	१)	५)	१)६४	६)६[illegible]
१९५७-५८	५५६	१२८	(१) भाषा विज्ञान विशेषाङ्क	२)	६)	१)७१	७)७[illegible]
			(२) प्रगति विशेषाङ्क	१)			
१९५[illegible]	[illegible]५८	१३४	(१) सन्त-साहित्य विशेषाङ्क	१)५०	६)	१)७५	७)[illegible]
			(२) ऐतिहासिकउपन्यास अङ्क	२)			
१९५९-६०	५२०	१२४	(१) रीतिकाव्यालोचनाङ्क	२)	६)	१)७२	७)[illegible]
			(२) प्रगति अङ्क १९६०	१)			
					४८) +	१४)१२ कुल ६२)	

इस प्रकार पृथक-पृथक मंगाने पर कुल ६२) से भी ऊपर आपको देने पड़ेंगे परन्तु पूरा सैट मंगाने पर ये फा[illegible] रेल [illegible] कुल ४८) में ही आपको मिल सकेंगी। किन्हीं ५ वर्षों की फाइलें एक साथ मंगाने पर रेल भाड़ा तथा [illegible] खर्चा भी हम देंगे। अपने रेलवे स्टेशन का नाम अवश्य लिखें।

पता—साहित्य-सन्देश, साहित्य-कुञ्ज, आगरा

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113024

साहित्य सन्देश

सम्पादक : महेन्द्र सहकारी : मक्खनलाल शर्मा

भाग २२] आगरा—जनवरी १९६१ [अङ्क ७

हमारी विचार-धारा

हिन्दी काव्य-शास्त्र की एक नई कड़ी—

भरतमुनि के नाट्यशास्त्र को भारतीय काव्यशास्त्र का प्रथम व्यवस्थित ग्रन्थ माना जाता है। आगे के अनेक आचार्यों ने कोई नई कृति देने की अपेक्षा उसी ग्रन्थ की मान्यताओं का विश्लेषण किया। आज भी अनेक आचार्यों का नाम इस ग्रन्थ के व्याख्याकार के नाते अमर है। इस ग्रन्थ में जिन सिद्धान्तों का निर्धारण किया गया है उनके आधार भरतमुनि से पूर्व के साहित्य ग्रन्थ हैं। इसी प्रकार पाश्चात्य काव्याशास्त्र के प्राचीनतम आचार्य प्लेटो और अरस्तू ने भी अपने काव्यशास्त्रीय सिद्धान्तों के निर्धारण में अपने से पहले के कवियों और नाटककारों की कृतियों और दृष्टिकोणों को ध्यान में रखा था। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि साहित्यकार सिद्धान्तों का निर्धारण करने में अपने से पहले के कृती कलाकारों का ऋणी होता है और बहुत कुछ अंश में उनके बताए हुए मार्ग पर चलता है। इस मत को स्वीकार कर लेने पर यह आवश्यक हो जाता है कि किसी सम्प्रदाय, युग या विचारधारा को आधार मान कर रचना करने वालों की सिद्धान्त सरणि का निर्माण करने से पूर्व उनके सिद्धान्तों का निश्चय कर लिया जावे।

हिन्दी साहित्य की अभिवृद्धि चाहने वाले अब इस विषय में चिन्तित हो उठे हैं कि हिन्दी का अपना काव्य-शास्त्र होना चाहिए और इस विषय को इस पत्र के सम्पादकीय लेखों में कई बार उठाया गया है। इस ओर ध्यान देने के लिए दिल्ली विश्वविद्यालय ने अपनी शोध में इसे स्थान दिया है और डॉ० सुरेशचन्द्र गुप्त* ने सब से पहले आधुनिक कवियों की रचनाओं में से ही उन सिद्धान्तों का निचोड़ देने का प्रयत्न किया है जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से उनके काव्य-ग्रन्थों में निहित थे। हर्ष का विषय है कि वे मध्यकालीन कवियों के काव्य-सिद्धान्तों पर आगे शोध कार्य जारी रखे हुए हैं। हिन्दी में यह कार्य अपने ढङ्ग का अनोखा है।

हिन्दी आलोचना क्षेत्र में व्याख्यात्मक पक्ष को लेकर जितना काम हुआ है उसका चतुर्यांश भी सिद्धान्त पक्ष को लेकर नहीं हुआ है। इसके कारणों में सर्वप्रमुख तो यही माना जाता है कि सैद्धान्तिक-शोध में परिश्रम, मेधा और चिन्तन-मनन की अनिवार्य आवश्यकता होती है। अतः बहुत ही कम लोग इस ओर आकर्षित हो पाते हैं। डॉ० नगेन्द्र के निरीक्षण में इधर कई शोध-प्रबन्ध, सैद्धान्तिक शोधों से युक्त निकले हैं जिनमें से एक डॉ० सुरेशचन्द्र गुप्त का उपरोक्त ग्रन्थ भी है। इसके कुशल निर्देशन के लिए डॉ० नगेन्द्र बधाई के पात्र हैं।

इस ग्रन्थ में भारतेन्दु-युग से लेकर १९६० के प्रयोगवादी कवियों तक के काव्य सि[illegible] निश्चित आधार पर विवेचन हुआ है। मुख्यतः पुस्तक के तीन

* आधुनिक हिन्दी कवियों के काव्य-सिद्धान्त—ले०—डॉ० सुरेशचन्द्र गुप्त। प्रका०—हिन्दी-साहित्य-संसार, दिल्ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकरणों में विभाजित किया गया है। प्रथम प्रकरण में भारतेन्दु-युग के कवियों के काव्य-सिद्धान्तों का विवेचन इस कवि हेतु प्रयोजन, वर्ण्य-विषय, काव्यशिल्प तथा सिद्धान्तों का प्रयोग के आधार पर किया गया है। भारतेन्दुजी के सिद्धान्तों का विवेचन करते समय उस सम्बन्ध में अन्य आचार्यों के मत तो उद्धृत किए हैं, किन्तु सम्यक उदाहरणों के अभाव में विवेचन अपर्याप्त सा लगता है। यद्यपि कलेवर वृद्धि का भय लेखक की मजबूरी का कारण हो सकता है। सिद्धान्तों के निर्माण के उपरान्त उनका प्रयोग दिखाकर सैद्धान्तिक के साथ ही साथ व्याख्यात्मक आलोचना के लिए भी अवकाश निकाल लिया गया है। अतः इस ग्रन्थ को शुद्ध सैद्धान्तिक शोध-प्रबन्ध नहीं माना जा सकता। इस प्रकरण में इन्हीं आधारों पर भारतेन्दु-मण्डल के तथा अन्य कवियों के काव्य-सिद्धान्तों का भी विवेचन है। भाषानुवाद के अन्तर्गत ठा० जगमोहनसिंह का अनुवाद-सिद्धान्त तो उद्धृत किया है किन्तु अनुवाद के अन्य सिद्धान्तों के साथ बराबर रखकर विवेचन का अभाव है। काव्य के दोनों पक्षों पर समान दृष्टि रहने के कारण सन्तुलन बना रहा है।

द्वितीय प्रकरण में द्विवेदी-युग के कवियों को लिया गया है। जिसमें द्विवेदीजी, हरिऔध, रत्नाकर, गुप्तजी, शङ्कर, पूर्ण, रामनरेश त्रिपाठी, रामचरित उपाध्याय, लोचनप्रसाद पाण्डेय, कविरत्न और गोपालशरणसिंहजी को आधार बनाकर विवेचन और रचनाएं की गई हैं। प्रायः पिछले प्रकरण के समान ही आधारों पर निर्भर रहकर इन कवियों के काव्य-सिद्धान्त निर्धारित किए गए हैं। युग की परिस्थितियों और परम्परा का हल्का सा इङ्गित है—पृष्ठभूमि का महत्त्व प्रायः सर्वत्र अस्वीकृत हुआ है। सिद्धान्त पक्ष के विवेचन में तो इसका अभाव नहीं खटकता, किन्तु जहां इन सिद्धान्तों के प्रयोग का विवेचन है वहां कुछ न्यूनता सी लगती है। यद्यपि भारी परिश्रम, गहन विवेचन और विश्लेषण के द्वारा इस युग के मुख्य-मुख्य काव्य-सिद्धान्त सामने लाए गए हैं, किन्तु गुप्तजी जैसे कवि के विवेचन तक में देशभक्ति राष्ट्र-प्रेम आदि का सम्यक समावेश न होना अखरता है, वैसे तो राष्ट्रीयता भारतेन्दु-युग और द्विवेदी-युग दोनों का प्रेरणा स्रोत रहा है किन्तु गुप्तजी को 'राष्ट्रकवि' का पद इसी आधार पर प्राप्त हुआ है। काव्य-शिल्प सम्बन्धी स्थापनाएं गहन अध्ययन का परिणाम है जिनमें कतिपय मौलिक उद्भावनाएं भी हैं जो स्तुत्य हैं।

तीसरे प्रकरण में वर्तमान युग के कवियों के काव्य-सिद्धान्तों का विवेचन पांच उपविभागों में विभक्त है। जिन्हें राष्ट्रीय-सांस्कृतिक, छायावादी, वैयक्तिक, प्रगतिवादी और प्रयोगवादी संज्ञाएँ दी गई हैं। माखनलाल चतुर्वेदी, दिनकर आदि कवियों को आधार बनाकर राष्ट्रीय तथा सांस्कृतिक चेतना के काव्य सिद्धान्तों का विवेचन किया गया है। छायावादी कवियों ने चतुष्पदी को स्वीकृति दी है। वैयक्तिक कवियों में बच्चन, भगवतीचरण वर्मा, नरेन्द्र शर्मा, अञ्चल, सुमन, गिरिजाकुमार माथुर आदि को स्थान दिया गया है। प्रगतिवादी कवियों में गुप्तजी ने नरेन्द्र शर्मा, अञ्चल, सुमन, दिनकर और नागार्जुन आदि को माना है किन्तु विवेचन नरेन्द्र शर्मा, अञ्चल और सुमन को आधार मानकर एक साथ कर दिया गया है। इस कोटि के काव्य की न्यूनता के कारण ऐसा करना असमीचीन नहीं है। प्रयोगवादी कवियों में अज्ञेय, गिरिजाकुमार माथुर और धर्मवीर भारती को प्रतिनिधि मानकर प्रयोगवाद के आधारभूत सिद्धान्तों की पृष्ठभूमि में सम्बन्धित काव्याङ्गों के विषय में विवेचन किया गया है।

ग्रन्थ के प्रारम्भ में विषय-प्रवेश और अन्त में 'उपसंहार' देकर परम्परा का अनुगमन किया गया है। ग्रन्थ में यथेष्ट सामग्री ऐसी है जो हिन्दी में पहली बार इस ढङ्ग से प्रस्तुत की गई और नवीन सिद्धान्तों की विधायिका के रूप में स्वीकार की गई है। हिन्दी में नवीन काव्य-सिद्धान्तों के निर्माण में यह ग्रन्थ सदैव मूल्यवान देन समझा जायगा—ऐसी आशा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमेरिका के प्रकाशन आँकड़े

अमेरिका में प्रायः सभी विषयों की पुस्तकों के प्रकाशन में आशातीत वृद्धि हुई है। इससे पूर्व इतनी अधिक संख्या में कभी भी पुस्तकों का प्रकाशन एवं वितरण नहीं हुआ है।

८०० बड़े प्रकाशक

लोगों की आम धारणा के कारण वहां लगभग ८०० प्रकाशक अत्यधिक संख्या में पुस्तकें प्रकाशित करते हैं। किन्तु इस संस्या में और ४१८ प्रकाशक सम्मिलित किये जाने चाहिए, जिनमें विद्वत्तापूर्ण पुस्तकें प्रकाशित करने वाले विश्व विद्यालयों के प्रकाशक, विभिन्न धार्मिक संस्थाएँ, टेक्निकल सोसाइटियाँ तथा अन्य परोपकारी सहकारी संस्थाएं सम्मिलित हैं।

१ लाख ५० हजार पुस्तकें

मोटे तौर पर अमेरिका के प्रकाशकों द्वारा बिक्री के लिए विभिन्न विषयों की १,५०,००० पुस्तकें प्रकाशित की जाती हैं। १९५८ में पहले दल के उपरोक्त प्रकाशकों में से लगभग ३८२ प्रकाशकों ने ५ अथवा इससे अधिक नयी पुस्तकें या नये संस्करण प्रकाशित किये। इन प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित की गयी १३,४६६ नयी पुस्तकें १९५९ में प्रकाशित हुईं १४,८७६ नयी पुस्तकों के ९० प्रतिशत के बराबर हैं।

१९५९ में जो नयी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, उनमें संख्या की दृष्टि से कथा-कहानियों की पुस्तकों का पहला स्थान, बच्चों की पुस्तकों का दूसरा स्थान और धार्मिक पुस्तकों का तीसरा स्थान है।

१९५९ में जो पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, उनमें ७७५ ऐसी पुस्तकें हैं, जो दूसरी भाषाओं की पुस्तकों का अनुवाद हैं। फ्रांसीसी भाषा से अनूदित पुस्तकों की संख्या २४६ है, जिनमें से ६७ कथा-कहानियों की और ५४ धार्मिक पुस्तकें हैं।

दूसरी पुस्तकें ऐसी हैं, जो जापानी, चीनी, हिब्रू, बंगाली तथा संस्कृत का अनुवाद हैं।

रिकार्ड बिक्री

पुस्तक प्रकाशन उद्योग के आँकड़ों विषयक वार्षिक पर्यवेक्षण के अनुसार, १९५९ में पुस्तकों की जितनी अधिक संख्या में बिक्री हुई है, उतनी अधिक संख्या में उनकी पहले कभी बिक्री नहीं हुई।

पुस्तक-वितरण के ढंग

पुस्तकों के वितरण का कार्य अनेक प्रकार से सम्पन्न होता है। यह बात पुस्तकों की अपनी विशेषताओं तथा उनके मूल्य आदि पर निर्भर करती है। तथाकथित 'ट्रेड बुक्स' मुख्यतः विभिन्न वस्तुओं की बड़ी-बड़ी दूकानों के पुस्तक-विभागों के खुदरा पुस्तक स्टोरों द्वारा बेचे जाने के लिए प्रकाशित की जाती हैं। कुछ 'ट्रेड बुक्स' डाक द्वारा सीधे ग्राहकों को बेच दी जाती हैं। इसके अलावा बुक क्लबों, स्कूलों, तथा पुस्तकालयों द्वारा भी ऐसी पुस्तकें बेची जाती हैं।

उपन्यास एवं कथा कहानियों के क्षेत्र में लेओन उरिस के 'एक्सोडस' नामक उपन्यास की सबसे अधिक बिक्री हुई है। १९५८ में यह उपन्यास प्रकाशित किया गया था। उसी वर्ष उसकी ६०,००० प्रतियाँ बिक गई थीं। १९५९ में उसके प्रथम संस्करण में से ३,५२,००० पुस्तकें बिकीं। १९५९ के अक्टूबर में 'एक्सोडस' का कागज की जिल्द वाला संस्करण प्रकाशित हुआ और वर्ष के अन्त तक उसकी २०,००,००० प्रतियाँ बिक चुकी थीं।

गत ३ वर्षों में इस सम्बन्ध में जो सबसे उल्लेखनीय प्रगति हुई, वह यह है कि अधिक मूल्य की कागज की जिल्द वाली पुस्तकों के नये संस्करणों के प्रकाशन में निरन्तर वृद्धि होती रही है। वे पुस्तकें मुख्यतः पुस्तकों की दूकानों द्वारा बेची जाती हैं। अत्यधिक संख्या में बेची जाने वाली कागज की जिल्द वाली पुस्तकों की तुलना में उनका आकार बड़ा होता है और उन्हें अच्छे कागजों पर प्रकाशित किया जाता है। वे मुख्यतः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसी महत्वपूर्ण पुस्तकें हैं, जिन्हें अधिक विद्वान लोग ही खरीदते हैं।

नये प्रतिभासम्पन्न लेखकों की खोज

अमेरिका में पुस्तकें प्रकाशित कराने के लिए नये-नये लेखकों तथा नये विचार रखने वाले प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्तियों की खोज रहती है। वहाँ नये लेखकों को प्रोत्साहन देने के लिए उनकी रचनाएँ प्रकाशित की जाती हैं।

अमेरिका में लेखकों को ट्रेड बुक्स पर १० प्रतिशत से १५ प्रतिशत तक रायल्टी दी जाती है। यह पुस्तक की विशेषता तथा बिकी हुई पुस्तकों की संख्या पर निर्भर करती है।

यद्यपि अमेरिका में सर्वप्रथम १३० वर्ष पूर्व मोटे कागज की जिल्द वाली पुस्तकों का प्रकाशन हुआ था, तथापि १९४० तक इस सम्बन्ध में वास्तविक क्रान्ति प्रारम्भ नहीं हुई थी। उस समय ऐसी पुस्तकें अखबार बेचने के अड्डों तथा औषधियों की दूकानों में बिक्री के लिए रखी जाने लगी थीं।

बच्चों की पुस्तकें

लगभग ८५० पत्र-पत्रिका विक्रेताओं ने कागज की जिल्दों वाली पुस्तकों की बिक्री की। १९५९ में १४ प्रकाशकों द्वारा लगभग १५७५ नयी पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। बच्चों की पुस्तकें भी भारी संख्या में प्रकाशित हुई हैं।

अधिक मूल्य (१ डालर तथा उससे अधिक) की बच्चों की पुस्तकें मुख्यतः पुस्तक-विक्रेताओं, बच्चों के १७ बुक-क्लबों, स्कूलों तथा पुस्तकालयों द्वारा बेची जाती हैं। १ डालर से अधिक मूल्य की बच्चों की पुस्तकों की सबसे अधिक खपत पुस्तकालयों में होती है। ऐसी लगभग ९५ प्रतिशत पुस्तकें पुस्तकालयों द्वारा खरीदी जाती हैं।

पुस्तकालय

आज अमेरिका में १७,००० से अधिक पुस्तकालय हैं। 'सार्वजनिक कोषों' तथा सहायता राशियों से उनका सञ्चालन होता है। पाठक, छात्र तथा अनुसन्धानकर्ता सभी उनका उपयोग कर सकते हैं। पुस्तकालयों द्वारा सबसे अधिक पुस्तकें खरीदी जाती हैं। जो पाठक पुस्तकालयों से पढ़ने के लिए पुस्तकें ले जाते हैं, उन्हें इसके लिए किसी प्रकार का शुल्क अदा नहीं करना पड़ता है।

माध्यमिक स्कूलों, कालेजों तथा विश्वविद्यालयों में छात्रों की संख्या में बहुत अधिक वृद्धि हो जाने के कारण पाठ्यपुस्तकों के प्रकाशन में भी बहुत अधिक वृद्धि हो गयी है। १९४५ के बाद से प्रारम्भिक एवं माध्यमिक स्कूलों की पुस्तकों की बिक्री तीन-गुनी तथा कालेजों की पाठ्यपुस्तकों की बिक्री दुगुनी से भी अधिक बढ़ गयी है। १९५९ की पतझड़ के समय प्रारम्भिक एवं माध्यमिक स्कूलों, कालेजों तथा विश्वविद्यालयों में छात्रों की संख्या ४,६२,७३,००० थी। आशा है १९७० तक प्रारम्भिक स्कूलों की संख्या में २५ प्रतिशत, माध्यमिक स्कूलों की संख्या में ५० प्रतिशत और कालेजों के छात्रों की संख्या में लगभग १०० प्रतिशत की वृद्धि हो जायगी।

पाठ्यपुस्तकों का प्रकाशन

लगभग १६० प्रकाशक आधुनिक पाठ्यपुस्तकों का प्रकाशन करते हैं। आज बड़ी सुन्दर जिल्द वाली पाठ्यपुस्तकें प्रकाशित की जाती हैं। उनकी कोटि में निरन्तर सुधार होता रहा है। प्रकाशकों ने नयी पाठ्यपुस्तकों के प्रकाशन के लिए भारी मात्रा में पूंजी लगा रखी है।

'पुस्तक-क्लब'

१९५९ में लगभग ७०,००,००० लोगों ने १०० से अधिक बुक क्लबों के द्वारा अपनी पुस्तकें खरीदी हैं। आसानी, मूल्य में बचत, आदि के कारण कुछ पाठक बुक क्लबों के द्वारा अपनी पुस्तकें खरीदना अधिक पसन्द करते हैं। आम तौर पर सदस्य लोग वर्ष में ४ से ६ पुस्तकें अवश्य खरीद लेते हैं। ऐसा करने पर उन्हें कुछ रियायत मिल जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महा निबन्ध

ब्रजलोक साहित्य का अध्ययन— डा० सत्येन्द्र १०.००

अष्टछाप काव्य का सांस्कृतिक मूल्याङ्कन— डा० मायारानी टण्डन २५.००

आधुनिक हिन्दी कवियों के काव्य सिद्धान्त— डा० सुरेशचन्द्र गुप्त २५.००

उपन्यासकार वृन्दावनलाल वर्मा— डा० शशिभूषण सिंघल १०.००

हिन्दी काव्य में शृङ्गार परम्परा और महाकवि बिहारी—डा० गणपतिचन्द्र गुप्त १०.००

ब्रह्मसूत्रों के वैष्णव भाष्यों का तुलनात्मक अध्ययन—डा० रामकृष्ण आचार्य १०.००

गद्यकार बालमुकुन्द गुप्त— डा० नत्थनसिंह १२.५०

कामायनी में काव्य संस्कृति और दर्शन— डा० द्वारिकाप्रसाद १०.००

हिन्दी गद्य के निर्माता बालकृष्ण भट्ट— डा० राजेन्द्र शर्मा १०.००

हिन्दी नीतिकाव्य— डा० भोलानाथ तिवारी १०.००

कृष्णकाव्य में भ्रमरगीत—डा. श्यामसुन्दरलाल १०.००

ब्रजभाषा बनाम खड़ीबोली— डा. कपिलदेवसिंह १०.००

मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य का लोकतात्विक अध्ययन—डा० सत्येन्द्र १०.००

मैथिलीशरण गुप्त : कवि और भारतीय संस्कृति के आख्याता—डा० उमाकान्त १५.००

मैथिलीशरण गुप्त व्यक्ति और काव्य— डा० कमलाकान्त पाठक २५.००

सूर पूर्व ब्रजभाषा और उसका साहित्य— डा० शिवप्रसादसिंह १२.५०

श्रीधर पाठक तथा हिन्दी का पूर्व स्वच्छन्दतावादी काव्य—डा० रामचन्द्र मिश्र १२.५०

हिन्दी के आधुनिक महाकाव्य— डा० गोविन्दराम शर्मा १२.५०

राजस्थानी कहावतें : एक अध्ययन— डा० कन्हैयालाल सहल ८.५०

आचार्य शुक्ल के समीक्षा सिद्धान्त— डा. रामलालसिंह १२.५०

आधुनिक हिन्दी कविता में प्रेम और सौन्दर्य— डा. रामेश्वरलाल खण्डेलवाल १२.५०

हिन्दी रीति परम्परा के प्रमुख आचार्य— डा० सत्यदेव चौधरी १८.००

आधुनिक हिन्दी कथासाहित्य और मनोविज्ञान— डा. देवराज उपाध्याय १०.००

हिन्दी कहानियों की शिल्प विधि का विकास— डा. लक्ष्मीनारायणलाल १०.००

घनानन्द और स्वच्छन्द काव्यधारा— डा. मनोहरलाल गौड़ ८.००

हिन्दी साहित्य में हास्यरस—डा. बरसानेलाल १०.००

सूर की भाषा— प्रेमनरायण टण्डन २०.००

हिन्दी उपन्यास में कथा-शिल्प का विकास— प्रतापनारायण टण्डन १२.५०

हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास— डा. दशरथ ओझा ९.००

प्रसाद का काव्य— डा. प्रेमशङ्कर १०.००

मध्यकालीन हि. कवियित्रियाँ—डा. सावित्री सिन्हा ८.००

रीतिकालीन कविता : शृङ्गार रस विवेचन— डा. राजेश्वरप्रसाद ६.५०

सूर की काव्यकला— डा. मनमोहन गौतम १०.००

हिन्दी एकाङ्की उद्भव और विकास— डा. रामचरण महेन्द्र १२.५०

राधा बल्लभ सम्प्रदाय : सिद्धान्त और साहित्य— डॉ. विजयेन्द्र स्नातक १८.००

हिन्दी नाटक साहित्य का इतिहास— डॉ. सोमनाथ गुप्त ६.००

प्राप्ति-स्थान—साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा।

CC-0. In Public Domain.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी काव्य में निर्गुण सम्प्रदाय — डॉ. पीताम्बर बड़थ्वाल ८.००

राम भक्ति में रसिक सम्प्रदाय — डॉ. भगवतीशरणसिंह १५.००

हिन्दी साहित्य — डॉ. भोलानाथ ८.००

आधुनिक हिन्दी साहित्य — डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय ६.००

आधुनिक हिन्दी साहित्य की भूमिका — ,, ८.००

सूरदास — डॉ. ब्रजेश्वर वर्मा ८.००

तुलसीदास — डॉ. माताप्रसाद गुप्त ८.००

आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास — डॉ. श्रीकृष्णलाल ६.००

भोजपुरी भाषा और साहित्य — डॉ. उदयनारायण तिवारी १३.५०

खड़ीबोली का आन्दोलन — डॉ. शितिकण्ठ मिश्र ७.००

सूर और उनका साहित्य — डॉ. हरवंशलाल १०.००

हिन्दी साहित्य में भ्रमरगीत और उसकी परम्परा — डॉ. स्नेहलता श्रीवास्तव १२.००

कबीर की विचारधारा — डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत ७.५०

हिन्दी साहित्य में विविध वाद — डॉ. प्रेमनरायण शुक्ल ६.००

बीसवीं शताब्दी के महाकाव्य डॉ. प्रतिपालसिंह ८.५०

आचार्य भिखारीदास — डॉ. नारायनदास खन्ना १०.००

आधुनिक हिन्दी काव्य में नारी भावना — डॉ. शैल ७.००

समस्यामूलक उपन्यासकार प्रेमचन्द — डॉ. महेन्द्र भटनागर ५.००

अकबरी दरबार के हिन्दी कवि — डॉ. सरयूप्रसाद अग्रवाल ६.००

तुलसीदास की भाषा — डॉ. देवकीनन्दन श्रीवास्तव १०.००

आधुनिक हिन्दी काव्य में छन्द योजना — डॉ. पुत्तूलाल १२.५०

महावीरप्रसाद द्विवेदी और उनका युग — डॉ. उदयभानुसिंह १०.००

सूर की भाषा (थीसिस) — डा. प्रेमनारायण टंडन २०.००

आचार्य केशवदास — डॉ. हीरालाल दीक्षित ६.००

हिन्दी काव्य शास्त्र का इतिहास — डॉ. भागीरथ मिश्र १२.००

जायसी के परवर्ती : हिन्दी सूफी कवि और काव्य — डॉ. सरला शुक्ल १२.००

चन्दवरदाई और उनका काव्य — डॉ. विपिनविहारी त्रिवेदी ६.००

अष्टछाप और वल्लभ सम्प्रदाय — दीनदयालु गुप्त २०.००

प्रकृति और काव्य — डॉ. रघुवंश ७.००

तुलसीदास और उनका युग — डॉ. राजपति दीक्षित ८.००

हिन्दी साहित्य पर संस्कृत साहित्य का प्रभाव — डॉ० सरनामसिंह ५.००

रामकथा (उत्पत्ति का विकास) — डॉ. कामिल बुल्के ८.००

आधुनिक हिन्दी काव्य में निराशावाद — डॉ. शम्भुनाथ पाण्डेय ८.००

हिन्दी काव्य में आंग्ल प्रभाव — डॉ. रवीन्द्रसहाय ६.००

हिन्दी काव्य रूपों के मूल स्रोत और उनका विकास — डॉ. शकुन्तला दुबे १०.००

हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप और विकास — डॉ. शम्भूनाथसिंह १२.००

आलोचना : इतिहास तथा सिद्धान्त — डॉ. एस० पी० खत्री १२.००

भारतीय प्रेमाख्यानकाव्य — डॉ. हरिकांत श्रीवास्तव १०.००

हिन्दी वीरकाव्य — डॉ. टीकमसिंह तोमर १२.००

हिन्दी गद्यकाव्य — डॉ पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश' ८.००

हिन्दी अलङ्कार साहित्य — डॉ. ओमप्रकाश ६.००

हिन्दी और बङ्गाली वैष्णव कवि — डॉ. रत्नकुमारी १०.००

अपभ्रंश साहित्य — डॉ. हरिवंश कोछड़ ८.००

हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास — डॉ. रामकुमार वर्मा १०.००

सूफीमत और हिन्दी साहित्य — डॉ. विमलकुमार जैन ८.००

भारतीय साधना और सूर साहित्य — डॉ. मुन्शीराम शर्मा ८.००

प्राप्ति-स्थान — साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन—
डॉ. जगन्नाथप्रसाद शर्मा ५.५०

हिन्दी काव्य में प्रकृति चित्रण—
डॉ. किरणकुमारी गुप्त १०.००

हिन्दी कविता में युगान्तर— डॉ. सुधीन्द्र ६.००

रीतिकाव्य की भूमिका तथा देव और उनकी कविता—
डॉ. नगेन्द्र १०.००

भोजपुरी लोकगाथा— डॉ. सत्यव्रत सिन्हा ८.००

हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्य—डॉ. कमल कुलश्रेष्ठ ७.५०

तुलसी दर्शन— डॉ. बलदेवप्रसाद मिश्र ५.००

ब्रजभाषा— डॉ. धीरेन्द्र वर्मा ६.००

ध्वनि सम्प्रदाय और उसके सिद्धान्त—
डॉ. भोलाशङ्कर व्यास ८.००

सन्त कवि दरिया : अनुशीलन - डॉ. धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी

सूफी महाकवि जायसी— डॉ. जयदेव कुलश्रेष्ठ ६.००

ग्रामोद्योग और उनकी शब्दावली—
डॉ. हरिहरप्रसाद गुप्त ८.००

हिन्दी आलोचना : उद्भव और विकास—
डॉ. भगवतस्वरूप मिश्र १२.००

रत्नाकर : उनकी प्रतिभा, कला—
डॉ. विश्वम्भरनाथ भट्ट ६.००

हिन्दी नाटक साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन—
डॉ. देवपाल खन्ना १२.००

सिद्ध साहित्य— डॉ. धर्मवीर भारती १०.००

हिन्दी कहानियों का विवेचनात्मक अध्ययन—
डॉ. ब्रह्मदत्त शर्मा ८.००

पृथ्वीराज रासो की भाषा— डॉ. नामवरसिंह ६.००

रीतिकालीन कवियों की प्रेम व्यञ्जना—
डॉ. बचनसिंह ८.००

हिन्दी गद्य के विविध साहित्य रूपों का उद्भव और विकास— डॉ. बलवन्त कोतमिरे ६.५०

भक्ति का विकास (डी० लिट०)—
डॉ. मुन्शीराम शर्मा १०.००

हिन्दी को मराठी सन्तों की देन— डॉ. विनयमोहन शर्मा

भारतेन्दुकालीन नाटक साहित्य—
डॉ. गोपीनाथ तिवारी ८.००

प्रेमचन्द : एक अध्ययन— डॉ. राजेश्वर गुरु १२.००

आलोचना

कहानी दर्शन— भालचन्द्र गोस्वामी १०.००

मानसमाधुरी— बलदेवप्रसाद मिश्र ७.००

भारतीय काव्यांग— सत्यदेव चोधरी ७.००

प्रसाद साहित्य कोष— डॉ हरदेव बाहरी ६.००

भारतेन्दु का नाट्य साहित्य—डॉ. वीरेन्द्रकुमार ५.००

भारतीय साहित्य शास्त्र (दो भाग)—
डॉ. बल्देव उपाध्याय १८.००

कामायनी-सौन्दर्य— डॉ. फतेहसिंह ४.००

लोक साहित्य की भूमिका—डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय ७.००

भाषा अध्ययन के आधार—डा. प्रेमनरायन टण्डन ७.५०

सूरसाहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन—,, ५.००

सन्देश रासक—हजारीप्रसाद द्विवेदी तथा त्रिपाठी ८.००

हिन्दी साहित्य : उद्भव और विकास—
डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी ७.००

आधुनिक काव्यधारा— डॉ. केशरी नारायण ४.५०

पाणिनीकालीन भारतवर्ष—
डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल १०.००

अभिधान अनुशीलन— डॉ. विद्याभूषण 'विभु' १०.००

हिन्दी काव्य में रहस्यात्मक प्रवृत्तियाँ—
डॉ. ब्रजमोहन गुप्त ४.००

अष्टछाप काव्य का सांस्कृतिक अध्ययन (संक्षिप्त)—
डा० मायारानी टण्डन ८.००

हिन्दी साहित्य का इतिहास— रामचन्द्र शुक्ल १०.००

गोस्वामी तुलसीदास— ,, २.००

जायसी ग्रंथावली— ,, ५.००

सूरदास— ,, ३.५०

त्रिवेणी— ,, २.५०

रस मीमांसा— ,, ६.००

चिन्तामणि भाग १ ,, ५.००

,, २ ,, ३.५०

भ्रमर गीत-सार— ,, ३.५०

साहित्यालोचन— श्यामसुन्दर दास ५.५०

भाषा-विज्ञान— ,, ५.००

हिन्दी भाषा— ,, २.००

प्राप्ति-स्थान—साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्य—	श्यामसुन्दरदास	३.५०
रूपक रहस्य—	"	३.००
भाषा रहस्य—	"	५.५०
कबीर ग्रन्थावली—	"	५.००
गोस्वामी तुलसीदास—	"	४.००
संक्षिप्त पद्मावत—	"	३.५०
काव्य के रूप—	बाबू गुलाबराय	५.००
सिद्धान्त और अध्ययन—	"	६.००
प्रसादजी की कला	"	५.००
हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास	"	३.५०
अध्ययन और आस्वाद—	"	७.५०
हिन्दी काव्य विमर्श—	"	४.००
आलोचक रामचन्द्र शुक्ल—	"	६.५०
साहित्य और समीक्षा—	"	४.००
भारतीय संस्कृति की रूपरेखा—	"	४.००
मेरे निबन्ध—	"	५.००
प्रबन्ध प्रभाकर—	"	५.२५
मेरी असफलताएँ	"	३.००
हिन्दी के गद्य लेखक और प्रमुख शैलीकार		२.५०
रहस्यवाद और हिन्दी कविता—	"	४.००
हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास	"	१.२५
आधुनिक साहित्य—	नन्ददुलारे वाजपेयी	७.००
जयशङ्कर प्रसाद—	"	४.००
हिन्दी साहित्य : बीसवीं शताब्दी	"	५.००
महाकवि सूरदास	"	४.००
नया साहित्य : नए प्रश्न	"	६.००
प्रेमचन्द : साहित्यिक विवेचन	"	२.१२
सन्त धारा—	"	४.००
सूरसागर भाग १	"	१०.००
" भाग २	"	१०.००
मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य का-लोक तात्विक अध्ययन—	डा० सत्येन्द्र	१०.००
ब्रजलोक साहित्य का अध्ययन—	"	१०.००
हिन्दी एकांकी	"	२.५०
गुप्तजी की कला	"	३.००
कला कल्पना और साहित्य	डा. सत्येन्द्र	५.००
मृगनयनी में कला और कृतित्व—	"	२.२५
प्रेमचन्द : उनकी कहानी कला	"	३.००
सूर की झाँकी—	"	६.००
साहित्य की झाँकी—	"	६.७५
ब्रजलोक संस्कृति—	"	४.००
लोक साहित्य प्रवेश—	"	६.००
मध्यकालीन धर्म साधना—	हजारीप्रसाद द्विवेदी	३.५०
विचार और वितर्क—	"	३.५०
संक्षिप्त पृथ्वीराज रासो—	"	४.००
नाम सम्प्रदाय—	"	३.५०
मेघदूत : एक पुरानी कहानी	"	३.००
विचार प्रवाह	"	५.००
सन्देश रासक	"	१०.००
साहित्य का साथी—	"	१.५०
हिन्दी साहित्य का आदिकाल	"	३.२५
प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद	"	३.००
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और-हिन्दी आलोचना—	डा० रामविलास शर्मा	५.००
लोक जीवन और साहित्य—	"	३.५०
विराम चिह्न	"	६.००
प्रगतिशील साहित्य की समस्याएँ	"	३.५०
भारतेन्दु-युग	"	३.००
निराला	"	३.००
सन् सत्तावन की राज्यक्रांति	"	१०.००
मानव सभ्यता का विकास	"	५.००
काव्य, कला और शास्त्र—	डा० रांगेय राघव	३.००
काव्य, यथार्थ और प्रगति	"	३.००
समीक्षा और आदर्श	"	३.००
महाकाव्य विवेचन	"	३.००
हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ—	जयकिशनप्रसाद	६.००
हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल	"	३.७५
महादेवी का वेदना भाव	"	३.५०
केशवदास (आलोचनात्मक अध्ययन)	"	२.५०
आधुनिक हिन्दी कविता : प्रमुखवाद	"	२.५०

प्राप्ति-स्थान—साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समीक्षा के सिद्धान्त	डा० सत्येन्द्र	३.५०
देव और उनकी कविता	डा० नगेन्द्र	६.५०
आधुनिक हिन्दी नाटक	"	२.५०
भारतीय काव्य शास्त्र की परम्परा	"	१६.००
भारतीय काव्य शास्त्र की भूमिका	"	१०.००
साकेत : एक अध्ययन	"	४.००
सुमित्रानन्दन पन्त	"	३.५०
काव्य में उदात्त तत्त्व	"	३.५०
भारतीय नाट्य साहित्य	"	१२.००
आधुनिक हिन्दी कविता की–मुख्य प्रवृत्तियाँ	"	४.००
विचार और विवेचन	"	४.५०
विचार और अनुभूति	"	४.५०
विचार और विश्लेषण	"	५.५०
सियारामशरण गुप्त	"	५.५०
अरस्तू का काव्य शास्त्र	"	५.००
हिन्दी वक्रोक्तिजीवित	"	१६.००
हिन्दी काव्यालङ्कार सूत्र	"	१०.००
कबीर—	हजारीप्रसाद द्विवेदी	५.००
बाणभट्ट की आत्मकथा	"	५.००
सूर साहित्य	"	३.००
हिन्दी साहित्य की भूमिका	"	४.५०
निबन्ध संग्रह	"	५.००
हिन्दी साहित्य : उद्भव और विकास	"	७.००
अशोक के फूल	"	३.००
साहित्य का मर्म	"	१.००
कल्पलता	"	२.५०
हिन्दी साहित्य	"	५.५०
चिन्तामणि दर्शन —	डा. हरिहरनाथ टण्डन	३.००
पृथ्वीराज रासो : पद्मावती—	"	१.५०
भ्रमर गीत-सार (व्याख्या विवेचन)	डा. नरेन्द्रदेवसिंह	५.००
पालि कथा प्रकाश—	"	३.००
काव्य-शास्त्र—	डा. शम्भुनाथ पाण्डेय	३.००
रस अलङ्कार पिङ्गल—	"	२.५०
अलङ्कार प्रबोध—	"	१.००
आधुनिक हिन्दी काव्य में निराशावाद—	शम्भूनाथ पाण्डेय	८.००
चन्द्रगुप्त (आलोचनात्मक अध्ययन)—	"	२.५०
कवि प्रसाद—	" "	२.५०
गद्यकार प्रसाद—	" "	२.५०
हिन्दी और उसके कलाकार–	फूलचन्द 'सारङ्ग'	६.००
शैलियाँ—	"	१.५०
हमारे कवि और लेखक—	"	२.००
जयशङ्करप्रसाद और 'ध्रुवस्वामिनी'–	"	१.५०
सुदामाचरित (मूल, आलोचना व टीका)	"	०.५०
साकेत की टीका—	"	५.००
कवितावली (मूल, टीका व आलोचना)	"	१.२५
भाषा विज्ञान तत्त्व—	प्रभुनारायण शर्मा	१.५०
साहित्यालोचन सिद्धान्त	"	१.५०
हिन्दी आलोचना के भिन्न भिन्न स्रोत	"	१.२५
हिन्दी गद्य और उनकी शाखाएँ	"	१.५०
आधुनिक कवि हृदय	"	१.२५
युगद्रष्टा कबीर—	तारकनाथ बाली	२.५०
महादेवी वर्मा	"	२.५०
कबीर साखी-सार	"	३.५०
सुमित्रानन्दन पंत और 'आधुनिक कवि'	"	२.५०
सुमित्रानन्दन पन्त	"	१.५०
सुमित्रानन्दन पन्त और उत्तरा–	तारकनाथ बाली एम. ए.	३.००
महादेवी वर्मा और 'आधुनिक कवि'	"	२.५०
जयशङ्कर प्रसाद और 'अजातशत्रु'	"	२.५०
रामधारीसिंह 'दिनकर' और 'कुरुक्षेत्र'	"	२.५०
गुरुभक्त सिंह और उनकी 'नूरजहाँ'	"	३.००
कामायनी की टीका	"	५.००
प्रियप्रवास की टीका	"	५.००
सांस्कृतिक परम्परा और साहित्य	"	४.००

प्राप्ति-स्थान—साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यिक निबन्ध— राजनाथ शर्मा एम. ए. ८.००
सार संचयन " ६.००
हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास " १.५०
आ. रामचन्द्र शुक्ल और 'चिन्तामणि' " ३.५०
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और 'त्रिवेणी' " २.००
हिन्दी साहित्य के प्रमुखवाद " २.५०
आधुनिक कवि और उनका काव्य " २.००
मध्यकालीन कवि और उनका काव्य " २.५०
हिन्दी के गद्य लेखक—
और उनकी शैलियाँ " २.५०
प्रेमचन्द और गबन—
(आलोचनात्मक अध्ययन) " १.२५
गोदान " " २.५०
प्रेमचन्द " " २.५०
निराला " " २.५०
कबीर " " २.५०
सुमित्रानन्दन पन्त " " २.५०
हिन्दी साहित्य का इतिहास " " २.५०
हिन्दी भाषा का इतिहास " " २.५०
प्रेमचन्द और गोदान— राम वाशिष्ठ एम. ए. २.५०
प्रेमचन्द और कर्मभूमि " २.५०
महाकवि घनानन्द " ३.५०
गीतकार विद्यापति " २.५०
कबीर-साखी-सार " ३.५०
भारतेन्दु साहित्य रामगोपालसिंह चौहान ६.७५
वर्माजी और 'ललित विक्रम' " १.५०
हिन्दी के गद्यकार और उनकी शैलियाँ " ४.००
हिन्दी नाटक : सिद्धान्त और समीक्षा " ७.००
पन्तजी का नूतन काव्य और दर्शन—
डा० विश्वम्भरनाथ उपाध्याय १३.२५
सूर का भ्रमर गीत : एक अन्वेषण " ३.५०
बिहारी सतसई (मूल आलोचना व
टीका सहित)— देवेन्द्र शर्मा एम. ए. ५.००
जयशङ्करप्रसाद और आँसू " २.५०
हिन्दी कविता में युगान्तर— डा. सुधीन्द्र ६.००

साहित्य समीक्षाञ्जलि " ५.००
रासपंचाध्यायी और भँवरगीत
[नन्ददास] " २.००
हिन्दी साहित्य और विभिन्न वाद—
रामजीलाल बघोतिया ५.००
हिन्दी निबन्ध " ३.५०
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
(आलोचनात्मक अध्ययन) " २.५०
घनानन्द कवित्त का काव्य वैभव—
रा० प्रकाश दीक्षित २.५०
हिन्दी कहानी : स्वरूप, विकास-
और प्रतिनिधि कहानीकार " ४.००
चन्दबरदाई और पद्मावती समय " ३.५०
तुलसीदास (आलोचनात्मक अध्ययन)—
भारतभूषण सरोज २.५०
भाषा विज्ञान " " २.५०
साहित्यालोचन " " २.५०
बिहारी " " २.००
जायसी " " २.५०
उद्धव शतक " " २.५०
कामायनी ,, ,, १.५०
साकेत— ,, १.५०
प्रियप्रवास— ,, १.००
आधुनिक तीन महाकाव्य—
(कामायनी, प्रियप्रवास और
साकेत तीनों एक ही जिल्द में) ,, ३.५०
हमारे प्रमुख साहित्यकार—रामनारायण मिश्र १.५०
उद्धव-शतक समीक्षा— ,, २.००
पञ्चवटी : परिचय— ,, ०.७५
हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक
इतिहास—डा. रामकुमार वर्मा १०.००
हिन्दी साहित्य का इतिहास— ,, ३.००
कबीर का रहस्यवाद— ,, ३.००
साहित्य समालोचना— ,, १.७५
शृङ्गार-हार—मोतीचन्द तथा वासुदेवशरण अग्र. २०.००

प्राप्ति-स्थान—साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूर साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन—	,,	५.००
सप्त स्वर—	,,	५.००
भाषा अध्ययन के आधार—	,,	७.५०
ब्रजभाषा सूर कोष—(७ भाग)	,,	१६.००
हिन्दी कवियों का काव्यादर्श—	,,	४.००
हिन्दी साहित्याङ्गों का विकास—	,,	१.५०
सूर विनय पदावली—	,,	१.५०
प्रेमचन्द : कृतियाँ और कला—	,,	३.५०
काव्य विवेचन—	सुरेशचन्द्र गुप्त	६.००
हिन्दी काव्य दर्शन—	,,	६.००
काव्य समीक्षा—	,,	४.००
काव्यानुशीलन—	,,	४.५०
आधुनिक हिन्दी निबन्ध—	सुरेशचन्द्र गुप्त	४.००
प्रतिनिधि आलोचक—	,,	३.००
महादेवी और आधुनिक कवि—	,,	७.१२
साहित्य का स्वरूप—	,,	२.५०
सूर निर्णय—प्रभुदयाल मीतल	,,	५.००
अष्टछाप परिचय—	,,	५.००
ब्रजभाषा साहित्य का ऋतु सौन्दर्य—	,,	४.००
भक्त कवि व्यासजी—	,,	६.००
सूरदास की वार्ता—	,,	१.५०
सूर विनय पदावली—	,,	१.५०
सूर रामचरित्र—	,,	१.५०
सूर सारावली—	,,	३.५०
सूरदास मदनमोहन—	,,	२.००
राधावल्लभ सम्प्रदाय : सिद्धान्त और साहित्य (थीसिस)—	डा. विजयेन्द्र स्नातक	१८.००
समीक्षात्मक निबन्ध—	,,	५.५०
आलोचक रामचन्द्र शुक्ल—	,,	६.५०
कामायनी दर्शन—	,,	४.००
आधुनिक हिन्दी साहित्य—	,,	२.००
प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन (थीसिस)—	डा. जगन्नाथप्रसाद शर्मा	५.५०
कहानी का रचना विधान—	,,	५.००
हिन्दी की गद्य शैली का विकास—	,,	६.००
हिन्दी गद्य साहित्य का इतिहास—	,,	२.५०
हिन्दी गद्य के युग निर्माता—	,,	४.२५
अध्ययन और आलोचना—	रामरतन भटनागर	८.००
जैनेन्द्र साहित्य और समीक्षा—	,,	७.५०
सूर साहित्य की भूमिका—	,,	२.००
तुलसी साहित्य की भूमिका—	,,	२.००
सूफीमत और हिन्दी साहित्य—	डा. विमलकुमार जैन	८.००
तुलसीदास और उसका साहित्य—	,,	७.००
हिन्दी के अर्वाचीन रत्न—	,,	७.००
प्रबन्ध सागर—	यज्ञदत्त शर्मा	६.५०
हिन्दी गद्य का विकास—	,,	२.००
कबीर साहित्य और सिद्धान्त—	,,	३.००
तुलसी ,, ,,	,,	३.००
जायसी ,, ,,	,,	३.००
सूर ,, ,,	,,	३.००
चारिका—	शान्तिप्रिय द्विवेदी	३.००
आधान—	,,	२.५०
दिगम्बर—	,,	१.५०
ज्योति विहग—	,,	५.००
विश्व साहित्य की रूपरेखा—	भगवतशरण उपाध्याय	१२.००
भारतीय समाज का ऐतिहासिक विश्लेषण—		४.००
अंग्रेजी साहित्य की रूपरेखा—	,,	२.५०
पदमावत—	वासुदेवशरण अग्रवाल	१५.००
पाणिनिकालीन भारतवर्ष—	,,	१२.००
कादम्बरी : एक सांस्कृतिक अध्ययन—	,,	१३.५०
साहित्य दर्शन भाग १—	शचीरानी गुर्टू	८.००
सुमित्रानन्दन पन्त—	,,	६.५०
महादेवी वर्मा—	,,	६.५०
हिन्दी के आलोचक—	,,	८.००
शृङ्खला की कड़ियाँ—	महादेवी वर्मा	३.५०
अतीत के चलचित्र—	,,	२.००
स्मृति की रेखाएँ—	,,	१.५०
क्षणदा—	,,	३.००

प्राप्ति-स्थान—साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पथ के साथी— ,, ३.००
संस्कृति के चार अध्याय— रामधारीसिंह 'दिनकर' १५.००
काव्य की भूमिका— ,, ४.००
पन्त, प्रसाद, मैथिलीशरण— ,, ४.००
अर्धनारीश्वर— ,, ६.००
रेती के फूल— ,, २.००
देश विदेश ,, २.००
उत्तरी भारत की सन्त परम्परा— परशुराम चतुर्वेदी १२.००
मध्यकालीन प्रेम साधना— ,, ३.००
भारतीय प्रेमाख्यान की परम्परा— ,, ४.००
कबीर साहित्य की परख— ,, ५.००
वैष्णव धर्म— ,, ३.५०
बौद्ध साहित्य की सांस्कृतिक झलक— ,, ३.५०
मीराबाई की पदावली— ,, ३.००
सूफी काव्य संग्रह— ,, ३.५०
सन्त काव्य— ,, ६.००
हिन्दी काव्य और उसका सौन्दर्य— डा. ओमप्रकाश ८.००
हिन्दी अलङ्कार साहित्य— ,, ६.००
आलोचना की ओर— ,, ३.००
हिन्दी साहित्य : द्वितीय खण्ड—डा. धीरेन्द्र वर्मा १४.००
हिन्दी भाषा का इतिहास— ,, ८.००
ब्रज भाषा— ,, ६.००
हिन्दी भाषा और लिपि— ,, १.००
ग्रामीण हिन्दी— ,, १.५०
दरबारी संस्कृति और हिन्दी मुक्तक— त्रिभुवनसिंह ४.५०
हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद— ,, ६.००
आधुनिक हिन्दी कविता की स्वच्छन्द धारा ३.००
सुमित्रानन्दन पन्त —विश्वम्भर मानव ५.५०
महादेवी की रहस्य साधना ,, ३.५०
कामायनी की टीका ,, ६.००
खड़ी बोली के गौरव ग्रन्थ ,, २.५०
साहित्य के आलोक स्तम्भ ,, १.००

गुप्तजी की काव्यधारा—गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश' ४.००
महाकवि हरिऔध ,, ५.००
समीक्षक प्रवर रामचन्द्र शुक्ल ,, ५.००
साहित्य वार्ता ,, ५.५०
सूर की काव्य कला (थीसिस)— डा. मनमोहन गौतम १०.००
सरल भाषा विज्ञान ,, ५.७५
जायसी ग्रन्थावली ,, १२.००
निबन्धकार रामचन्द्र शुक्ल —कृष्णदेव झारी ३.५०
छायावाद और उसके चार स्तम्भ ,, १.३७
अष्टछाप के कवि नन्ददास ,, ४.५०
हिन्दी साहित्य का उद्भव, विकास— रामबहोरी शुक्ल ८.००
काव्य प्रदीप ,, ३.२५
तुलसी ,, ३.००
हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास (थीसिस)— डा. दशरथ ओझा ६.००
समीक्षा शास्त्र ,, ६.००
सुकवि समीक्षा ,, ५.००
नाट्य समीक्षा ,, ५.००
राजस्थानी भाषा और साहित्य— मोतीलाल मेनारिया ६.००
डिंगल में वीररस ,, ३.००
काव्य शास्त्र —भागीरथ मिश्र ५.५०
हिन्दी काव्यशास्त्र का इतिहास ,, १२.००
हिन्दी रीति साहित्य ,, ४.००
पातञ्जलि योगदर्शन— भागीरथ मिश्र ९.००
हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास— डॉ. उदयनारायण तिवारी ११.००
वीरकाव्य— ,, ६.००
भोजपुरी भाषा और साहित्य (थीसिस) ,, १३.५०
हमारे कवि— राजेन्द्रसिंह गौड़ ४.००
हमारे लेखक— ,, ५.००
प्राचीन कवियों की काव्य साधना—,, ५.००
आधुनिक कवियों की काव्य साधना—,, ३.००

प्राप्ति-स्थान—साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलोचना

हमारी नाट्य साधना—राजेन्द्रसिंह गौड़	२.२५
हमारे नाटककार ,,	३.००
सन्त कबीर दर्शन ,,	२.००
निबन्ध कला ,,	३.५०
संक्षिप्त हिन्दी शब्दसागर—रामचन्द्र वर्मा	१८.००
अच्छी हिन्दी ,,	३.५०
हिन्दी प्रयोग ,,	१.७५
शब्द साधना ,,	५.००
कामायनी और प्रसाद की कविता गंगा—शिवकुमार मिश्र	७.५०
वृन्दावनलाल वर्मा ,,	६.२५
हिन्दी निबन्ध ,,	४.५०
हिन्दी नाटककार—जयनाथ नलिन	५.५०
हिन्दी निबन्धकार ,,	६.५०
काव्य सम्प्रदाय और वाद—अशोक कुमार सिंह	४.५०
काव्य सम्प्रदाय ,,	३.००
काव्य के वाद ,,	१.५०
बिहारी रत्नाकर—जगन्नाथदास 'रत्नाकर'	६.००
कविवर बिहारी ,,	६.००
उद्धवशतक ,,	२.००
रत्नाकर ग्रन्थावली (२ भाग) ,,	३.००
बिहारी बोधनी—लाला भगवानदीन	३.५०
रामचन्द्रिका भाग १ ,,	३.५०
रामचन्द्रिका भाग २ ,,	२.२५
सूर पंचरत्न ,,	२.५०
अलङ्कार मंजूषा ,,	१.५०
संक्षिप्त रामचन्द्रिका ,,	१.५०
भारतीय साहित्य शास्त्र (२ भाग)—बलदेव उपाध्याय	१८.००
भारतीय दर्शन ,,	९.००
संस्कृत साहित्य का इतिहास ,,	७.५०
वैदिक साहित्य और संस्कृति ,,	७.००
कुछ विचार—प्रेमचन्द	३.००
साहित्य का उद्देश्य ,,	४.००
पुस्तकालय विज्ञान—द्वारकाप्रसाद शास्त्री	५.००
पुस्तकालय संगठन और संचालन—	३.००
भारत में पुस्तकालयों का उद्भव और विकास—	५.००
पुस्तक वर्गीकरण कला ,,	५.००
इतिहास और आलोचना—नामवरसिंह	४.००
हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योग—	५.००
पृथ्वीराज रासो की भाषा— ,,	६.००
छायावाद ,,	४.००
प्रेमचन्द : एक विवेचन—इन्द्रनाथ मदान	३.५०
तुलसीदास : चिन्तन और कला ,,	५.००
प्रेमचन्द : चिन्तन और कला ,,	५.००
आज की राजनीति—राहुल सांकृत्यायन	६.००
ऋग्वैदिक आर्य ,,	८.००
वैज्ञानिक भौतिकवाद—राहुल सांकृत्यायन	२.५०
एशिया के दुर्गम भूखण्डों से— ,,	५.००
भारत में ब्रिटिश राज्य के संस्थापक-,,	३.७५
बिहारी— विश्वनाथ प्रसाद मिश्र	३.५०
बिहारी की वाग्विभूति— ,,	२.५०
घन-आनन्द कवित्त— ,,	३.७५
केशव ग्रंथावली—(२ भाग) ,,	१०.००
लोक दृष्टि और हिन्दी साहित्य—चन्द्रबली पाण्डेय	४.००
विचार-विमर्श— ,,	३.५०
एकता— ,,	३.००
प्रसाद काव्य कोश— सुधाकर पाण्डेय	१६.००
प्रसाद की कविताएँ— ,,	७.००
कामायनी समीक्षा— ,,	३.००
हिन्दी साहित्य : १९५४ ,,	३.५०
सं० हिन्दी साहित्य और साहित्यकार-,,	०.९७
भारत की चित्रकला— रायकृष्णदास	८.००
भारतीय मूर्तिकला— ,,	३.५०
प्रेमचन्द : उपन्यास और शिल्प—हरस्वरूप माथुर	१.५०
कथाकार जयशंकर प्रसाद ,,	२.००

प्राप्ति-स्थान—साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतेन्दु कालीन नाटक साहित्य— गोपीनाथ तिवारी	६.००	महादेवी की काव्य साधना—सत्यपाल	२.५०
ऐतिहासिक उपन्यास और उपन्यासकार—,,	३.५०	छायावाद युग— डा. शम्भूनाथसिंह	६.५०
यशोधरा का काव्य वैभव—दुर्गाशंकर मिश्र	२.५०	सूर सौरभ— डा. मुंशीराम शर्मा	५.००
सुमित्रानन्दन पन्त और आधुनिक कवि—,,	३.००	सन्तुलन— प्रभाकर माचवे	४.००
हिन्दी साहित्य का इतिहास—बालबन्धु एम.ए.	२.००	विवेचना— इलाचन्द जोशी	४.००
हिन्दी भाषा तथा हिन्दी साहित्य— ,,	४.५०	बिहारी और उनका साहित्य— डा. हरवंशलाल शर्मा	६.००
प्रसाद का साहित्य—कृष्णदेव प्रसाद गौड़	५.००	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र—लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय	५.००
साहित्य प्रवाह ,,	६.००	भोजपुरी ग्रामगीत (द्वितीय भाग)— पं० कृष्णदेव उपाध्याय	११.००
साहित्य के पृष्ठ— गजानन शर्मा एम. ए.	५.००	विचार तरङ्ग—दीवानचन्द्र शर्मा	२.५०
सप्त-धारा— ,,	४.००	आधुनिक साहित्यपरिचय—ओमप्रकाश शास्त्री	२.२५
हिन्दू सभ्यता— डा. राधाकुमुद मुकर्जी	७.५०	भारतीय संस्कृति का विकास : वैदिक धारा— मङ्गलदेव शास्त्री	७.००
हिन्दू संस्कृति में राष्ट्रवाद— ,,	३.००	दिनकर के काव्य—लालधर त्रिपाठी	५.००
भारतीय समाज विमर्श— भगीरथप्रसाद दीक्षित	४.००	परमानन्द सागर—डॉ० गोवर्धननाथ	१२.००
पंच-प्रज्ञा— ,,	२.५०	छायावाद के गौरव चिह्न—प्रो० क्षेम एम.ए.	६.००
गिंदन चरित — ,,	०.७५	साहित्य धारा—प्रकाशचन्द्र गुप्त	४.५०
तुलसीदास और उनके ग्रन्थ— ,,	५.००	भारतेन्दु और अन्य सहयोगी कवि— किशोरीलाल गुप्त	१०.००
भारत की अन्तरात्मा—डा. राधाकृष्णन्	३.७५	श्रीराधा का क्रम विकास—शशिभूषणदास	८.००
स्वतन्त्रता और संस्कृति— ,,	३.७५	सूर के सौ कूट—चुन्नीलाल शेष	५.००
भारत और चीन— ,,	५.२५	पृथ्वीराज रासो में कथानक रूढ़ियाँ— ब्रजविलास श्रीवास्तव	३.५०
ब्रजभाषा और उसके साहित्य की भूमिका— डा. कपिलदेवसिंह	२.५०	पद्मसिंह शर्मा के पत्र—बनारसीदास चतुर्वेदी	६.००
हिन्दी काव्य और प्रयोगवाद— रामकुमार खण्डेलवाल	२.००	प्रेमचन्द : जीवन और कृतित्व—हंसराज	७.००
संस्कृत साहित्य का इतिहास— द्वारिकाप्रसाद एम. ए.	२.५०	पदमावत का काव्य सौन्दर्य—शिवसहाय	५.००
विनय पत्रिका दर्शन—तपेशकुमार चतुर्वेदी	२.५०	कालिदास—वासुदेवविष्णु मिरासी	४.००
हमारी नाट्य परम्परा— श्रीकृष्ण गुप्त	१०.००	तुलसीदास और उनका काव्य— सत्यनारायणसिंह	०.७५
गुप्तजी की काव्य साधना—डा. उमाकान्त	८.००	हरिऔध और उनका साहित्य— मुकुन्ददेव शर्मा	७.००
हिन्दी साहित्य परिचय— डा. भगवतस्वरूप मिश्र	३.००	काव्य और कला तथा अन्य निबन्ध—प्रसाद	१.५०
कबीर और जायसी का रहस्यवाद— डा. गोविन्द त्रिगुणायत	४.००	हिन्दी के मुसलमान कवियों का प्रेम काव्य— गुरुप्रसाद शर्मा	२.५०
कामायनी अनुशीलन—डा. रामलालसिंह	४.००		

 प्राप्ति-स्थान—साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मधुमालती (मंझन कृत)—डॉ० शिवगोपाल ८.००
हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास—
किशोरीलाल गुप्त ६.००
अध्ययन के विचार—विष्णुकिशोर ३.५०
हिन्दी कहानी और कहानीकार—
वासुदेव एम. ए. ४.५०
हिन्दी में निबन्ध साहित्य—जनार्दनस्वरूप १.२५
केशव की काव्य कला—कृष्णशङ्कर शुक्ल ३.००
सूरदास (आलोचनात्मक अध्ययन)—
वासुदेव शर्मा शास्त्री २.५०
विद्यापति (,,)—मुरारीलाल उप्रैति २.००
हिन्दी रत्नाकर—रमेशचन्द जैन एम. ए. २.००
कविता में प्रकृति चित्रण—
डॉ० रामेश्वरलाल खण्डेलवाल ३.००
हिन्दी साहित्य और उसके अङ्ग—
श्रुतिकान्त शास्त्री २.५०
इलाचन्द जोशी के उपन्यास-बलभद्र तिवारी ३.००
सटक सीताराम— संसारचन्द्र एम. ए. ३.००
हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास—
—विराज एम. ए. १.२५
आचार्य चाणक्य एक समीक्षात्मक अध्ययन—
रामस्वरूप दुबे २.५०
हिन्दी साहित्य का नूतन इतिहास—
आचार्य बटुक एम. ए. ३.५०
विचार और निष्कर्ष— वासुदेव एम. ए. ७.२५
भारतेन्दुकालीन हिन्दी नाट्य परम्परा
और भारतेन्दु—कुंवर चन्द्रप्रकाशसिंह ४.५०
रत्नाकर और उनका काव्य-उषा जायसवाल ५.००
वृन्दावनलाल वर्मा : व्यक्तित्व और कृतित्व—
डा. कमलेश ४.००
प्रतिनिधि कवि— सत्यदेव चौधरी ३.५०
हिन्दी: मूल और शाखा-श्यामविहारी वैरागी ५.००
चिन्तन और साहित्य— देवेन्द्र इस्सुर २॥)
तुम चन्दन हम पानी—विद्यानिवास मिश्र ३.००
हिन्दी काव्यादर्श—रणवीरसिंह एम. ए. ४.००

हिन्दी की गद्यशैली का विकास—
—शुकदेवबिहारी मिश्र ४.००
प्रसाद के नाटक— परमेश्वरीप्रसाद गुप्त ४.५०
हमारी शिक्षा— गणेशप्रसादसिंह ६.५०
हिन्दी साहित्य का बालोपयोगी इतिहास—
—पं० श्रीकृष्ण शुक्ल २.००
नासिकेतोपाख्यान— सदल मिश्र— ०.३१
आलोचनादर्श— रमाशंकर शुक्ल 'रसाल' २.५०
गुञ्जन का अनुगुञ्जन— हरीश बत्रा २.५०
भाषा का इतिहास— भगवद्दत्त ५.००
कविवर पन्त और आधुनिक कवि—
रामरजपालसिंह द्विवेदी ७.५०
चिन्तन मनन— दुर्गाशङ्कर मिश्र ७)
सेठ गोविन्ददास (नाट्यकला और कृतियाँ)—
डा. रामचरण महेन्द्र ५.००
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र—ब्रजरत्नदास ५,००
भारतीय आर्यभाषा और हिन्दी—
डा. सुनीतिकुमार चटर्जी ७.२५
साहित्य विवेचन— क्षेमचन्द्र सुमन ७.००
हिन्दी की काव्य-शैलियों का विकास—
डा. हरदेव बाहरी ६.००
आलोचना के मान-शिवदानसिंह चौहान ३.७५
आधुनिक साहित्य और कला-डा. महेन्द्र भट० २.५०
रस-साहित्य और समीक्षाएं— हरिऔध ४.००
रेवातट पृथ्वीराजरासो-बिपिनबिहारी त्रिवेदी ६.००
साहित्य चिन्ता—देवराज ५.००
हिन्दी साहित्य में भ्रमरगीत की परम्परा—
सरला शुक्ल एम. ए. ४)
हास्य की रूपरेखा—डा. एस. पी. खत्री ६.००
रवीन्द्र साहित्य और समीक्षा—
अवधप्रसाद वाजपेयी ३)
मूल्य और मीमांसा— कुमार विमल ४)
मानसः बालकाण्ड के स्रोत-श्रीशकुमार एम. ए. ५.००
लोकधर्मी नाट्य परम्परा-डा. श्याम परमार ५.००
मध्यकालीन हिन्दी गद्य-हरिमोहन श्रीवास्तव ३.००

प्राप्ति स्थान—साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी का स्वीकृत शोध-प्रबंध—
डा. उदयभानुसिंह १०.००
हिन्दी का गद्य साहित्य—डा. रामचन्द्र तिवारी ६.००
भारतीय काव्यांग—डा. सत्यदेव चौधरी ७.००
महाकवि कीट्स का काव्यलोक—
यतेन्द्रकुमार एम. ए. ७.५०
हिन्दी भाषा और लिपि—'भैरव' एम. ए. १.५०
कवि प्रसाद की काव्य साधना—
रामनाथ 'सुमन' ३.५०
साहित्य स्रष्टा— मोहन वल्लभ पंत १.५०
ब्रह्मसूत्र और वैष्णव भाष्य—
डॉ० रामकृष्ण आचार्य १.५०
कबीर साहित्य समीक्षा—शिवस्वरूप गुप्त ४.२५
रस रत्नाकर—हरिशङ्कर शर्मा ५.००
हिन्दी वीर काव्य संग्रह—गणेशप्रसाद द्विवेदी ४.००
काव्य दर्पण—पं० रामदहिन मिश्र १०.००
श्रीमद्भागवत गीता-रहस्य—
लोकमान्य तिलक १२.००
विद्यापति पदावली—मुकुन्द विद्यालङ्कार ६.००
रसज्ञ रंजन—महावीरप्रसाद द्विवेदी १.५०
तुलसीदास और उनका काव्य—त्रिपाठी ७.००
हिन्दी काव्य में छायावाद—दीनानाथशरण ५.००
हिन्दी साहित्य में निबन्ध—ब्रह्मदत्त एम.ए. २.५०
हिन्दी नाटक—डॉ० बच्चनसिंह ४.००
भारतीय समाज विमर्श—राधाकमल मुकर्जी २.००
हिन्दी—प्रो० बदरीनाथ भट्ट १.५०
रोमांसवादी साहित्य शास्त्र —
डॉ० रवीन्द्रसहाय वर्मा ०.७५
भारतेन्दु की नाट्य कला—डॉ० प्रेमनारायण ३.००
जायसी और उनका पद्मावत—
दानबहादुर पाठक १३.००
हमारी उलझन—भगवतीचरण वर्मा १.५०
अपरम्परा—गोपीकृष्णप्रसाद २.५०
हिन्दी साहित्य की परम्परा—हंसराज अग्रवाल ५.००
मेरे प्रभु, कैसा प्रभात—मैरियन एण्डरसन २.००

इच्छा शक्ति—जॉन कनेडी १.२५
दर्शन के उपयोग—हरविन एडमन ४.५०
साहित्य (शास्त्रीय समाधान)—
शङ्करदेव अवतरे ६.००
हिन्दी गद्य की प्रवृत्तियाँ—नलिनविलोचन २.००
आधुनिक भोजपुरी गीत और गीतकार—
राहगीर ३.५०
अग्नि पुराण का काव्य-शास्त्रीय भाग—
रामलाल वर्मा शास्त्री ३.००
हिन्दू राष्ट्र : एक ऐतिहासिक विवेचन—
बलराज मधोक १.५०
हिन्दी गद्य का आविर्भाव और विकास—
धर्मचन्द्र सन्त एम. ए. २.००
कविता कौमुदी भाग ३
सम्पादक—रामनरेश त्रिपाठी ८.००
भिखारीदास ग्रन्थावली भाग १—
सं० विश्वनाथप्रसाद मिश्र ७.५०
भिखारीदास ग्रन्थावली भाग २— „ ७.५०
ढोला मारू रा दूहा—सं० रामसिंह एम. ए. ६.५०
राजरूपक—सं० रामकर्णजी ५.००
नहुष नाटक—सं० ब्रजरत्नदास १.३७
कबीर ग्रन्थावली—सं० श्यामसुन्दरदास ४.००
नासिकेतोपाख्यान— „ ०.३१
रानी केतकी की कहानी— „ ०.३१
प्रेम सागर—सं० ब्रजरत्नदास ३.५०
मुगल दरबार (४ भाग)—अनु. ब्रजरत्नदास १८.००
नई कहानियाँ—रायकृष्णदास १.५०
हिन्दी की गद्य शैली का विकास—
डा० जगन्नाथप्रसाद शर्मा ६.००
संस्कृत साहित्य का इतिहास—
कन्हैयालाल पोद्दार ४.००
खड़ी बोली का आन्दोलन—
डा. शितिकंठ मिश्र ७.००
चन्देल और उनका राजत्व काल—
केशवचन्द्र मिश्र ८.००

प्राप्ति-स्थान—साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मौर्य कालीन भारत—कमलापति त्रिपाठी २.००
हिन्दू राज्यतन्त्र (दो भाग)—
काशीप्रसाद जायसवाल ७.००
बाल मनोविज्ञान—लालजीराम शुक्ल २.००
सम्पूर्णानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ—
आचार्य नरेन्द्रदेव १५.००
हिन्दी शब्दानुशासन—किशोरीदास वाज. १०.००
हिन्दी व्याकरण—कामताप्रसाद गुरु ७.००
संक्षिप्त हिन्दी व्याकरण— ,, १.५०
धातु विज्ञान—डा० दयास्वरूप ६.००
संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर—रामचन्द्र वर्मा १८.००
हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास—
(भाग १) डा० राजवली पाण्डेय १८.००
(भाग २) डा० नगेन्द्र १८.००
व्यञ्जना और नवीन कविता—
राममूर्ति त्रिपाठी ५.००

साहित्यिक निबन्ध

साहित्यिक निबन्ध—राजनाथ शर्मा ८.००
सार-सञ्चयन— ,, ६.००
हिन्दी साहित्य के प्रमुखवाद,, २.५०
साहित्य समीक्षाञ्जलि—डा० सुधीन्द्र ५.००
साहित्य के पृष्ठ—गजानन शर्मा एम. ए. ५.००
हिन्दी साहित्य और विभिन्नवाद—
रामजीलाल वधौतिया ५.००
हिन्दी निबन्ध— ,, ३.५०
निबन्ध संग्रह—हजारीप्रसाद द्विवेदी ५.००
विचार और वितर्क— ,, ३.५०
अशोक के फूल— ,, ३.००
समीक्षात्मक निबन्ध-डा. विजयेन्द्र स्नातक ५.५०
आधुनिक हिन्दी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ—
डा० नगेन्द्र ३.५०
विचार और विवेचन— ,, ४.५०
विचार और अनुभूति— ,, ४.५०
विचार और विश्लेषण— ,, ५.५०
निबन्धालोक—डा० राजेन्द्र शर्मा ४.००

अध्ययन और आस्वाद—गुलाबराय ७.५०
प्रबन्ध प्रभाकर— ,, ५.२५
हिन्दी काव्य विमर्श— ,, ४.००
मेरे निबन्ध— ,, ५.१०
कुछ उथले कुछ गहरे— ,, ५.००
साहित्य चिन्तन—लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय ४.००
विराम चिन्ह—डा. रामविलास शर्मा ६.००
लोक जीवन और साहित्य— ,, ३.५०
प्रबन्ध सागर—यज्ञदत्त शर्मा ६.५०
चिन्तन मनन—दुर्गाशङ्कर मिश्र ७.००
अध्ययन और आलोचन—
रामरतन भटनागर ८.००
साहित्य दर्शन भाग १—शचीरानी गुर्टू ८.००
लोकदृष्टि और हिन्दी साहित्य-चन्द्रबलीसिंह ४.००
निबन्ध पारिजात—भारतभूषण त्यागी ३.००
साहित्यिक निबन्ध—गणपतिचन्द्र गुप्त ८.००
आलोचना के पथ पर—कन्हैयालाल सहल ५.००
[illegible] भास्कर—दुर्गादत्त मेनन ५.००
हिन्दी निबन्ध लेखन—विराज एम० ए० ५.००
आलोचना की ओर—ओमप्रकाश ३.००
हिन्दी काव्यादर्श—रणवीरसिंह एम. ए. ४.००
काव्य समीक्षा—सुरेशचन्द्र गुप्त एम. ए. ४.००
काव्यानुशीलन— ,, ४.५०
आधुनिक हिन्दी निबन्ध— ४.००
आलोचना के मान—शिवदानसिंह चौहान ३.७५
सन्तुलन—प्रभाकर माचवे ४.५०
काव्य की भूमिका—दिनकर ४.००
वेणुवन— ,, ३.००
निबन्ध सार—सुदेशशरण ३.००
विवेचना—इलाचन्द्र जोशी ४.००
आदर्श निबन्ध—रमेशचन्द्र एम० ए० २.००
हिन्दी साहित्य चिन्तन-इन्द्रपालसिंह एम. ए. ६.००
हिन्दी निबन्ध—शिवकुमार मिश्र ४.५०
निबन्ध निकुञ्ज—शिवप्रसाद अग्रवाल २.२५

प्राप्ति स्थान—साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा विज्ञान

भाषा विज्ञान—श्यामसुन्दरदास ५.००
भाषा रहस्य— ,, ५.५०
सामान्य भाषा विज्ञान—बाबूराम सक्सेना ६.५०
भाषा विज्ञान—भोलानाथ तिवारी ५.७५
भारतीय भाषा विज्ञान-किशोरीदास वाज. ६.२५
भारतीय आर्यभाषा और हिन्दी— सुनीतिकुमार चटर्जी ७.२५
सरल भाषा विज्ञान— मनमोहन गौतम ५.७५
भाषाविज्ञान (आलो० अध्ययन)— भारतभूषण 'सरोज' २.५०
भाषा विज्ञान तत्व-प्रभुनारायण 'सहृदय' १.५०
हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास— डा. उदयनारायण तिवारी ११.००
हिन्दी भाषा और साहित्य— ,, ३.५०
हिन्दी भाषा का इतिहास (आलोचनात्मक अध्ययन)—राजनाथ शर्मा एम. ए. २.५०
हिन्दी भाषा तथा साहित्य का इतिहास— चतुरसेन शास्त्री ७.५०
हिन्दी भाषा और लिपि—डा. धीरेन्द्र वर्मा १.००
ग्रामीण हिन्दी— ,, १.५०
नागरी अंक और अक्षर— गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ०.३७
हिन्दी भाषा तथा हिन्दी साहित्य-बालबन्धु ४.५०

साहित्यालोचन

साहित्यालोचन— श्यामसुन्दरदास ५.५०
साहित्य विवेचन— क्षेमचन्द्र 'सुमन' ७.००
काव्य के रूप— डा. गुलाबराय ५.००
सिद्धान्त और अध्ययन— ,, ६.००
साहित्यालोचन (आलो० अध्ययन)— भारतभूषण 'सरोज' २.५०
रस मीमांसा— रामचन्द्र शुक्ल ७.००
भारतीय साहित्य शास्त्र (२ भाग)— बल्देव उपाध्याय १८.००
रस रत्नाकर— हरिशंकर शर्मा ५.००
काव्यशास्त्र— भागीरथ मिश्र ५.५०
साहित्यालोचन सिद्धान्त— प्रभुनारायण 'सहृदय' १.५०
हिन्दी आलोचना के भिन्न-भिन्न स्रोत और उनके विकास का इतिहास— प्रभुनारायण 'सहृदय' १.२५
काव्य, कला और शास्त्र-डा. रांगेय राघव ३.००
काव्य, यथार्थ और प्रगति— ,, ३.००
समीक्षा और आदर्श— ,, ३.००
महाकाव्य विवेचन— ,, ३.००

हिन्दी साहित्य के इतिहास

हिन्दी साहित्य का इतिहास-रामचन्द्र शुक्ल १०.००
हिन्दी साहित्य— हजारीप्रसाद द्विवेदी ७.००
हिन्दी साहित्य की भूमिका— ,, ४.५०
हिन्दी साहित्य का आदिकाल— ,, ३.२५
हिन्दी साहित्य— श्यामसुन्दर दास ३.५०
हिन्दी साहित्य की प्रवृत्तियाँ— जयकिशन प्रसाद एम. ए. ६.००
हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल—,, ३.७५
हिन्दी साहित्य चिन्तन— इन्द्रपालसिंह ६.००
आधुनिक हिन्दी साहित्य— लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय ६.००
,, ,, भूमिका— ,, ८.००
आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास— श्रीकृष्णलाल ६.००
हिन्दी साहित्य— डा. भोलानाथ ८.००
हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास— डा. गुलाबराय ३.५०
हिन्दी साहित्य का सं० इतिहास-गुलाबराय १.२५
हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास— —राजनाथ शर्मा एम. ए. १.२५
" का इतिहास (आलो. अध्ययन) " २.५०
हिन्दी साहित्य समीक्षा—गुर्ती सुब्रह्मण्यम २.५०

प्राप्ति स्थान—साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-प्रवाह— कृष्णदेवप्रसाद गौड़ ६.००
सं० हिन्दी साहित्य और साहित्यकार —
—सुधाकर पाण्डेय ०.६७
हिन्दी साहित्य परिचय-डा. भगवतस्वरूप मिश्र ३.००
हिन्दी साहित्य की परम्परा-हंसराज अग्रवाल ८.००
हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास—
रामबहोरी शुक्ल ८.००
हिन्दी साहित्य का बालोपयोगी इतिहास—
श्रीकृष्ण शुक्ल २.००
हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास—विराज १.२५
" का प्रथम इतिहास किशोरीलाल गुप्त ६.००
आधुनिक साहित्य— नन्ददुलारे वाजपेयी ७.००
हिन्दी साहित्य का इतिहास-बालबन्धु एम. ए. २.००

संस्कृत साहित्य के इतिहास

संस्कृत साहित्य का इतिहास—
कन्हैयालाल पोद्दार ४.००
संस्कृत साहित्य का इतिहास—बल्देव उपा० ७.५०
वैदिक साहित्य और संस्कृति— " ७.००
संस्कृत साहित्य की रूपरेखा—
चन्द्रशेखर पाण्डेय ४.५०
वैदिक साहित्य की रूपरेखा— " ३.७५
संस्कृत साहित्य का सुबोध इतिहास—
रामबिहारीलाल २.५०
संस्कृत द्वितीय पुस्तक " ३)
रस रत्नाकर— हरिशङ्कर शर्मा ५.००
रचना तथा व्याकरण—चन्द्रमौलि सुभ्रम १.७५
काव्य मीमासा— सुरेन्द्रदेव शास्त्री ०.७५
संस्कृत साहित्य का इतिहास-बी. बरदाचारी ४.५०
संस्कृत साहित्य का इतिहास
(आलो० अध्ययन)-डा. द्वारिकाप्रसाद एम.ए. २.५१
भारतीय संस्कृति की रूपरेखा-गुलाबराय ,, ४.००
भारतीय कृषि का क ख-जयचन्द विद्यालंकार ५.००
भारतीय संस्कृति का विकास—(वैदिकधारा)
डा० मङ्गलदेव शास्त्री ७.००
भारतीय साहित्य व संस्कृति-डा. हरिदत्तशास्त्री ६.००

हिस्ट्री आफ संस्कृत लिटरेचर-ए. मैकडोनल २०.००
भारतीय संस्कृति का विकास—
विजयशङ्कर शुक्ल ५.००

रस छन्द व्याकरण

हिन्दी व्याकरण— कामताप्रसाद गुरु ७.००
संक्षिप्त हिन्दी व्याकरण ,, १.५०
हिन्दी सब्दानुशासन-किशोरीदास वाजपेयी १०.००
अच्छी हिन्दी ,, ३.००
काव्य-शास्त्र— डा. शम्भुनाथ पाण्डेय ३.००
रस अलङ्कार पिंगल ,, २.५०
अलङ्कार-प्रवोध ,, १.००
काव्य-दर्पण— रामदहिन मिश्र १०.००
अच्छी हिन्दी— रामचन्द्र वर्मा ३.५०
शब्द साधना— ,, ५.००
हिन्दी प्रयोग— ,, १.७५
रस मीमांसा—रामचन्द्र शुक्ल ७.००
काव्य प्रदीप— रामबहोरी शुक्ल ३.२५
रस कलश— हरिऔध ४.५०
रस साहित्य और समीक्षाएं— ,, ४.००
अलङ्कार मंजूषा— लाला भगवानदीन २.००
अलङ्कार पीयूष (२ भागों में)—
रमाशंकर शुक्ल ५.००
संक्षिप्त अलङ्कार मञ्जरी-कन्हैयालाल पोद्दार २.००
काव्य शास्त्र— भागीरथ मिश्र ५.५०
हिन्दी मुहावरा कोष—भोलानाथ तिवारी ७.५०
लोकोक्तियाँ और मुहावरे— अमोलकचन्द १.५०
हिन्दी रत्नाकर—रमेशचन्द्र जैन ३.००
रस रत्नाकर— हरिशङ्कर शर्मा ५.००
रचना तथा व्याकरण—चन्द्रमौलि सुभ्रम १.७५
काव्य मीमांसा—सुरेन्द्रदेव शास्त्री ०.७५

कविता

नीरज की पाती— नीरज २.००
दर्द दिया है " ४.५०
दो गीत " २.००
लहर पुकारे " ३.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आसावरी "	३.००	खादी के फूल— बच्चन	[illegible].००
मुक्तकी "	१.५०	आरती और अंगारे—"	४.००
बादर बरस गयो "	३.००	बुद्ध और नाचघर—"	३.००
नदी किनारे "	१.५०	हलाहल— "	२.५०
प्राण गीत "	३.००	आकुल अन्तर— "	२.५०
राग और रङ्ग—श्री रङ्गजी	३.००	जनगीता— "	३.००
रंग और व्यंग—श्री बरसानेलाल चतुर्वेदी	१.००	मिलन यामिनी— "	४.००
गुंजन—सुमित्रानन्दन पन्त	२.५०	सूत की माला— "	३.००
युग वाणी "	४.००	प्रिय प्रवास— हरिऔध	३.५०
ग्राम्या "	२.५०	वैदेही वनवास— "	३.५०
पल्लव "	४.००	रस कलश "	४.५०
पल्लवनी "	५.००	चोखे चौपदे "	२.२५
स्वर्ण किरण "	४.००	चुभते चौपदे "	१.७५
स्वर्ण धूलि "	५.००	विस्मृति के फूल—भगवतीचरण वर्मा	४.००
उत्तरा "	५.००	मधुकण "	२.००
युग पथ "	५.००	हल्दी घाटी—श्यामनारायण पाण्डेय	२.७५
वाणी "	४.००	जौहर "	५.००
खादी के फूल "	५.००	साकेत— मैथिलीशरण गुप्त	५.००
वीणा ग्रन्थि "	३.००	यशोधरा "	१.५०
ग्रन्थि "	०.७५	सिद्धराज "	१.२५
अतिमा "	४.००	भारत भारती "	२.००
सौवर्ण "	२.५०	झंकार "	१.५०
रश्मि बन्ध "	२.२५	वक संहार "	०.५०
कला और बूढ़ा चाँद "	६.००	सैरन्ध्री "	०.५०
सप्त पर्णा "	७.००	अजित "	१.५०
कामायनी—जयशङ्कर 'प्रसाद'	४.००	तिलोत्तमा "	१.५०
आँसू "	१.००	चन्द्रहास "	१.५०
लहर "	१.५०	किसान "	०.५०
झरना "	१.००	नहुष "	०.५०
महाराणा का महत्व "	०.५०	पञ्चवटी "	०.७५
प्रेम पथिक "	०.३७	पृथ्वी पुत्र "	०.७५
करुणालय "	०.५०	जय भारत "	७.००
कानन कुसुम— "	२.००	द्वापर "	३.००
प्रसाद सङ्गीत "	२.००	हिन्दू "	२.५०
चित्रधार "	३.००	जयद्रथ वध "	०.७५

प्राप्ति स्थान—साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रिटेन में प्रकाशन उद्योग

पिछले बीस वर्षों में पुस्तक-प्रकाशन के तरीकों में आमूल परिवर्तन आ गया है। बड़ी प्रकाशन संस्थाएं पहले से कहीं ज्यादा बड़ी हो गई हैं। व्यक्तिगत रुचि की अपेक्षा आज मुनाफा कमाने और अपनी पूंजी की हिफाजत करने की उन्हें कहीं ज्यादा चिन्ता है, और द्वितीय विश्व युद्ध के पहले की तुलना में आज कहीं अधिक छोटे प्रकाशकों की होड़ का उन्हें सामना करना पड़ रहा है। कुछ वर्ष पहले तक जिस व्यवसाय को भद्र पुरुषों का ही पेशा माना जाता था, आज वह एक ऐसा व्यापार बन गया है, जिसमें अनुभवहीन या मामूली प्रकाशक के टिके रहने की सम्भावनायें नहीं के बराबर ही हैं।

ब्रिटिश प्रकाशन-व्यवसाय से सम्बन्धित सही आँकड़े पाना हमेशा ही मुश्किल रहा है। लड़ाई के पहले प्रकाशन का अधिकांश भाग लगभग ३० फर्मों का होता था। इस समय ग्रेट ब्रिटेन में ४०० से अधिक पुस्तक-प्रकाशक हैं। इनमें से कम-से-कम आधे तो पूरी तरह से सक्रिय हैं और नियमित रूप से नयी पुस्तकें प्रकाशित करते रहते हैं।

१९३९ में ब्रिटेन में लगभग १५,००० पुस्तकें प्रकाशित हुई थीं। औसत संस्करण ३,००० का मान लिया जाए, तो यह अनुमान किया जा सकता है कि कुल साढ़े चार करोड़ प्रतियाँ छपीं। इनमें से २५ प्रतिशत का निर्यात किया गया।

लड़ाई के दौरान में प्रकाशन का काम बहुत मन्दा पड़ गया और १९३९ से १९४४ तक ७,००० से भी कम पुस्तकें प्रकाशित हुईं। लड़ाई के खतम होने के साथ इनकी संख्या में वृद्धि होने लगी। १९४६ में ११,४०० पुस्तकें प्रकाशित हुईं। १९४९ में यह संख्या १७,००० तक जा पहुँची और १९५८ में यह २२,००० हो गई। इनमें से ६,००० पुनर्मुद्रित पुस्तकें थीं। कुल प्रकाशनों का लगभग एक तिहाई भाग निर्यात हुआ।

१९३९ की तुलना में औसत संस्करण की संख्या अब अधिक ही है। लड़ाई के पहले प्रकाशक ऐसी पुस्तक छाप सकता था, जिसकी १,५०० प्रतियों से अधिक की बिक्री की सम्भावना न थी और फिर भी मुनाफा कमा लेता था। अब मुनाफा कमाने के लिए उसे कम-से-कम ३,००० प्रतियाँ तो बेचनी ही चाहिएं। औसत संस्करण भी ५,००० प्रतियों के करीब ही होता है। इस हिसाब से १९५८ का कुल उत्पादन १० करोड़ प्रतियों के आस-पास होना चाहिये। निर्यात की एक तिहाई पुस्तकें निकाल दें, तो ब्रिटेन में बिकने वाली पुस्तकों की संख्या साढ़े छः करोड़ प्रतियों के लगभग होगी, अर्थात् जनसंख्या की दृष्टि से लगभग एक पुस्तक प्रति व्यक्ति। ब्रिटेन जैसे अति शिक्षित देश के लिए यह संख्या कोई बहुत अच्छी नहीं है।

युद्ध के बाद के वर्षों में ब्रिटेन में प्रकाशकों की संख्या में कमी हुई है. जो सबसे छोटे और कमजोर थे, वे खतम हो गये, जबकि दूसरे ज्यादा बड़े संगठनों में संयुक्त हो गये। वस्तुतः यह प्रकिया चौथे दशक में ही आरम्भ हो चुकी थी। छोटे प्रकाशकों की यद्यपि अब भी गुंजाइश है, फिर भी लगता है कि भविष्य में इस क्षेत्र में बड़े-बड़े प्रकाशन प्रतिष्ठानों (हचिन्सन, कौलिन्स, हाइनमैन, मैकमिलन, मेथ्युएन, फ़ेबर आदि) की ही तूती बोलेगी।

इसका एक कारण यह है कि प्रकाशन-व्यवसाय के लिये खासी बड़ी पूंजी की जरूरत है, यद्यपि कहीं छोटी पूंजी से शुरु किये गये प्रकाशन-प्रतिष्ठान भी चल ही रहे हैं। लगभग तीन साल पहले सर ज्योफ़ फ़ेबर ने कहा था कि ढाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाख पौण्ड (लगभग ३७ लाख रुपया) से कम पूंजी की लागत पर आप कोई प्रकाशन-प्रतिष्ठान खड़ा करने की कोशिश नहीं करना चाहेंगे। सर ज्योफ़ के कथन को पीटर ग्रोवेन, जिन्होंने अपना काम मात्र १०० पौण्ड से शुरू किया था, नहीं स्वीकार करते। फिर भी सचाई यह है कि ब्रिटिश प्रकाशकों में असफल होने वालों की संख्या काफी ऊंची है और उनमें से कई बैठ चुके हैं। अमरीकी प्रकाशकों के विपरीत ब्रिटिश प्रकाशकों की नीति अधिकाधिक पुस्तकें प्रकाशित करने की है, फिर चाहे प्रति संस्करण में मुद्रित प्रतियों की संख्या थोड़ी ही क्यों न हो। अमरीकी प्रकाशक चाहे पुस्तकें कम प्रकाशित करें, पर उनके संस्करण कहीं अधिक बड़े होते हैं।

तो ये वे प्रकाशक हैं, जिनसे मुद्रक का वास्ता पड़ता है। पूछा जा सकता है कि ये किस तरह के लोग हैं और छापाखाने द्वारा तैयार की गई चीजों का ये किस तरह इस्तेमाल करते हैं। आम तौर पर प्रकाशकों के काम के तरीके में बहुत जानकारी नहीं होती। इसलिए इस बात को जानने का सबसे अच्छा तरीका यही है कि हम यह देखें कि प्रकाशक करता क्या है।

आज के अर्थों में प्रकाशक का उदय हुए बहुत दिन नहीं हुये। अपने इस रूप में १६ वीं सदी में जाकर ही प्रकाशक हमारे सामने आये हैं। पहले-पहल (१५ वीं सदी से) प्रकाशन का काम मुद्रकों के ही हाथ में था और छापेखाने भी वे अपनी पुस्तकों को छापने के लिए खड़े करते थे। उनका काम ही पुस्तकें छापना था और छापने के लिए पुस्तकें प्राप्त करते रहने का सबसे अच्छा तरीका यही था कि उनके प्रकाशक भी वे ही हों।

कालान्तर में मुद्रक प्रकाशन के काम से हटने लगा। अब वह उन्हीं के लिए काम करने लगा, जो पुस्तकें बेचने का काम भी करते थे। हाँ, यह हो सकता था कि वह किसी पुस्तक विक्रेता के काम में हिस्सेदार भी हो जाए। लेकिन १७ वीं सदी तक प्रकाशन का काम लगभग पूरी तरह से पुस्तक-विक्रेताओं के हाथ में आ गया और बाइबिल को छोड़कर लगभग सारे प्रकाशन-कार्य पर उनका एकाधिकार हो गया। पुस्तक-विक्रेता-प्रकाशकों के इस वर्ग का पूर्णतः लोप नहीं हुआ है। आज भी ऐसे प्रकाशक हैं, जो साथ-ही-साथ पुस्तक-विक्रेता भी हैं। आक्सफोर्ड के ब्लैकवैल, रूटलैज एण्ड केगन पाल आदि इसी वर्ग के प्रतिनिधि हैं। ऑक्फोर्ड तथा कैंब्रिज यूनीवर्सिटी प्रेस इस वर्ग में उनकी प्रतिनिधि हैं, जो साथ ही साथ मुद्रक भी हैं फिर भी, आधुनिक प्रकाशन बुनियादी तौर पर प्रकाशन का ही काम करते हैं और ऊपर दिये उदाहरण आपवादिक ही अधिक हैं।

सैद्धान्तिक रूप से आधुनिक प्रकाशक का काम इतना सरल है कि सामान्य प्राथमिक अध्ययन के बाद हर कोई इस काम को हाथ में ले सकता है। हाँ, यह दूसरी बात है कि इस व्यवसाय में वह टिक कितने दिन सकता है। समुचित पूंजी का होना भी इस बात की गारंटी नहीं है कि नया प्रकाशन व्यवसाय में रहकर लाभ उठाता रहे। ऊपरी सरलता के बावजूद यह व्यवसाय पैसा खोने के सबसे तेज तरीकों में एक है। इसमें सफलता केवल परिश्रम और उद्योग से ही नहीं प्राप्त होती, वरन् इसके लिये यह देखने योग्य अन्तर्दृष्टि भी होनी चाहिये कि कौनसी किताब बिक सकती है और कौनसी नहीं—और भाग्य तो साथ चलता है ही।

प्रकाशक का काम है पुस्तक चयन, तैयारी, उत्पादन और फिर उसकी बिक्री। इस दृष्टि से वह व्यापारी होने के साथ-साथ जुआरी भी होता है, जो अपने काम में भारी जोखिम लेता है और उसके बदले अच्छा मुनाफा कमाने की अपेक्षा करता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वन वैभव	मैथिलीशरण गुप्त	०.५०
शकुन्तला	"	०.५०
विश्व वेदना	"	०.७५
कुणाल गीत	"	१.५०
हिडिम्बा	"	०.७५
विष्णु प्रिया	"	२.५०
मेघनाथ वध	"	६.००
गुरुकुल	"	३.००
पत्रावली	"	०.६२
अंजलि और अर्घ्य	"	०.७५
प्रदक्षिणा	"	१.५०
कुरुक्षेत्र—	रामधारीसिंह दिनकर	३.५०
इतिहास के आँसू	"	३.५०
चक्रवाल	"	१०.००
नील कुसुम	"	१.५०
बापू	"	३.००
रेणुका	"	३.००
सामधेनी	"	३.००
रसवन्ती	"	२.५०
दिल्ली	"	१.००
हुँकार	"	२.००
रश्मिरथी	"	५.००
नए सुभाषित	"	२.५०
सीपी और शङ्ख	"	३.५०
अजी सुनो—गोपालप्रसाद व्यास		५.००
वसन्त और पतझर—विनोदचन्द्र पाण्डेय		१.५०
अर्चना—हरिदत्त पालीवाल		१.७५
स्नेह सौरभ—श्रीकृष्ण सरल		२.००
मधुरिमा—महेन्द्र भटनागर		३.००
माध्यम मैं—शम्भुनाथसिंह		२.७५
इन्द्रधनुष रौंदे हुए थे—अज्ञेय		४.००
हरी घास पर क्षण भर—"		३.००
पिल्ला—काका		२.००
म्याऊं— "		२.००
गीतांजलि—रवीन्द्रनाथ टैगोर		४.००
सहस्रधारा—सत्यप्रकाश जोशी		३.००
हिन्दी पद्य पारिजात-२ भाग—नरोत्तम स्वामी		२.७५
मुकुल—सुभद्राकुमारी चौहान		२.५०
अभिव्यंजना—भगवानदास तिवारी		२.५०
रामराज्य—हरिशङ्कर शर्मा		१.७५
अषाढ़ के बादल—सतीशचन्द्र चतुर्वेदी		१.५०
वसन्त के फूल—विराज		४.००
झाँसी की रानी—श्यामनारायणप्रसाद		४.००
वीर काव्य—उदयनारायण तिवारी		६.००
भूमि की अनुभूति—मिलिन्द		२.५०
झुरमुट—विश्वम्भरशरण चतुर्वेदी		१.००
हृदय तरङ्ग—रघुवरनारायण		३.५०
करुणा कादम्बिनी—गयाप्रसाद शुक्ल		२.००
चिनगारी—महावीर नास्तिक		०.६२
एकत्तरशती—रवीन्द्रनाथ टैगोर		१०.००
रामझरोखा—मोहनलाल गुप्त		२.५०
नीम की छाँह पका धान और उलझन—	मानिक वच्छावत	३.००
घटा के घुंघुरु—	रामकुमार चतुर्वेदी	५.००
अमिट निशानी—	सावित्री सोलङ्की	३.००
हमीर राव—	सभामोहन अविधिया	१.००
अषाढ़ के बादल—	सतीशचन्द्र चतुर्वेदी	१.५०
वर्द्धमान—	अनूप शर्मा	६.००
जयवाणी—	आचार्य जयमल्लजी	३.५०
वीरसिंह देव चरित—	श्यामसुन्दर द्विवेदी	४.५०
विज्ञान गीता सटीक	"	३.००
वीचियाँ	लीलावती	१.५०
एक अकेला प्यार	यज्ञदत्त	३.००
सूर पदावली	सङ्कलन	२.००
ज्योति पुरुष	मित्र	४.००
प्रणय पल	यज्ञदत्त	५.००
मंजु मृणाल	आचार्य वैजनाथ	२.००
खैयाम की मधुशाला	बच्चन	२.००
सात गीत वर्ष	धर्मवीर भारती	३.५०
कनुप्रिया	"	३.००

प्राप्ति स्थान—साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीतिका	सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'	१.५०	सैक्सपीयर के सानेट	राजेन्द्र द्विवेदी	३.००
तुलसीदास	"	१.२५	सती पद्मावती	रावत हिम्मतसिंह	५.००
अपरा	"	३.५०	विष्णु प्रिया	मैथिलीशरण गुप्त	२.००
अनामिका	"	५.००	गीत के नये चरण	प्रियदर्शी	३.००
आराधना	"	२.५०	कब तक निहारूँ	जनक अरविन्द	४.००
अर्चना	"	२.००	ताज की छाया में—सं. शिवदानसिंह चौहान		४.००
प्रवासी के गीत—नरेन्द्र शर्मा		२.००	सर्वोदय के गीत	रामगोपाल शर्मा 'दिनेश'	०.७५
मिट्टी और फूल	"	२.००	किनारे के पेड़	मुकुटविहारी सरोज	२.५०
सान्ध्यगीत—महादेवी वर्मा		२.५०	मीरा सुधा सिन्धु	स्वामी आनन्दस्वरूप	१३.००
यामा	"	१५.००	मीर	रामनाथ सुमन	६.००
दीपशिखा (सचित्र)	"	२२.००	गालिब	"	६.००
दीपशिखा (अचित्र)	"	४.००	ढोला मारू रा दूहा—सूर्यकरण पारीक		६.५०
नीरजा	"	१.५०	कीर्तिलता—विद्यापति		१.२५
रश्मि	"	३.००	मेघ माला—श्यामबिहारी शुक्ल तरल		२.५०
नीहार	"	३.००	परिहास—बचनेश		१.००
हिम तरङ्गिनी—माखनलाल चतुर्वेदी		१.७५	टूटा हुआ आदमी—सिद्धनाथकुमार		३.००
हिम किरीटनी	"	४.००	जीवन संगीत—रामकुमारसिंह		२.००
मेकबेथ	—बच्चन	३.००	तुलसी दोहावली सार—कृष्णमुरारीलाल		०.७५
आथेलो	"	३.५०	नूरजहाँ—गुरुभक्तसिंह		३.००
धार के इधर उधर	"	२.२५	पतझर के फूल—शेखर		२.००
सोपान	"	५.००	भोजपुरी वीर काव्य—प्रसिद्धनारायणसिंह		२.००
मधुशाला	"	२.००	मुक्तिगान—श्रीकृष्ण सरल		२.००
एकान्त सङ्गीत	"	२.५०	विनोवा स्तवन—बालकृष्ण शर्मा नवीन		१.२५
खैयाम की मधुशाला	"	२.५०	गीली आँखें गीले गीत—शिवशङ्कर वशिष्ठ		३.००
निशा निमंत्रण	"	२.५०	कवितायें—कीर्ति चौधरी		३.५०
चित्ररेखा	पं. शिवसहाय पाठक	२.५०	संक्षिप्त सूरसागर— सं० प्रेमनारायण टण्डन		६.००
लहर पुकारे	नीरज	३.००	हिमांचला—रामेश्वरलाल खण्डेलवाल		२.५०
चले आ रहे हैं	गोपालप्रसाद व्यास	४.००	क्षितिज—चन्द्रप्रकाश वर्मा		१.५०
सूनी घाटी का गीत	प्रभात रंजन	२.००	सागर के सीप—भारतभूषण		३.५०
मीर तकी मीर की गजलें	ब्रजेन्द्र	२.५०	समुद्रफेन—कुँवर रमासिंह		३.००
अर्चना	महेन्द्र	२.००	सुहाग गीत—विद्यावती कोकिल		४.५०
रश्मि बन्ध	सुमित्रानन्दन पन्त	२.५०	करुण कादम्बिनी—गयाप्रसाद शुक्ल सनेही		२.००
गीत नहीं ये	शिवनाथ अरोरा	३.००	जनगीता—बच्चन		३.००
प्रेमी का उपहार	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	३.००	धूप के धान—गिरजाकुमार माथुर		३.००
नई शेर ओ शायरी	कलामेतावाँ	२.५०	नारी—अतुल कृष्ण गोस्वामी		१०.००

प्राप्ति-स्थान—साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५५ की श्रेष्ठ कवितायें—रमाकान्त 'कान्त'	४.२५
दमयन्ती (महाकाव्य) ताराचन्द हारीत	८.००
मीरा (महाकाव्य) परमेश्वरी द्विरेफ	५.००
वसन्त के फूल—विराज	४.००
रश्मिहास—आनन्दवर्धन रामचन्द्र	२.७५
कवि श्री मैथिलीशरण गुप्त	.६२
" " रामधारीसिंह दिनकर	.६२
" " भास	.६२
" " प्रसाद	.६२
" " कालिदास	.६२
" " सुमित्रानन्दन पन्त	.६२
" " महादेवी वर्मा	.६२
" " निराला	.६२
भोर के सपने—घनश्याम अस्थाना	१.५०
सारन्धा—राजेन्द्रदेव सेंगर	५.००
रामचरित्र—रघुनाथ रसाल	३.५०
सात सौ गीत—दीपक	७.००
गंजलिका—रुद्र काशिकेय	२.००
बिजली—बेढब बनारसी	२.५०
काव्य निर्णय—सं० जवाहरलाल चतुर्वेदी	१५.००
सूर्य का स्वागत—दुष्यन्तकुमार	३००
समय सुन्दर कृति कुसुमांजलि—अगरचन्द नाहटा	५.००
श्रीकृष्णचरित्र या रुक्मिणि मङ्गल—सत्यनारायण पांडेय	४.००
आंख और कविगण—जवाहरलाल चतुर्वेदी	५.००
तुलसी सूक्ति सुधा—वियोगी हरि	४.००
पद्य रत्नावली—गङ्गाप्रसादसिंह	२.००
गीत सङ्गम—रञ्जन सूरिदेव	२.५०
चन्द्र सखी उनका काव्य—पद्मावती सबनम	२.००
छेड़छाड़—हृषीकेश चतुर्वेदी	१.७५
देवार्चन—करील	५.००
रघुवंश—कलिदास	१.५०
अवकाश के क्षण—शकुन्तला सक्सैना	.७५
शृङ्गार दर्पण—नन्दराम कृत	१.००
मधुहाला—रावत हिम्मतसिंह	.७५
कौशिकी "	.७५
नेमिदूत "	.३७
महिषासुर वध "	१.५०
सती पद्मावती	५.००
अर्ध कथानक—कविवर बनारसीदास	३.००
ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह—अग० नाहटा	२.५०
कृष्णायन (द्वारिका काण्ड)—द्वारिकाप्रसाद मिश्र	३.००
रहीम रत्नावली—मायाशङ्कर	२.२५
मुक्तिका—मिलिन्द	२.००
वृन्द सतसई—श्रीकृष्ण शुक्ल	२.५०
त्रिवेणी के सङ्गम पर—वासुदेव गोस्वामी	१.२५
क्षितिज—चन्द्रप्रकाश शर्मा	१.७५
साधना—साधक	५.००
शबरी—बचनेश	१.००
काव्यादर्श—विद्याभूषण मिश्र	२.००
कोविद काव्य—श्रीनारायण चतुर्वेदी	२.३७
कदम्ब—जगमोहननाथ अवस्थी	३.००
धुएँ के धब्बे—मनोहर चतुर्वेदी	२.५०
काव्य कला निधि—सत्यजीवन वर्मा	३.५०
शैवाल—रमाशङ्कर शुक्ल	३.६०
प्रेमघन सर्वस्व-प्रभाकरेश्वरप्रसाद(२ भाग)	१६.००
अध्यात्म पदावली—पं. राजकुमार जैन	४.५०
मेरे बापू—हुकमचन्द बुखारिया	२.५०
पञ्च-प्रदीप—शान्ति एम. ए.	२.५०
स्वप्न भङ्ग—प्रभाकर माचवे	२.००
विदेशों के महाकाव्य—गोपेश	६.००
बाँसरी बज रही—जगदीश त्रिगुणायत	८.००
रसखान घनानन्द—अमीरसिंह	१.५०
सुन्दर सार—हरिनारायण शर्मा	१.५६
हिन्दी पद्य पारिजात (२ भाग)-नरोत्तमदास	२.७५
बीसलदेव रासो—जोधराज	२.५०
हम्मीर हठ—चन्द्रशेखर	०.६२
बाँकीदास ग्रंथावली-(३ भाग) पं. रामकर्ण	२.७५

प्राप्ति-स्थान—साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रजनिधि ग्रंथावली—पुरो. हरिनारायण शर्मा		३.००
रघुनाथ रूपक गीतारो—महताबचंद कामरेड		२.००
राजरूपक—सं० पं०. रामकर्ण		५.००
आराधना	निराला	२.५०
अर्चना	,,	२.५०
गीतिका	,,	१.५०
आरती	श्यामनारायण पांडेय	४.००
पञ्चप्रदीप	शान्ति एम. ए.	२.००
रहीम रत्नावली	मायाशङ्कर	२.२५
मेघमाला	श्यामबिहारी शुक्ल 'तरल'	२.५०
रामराज्य	हरीशङ्कर शर्मा	२.७५
वीर सतसई	वियोगी हरि	१.२५
विजय पथ	उदयशङ्कर भट्ट	१.२५
बरसान्त के बादल	अञ्चल	३.००
वासन्ती	सोहनलाल द्विवेदी	२.३१
वीणा ग्रंथि	पन्त	३.००
विस्मृति के फूल	भगवतीचरण वर्मा	४.००
ब्रजरज	राय कृष्णदास	०.५०
भावुक	,,	१.००
वन्दना के बोल	हरिकृष्ण प्रेमी	२.५०
रूपान्तर	श्यामनारायण पांडेय	२.००
रूप तरङ्ग	रामविलास शर्मा	२.००
मेघनाथ वध	गुप्त	६.००
संक्षिप्त सूरसागर	डा. प्रेमनारायण टण्डन	६.००
त्रिवेणी के सङ्गम पर	वासुदेव गोस्वामी	१.२५
क्षितिज	चन्द्रप्रकाश वर्मा	१.५०
हिमांचला	रघुवीरशरण मित्र	२.५०
सूदन रत्नावली	सत्यप्रिय	१.५०
सूरसागर सार	धीरेन्द्र वर्मा	४.५०
आवाज तेरी है	राजेन्द्र यादव	३.००
आषाढ़ भूति	आचार्य श्री तुलसी	२.५०
माखनलाल चतुर्वेदी	हरिकृष्ण प्रेमी	२.००
रामेश्वर शुक्ल अञ्चल	पद्मसिंह शर्मा कमलेश	२.००
सुमित्रानन्दन पन्त	बच्चन	२.००
हरिवंशराय बच्चन	चन्द्रगुप्त विद्यालंकार	२.००

साधना	साधक	५.००
सूरदास की वार्ता	प्रभुदयाल मीतल	१.५०
सूर रामचरित्र	,,	१.५०
सूर विनय पदावली	,,	१.५०
सीपी और संख	दिनकर	२.५०
नए सुभासित		१.५०
शान्तिलोक		४.००
शबरी	बच्चनेश	१.००
शृङ्गार दर्पण	नन्दराम कृत	१.००
भड़ोवा संग्रह	नकछेदी तिवारी	०.३७
रसिक विनोद	शेखर कवि	१.२५
बलभद्रकृत शिखनख		०.३७
जमाल माला	जमाल कवि	०.५०
प्रेम लतिका		०.७५
अलङ्कार दर्पण	महाराज रामसिंह	०.२५
कर्णाभरण		०.३७
अनेकार्थ नाम माला	नन्ददास	०.२५
सोमनाथ रत्नावली		१.५०
श्यामा	किशोरीलाल गुप्त	१.००
शम्पा	,,	०.७५
मेघदूत—सत्यकाम विद्यालङ्कार		२.५०
पगडण्डी	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	३.००
उर्वसी ने कहा	डा० देवराज	२.५०
देशान्तर	धर्मवीर भारती	१२.००
रूपाम्बरा	अज्ञेय	१२.५०
वेणु लो गूंजे धरा	माखनलाल चतुर्वेदी	३.००
छेड़छाड़	हृषीकेश चतुर्वेदी	१.७५
व्याकुल ब्रज—हरिऔध		०.७५
बोलचाल—	,,	६.२५
डा० इकबाल और उनकी शायरी—	हीरालाल चोपड़ा	३.५०
पर आँखें नहीं भरीं—शिवमङ्गलसिंह सुमन		३.५०
वतन के गीत—शाह नसीर फरीदी		४.००
दर्द दिया है—नीरज		४.००
मालाकार—रवीन्द्रनाथ ठाकुर		१०.००

 प्राप्ति-स्थान—साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[illegible]—शास्त्री	१.००
प्रतिच्छाया—होमवती	०.५०
बुद्ध वचन—अनु० सियारामशरण गुप्त	२.५०
विनोबा स्तवन—बालकृष्ण शर्मा नवीन	१.२५
कवि भारती—सुमित्रानन्दन पन्त	१५.००
गीले गीत—रघुवीरशरण मित्र	२.५०
उर्दू के मधुर गीत और गजलें—चाँद मोहम्मद बी. कॉम.	१.५०
ज[illegible]ारे—रघुवीरशरण मित्र	२.५०
दस्ते[illegible]वा—फैज अहमद फैज	२.५०
दीवाने जफर—बालमुकुन्द मिश्र	५.००
धूप के धान—गिरजाकुमार माथुर	३.००
नारी—अतुल कृष्ण गोस्वामी	१०.००
जय भारत—मैथिलीशरण गुप्त	७.००
धरती पर उतरो—कमलेश	२.५०
जीवन रश्मि—डॉ० देवराज	३.००
प्रसाद सङ्गीत—जयशङ्करप्रसाद	२.००
मधुकर—भगवतीचरणवर्मा	२.००
बिहारी सतसई—लाला भगवानदीन	३.१२
भ्रमर गीतसार—रामचन्द्र शुक्ल	३.००
भूमि की अनुभूति—मिलिन्द	२.५०
पद्य प्रमोद—हरिऔध	५.००
प्रतिध्वनि—रघुवीरशरण मित्र	४.००

उर्दू शायरी

गाता जाये बंजारा—साहिर लुधियानवी	२.५०
तल्खियाँ "	३.५०
विनोद और व्यंग्य—अकबर इलाहाबादी	४.००
आज के उर्दू शायर और उनकी शायरी—सं० प्रकाश पण्डित	८.००
उर्दू की सर्वश्रेष्ठ गजलें "	२.५०
फैज की गजलें—फैज	२.५०
मीर की गजलें—मीर	२.५०
जफर की गजलें—जफर	२.५०
शेर ओ शायरी— गोयलीय	८.००
शेर ओ सखुन (भाग १) "	८.००
" (भाग २) गोयलीय	३.००
" (भाग ३) "	३.००
" (भाग ४) "	३.००
" (भाग ५) "	३.००
शायरी के नए दौर (भाग १) "	३.००
" (भाग २) "	३.००
" (भाग ३) "	३.००
" (भाग ४) "	३.००
शायरी के नए मोड़ (भाग १) "	३.००
" (भाग २) "	३.००
डा० इकबाल और उनकी शायरी—इकबाल	०.६७
गालिब— जीवनी और संकलन	१.५०
मीर "	१.५०
मोमिन "	१.५०
जौक "	१.५०
दाग "	१.५०
इकबाल "	१.५०
सा[illegible]हिर लुधियानवी "	१.५०
जो[illegible] मलीहाबादी "	१.५०
म[illegible]जाज "	१.५०
फैज अहमद फैज "	१.५०
सरदार जाफरी "	१.५०
जिगर मुरादाबादी "	१.५०
हफीज जालन्धरी "	१.५०
फिराक गोरखपुरी "	१.५०
जां निसार अख्तर "	१.५०
अख्तर शीरानी "	१.५०
'चकबस्त' लखनवी "	१.५०
'फानी' बदायूनी "	१.५०
शकील बदायूनी "	१.५०
मजरूह सुलतानपुरी "	१.५०
मख्दूम "	१.५०
बहादुरशाह जफर "	१.५०
हसरत मोहानी "	१.५०
अदम "	१.५०

प्राप्ति-स्थान—साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा।

113024

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकबर इलाहाबादी	जीवनी-सङ्कलन	१.५०
दर्द	,,	१.५०
सौदा	,,	१.५०
नजीर अकबराबादी	,,	१.५०
कतील शिफाई	,,	१.५०
अहमद नदीम कासमी	,,	१.५०
जज्बी	,,	१.५०
अख्तर-उल-ईमान	,,	१.५०

उपन्यास

एक और अनेक	गुरुदत्त	६.००
छलना	,,	६.००
धरती और धन	,,	६.००
नगर परिमोहन	,,	५.५०
अवतरण	,,	६.००
दिग्विजय	,,	६.००
दासता के नए रूप	,,	६.००
लुढ़कते पत्थर	,,	५.५०
देश की हत्या	,,	५.५०
भावुकता का मूल्य	,,	६.००
मायाजाल	,,	५.००
पत्रलता	,,	७.००
जन प्रवाह	,,	८.००
विवेक	,,	६.००
विकृत छाया	,,	४.५०
उमड़ती घटाएँ	,,	६.००
बहती रेता	,,	५.००
विश्वासघात	,,	५.५०
विडम्बना	,,	६.००
प्रवञ्चना	,,	५.००
वाम मार्ग	,,	७.००
विलोमगति	,,	५.००
गुण्ठन	,,	५.००
मानव	,,	५.००
आवरण	,,	५.००
सहस्रबाहु	,,	६.००

कला	गुरुदत्त	५.००
संस्खलन	,,	६.००
पुष्यमित्र	,,	३.७५
जीवन ज्वार	,,	७.००
स्नेह का मूल्य	,,	२.५०
झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई	वृन्दावनलाल वर्मा	६.००
माधवजी सिन्धिया	,,	६.००
मृगनयनी	,,	५.००
अमरबेल	,,	५.५०
कचनार	,,	४.५०
भुवन विक्रम	,,	३.५०
टूटे काँटे	,,	४.२५
गढ़ कुण्डार	,,	७.००
विराटा की पद्मिनी	,,	४.००
सोना	,,	३.००
अचल मेरा कोई	,,	२.७५
अहिल्याबाई	,,	२.७५
कुण्डली चक्र	,,	३.००
लगन	,,	२.००
प्रेम की भेंट	,,	१.२५
प्रत्यागत	,,	१.२५
मुसाहिब जू	,,	१.२५
कभी न कभी	,,	२.५०
राजाधिराज	कन्हैयालाल माणिकलाल मु०	६.००
गुजरात के नाथ	,,	६.००
पाटन का प्रभुत्व	,,	४.५०
जय सोमनाथ	,,	५.५०
भगवान परशुराम	,,	७.००
लोमहर्षिणी	,,	४.००
लोपामुद्रा	,,	५.५०
किसका अपराध	,,	३.००
प्रतिशोध	,,	५.५०
भग्न पादुका	,,	४.००
बीती बात	,,	२.००
स्वप्न द्रष्टा	,,	५.००

 प्राप्ति-स्थान—साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परदे की आड़ में	क० मा० मुन्शी	२.००
अतीत के स्वप्न	,,	४.००
गौरव का प्रतीक	,,	४.५०
अभिशाप—	,,	५.५०
पृथ्वी वल्लभ—	,,	३.००
भगवान कौटिल्य—	,,	३.००
शिशु और सखी—	,,	२.००
रवीन्द्र साहित्य (२७ भागों में)—	रवीन्द्रनाथ टैगोर	प्रत्येक २.२५
आँख की किरकिरी—	,,	४.००
गोरा—	,,	६.००
नाव दुर्घटना—	,,	४.००
छिन्न पत्र—	,,	३.५०
चाँद सितारे—	,,	२.५०
कौन किसी का—	,,	२.२५
त्याग का मूल्य—	,,	४.००
ठकुरानी बहू का बाजार—		२.००
तीन साथी—	,,	२.५०
घर और बाहर—	,,	३.००
माली—	,,	२.००
दो बहिनें—	,,	३.७५
उपवन—	,,	२.००
दृष्टिदान—	,,	२.००
कुमुदिनी—	,,	४.००
उजड़ा घर—	,,	१.५०
चारुलता—	,,	१.५०
महामाया—	,,	२.००
अन्तिम कविता—	,,	२.००
नष्ट नीड़—	,,	२.००
काबुली वाला—	,,	२.००
दुर्भाग्य चक्र—	,,	२.००
मणिहीन—	,,	२.००
रक्त करबी—	,,	२.००
चार अध्याय—	,,	१.५०
योगायोग—	,,	४.००

मिलन—	टैगोर	३.००
मित्र के नाम पत्र—		३.५०
राजर्षि—	,,	३.५०
पराया—	,,	२.५०
अपनी दुनियाँ—	,,	२.००
आनन्द मठ—	बङ्किमचन्द्र चटर्जी	२.००
दुर्गेशनन्दिनी	,,	२.००
कपाल कुण्डला	,,	२.००
विष वृक्ष	,,	२.००
राधा रानी	,,	१.२५
सीताराम	,,	२.००
मृणालिनी	,,	२.००
रजनी	,,	१.७५
इन्दिरा	,,	१.५०
चन्द्रशेखर	,,	२.००
कृष्णकान्त का वसीयतनामा		२.००
कमलाकान्त का पोथा	,,	२.००
लोक रहस्य	,,	२.६०
राजसिंह	,,	२.००
देवी चौधरानी	,,	२.००
गोदान—	प्रेमचन्द	६.००
गोदान (संक्षिप्त)	,,	५.००
रङ्गभूमि	,,	११.००
प्रेमाश्रम	,,	६.००
सेवा सदन	,,	४.००
कर्मभूमि	,,	६.००
आजाद कथा	,,	१२.००
कायाकल्प	,,	६.००
गबन	,,	५.००
निर्मला	,,	२.५०
प्रतिज्ञा	,,	२.५०
कंकाल	जयशंकर प्रसाद	५.००
तितली	,,	४.००
शरारती	,,	१.५०

प्राप्ति-स्थान—साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वरदान—	प्रेमचन्द	२.५०	छोटा भाई	शरतचन्द्र	१.२५
मनोरमा—	,,	३.००	परिणीता	,,	१.५०
अहंकार	,,	२.५०	चन्द्रनाथ	,,	२.००
मंगल सूत्र	,,	२.००	देहाती समाज	,,	२.००
सुखदास	,,	१.००	लेनदेन	,,	३.५०
टेढ़े मेढ़े रास्ते	भगवतीचरण वर्मा	८.००	दत्ता	,,	१.५०
भूले बिसरे-चित्र	,,	११.००	काशीनाथ	,,	१.५०
अपने खिलौने	,,	३.५०	विप्रदास	,,	३.००
आखिरी दाँव	,,	३.५०	शुभदा	,,	३.००
चित्र लेखा	,,	३.००	शेष प्रश्न	,,	४.००
तीन वर्ष	,,	३.५०	देहाती दुनिया	,,	१.५०
पतन	,,	४.००	ब्राह्मण की बेटी	,,	१.५०
सूनी राह	भगवतीप्रसाद बाजपेयी	३.७८	विजया	,,	३.००
मनुष्य और देवता	,,	३.५०	पथ के दावेदार	,,	४.०१
पतिता का साधना	,,	२.५०	सविता	,,	४.००
पतवार	,,	५.००	वैरागी	,,	३.००
उनसे न कहना	,,	५.००	छुटकारा	,,	१.२५
दो बहनें	,,	३.००	दर्पपूर्ण	,,	१.२५
रात और प्रभात	,,	३.५०	वैकुण्ठ का वसीयतनामा	,,	१.५०
विश्वास का बल	,,	५.५०	सती	,,	२.००
चलते चलते	,,	६.००	विलासी	,,	२.००
विसर्जन	,,	२.००	अभागी का स्वर्ग	,,	२.००
गुप्त धन	,,	२.००	शरत् साहित्य ३९ भागों में	,,	प्रत्येक १.००
यथार्थ से आगे	,,	५.५०	सोना और खून ३ भाग—		
निमन्त्रण	,,	३.००		आचार्य चतुरसेन शास्त्री	२२.००
खाली बोतल	,,	२.५०	वैशाली की नगर वधू २ भाग—	,,	४.००
चरित्र हीन	शरतचन्द्र	५.५०	वयंरक्षामः	,,	१६.००
मंझली दीदी	,,	१.५०	आत्म दाह	,,	४.५०
बड़ी दीदी	,,	१.५०	गोली	,,	६.५०
श्री कान्त	,,	६.००	बगुला के पङ्ख	,,	४.७५
ग्रह दाह	,,	४.००	सोमनाथ	,,	८.००
छोटी मां	,,	१.२५	उदयास्त	,,	४.००
विराज वहू	,,	२.००	खग्रास	,,	६.५०
अनुराधा	,,	१.२५	सह्याद्रि की चट्टानें	,,	३.००
देवदास	,,	२.००	नीलमणि	,,	२.००

 प्राप्ति-स्थान—साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय आन्दोलन का नया चरण

राष्ट्र, देश, समाज और व्यक्ति के शैक्षणिक, मानसिक, सामाजिक एवं बौद्धिक उन्नयन के लिए पुस्तकालय की उपयोगिता और अनिवार्यता सन्देह से परे है। यही कारण है कि सभी देश और सभी काल में सभ्य कहे जाने वाले सभी लोग अपनी परिस्थिति एवं सामर्थ्य के अनुसार पुस्तकालयों के संस्थापन-संचालन, विकास-संवर्धन एवं उत्थान-उन्नयन की दिशा में प्रयत्नशील रहे हैं।

पुस्तकालयों की इसी उपयोगिता और व्यापकता के आधार पर अन्यान्य स्वस्थ एवं कल्याणकारी आन्दोलनों की भाँति इनसे भी सम्बन्धित मनुष्य को सारे कार्य-कलापों प्रयत्नों-प्रचेष्टाओं को आन्दोलन की संज्ञा से अगर अभिहित किया जाता है, तो इसमें क्या आश्चर्य ?

पुस्तकालय-आन्दोलन, जो आज इतना प्रचलित व्यापक, बहुश्रुत और सार्वजनिक उच्चारण एवं अनुचिंतन का विषय बना हुआ है, वह इस कारण से नहीं कि राकेट, टेलीविजन आदि वैज्ञानिक उपादानों की भाँति यह भी कोई अत्याधुनिक वस्तु अथवा सामयिक कल्पना है, बल्कि इस कारण से कि इसकी जड़ें सुदूर काल रूपी धरती में गहरी जमी हैं। जिन दिनों मानव सभ्यता के पहले-दूसरे चरण पर था, उन्हीं दिनों मानस में पुस्तकालय-चेतना की लोल-लहरियाँ हिलोरें लेने लगी थीं और वह तत्कालीन सीमित सुविधाओं एवं साधनों के द्वारा पुस्तकालयों के रूप खड़ा करने लग गया था। कहना न होगा कि उसका प्रारम्भिक स्थिति वाला पुस्तकालय कितना अधूरा था, उसकी व्यवस्थाएँ कितनी त्रुटिपूर्ण थीं, उसकी पाठ्य-सामग्रियाँ इतनी अपर्याप्त थीं और उसकी सेवा-विधि कितनी असन्तोष-जनक थी। फिर भी मानव के मस्तिष्क में पुस्तकालय की उपयोगिता की सूझ का दीपक जलना, जलकर दूसरों को प्रकाशित पथ-प्रदर्शित करना ही कितनी गौरव-गरिमा की कल्पना और बात थी, इसका हम सहज में ही अनुमान कर सकते हैं। बड़े-बड़े अनुसंधातों, खोज, गवेषणा, इतिहासकारों के तथ्य, पुरातात्विक दृष्टि से हुए साहसिकतापूर्ण कार्य, विदेशी यात्रियों के भ्रमण-वृत्तान्त एवं अन्यान्य विश्वसनीय सूत्र हमारे इस कथन के आधार हैं। अन्य देशों की बात यदि हम छोड़ भी दें, तो भी अपने देश के नालन्दा, तक्षशिला, विक्रमशिला, उदन्तपुरी जैसे विद्या के अन्यतम केन्द्रों की अवस्थिति ही हमारे उक्त कथन के समर्थन के लिए पर्याप्त है। नालन्दा का प्राचीन समृद्ध पुस्तकालय जगत्-प्रसिद्ध था। पर उत्कर्ष और अपकर्ष, उत्थान और पतन तथा विकास और विनाश की आँख-मिचौनी में हमारे वैभव के अन्यान्य स्वरूपों की भाँति हमारे ज्ञान-मन्दिरों की ज्योति भी एक दिन सहसा निर्वापित कर दी गई। दुष्परिणाम-स्वरूप हमारा सारा देश निविड़ अन्धकार में भटकने लगा। सदियों तक हमारा देश पराधीनता के पाश में आबद्ध रहा। बीच-बीच में अपने पूर्व-संस्कार, आत्म-विवेक और अपने महापुरुषों के आर्ष उपदेशों के कारण जब-जब हममें चेतना की ज्योति जलती, तब-तब हम ग्रन्थागार रूपी ज्ञान-गंगा में अवगाहन करने के लिए आतुर-व्याकुल हो मचल पड़ते।

पुस्तकालयों की अपनी पुरानी परम्परा की पुनरुत्थापना के लिए प्रयास करने पर परिस्थितियों के सर्वथा प्रतिकूल रहने पर भी हम अपने यहाँ पुस्तकालय-आन्दोलन प्रवाह को प्रवाहित कर सकने में पूर्णकाम हुए, और जिन दिनों हमारे देश पर विदेशी हुकूमत थी उन दिनों ही पुस्तकालय-आन्दोलन-अभियान में हम निकल पड़े और देश में अनेक अच्छे-अच्छे पुस्तकालयों के संस्थापन-संचालन के द्वारा हम जन-साधारण की अपेक्षित ढङ्ग से सेवा करने में लग गए। हम अभी निवेदन कर चुके हैं कि परिस्थितियाँ सोलहो आने हमारे अनुकूल नहीं थीं, अतएव हम चाहकर भी बहुत-कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर सकने में समर्थ नहीं हो सके। क्या करते ? हमारी ऐसी ही लाचारी थी, विवशता और असमर्थता था। यही वजह है कि हमारे उत्कर्ष के दिनों में विश्व के मानचित्र पर जिन देशों का हमारे सामने कोई महत्त्वपूर्ण अस्तित्व नहीं था, वे देश पुस्तकालयों की दिशा में हमसे बाजी मारते हुए दिखाई देने लगे। पुस्तकालय-महत्त्व की दृष्टि से विश्व में प्रथम-द्वितीय आदि स्थान के अधिकारी होने लग गए।

अन्त में फिर चिर-परिचित स्वतन्त्रता का अपने देश में सर्वोदय हुआ। अपनी धरती अपना राज। अपनी इच्छा और अपने ढङ्ग से उसकी पूर्ति करने की स्वाधीनता। अन्य सभी क्षेत्रों की भाँति पुस्तकालयों के क्षेत्र में भी हमारे कदम तेजी से बढ़ चले। स्वतन्त्रता ने देश के पुस्तकालय-आन्दोलन को नया मोड़ दिया, अभूतपूर्व चेतना दी और दिया द्रुतगति से विकसित होने का अनूठा स्वर्ण सुअवसर। एक-एक गाँव से लेकर अखिल भारतीय पैमाने पर बनने और कार्यान्वित होने वाली हमारी राष्ट्रीय, सरकारी एवं गैर-सरकारी छोटी बड़ी सभी योजनाओं में पुस्तकालयों को उचित स्थान दिया जाने लगा। हमारी प्रथम पंचवर्षीय योजना में हमारा पुस्तकालय-आन्दोलन काफी आगे बढ़ा, द्वितीय योजना में और भी आगे बढ़ता जा रहा है और तृतीय चतुर्थ योजनाओं में बढ़ता ही रहेगा यह उत्तरोत्तर।

हमारी प्रथम पंचवर्षीय योजना में इसके लिए काफी रुपयों का प्रावधान था और द्वितीय योजना में १४० लाख रुपयों का प्रबन्ध है। ऐसी योजना है कि अपने देश की राजधानी में एक राष्ट्रीय केन्द्रीय पुस्तकालय, विभिन्न राज्यों में राज्य केन्द्रीय पुस्तकालय, देश के पूरे ३२० जिलों में एक-एक जिला केन्द्रीय पुस्तकालय और समस्त सब-डिवीजनों में एक-एक राजकीय केन्द्रीय सब-डिवीजनल पुस्तकालय हों, जो पुस्तकों के आपसी आदान-प्रदान तथा चल पुस्तकालय द्वारा ग्रामीणों को भी पुस्तकालय-सेवा प्रदान कर सकें। इनमें से अब तक बहुतेरे कार्य-सम्पन्न हो चुके हैं। कलकत्ता की इम्पीरियल लाइब्रेरी को राष्ट्रीय पुस्तकालय का नाम देकर सरकारी प्रबन्ध में लिया जा चुका है। पुस्तक वितरण अधिनियम १९५४ के द्वारा देश के कई पुस्तकालयों में देश के सभी प्रकाशनों की प्रतियाँ निःशुल्क भेजने की व्यवस्था हो चुकी है, जिनमें राष्ट्रीय पुस्तकालय कलकत्ता, सेन्ट्रल पब्लिक लाइब्रेरी बम्बई, कोनेमरा सार्वजनिक पुस्तकालय मद्रास और राष्ट्रीय केन्द्रीय पुस्तकालय दिल्ली के नाम घोषित किए जा चुके हैं।

विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं संस्थाओं द्वारा पुस्तकालय-विज्ञान की प्रारम्भिक से लेकर उच्चतम शिक्षा, राष्ट्रीय पुस्तक प्रन्यास द्वारा सरल भाषा में स्वस्थ एवं उपयोगी साहित्य का प्रकाशन, देश के सुप्रतिष्ठित पुस्तकाध्यक्षों को पुस्तकालय-विस्तार सम्बन्धी योजनाओं, कमेटियों आदि की सदस्यता उच्चतम उपाधि, वेतन-मान एवं विदेशों में भ्रमण एवं अध्ययन की सहूलियतें देश के सभी पुस्तकालय संघों को मान्यता देकर उनके साथ मिलकर कार्य करना तथा उनके सुझावों की कदर करना, देश में पुस्तकालय अधिनियम 'चालू करने की दिशा में सक्रियता, कई राज्यों में स्वतन्त्र सरकारी पुस्तकालय विभाग की स्थापना करके छोटे-बड़े सभी पुस्तकालयों की आवर्त्तक, अनावर्त्तक तथा विशेष सामान्य अनुदान का प्रबन्ध केन्द्रीय एवं राज्य सरकारों द्वारा विभिन्न विभागीय विशेषतः टेकनिकल पुस्तकालयों की स्थापना, यूनेस्को जैसी संस्थाओं से सम्पर्क-स्थापन, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय पुस्तकालयों के विकास कार्य, समय-समय पर पुस्तकालय-विचार-गोष्ठी पुस्तक एवं जैकेट-प्रदर्शनी का आयोजन, पुस्तकालय परामर्शदातृ समिति द्वारा प्रस्तुत अभिस्तावों का क्रियान्वयन, राष्ट्रीय विकास-सेवा खण्ड आदि के माध्यमों से हमारी राष्ट्रीय सरकार पुस्तकालय-आंदोलन को काफी प्रोत्साहन दे रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हृदय की प्यास	चतुरसेन शास्त्री	३.७५	रत्ना की बात	रांगेय राघव	३.००
रक्त की प्यास	"	२.५०	भारती का सपूत	"	३.००
हृदय की परख	"	३.००	अंधेरा रास्ता	"	१२.००
अदल बदल	"	२.२५	पराजित—	कमल शुक्ल	४.५०
खवास का विवाह	"	३.००	पथ से दूर	"	२.२५
देवाङ्गना	"	२.५०	राख की परतें	"	३.२५
अपराजिता	"	२.००	धरती की बेटी	"	३.२५
लालकरब	"	१.२५	जिन्दगी एक दाव	"	४.५०
पूर्णाहुति	"	३.००	मौलश्री	"	६.००
पीर नाबालिग	"	१.२५	राग और त्याग	"	५.००
लम्बसीव	"	१.२५	काले नगर में	"	२.००
दो किनारे	"	३.५०	इन्सान जाग उठा	"	२.५०
नरमेध	"	३.५०	देवता	"	२ ००
मुर्दों का टीला—डॉ० रांगेयराघव		७.५०	धूल के बादल	"	४.००
सीधा साधा रास्ता	"	६.५०	गुंजन	"	१.५०
अंधेरे की भूख	"	३.००	कोई कुछ कह गया	"	२.००
बोलते खण्डहर	"	३.००	डगरोही	"	४.००
[illegible]वाल	"	२.००	काले नगर में	"	२.५०
कबतक पुकारूँ	"	८.००	कुश और कन्या	"	२.५०
राई और पर्वत	"	३.००	शिल्पी	"	४.००
पक्षी और आकाश	"	४.००	छलाँग	शौकत थानवी	२.००
राह न कभी	"	३.००	मिर्जाबुकारात	"	२.३७
पराया	"	२.५०	नीलोफर	"	६.५०
चीवर	"	५.००	दामाद	"	२.००
विषाद मठ	"	३.५०	बकवास	"	४.२५
साम्राज्य का वैभव	"	२.००	मीर साहब की ईद	"	३.००
प्रतिदान	"	३.५०	चार सौ बीस	"	३.२५
बौने और घायल फूल	"	३.००	कार्टून	"	४.२५
बन्दूक और बीन	"	३.५०	कुतिया	"	४.२५
मेरी भव बाधा हरो	"	३.००	इन्शाअल्लाह	"	३.००
धूनी का धूआँ	"	३.००	नसीम	"	३.५०
जब आवेगी काल घटा	"	३.५०	गजाला	"	३.५५
लखमा की आँखें	"	३.००	साँच को आँच	"	३.२५
देवकी का बेटा	"	३.००	नीलकण्ठ	गुलशन नन्दा	६.००
यशोधरा जीत गई	"	३.५०	एक नदी दो घाट	"	४.२५
लोई का ताना	"	३.००	रूपमती	"	४.००

प्राप्ति-स्थान—साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माधवी	गुलशन नन्दा	४.५०
पत्थर के होंठ	,,	३.७५
राख और अङ्गारे	,,	३.२५
सूखे पेड़ सब्ज पत्ते	,,	५.००
घाट का पत्थर	,,	४.५०
सितारों से आगे	,,	३.००
गेलार्ड	,,	५.००
जलती चट्टान	,,	३.५०
नष्ट नीड़—	उषादेवी मित्रा	४.५०
जीवन की मुस्कान	,,	४.००
वचन का मोल	,,	३.००
सोहिनी	,,	३.००
प्रिया	,,	४.५०
पथचारी	,,	२.५०
ललिता—	यज्ञदत्त शर्मा	३.००
बदलती राहें	,,	३.००
झुनियाँ की शादी	,,	३.००
महल और मकान	,,	३.००
चौथा रास्ता	,,	६.००
भारत सेवक	,,	५.५०
दबदबा	,,	१.००
दीवान रामदयाल	,,	६.००
इन्सान	,,	४.००
अन्तिम चरण	,,	७.५०
बाप बेटी	,,	४.००
निर्माण पथ	,,	४.००
पतिता	,,	३.००
मधु	,,	३.००
परिकर	,,	५.००
इन्साफ	,,	३.००
धन्यभिक्षु	आरिगपूडि	३.७५
अपिवाद	,,	४,५०
पतितपावनी	,,	३.५०
अपनी करनी	,,	२.००
अपने पराये	,,	२.५०
मुद्राहीन	आरिगपूडि	५.५०
भूले भटके	,,	३.००
खरे खोटे	,,	५.००
आदरणीय	,,	४.००
दूर के ढोल	,,	४.००
जीवनदान	श्रीराम शर्मा 'राम'	३.००
रास्ते के मोड़	,,	५.५०
नींव का पत्थर	,,	४.००
धरती के आँसू	,,	३.७५
टेढ़ी मेढ़ी दीवारें	,,	४.००
चित्रकार	,,	४.००
जिन्दगी की राहें	,,	४.००
कल्पना के आँसू	,,	४.५०
आँधी	,,	२.५०
काँटे	,,	४.००
धूपलता	इलाचन्द्र जोशी	३.००
जहाज का पंछी	,,	७.५०
संन्यासी	,,	६.००
निर्वासित	,,	५.००
पर्दे की रानी	,,	२.५०
जिप्सी	,,	८.००
लज्जा	,,	२.००
प्रेत और छाया	,,	४.५०
मुक्ति पथ	,,	६.००
सुबह के भूले	,,	५.००
सितारों के खेल	उपेन्द्रनाथ अश्क	३.५०
बड़ी बड़ी आँखें	,,	३.७५
गिरती दीवारें	,,	११.००
ये आदमी ये चूहे	,,	३.००
चेतन	,,	६.७५
गर्म राख	,,	८.००
मण्टो मेरा दुश्मन	,,	६.००
झूठ सच भाग १	यशपाल	११.००
,, भाग २	,,	१४.००
फसल	,,	६.००
चलनी में अमृत	,,	४.५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनानी ड्योढ़ी	यशपाल	७.५०
दादा कामरेड	,,	३.००
दिव्या	,,	५.००
देशद्रोही	,,	६.००
मनुष्य के रूप	,,	६.५०
पक्का कदम	,,	५.००
पार्टी कामरेड	,,	२.५०
राह बीती	,,	३.५०
अमिता	,,	५.००
गुनाहों का देवता	धर्मवीर भारती	५.००
सूरज का सातवाँ घोड़ा	,,	३.००
चाँद और टूटे हुये लोक	,,	३.५०
तन के उजले मन के काले	जमनादास अख्तर	३.५०
बारामूला	,,	४.२५
ओस और अंगारे	,,	४.००
काश्मीर की बेटी	,,	३.२५
आग	,,	२.५०
बुर्दा फरोश	,,	२.२५
फाँसी की कोठरी से	,,	४.००
पायल	,,	५.००
आँसू	,,	३.५०
मिट्टी का कलङ्क	यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'	२.००
आँचल में दूध आखों में पानी	,,	५.००
पथहीन	,,	३.००
युग देवता	,,	४.००
पथ की वंशी	,,	२.२५
प्यास के पङ्ख	,,	२.००
सपना	,,	४.००
शहनाई और सिन्दूर	,,	२.००
प्रोफेसर	,,	४.५०
इत्वर	,,	२.५०
अनावृत	,,	४.००
धरती की पीर	,,	४.००
तूफान की कलियाँ	कृष्णचन्द्र	६.००
एक गधे की आत्मकथा	,,	३.००
उलटा वृक्ष	,,	३.००
पराजय	कृष्णचन्द्र	४.५०
बादल छट गये	,,	३.००
रेत का महल	,,	४.५०
जब खेत जागे	,,	२.७५
स्वराज्य के पचास वर्ष बाद	,,	३.००
डूबती नजरें	,,	३.२५
मल्ल मल्लिका	यादवचन्द्र जैन	३.५०
अंधेरा सवेरा	,,	४.००
मन के हारे हार	,,	४.५०
उत्तरा पथ	,,	३.५०
असीम की सीमा	,,	३.००
ललिताङ्गी	,,	३.५०
पत्थर पानी	,,	८.००
एक कली मुस्काने को मुरझाई सारी रात		३.७५
मार्ग के काँटे	,,	२.७५
बहती बयार	,,	२.००
मृगजल	अनन्तगोपाल शेवड़े	५.००
निशागीत	,,	३.००
ज्वालामुखी	,,	४.५०
तीसरी भूख (स्केच)	,,	२.५०
परती परिकथा	फणीश्वरनाथ रेणु	७.५०
मैला आँचल	,,	६.५०
नीलम	कुशवाहा कान्त	५.५०
लवङ्ग	,,	४.००
भँवरा	,,	३.५०
मंजिल	,,	४.००
आहुति	,,	३.५०
चूड़ियाँ	,,	४.५०
जलन	,,	२.५०
निर्मोही	,,	४.००
इशारा	,,	२.५०
अकेला	,,	२.७५
बसेरा	,,	३.५०
मद और नयना	,,	५.००
पागल	,,	२.५०
कुंकुम	,,	३.००

प्राप्ति स्थान—साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्रोही सुभाष	कुशवाहा कान्त	५.५०	रजनीगंधा	अनीता चट्टोपाध्याय	३.५०
नागिन	,,	४.००	छोटी चाची	,,	३.५०
परदेशी भाग १	,,	२.७५	समिधा	,,	४.००
,, भाग २	,,	२.७५	पाथेय	,,	३.५०
पराजित	,,	२.५०	बीज	अमृतराय	७.००
पपीहरा	,,	४.००	पाँचवाँ दस्ता	अमृतलाल नागर	१.००
पारस	,,	३.५०	गद्यकाव्य	,,	३.००
लाल रेखा	,,	३.५०	सेठ बाँकेमल	,,	१.५०
उड़ते उड़ते	,,	२.५०	चढ़ती धूप	श्री अञ्चल	४.००
ओस और आँसू	प्यारेलाल आवारा	४.००	नई इमारत	,,	४.५०
रोते नैना	,,	२.५०	मरु प्रदीप	,,	३.५०
अमावस	,,	२.००	उल्का	,,	४.५०
तिनके	,,	२.५०	लेफ्टीनेन्ट	अजीमबेग चगताई	१.५०
मोह माया	,,	३.५०	वैश्वानर	,,	१.५०
मन के मीत	,,	३.००	कोलतार	,,	२.५०
स्वप्न और सत्य	,,	१.५०	तीन शलभ एक ज्योति	,,	२.००
आग लगी है	,,	२.५०	फुलबूट	,,	१.५०
मदहोश	,,	२.००	नदी के द्वीप	श्री अज्ञेय	७.००
जागीरदार	,,	२.००	कन्ट्रोल	अरुण बी० ए०	२.००
भोर का तारा	,,	३.००	काल के पंख	आनन्दप्रकाश जैन	३.००
छलिया	,,	२.००	आग और फूँस	,,	४.५०
हम सफर	,,	२.२५	अपराधी कौन	इन्द्र विद्यावाचस्पति	५.००
पगडण्डी	,,	४.००	शाहआलम की आँखें	,,	४.००
अँगड़ाई	,,	४.००	आत्म बलिदान	,,	३.००
खण्डहर	,,	३.७५	एक नीड़ दो पंछी	उदयशङ्कर भट्ट	८.००
पायल	,,	३.५०	डा० शैवाली (नये मोड़)	,,	३.५०
धड़कन	,,	३.५०	सागर लहरें और मनुष्य	,,	५.००
मुमताज	,,	३.५०	त्रिवेणी	कञ्चनलता सब्बरवाल	५.००
सूखे पत्ते	,,	५.००	भटकती आत्मा	,,	३.५०
चितवन	,,	३.२५	स्वतन्त्रता की ओर	,,	३.००
१६ अगस्त	,,	३.००	मूक तपस्वी	,,	४.००
पीली कोठी	,,	३.२५	सङ्कल्प	,,	४.००
बदरी की रात	,,	२.५०	सप्त विज्ञान	,,	६.००
अनारकली	,,	२.७५	पुनरुद्धार	,,	३.००
कल्याण पथ	के० एम० पणिक्कर	४.००	वीर कुणाल	किशोर साहू	४.००
संघर्ष	,,	३.००	अन्धा इन्सान	ख्वाजा अहमद अब्बास	२.५०

प्राप्ति-स्थान—साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुख की खोज	श्री खांडेकर	४.५०	घिनोने	गोविन्दसिंह	२.००
उल्का	,,	६.००	निशानी	,,	२.५०
दो ध्रुव	,,	६.००	काली घटा	,,	२.५०
हरा चंप्पा	,,	६.००	मकड़ी का जाल	,,	३.५०
दो गज	,,	६.००	तारों भरी रात	,,	२.५०
सूना मन्दिर	,,	४.५०	काजल	,,	३.५०
पहला प्रेम	,,	४.५०	सपने की रानी	,,	२.५०
झुलसी मंजरी	,,	५.००	चौरंगी	,,	३.५०
रुपहले बादल	,,	६.००	कागज के फूल	,,	३.५०
क्रौंच वध	,,	६.००	आशियाना	,,	२.६०
आँसू	,,	६.००	ललकार	,,	३.५०
विद्रोह	गिरिजादत्त शुक्ल गिरीश	२.२५	साँवरिया	,,	३.००
नूरजहाँ	गोविन्दवल्लभ पन्त	५.००	आवारा	,,	३.००
जल समाधि	,,	४.००	विषकन्या	,,	२.५०
प्रगति की राह	,,	४.५०	जयवर्द्धन	जैनेन्द्रकुमार	६.००
प्रतिमा	,,	२.७५	तपोभूमि	,,	५.००
अमिताभ	,,	५.५०	परख	,,	१.५०
मुक्ति के बदले	,,	४.००	व्यतीत	,,	३.५०
चन्द्रकान्त	,,	३.००	विवर्त	,,	४.२५
एक सूत्र	,,	४.००	सुखदा	,,	४.००
तारिका	,,	३.५०	त्यागपत्र	,,	१.२५
मदारी	,,	५.००	सुनीता	,,	२.५०
यामिनी	,,	४.५०	कल्याणी	,,	२.००
धब्बे	गोविन्दसिंह	२.५०	वातायन	,,	२.५०
काहे जिया डोले	,,	२.००	रथ के पहिये	देवेन्द्र सत्यार्थी	५.००
मुरझाये फूल	,,	२.००	ब्रह्म पुत्र	,,	७.००
गुनहगार	,,	३.००	कठ पुतली	,,	६.००
अमावस का काँच	,,	२.५०	दूध गाछ	,,	६.००
वार्ड नं० ४	,,	२.००	युद्ध और शान्ति—	टालस्टाय	६.००
बदनाम	,,	३.००	पुनर्जीवन	,,	६.५०
पायल बाजत रहें	,,	२.५०	अन्ना केरिनिना	,,	३.००
रात हो गई	,,	२.५०	कज्जाक	,,	३.००
लावारिश	,,	२.५०	सेविस्तोपोल का घेरा	,,	[illegible]
साँवरा	,,	२.२५	क्रान्तिकारी रमणी—तीर्थरामफिरोजपुरी		४.५०
पपीहा बोले आधी रात	,,	२.५०	शैतान पुजारी	,,	२.[illegible]०
सहारा	,,	२.५०	विजय किसकी	,,	४.००

प्राप्ति स्थान—साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धरती माता—	ताराशंकर वंद्योपाध्याय	५.००
राजकमल	,,	२.००
कालिन्द्री	,,	५.००
कवि	,,	४.००
नीलम की अँगूठी	,,	४.००
आरोग्य निकेतन	,,	६.००
भद्रलोक का नीड़—	श्री तुर्गनेव	४.००
बाप बेटे	,,	४.००
कुलीन घराना	,,	३.००
पिता पुत्र	,,	४.००
कुआँरी धरती	,,	६.५०
मेरा पहला प्यार	,,	२.५०
कज़्ज़ाक	,,	३.००
कबिन	,,	३.००
मञ्जिल से पहले	,,	३.००
पाथेय—	दयाशंकर मिश्र	३.५०
रजनो गंधा	,,	३.५०
छोटी चाची	,,	३.५०
छोटी बहू	,,	३.५०
भीनी	,,	४.५०
सीप के मोती	,,	५.००
दीपदान	,,	३.००
बुझते दीप	,,	३.००
कोठी की बात	,,	२.५०
प्रतिशोध—	दुर्गाप्रसाद खत्री	१.५०
लाल पंजा	,,	२.००
रक्षा मण्डल	,,	६.००
सफेद शैतान	,,	६.००
सुर्ख रेखा	,,	२.००
स्वर्णपुरी	,,	१.५०
सागर सम्राट	,,	२.००
साकेत	,,	२.००
काला चोर	,,	२.००
बलिदान	,,	२.५०
कलङ्क कालिमा	,,	१.५०
संसार चक्र	,,	१.००
माया	दुर्गाप्रसाद खत्री	२.००
रतिनाथ की चाची—	नागार्जुन	२.५०
बलचनमा	,,	३.००
नई पौध	,,	२.५०
मृगधारा	,,	३.००
बाबा बटेश्वरनाथ	,,	२.००
दुःख मोचन	,,	३.००
मर्यादा पुरुषोत्तम राम	,,	३.००
रूप और रहस्य—	आचार्य क्षेमेन्द्र	२.५०
तैमूर	,,	२.५०
रजिया	,,	१.५०
विश्वमित्र	,,	२.५०
बाहर-भीतर—	डा० देवराज	२.००
रोढ़े और पत्थर	,,	२.५०
चन्द्रकान्ता—	देवकीनन्दन खत्री	१.७५
चन्द्रकान्ता संतति (छः भागों में)	,,	१८.००
भूतनाथ (सात भागों में	,,	२१)
काजर की कोठरी	,,	१.५०
रोहतास वध	,,	३.००
फूल और पतझर—	श्री नरोत्तम नागर	७.००
अङ्गारे	,,	२.५०
रजिया की बेटी	,,	७.००
विसर्जन—	प्रतापनारायण श्रीवास्तव	६.००
विषमुखी	,,	५.००
बेकसी का मजार	,,	१०.००
विदा	,,	६.००
बयालीस	,,	४.००
विकास (२ भागों में)	,,	८.००
पाप की ओर	,,	३.००
द्वाभा—	प्रभाकर माचवे	२.००
साँच	,,	२.५०
एक था राजा—	मुल्कराजआनन्द	७.५०
कुली	,,	६.००
अछूत	,,	१.५०
बुधिया की गाय	,,	५.५०
वैवस्वतमनु और श्रद्धा	,,	३.००

प्राप्ति-स्थान —साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शराबी—	बेचन शर्मा पांडे 'उग्र'	३.७५
कढ़ी में कोयला	,,	३.५०
कला का पुरस्कार	,,	२.५०
सरकार तुम्हारी आँखों में	,,	२.५०
मनुष्यानन्द	,,	४.००
चाकलेट	,,	३.५०
फागुन के दिन चार	,,	५.५०
जिच—	मन्मथनाथ गुप्त	१.२५
जय यात्रा	,,	१.५०
सुधार	,,	१.५०
गृह युद्ध	,,	३.२५
अवसान	,,	३.००
अन्धेर नगरी	,,	३.००
दो दुनियाँ	,,	४.००
चक्की	,,	३.५०
रक्षक भक्षक	,,	२.००
बलि का बकरा	,,	१.७५
अपराध	,,	३.००
बहता पानी	,,	३.२५
दो केंचुले एक साँप	,,	५,००
बारूद और बुरादा	,,	४.३५
रैन अंधेरी	,,	६.००
रङ्गमञ्च	,,	७.००
चन्द्रगुप्त मौर्य—	मिश्रबन्धु	३.५०
चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य	,,	५.००
पुष्यमित्र	,,	५.५०
स्वतन्त्र भारत	,,	५.००
विक्रमादित्य	,,	५.००
उदयन	,,	४.५०
अभागा—	मैक्सिम गोर्की	३.५०
माँ	,,	४.००
व्यापारी का बैल	,,	३.५०
आदि मानव	,,	६.००
पूँजीपति	,,	४.००
तीन पीढ़ी	,,	५.००
एक घर तीन रास्ता	,,	४.००

बलिदान—	रघुवीरशरण मित्र	५.००
काँपती आवाज	,,	२.५०
आग और पानी	,,	७.००
पहली हार	,,	५.००
सोने की राख	,,	४.००
राख की दुलहन	,,	६.००
सिद्धार्थ—	महावीर अधिकारी	३.००
पाप की गली	,,	३.००
कोकिला	रमनलाल बसन्तलाल देसाई	४.००
पैसा	,,	४.५०
काल भोज	,,	४.००
अमर लालसा	,,	३.५०
उखड़े हुए लोग	राजेन्द्र यादव	७.५०
कुलटा	,,	१.००
नदी के किनारे	रामवृक्ष बेनीपुरी	४.००
जंजीर और दीवारें	,,	४.२५
जय यौधेय	राहुल सांकृत्यायन	४.००
विस्मृत यात्री	,,	५.७५
सिंह सेनापति	,,	३.५०
जीने के लिए	,,	४.००
दाखुदा	,,	५.००
सोने की ढाल	,,	३.००
विस्मृति के गर्भ में	,,	२.२५
अनाथ	,,	२.५०
जादू का मुल्क	,,	३.००
शैतान की आँखें	,,	२.२५
मधुर स्वप्न	,,	५.००
वह कौन थी	ऋषभचरण जैन	२.७५
रहस्यमयी	,,	२.००
गदर	,,	२.००
सत्यासद	,,	१.५०
कैदी	,,	२.५०
भाई	,,	२.५०
भागम	,,	२.००
शिवाजी	सर यदुनाथ सरकार	१.५०
औरङ्गजेब	,,	८.००

प्राप्ति-स्थान—साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मां	विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक	६.००
भिखारिणी	,,	४.००
संघर्ष	,,	५.००
तट के बन्धन	विष्णुप्रभाकर माचवे	२.००
स्वप्नमयी	,,	२.००
निशिकान्त	,,	६.००
महान आविष्कारक एडीसन	विराज एम. ए.	२.५०
सीगफ्रिड	,,	१.५०
मेघनाद	,,	१.५०
एकिलिस	,,	१.५०
जुही की कली	शरण	२.२५
पंखहीन	,,	३.५०
काला ब्राह्मण	,,	२.७५
तूलिका	समर सेंट मॉम	०.५०
पतिता	,,	५.००
मन के बन्धन	,,	५.००
नहले पर दहला	,,	४.५०
गोद	सियारामशरण गुप्त	१.२५
नारी	,,	२.५०
अन्तिम आकांक्षा	,,	२.००
अलका	सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला	३.७५
निरूपमा	,,	१.७५
अप्सरा	,,	४.००
प्रभावती	,,	२.५०
प्रियदर्शी अशोक	हरिभाऊ उपाध्याय	५.००
धरती की बेटी	हंसराज रहबर	३.००
कंकर	,,	५.२०
परेड ग्राउन्ड	,,	१.५०
नदी और नारी	हुमायूँ कबीर	४.५०
हड़ताल	क्षेमेन्द्र सुमन	४.५०
जुर्म और सजा		१०.००
अपराध और दण्ड		४.००
वासना		३.५०
क्या वह पागल था	बाल्जक	२.५०
सूना घर	,,	५.००
मेरे अनेक संसार	पर्लबक	४.००
झोंपड़ी से राष्ट्रपति भवन तक—	अब्राहम लिङ्कन	२.००
समुद्र की गहराइयों में	जुल्सवर्न	५.००
लहरों के बाद	हरमन मेलगिन	३.००
कप्तान की बेटी	पुश्किन	
सुबह शाम	गेटे	२.५०
शुक्र गृह पर मानव	आल्फ एम कार्ले	३.००
डा० गिवागो	वोरिस पेस्टर्नक	१०.००
भालू	विलियम फाकनर	२.००
सागर और मनुष्य	अर्नेस्ट हेमिंगवे	२.००
कलंक	नैथेनियल हाथार्न	३.००
दो लाख वर्ष बाद	एच० जी० वेल्स	२.००
अपनी छाया	आस्कर वाइल्ड	६.००
गुलाब के दो फूल	राबर्ट लुई स्टीवेन्सन	५.००
अधूरा स्वप्न	गस्ताव फ्लावेयर	६.००
बुजदिल	स्टीफेन ज्वीग	६.००
सुर्ख और स्याह	स्तांधाल	१०.००
मेवाड़	कर्नल जेम्स टॉड	३.७५
धरती माता	पर्लबक	६.००
यौवन की आँधी	पीयरे लुई	४.००
द्वन्द युद्ध	चेखव	३.००
अन्तर्द्वन्द	,,	३.००
नाना	एमिल जोला	६.००
मौजी जीवन	नोसोव	५.००
लोकों का युद्ध	एच० जी० वेल्स	४.००
पेशवा की कहानी	उमाशङ्कर	४.७५
नाना फड़नवीस	,,	४.००
कावेरी के किनारे	,,	४.७५
चुटकियाँ	जी० पी० श्रीवास्तव	२.५०
भैया अकिल बहादुर	,,	२.५०
दुमदार आदमी	,,	३.५०
विलायती कल्लू	,,	२.२५
लतखोरीलाल	,,	४.००
उड़न खटोला	,,	१.५०
सुहाग की साड़ी	विनोदकुमार अग्रवाल	२.२५
ज्वलित रक्त	कुमारिलदेव	८.००

प्राप्ति स्थान—साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय-सेवाओं का उन्नयन

अपनी संगृहीत पाठ्य-सामग्रियों द्वारा अपने पाठकों एवं अन्यान्य लोगों की अधिकाधिक सेवा करना ही पुस्तकालयों का प्रमुख उद्देश्य समझा जाता है। पुस्तकों के अध्ययन से मानव कितना लाभान्वित हो सकता है, इसे दुहराने की आवश्यकता नहीं प्रतीत होती। इसीलिए प्राचीन तथा अर्वाचीन सभी महापुरुषों ने एक स्वर से पुस्तक की महिमा का जोरदार बखान किया है, अध्ययन की गरिमा का उद्घोष किया है। जितने भी उन्नत देश हैं सभी अपनी सभ्यता की प्रारम्भावस्था से ही ग्रंथों और उनके अध्ययन के महत्त्व को समझते रहे हैं और इसी कारण प्रायः सभी कालों में सभी उन्नत, सभ्य और शिक्षित देश अपने बाशिन्दों को पुस्तकों द्वारा लाभ पहुँचाने की दिशा में प्रयत्नशील रहे हैं। यह बात दूसरी है कि इस दिशा में आज की सी सुविधा उपलब्ध नहीं रहने के कारण उनकी सेवा-विधि उतनी फलप्रद एवं व्यापक नहीं रही हो, जितनी आज है। फिर भी पुस्तकों द्वारा जनता-जनार्दन की सेवा करने की भावना सदैव लोगों में वर्त्तमान रही है।

आज के इस वैज्ञानिक युग में जब पुस्तक-प्रकाशन, पुस्तक-संग्रह और पुस्तक-वितरण की उत्तमोत्तम व्यवस्था मौजूद है, और इस व्यवस्था में उत्तरोत्तर सुधार और विस्तार हो रहा है, तब पुस्तकों के द्वारा मानवता की सेवा करने की परिधि का विस्तृत होना सर्वथा स्वाभाविक है। सामान्य विज्ञान के उत्थान के साथ-साथ इसके विभिन्न अङ्ग-प्रत्यङ्गों का भी उत्तरोत्तर विकास होता रहा है। पुस्तकालय-विज्ञान इसका अपवाद नहीं है। पुस्तकालय विज्ञान के क्षेत्र में नित्य नये-नये प्रयोग जारी हैं और इस बात के लिए प्रयत्न भी बड़े व्यापक पैमाने पर किये जा रहे हैं कि ग्रंथ और ग्रंथालय मनुष्य के लिए ज्यादा से ज्यादा उपयोगी साबित हो सकें।

ग्रंथालयों के ग्रंथों से तथा उनकी अन्यान्य व्यवस्थाओं से लाभ होने की बात को पुस्तकालय-विज्ञान की भाषा में पुस्तकालय सेवा कहते हैं। पुस्तकालयों में पुस्तकें संगृहीत की जायँ और पाठक की माँग अथवा पसन्द पर उनमें से एक व अनेक उन्हें दे दी जायँ, पुस्तकालय सेवा की यह परम प्राचीन व्यवस्था है। इस व्यवस्था को आज पुस्तकालय-विज्ञान बहुत पीछे छोड़ चुका है। आज तो पुस्तकालय पूर्ण सुविधाओं, सामग्रियों सूचनाओं से युक्त एक सर्वसाधन सम्पन्न सूचना-केन्द्र समझा जाने लगा है। पुस्तकालय की अनुलय और सन्दर्भ-सेवा की बात को लेकर देखने से उपर्युक्त कथन का स्वतः सप्रमाण समर्थन हो जाता है।

व्यापक और अति-व्यापक अनुलय सेवा, वांगमय सूची की व्यवस्था, पुस्तकालय का निर्देशकक्ष आदि सम्बन्धी जो प्रावधान हैं, वे सब पुस्तकालय सेवाओं की व्यापकता के ही सूचक हैं। पर उपर्युक्त वर्णित सारी व्यवस्थाएँ अपने देश के कुछेक गिने-चुने पुस्तकालयों में ही उपलब्ध हैं, हमारे अधिकांश पुस्तकालयों के लिए ये व्यवस्थाएँ अनजानी और अपरिचित हैं। पुस्तकालय-व्यवस्था को सम्पूर्णतः लाभकारी बनाने के लिए इन सारे प्रावधानों को क्रियान्वित करने की बड़ी ही तीव्र आवश्यकता है। अब तक प्रकाश में आई हुई सुव्यवस्थाओं से ही हमें सन्तुष्ट नहीं होना है, प्रत्युत् अनुसन्धान और प्रयोग के द्वारा नई-नई सुव्यवस्थाओं को स्थापना कर के, उन्हें पुस्तकालयों से लगा देना है, ताकि पुस्तकालय मानव के लिए न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल ज्यादा से ज्यादा कल्याणकारी संस्थान ही प्रमाणित होकर रह जायँ, बल्कि भोजन और वस्त्र की तरह हर समय और सुसंस्कृत इन्सान के लिए पुस्तकालय सेवा अनिवार्य वस्तु हो जाय। परन्तु जैसा कि हम ऊपर की पंक्तियों में कह चुके हैं कि सामान्य रूप से हमारे भारत में और विशेष रूपसे अपने सूबा बिहार में अब तक, जब सुपरीक्षित और प्रचलित सेवा सिद्धान्त ही पुस्तकालयों में लागू नहीं किए जा सके हैं, तब नये-नये अनुसन्धानों और प्रयोगों की दिशा में इसकी कैसी प्रयत्नशीलता होगी, यह जानने में हमें विलम्ब नहीं होगा।

और सम्भवतः पुस्तकालयों की ऐसी स्थिति देखकर ही उनके सेवाक्षेम के यथोचित विकास के लिए बिहार राज्य पुस्तकालय संघ ने अपने सप्त-सूत्री उद्देश्य अथवा कार्यक्रम में तीसरा स्थान "पुस्तकालय सेवाओं के उन्नयन" को दिया है। "पुस्तकालयों की स्थापना, विस्तार और विकास" तथा "पुस्तकालय-सञ्चालन में परामर्श" के बाद पुस्तकालय सेवाओं के उन्नयन का ही प्रसंग उठता है और ऐसा क्रम बना कर के वास्तव में राज्य पुस्तकालय संघ ने अपनी बुद्धिमत्ता, दूरदर्शिता एवं पुस्तकालय सेवा का अच्छा परिचय दिया है।

किसी उद्देश्य को लिपिबद्ध कर लेने से ही कुछ होता जाता नहीं है। हमारे बिहार राज्य पुस्तकालय संघ ने तत्सम्बन्धित उद्देश्य को मात्र लिपिबद्ध ही किया है, आइए, आगे की पंक्तियों में हम इसे ही देखने का प्रयत्न करें। इस दिशा में राज्य-संघ ने कुछ नहीं किया है, ऐसा कहना तो सरासर अन्याय होगा, परन्तु इस दिशा में इसने उतना कुछ नहीं किया है, जितना इसे करना चाहिए था। कारण स्पष्ट है—न करने को इसकी विवशता रही है। एक तो स्वतन्त्रता के पूर्व के दिनों में तत्कालीन अंग्रेजी सरकार इसके सुझावों-परामर्शों की बहुत ही कम कदर करती थी और दूसरे, उन दिनों पुस्तकालयों की स्थापना का प्रश्न ही उतना प्रमुख बना हुआ था कि उनकी सेवाओं के उन्नयन की बात सोचना अति दूरदर्शितापूर्ण बात होती। देश का स्वतंत्रोतर काल इसके लिए अवश्य ही अनुकूल रहा, परन्तु देश के सभी भागों में जड़ की हुई जहालत इसके रास्ते में जबर्दस्त बाधक बनी और मृतप्राय पुस्तकालयों को पुनरुज्जीवित करने, नये पुस्तकालयों की स्थापना करने, उनका विस्तार और विकास करने तथा उनके सञ्चालन में परामर्श देने में ही पुस्तकालय संघ की क्रियाशीलता का अधिकांश व्यतीत होता रहा है। अब तक इन सारे कार्यों में भी पुस्तकालय संघ को पूरी सफलता नहीं प्राप्त हो सकी है। फिर भी अपने कार्यक्रम के अन्यान्य सूत्रों की क्रियान्विति की दिशा में पुस्तकालय संघ की क्रियाशीलता मुखरित है।

पुस्तकाध्यक्षों का प्रशिक्षण, पुस्तकालय साहित्य का प्रकाशन, पुस्तकालय-कार्यकर्ता गोष्ठी का आयोजन, पुस्तकालय कार्यकर्ताओं द्वारा पुस्तकालयों का निरीक्षण, वार्षिकोत्सव अधिवेशन आदि का आयोजन, पुस्तकालय सप्ताह के अवसर पर पुस्तकालय सेवाओं के उन्नयन का कार्य-क्रम निर्धारण आदि विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा पुस्तकालय संघ प्रकारान्तर से पुस्तकालय सेवाओं के उन्नयन में अवश्य ही सहयोग देता रहा है।

जब तक ग्रामीण अपने ग्राम के पुस्तकालयों की ओर आकृष्ट नहीं होंगे तब तक पुस्तकालय-सेवाओं के उन्नयन का कोई अर्थ न रहेगा। इसके लिए ग्रामोपयोगी साहित्य के समावेश ग्राम-पुस्तकालयों में करने की व्यवस्था करनी होगी। अपने प्रचार व्यवहार, रीति-रिवाज, कृषि-व्यवसाय, जीव-जगत और स्वास्थ्य-सौन्दर्य अर्थात् जीवन सम्बन्धी जब तक सारी बातों की सुविधा और सहूलियत ग्रामीणों को नहीं मिलेगी, तब तक वे पुस्तकालयों की ओर शायद ही पूर्ण अनुराग से मुखातिब हो सकगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इमली	हितवल्लभ गौतम	५.५०
प्रश्न	सर्वदानन्द वर्मा	३.५०
दो राहें	लीला अवस्थी	२.५०
वत्सराज	जगन्नाथ प्रभाकर	१.५०
चित्त एक पहलू अनेक	मधुर	४.००
रोटी	बनारसीदत्त शर्मा	२.५०
पथराये नेत्र	सिद्धविनायक द्विवेदी	३.००
देवर भाभी	चिरंजीलाल पाराशर	४.००
जसकोट का चित्रकार	सुदर्शनसिंह	४.००
अनेक देश एक इन्सान	कुलभूषण	६.००
मधुवन की आग	लक्ष्मीचन्द्रवाजपेई	३.३७
आचार्य चाणक्य	डा० यतीन्द्र	६.००
शान्ति संघर्ष और प्रेरणा	सत्यप्रसाद पांडे	५.००
नादिरशाह	गोविन्दसिंह	५.००
कमला	अनु० रूपनारायण पाण्डेय	३.५०
आशीर्वाद	साधुराम शुक्ल	३.००
मुर्गे	आनन्दप्रकाश जैन	२.००
टनाटन	बेढब बनारसी	२.००
जमींदार की बेटी	शि० चौगुले	३.२५
पथेर पांचाली	विभूतिभूषण वन्द्योपाध्याय	५.००
राही	अमरनाथ शुक्ल	४.००
एक ही रास्ता	सुरेश रश्मि	२.५०
मेरा जीवन संघष	वेद मेहता	४.००
सोमा	सत्यकाम विद्यालंकार	३.५०
डूबती नजरें	कृपाशंकर भारद्वाज	४.५०
लिबिडो	सुभाषचन्द्र	२.५०
संस्कारों के बन्धन	अभयकुमार	५.५०
शोले	भैरवप्रसाद गुप्त	३.००
श्यामा	त्रिभुवनपतिसिंह	४.००
अजनबी	सूर्यकुमार जोशी	२.५०
आरोग्य निकेतन	ताराशंकर वन्द्योपा०	६.००
पाप का स्वर्ग	शैलेन्द्रकुमारदत्त	४.००
उमरावजान अदा	मिर्जा हादी 'रुसवा'	४.५०
मेरे जीवन मेरे प्राण	फाल्गुनी मुखोपा०	५.००
बालू के टीले	बृजेन्द्र खन्ना	५.००
विकृत रेखाएँ	कोमलसिंह सोलंकी	४.००
कादम्बरी	ऋषीश्वरनाथ भट्ट	५.००
गरम आँसू	व्यथित हृदय	२.००
मोरी बिटिया	रजनीकान्त बरदले	२.००
शैल बन्धु	यमुनादास	३.००
मकड़ी का जाला	कन्हैयालाल ओझा	८.००
दो मार्ग	प्रकाश भारती	४.२५
सप्त पदी	ताराशंकर वन्द्योपाध्याय	२.००
मैत्रेय	गोविन्दवल्लभ पन्त	६.५०
साँझ के साथी	बसन्त प्रभा	३.५०
गणेशशंकर विद्यार्थी	बनारसीदास चतु०	३.००
छः बीघा जमीन	फकीरमोहन	३.००
बोरी बस्ती से बोरी बन्दर तक	शैलेश मटियानी	३.००
दशकोण	कालिदास कपूर	६.२५
यह बस्ती यह लोग	हरिदत्त शर्मा	३.००
नीड़ से आगे	मोहन चोपड़ा	३.००
कुहासा	प्रेमेन्द्र मित्र	२.५०
सूरज किरन की छाँव	राजेन्द्र अवस्थी तृषित	३.००
नागफनी	कृष्णचन्द्र शर्मा	३.५०
परीक्षा गुरु	लाला श्रीनिवासदास	६.२५
दर्द	रईस अहमद	३.७५
छोटा आदमी	कुमार कश्यप	३.७५
जमीदार का बेटा	दयानाथ शर्मा	४.५०
अन्तिम वेला	ओंकार शरद	२.५०
निकम्मा	जितेन्द्र	२.५०
सती मैया का चौरा	भैरवप्रसाद गुप्त	१२.००
स्नेह दीप	ओमप्रकाश शर्मा	३.५०
धुआँ आग और इन्सान	शिवनारायण श्रीवास्तव	३.००
आनन्द भवन	निहालचन्द वर्मा	३.००
संघर्ष और प्रकाश	डी० पी० पंसारी	३.००
साका	जगदीशकुमार निर्मल	३.००
कीर्ति मन्दिर	चन्द्रकान्त	३.२५
हम लोग	हंसराज रहबर	३.७५
सामाजिक कारा के बन्दी	हरदयालसिंह	४.००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिनके का सहारा	जयप्रकाश शर्मा	३.००
विधना कुमारी	मामा वरेरकर	४.५०
जीवन आग और आँसू	बैजनाथ गुप्त	५.००
बोलती लहरें	माधवसिंह	३.००
अमृत और विष	दत्त भारती	३.५०
मुरझाए फूल	,,	३.५०
शहर से दूर	जनार्दन गौड़	५.५०
दो धारा	यादवचन्द्र जैन	३.००

कहानी

प्रेम द्वादशी	प्रेमचन्द	२.५०
कफन	,,	२.००
नारी जीवन की कहानियाँ	,,	२.५०
प्रेम पचीसी	,,	३.००
प्रेम पूर्णिमा	,,	२.७५
प्रेमचंद की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ	,,	१.५०
कलम, तलवार और त्याग	,,	२.००
पाँच फूल	,,	१.००
प्रेमतीर्थ	,,	२.५०
नव निधि	,,	१.५०
टालस्टाय की कहानियाँ	,,	२.००
सप्त सुमन	,,	१.००
दुर्गादास	,,	१.००
सप्तसरोज	,,	०.७५
हिन्दी की आदर्श कहानियाँ	,,	१.५०
समर यात्रा	,,	१.५०
ग्राम्य जीवन की कहानियाँ	,,	२.००
मानसरोवर (८ भाग)	,, प्रत्येक	३.००
अभिशप्त	यशपाल	२.५०
वो दुनियाँ	,,	२.५०
ज्ञान दान	,,	२.५०
फूलों का कुर्ता	,,	२.५०
पिंजरे की उड़ान	,,	२.५०
तर्क का तूफान	,,	२.५०
भस्मावृत चिंगारी	,,	२.५०
धर्मयुद्ध	,,	२.५०
उत्तराधिकारी	,,	२.५०

चित्र का शीर्षक	यशपाल	२.५०
तुमने क्यों कहा था मैं सुन्दर हूँ ?		२.५०
उत्तमी की माँ	,,	२.५०
ओ भैरवी	,,	३.००
बीबी जी कहती हैं	,,	२.५०
अन्नदाता	कृष्णचन्द्र	२.५०
अन्धा छत्रपति	,,	३.००
पूरे चाँद की रात	,,	३.००
ताज की छाया में—शिवदानसिंह चौहान और रामगोपालसिंह चौहान		३.७५
केशर के फूल—मोहनकृष्णदर		२.००
हाथ में हाथ—हंसराज रहबर		४.००
कहानी—सुधाकर पाण्डेय		१.७५
बचपन की स्मृतियाँ—राहुल		१.७५
अगुआ और बनफले के फूल—खलीलजिब्रान		३.००
सदासुहागिन रूठ गई—सुधाकर पाण्डेय		३.००
राजधानी के कहानीकार—जगदीश विद्रोही		३.७५
टालस्टाय की श्रेष्ठ कहानियाँ—टालस्टाय		३.००
मोपासां की श्रेष्ठ कहानियाँ—मोपासां		३.००
अमिता—यशपाल		५.००
आकाश पाताल—जो० पी० श्रीवास्तव		२.२५
जहर वाद—राजेन्द्र कुशवाहा		२.००
पर्दा ब नाम बेपर्दा—रतिभानुसिंह नाहर		१.००
नए बादल—मोहन राकेश		२.५०
कटीले फूल लजीले काँटे—इलाचन्द्र जोशी		२.००
राजा निरंवसिया—कमलेश्वर		२.५०
हंसा जाई अकेला—मार्कण्डेय		२.५०
उग्र का हास्य—पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'		१.२५
मानस हंस—राजेन्द्र शर्मा		३.००
जंजीरें और दीवारें—रामवृक्ष बेनीपुरी		४.२५
जैनेन्द्र की श्रेष्ठ कहानियाँ—जैनेन्द्रकुमार		२.५०
माटी हो गई सोना—कन्हैयालाल मिश्र		२.००
कुछ मोती कुछ सीप—गोयलीय		२.५०
हिन्दी की श्रेष्ठ कहानियाँ—त्रिगुणायत		३.५०
हरदम आग—कृष्णनन्दन सिन्हा		२.५०
शान्ति पथ—शान्तिशरण अग्रवाल		.८८

 प्राप्ति-स्थान—साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वराज्य के पचास वर्ष बाद	कृष्णचन्द्र	३.००	संस्मरण	बनारसीदास चतुर्वेदी	३.००
सीमा	,,	३.००	हमारे आराध्य	,,	३.००
कश्मीर की कहानियाँ	,,	३.००	रेखा चित्र	,,	४.००
काला सूरज	,,	३.००	चिड़िया घर	हरिशङ्कर शर्मा	२.५०
भूमिदान	,,	३.००	मन की मौज	,,	२.५०
यूकिलिप्टिस की डाली	,,	२.५०	गड़बड़ गोष्ठी	,,	२.५०
पानी का पेड़	,,	१.००	पिंजरा पोल	,,	२.५०
उड़ानें	,,	३.००	पंच प्रसून—चन्द्रशेखर शास्त्री		१.५०
आकाशदीप	जयशङ्करप्रसाद	३.००	पान फूल—मार्कण्डेय		२.७५
इन्द्रजाल	,,	३.००	वीरों की सच्ची कहानियाँ—जहूरबख्श		१.२५
प्रतिध्वनि	,,	१.००	ब्रजभूमि की कहानियाँ—रामनरायण अग्रवाल		१.५०
आँधी	,,	३.५०	मुकुल गुच्छ—प्रो. अर्जुनसिंह		२.००
छाया	,,	२.००	रात का सफर—अनु०—महेशचन्द्र शर्मा		२.००
दो बाँके	भगवतीचरण वर्मा	२.००	रुपया कहाँ है—मदनलाल वर्मा		२.००
इन्स्टालमेंट	,,	२.००	वीर राजपूत—अनु०—लक्ष्मीधर वाजपेयी		१.७५
राख और चिनगारी	,,	१.५०	बचपन की मेरी कहानी—नयनतारा सहगल		६.००
बिखरे मोती	सुभद्राकुमारी चौहान	२.५०	समानान्तर रेखाएं—राधाकृष्णप्रसाद		२.५०
उन्मादिनी	,,	२.५०	परिस्तान—रघुपतिसहाय फिराक		३.५०
सीधे सादे चित्र	,,	२.५०	जीवन के अञ्चल से—लीलावती मुन्शी		५.००
जहाँ लक्ष्मी कैद है	राजेन्द्र यादव	४.००	दशकुमार चरित—पं० निरंजनदेव		५.५०
कुलटा	,,	२.२५	सैरो सिकार—के० वी० हकीमुद्दीन		३.५०
अभिमन्यु की आत्महत्या	,,	२.५०	आहुतियाँ—गणेश पाण्डेय		१.००
कस्बे का आदमी	कमलेश्वर	३.००	पुष्पछटा—वी० पी० खन्ना विमल		२.५०
सड़क के किनारे	मण्टो	३.५०	अंजुलीना—कुलश्रेष्ठ		१.००
मेरा नाम राधा है	,,	३.५०	ग्रहण के बाद—नरेन्द्र		२.२५
लायसेंस	,,	५.५०	जमाने की हार—ब्रह्मानन्द एम० ए०		२.२५
मण्टो की महान कहानियाँ	,,	४.५०	बनारसी रईस—मोहनलाल गुप्त		२.२५
जिन्दगी मुस्कराई	कन्हैयालाल मिश्र	४.००	तीन निगाहों की एक तस्वीर—मन्नू भण्डारी		२.००
बाजे पायलिया के घुंघरू	,,	४.००	रिश्वत के अनेक ढङ्ग—देवराज दिनेश		३.००
कलाकार का दण्ड	वृन्दावनलाल वर्मा	१.२५	विशिष्ट कहानियाँ—सुधाकर पांडेय		१.५०
शरणागत	,,	१.२५	कड़ियाँ तथा अन्य कहानियाँ—अज्ञेय		२.५०
मेंढकी का ब्याह	,,	१.००	बोल्गा से गङ्गा—राहुल		४.००
अम्बपुर के अमर वीर	,,	१.००	सुदर्शन सुमन—सुदर्शन		३.५०
अँगूठी का दान	,,	१.००	यथार्थ और कल्पना—विराज एम० ए०		४.००
ऐतिहासिक कहानियाँ	,,	१.००	जमीन का टुकड़ा—प्रीतमसिंह पन्छी		२.५०
दबे पाँव	,,	२.००	बुकेशियो की कहानियाँ—जिओवानी		२.००

प्राप्ति-स्थान—साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आँचल और आँसू—शिक्षारानी निगम	३.५०
जानवर और जानवर—मोहन राकेश	३.००
तुम बड़ी पागल हो—मालती परुलकर	२.२५
मैं हार गई—मन्नू भण्डारी	२.००
प्रदर्शनी—देवीप्रसाद धवन	२.७५
हँसना रोना—गङ्गाप्रसाद पाण्डेय	२.००
उर्दू की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ-सं. प्रकाश पं.	३.५०
कुछ पैसे—रामशरण शर्मा	१.५०
मलियानिल—नीलकण्ठ पिल्ले	२.००
उपनिषदों की कहानियाँ—दिवाकर	१.७५
छायातप—रघुवंश	२.००
आँसू और पसीना—डा. रामप्रताप बहादुर	२.००
पूँजीपति—गोपेश	२.००
मण्टो की महान कहानियाँ-राधेश्याम पुरो.	२.५०
संघर्ष और शान्ति—पुष्पा महाजन	२.५०
पगडंडी और परछाइयाँ—कुलभूषण	२.००
कहावतों की कहानियाँ-महावीरप्रसाद पोद्दार	२.००
देवीजी—	१.००
मेरा नाम राधा है—सत्यप्रकाश सोलङ्की	५.००
काल सुन्दरी—ओंकारनाथ श्रीवास्तव	३.००
लोक कथाएँ—द्रोणवीर होहली	१.२५
अभागी बहनों की आत्म कहानी—कृष्णकुमारीदेवी	२.५०
कस्बे का आदमी—कमलेश्वर	३.००
चरित्र निर्माण की कहानियाँ-व्यथित हृदय	१.२५
तीन रङ्ग तेरह चित्र-मधुकर गङ्गाधर	२.७५
नई राहें—गङ्गाप्रसाद मिश्र	२.५०
पुराणों की अमर कहानियाँ—रामप्रताप शास्त्री	२.५०
वसन्त क्या कहेगा—बलराज साहनी	३.५०
यहाँ से वहाँ तक—महेन्द्रनाथ	२.२५
लायसेंस—मण्टो	३.५०
हरियाना लोकमञ्च की कहानियाँ—राजाराम शास्त्री	२.५०
हिन्दी की श्रेष्ठ कहानियाँ—श्रीमती विमल कौल	१.२५

सिगरेट के टुकड़े—रजनी पन्निकर	३.२५
हजामत का मेज—अशोकजी	२.००
शरत की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ—	५.००
चरित्र निर्माण की कथाएँ—हिमांशु	१.२५
उपनिषदों की कथाएँ—	१.२५
नेत्रदान—यादवेन्दु शर्मा	२.५०
हिरोशिमा—जान हरसी	२.५०
सप्तपदी—शकुन्तला वर्मा	०.७५
बापू की कहानी—कृष्णा हठीसिंह	२.२५
द्वादशी—वाचस्पति पाठक	२.००
आठ सेर चावल—के० सन्तानम	२.५०
आदर्श और यथार्थ—गंगाप्रसाद मिश्र	२.५०
केशर के फूल—मोहनकृष्ण दर	२.००
राजधानी के कहानीकार—जगदीश विद्रोही	३.७५
जहरवाद—राजेन्द्र कुशवाहा	२.००
पर्दा बनाम बेपर्दा—रतिभानुसिंह नाहर	१.००
नये बादल—मोहन राकेश	२.५०
राजा निरबंसिया—कमलेश्वर	२.५०
हँसा जाई अकेला—मार्कण्डेय	२.५०
मानस हंस—राजेन्द्र शर्मा	३.००
हरदम आग—कृष्णनन्दन सिन्हा	२.५०
दूब के फूल—लीला अवस्थी	३.००
शिकार की कहानी—बालकृष्ण एम० ए०	२.००
सुबह के बादल—नूरनबी अब्बासी	१.५०
तीन दिन—चन्द्रगुप्त विद्यालङ्कार	३.००
नया मार्ग—सत्यप्रकाश संगर	२.२५
सीमान्त—श्री शरण	२.५०
टीलों की चमक—जयनाथ नलिन	१.५०
नये चित्र—सत्येन्द्र शरत्	३.००
अन्तर्राष्ट्रीय कहानियाँ—महेशचन्द्र शर्मा	३.५०
आइसक्रीम—झटपटराय बनारसी	३.५०
एक कली दो काँटे—कुमारी रीता	२.५०
कदम की फूली डाल—विद्यानिवास मिश्र	३.००
कहानी कल्पद्रुम—सत्यदेव एम. ए.	४.५०
जातक कथाएँ—चन्द्रिकाप्रसाद मिश्र	२.००
चिता—ओमानन्द	१.००

प्राप्ति-स्थान—साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मृत्यु की मीनार—भिक्खु ४.००
दीवार कब गिरेगी—डॉ० ब्रजमोहन गुप्त २.५०
आह बकरा—उग्रसेन नारङ्ग २.५०
कड़वे मीठे घूँट—गङ्गानारायण मेहरोत्रा १.५०
धरती के दीप—राममोहन द्विवेदी २.००
हुस्नाबीबी और अन्य कहानियाँ रामकुमार ४.००
पञ्च प्रसून—आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री १.५०
कागज के खिलौने—श्रीगोपाल वाजपेई १.२५
इच्छा शक्ति—भालचन्द्र ओझा १.७५
सुबह और शाम—रामेश्वरनाथ तिवारी २.००
उर्दू की हास्यरस की कहानियाँ—
जगन्नाथ प्रभाकर ३.५०
रेखा चित्र—प्रेमनारायण टण्डन १.५०
और पहिए घूम रहे थे—शैवाल सत्यार्थी २.५०
कला, रूप और प्रेम—मदनमोहन १.५०
युग और देवता—गुरुबचनसिंह ३.७५
गौरव गाथा—गोकुलचन्द शास्त्री २.५०
उत्तरी ध्रुव की कहानियाँ—राजेन्द्र कुशवाहा २.००
मणिमय कुण्डल—राजेन्द्र शर्मा ३.५०
मैं मरूँगा नहीं—यशपाल जैन ६.५०
ठुमरी—फणीश्वरनाथ 'रेणु' ३.५०
पुराणों की अमर कहानियाँ—
रामप्रताप त्रिपाठी २.५०
लम्बोदाढ़ी—जी० पी० श्रीवास्तव २.००
माटी की गन्ध—शान्ति जोशी २.००
वापसी—चन्द्रगुप्त विद्यालङ्कार ३.५०
धरती अब भी घूम रही है—
विष्णु प्रभाकर ३.००
रहस्यमय रोमाञ्चकारी कहानियाँ—
एडगर एलन पो ३.००
बर्फ के हीरे—सत्येन्द्र शर्मा २.५०
भूखा अंकुर—महेशचन्द्र २.००
पलकें—राधिका जौहरी १.५०
आधुनिक चीनी कहानियाँ—
क० म० पानोक्कर ६.५०
जैनेन्द्र की श्रेष्ठ कहानियाँ—जैनेन्द्र २.५०

मैंने कहा—गोपालप्रसाद व्यास ५.००
डायरी के नीरस पृष्ठ—इलाचन्द्र जोशी ३.००
कल्पना कानन—ब्रिजलाल बियाणी २.००
प्रतिनिधि कहानियाँ—पहाड़ी २.५०
इक्कीस कहानियाँ—वाचस्पति पाठक ४.५०
हिन्दी की कहानियाँ—श्रीकृष्णलाल २.००
सर्व श्रेष्ठ प्रतिनिधि कहानियाँ—
सिंहासन राय 'सिद्धेश' ३.००
रूस की सर्व श्रेष्ठ कहानियाँ—
बलभद्र ठाकुर ३.५०

नाटक

इन्द्रधनुष—डा. रांगेय राघव १.५०
शकुन्तला नाटक—राजा लक्ष्मणसिंह १.५०
चन्द्रावली नाटिका—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र १.५०
कर्पूर मंजरी " १.२५
मुद्राराक्षस नाटक " १.५०
सत्य हरिश्चन्द्र नाटक " १.००
भारत दुर्दशा " ०.७५
भारतेन्दु ग्रंथावली (भाग १) " ८.००
आदि मार्ग—उपेन्द्रनाथ 'अश्क' ५.००
जय पराजय " ३.५०
पैंतरे " ३.२५
कैद और उड़ान " २.७५
छटा बेटा " २.२५
अलग-अलग रास्ते " ३.००
अंजो दीदी " २.७५
स्वर्ग की झलक " २.२५
पर्दा उठाओ पर्दा गिराओ " ३.७५
चरवाहे " ३.००
पक्का गाना " ३.००
अन्धी गली " ३.००
प्रतिनिधि एकाङ्की " ३.००
देवताओं की छाया में " २.७५
नए रङ्ग एकाङ्की " ३.५०
समाधि—विष्णु प्रभाकर २.५०
डाक्टर " २.५०

प्राप्ति स्थान—साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिव साधना	—हरिकृष्ण प्रेमी	१.००
शपथ	,,	२.५०
बन्धन	,,	१.२५
आहुति	,,	६.००
प्रतिशोध	,,	१.७५
छाया	,,	१.२५
प्रकाश स्तम्भ	,,	१.५०
रक्षाबन्धन	,,	१.२५
स्वप्न भङ्ग	,,	१.५०
ममता—	,,	२.५०
संरक्षक	,,	२.५०
रेशमी टाई	—रामकुमार वर्मा	२.००
चारुमित्रा	,,	२.५०
रजतरश्मि	,,	२.५०
दीपदान	,,	३.००
आठ एकांकी नाटक	,,	२.००
सरस एकांकी नाटक	,,	१.५०
फूलों की बोली—	वृन्दावनलाल वर्मा	१.२५
कनेर	,,	१.००
बाँस की फाँस	,,	१.००
मङ्गल सूत्र	,,	१.००
कश्मीर का काँटा	,,	१.००
निस्तार	,,	१.००
देखादेखी	,,	०.८८
लो, भाई पंचो ! लो !!	,,	०.७५
जहाँदार शाह	,,	०.७५
पीले हाथ	,,	०.७५
सगुन	,,	०.७५
प्रेम की बेटी	—प्रेमचन्द	०.७५
होरी	,,	१.५०
कर्बला	,,	४.५०
संग्राम	,,	३.००
चंद्रहार	,,	१.७५
आधुनिक एकांकी	—सन्त गोकुलचन्द	३.००
मीरा	,,	१.७५
हिरौल	,,	१.२५

चन्द्रगुप्त	जयशङ्कर प्रसाद	३.००
स्कन्दगुप्त	,,	२.००
अजातशत्रु	,,	२.००
ध्रुवस्वामिनी	,,	०.७५
विशाख	,,	१.५०
कामना	,,	१.५०
जनमेजय का नागयज्ञ	,,	१.५०
राज्यश्री	,,	१.२५
एक घूँट	,,	१.००
हर्ष—	सेठ गोविन्ददास	२.७५
अशोक	,,	२.५०
भिक्षु से गृहस्थ गृहस्थ से भिक्षु	,,	३.००
भविष्यवाणी	,,	३.००
स्पर्द्धा तथा अन्य एकाङ्की	,,	२.५०
शाप और वर तथा अन्य एकांकी		२.५०
भारतेन्दु	,,	२.००
रहीम	,,	२.००
प्रकाश	,,	३.५०
धोखेबाज तथा अन्य एकांकी	,,	३.००
सिद्धान्त स्वातन्त्र्य	,,	३.५०
गोविन्ददास ग्रंथावली (नाटक) भाग १		७.००
,, ,, भाग २		७.००
,, ,, भाग ३		७.००
हक के गुलाम	—मामा वरेरकर	२.५०
सोने का शिखर	,,	२.५०
शुभ मङ्गल	,,	२.००
श्री प्रजापति	,,	३.००
लकड़ बग्घा	—जी० पी० श्रीवास्तव	१.५०
दुमदार आदमी	,,	३.००
नकदम	,,	१.२५
नए गुलाम	—कृष्णचन्द्र	३.००
गोपा का दान	—विनोद रस्तोगी	३.००
गौतम नन्द	—जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द	१.५०
प्रताप-प्रतिज्ञा	,,	१.२५
कोणार्क	—जगदीशचन्द्र माथुर	३.००
मेरे नाटक	—रवीन्द्रनाथ ठाकुर	३.५०

प्राप्ति-स्थान—साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेवाड़ पतन—	द्विजेन्द्रलालराय	१.७५
उस पार	,,	२.००
भीष्म	,,	२.००
सिंहल विजय	,,	२.२५
चन्द्रगुप्त	,,	१.२५
अहिल्या	,,	०.६२
सीता	,,	१.२५
नूरजहाँ	,,	१.५०
भारत रमणी	,,	१.५०
शाहजहाँ	,,	१.५०
राणा प्रताप	,,	२.२५
दुर्गादास	,,	२.००
राक्षस का मन्दिर—	लक्ष्मीनारायण मिश्र	२.५०
गरुड़ध्वज	,,	१.७५
कावेरी में कमल	,,	२.००
आधी रात	,,	२.००
कवि भारतेन्दु	,,	२.००
संन्यासी	,,	२.५०
सिन्दूर की होली	,,	१.२५
चक्रव्यूह	,,	१.७५
राजयोग	,,	३.००
मृत्युञ्जय	,,	३.००
पूर्व की ओर—	वृन्दावनलाल वर्मा	२.२५
राखी की लाज	,,	१.२५
झाँसी की रानी	,,	२.००
ललित विक्रम	,,	१.७५
केवट	,,	१.२५
खिलौने की खोज	,,	१.२५
नीलकण्ठ	,,	१.२५
बीरबल	,,	१.२५
कीर्ति स्तम्भ	हरिकृष्ण प्रेमी	३.५०
शतरञ्ज के खिलाड़ी	,,	१.५०
बादलों के पार	,,	३.००
विषपान	,,	२.००
उद्धार	,,	१.५०
जादू के रङ्ग—	शिवदानसिंह चौहान	१.००

समाज के स्तम्भ—गीताचरण दीक्षित	२.००
पचपन का फेर—विमला लूथरा एम० ए०	२.५०
कला के लिए—भार्गवराम विट्ठल वरेरकर	१.२५
किसान—शील	३.००
तरकस के तीर—श्रीकृष्ण	३.००
मृत्यु की ओर—सन्तोषकुमार	२.००
रूप लक्ष्मी—कृष्णचन्द्र शर्मा	१.५०
श्री चैतन्य—पातीराम भट्ट	१.००
मछली के आँसू—कृष्णकिशोर श्रीवास्तव	३.००
ग्रहों का निर्णय—अनिलकुमार	२.५०
कसम कुरान की—विनोद रस्तोगी	३.००
डेढ़ शङ्ख—हरिकृष्ण	२.००
बहादुरशाह की बेटी—तेज दहलवी	२.००
मिट्टी की बेटी—सागर बालूपुरी	२.५०
मन के बन्धन—गाल्सवर्दी	२.००
सृष्टि की साँझ और अन्य काव्य नाटक—सिद्धकुमार	४.००
सुबह के घण्टे—नरेश मेहता	३.००
त्रिकोण—शारदा मिश्र	३.००
दूल्हे का दाम—सरयू पण्डा गौड़	३.००
देवलोक में महात्मा गांधी—उग्रमोहन झा	३.००
श्रम देवता—केशवचन्द्र वर्मा	१.५०
और खाई बढ़ती गई—भारतभूषण अग्रवाल	२.५०
हीर राँझा—शीला भाटिया	२.००
जानहार—कुदसिया जैदी	२.००
पनाह—बलराम चौहान	२.२५
बुद्ध शरणम्—चन्द्रदेवसिंह	२.००
न्याय-मन्त्री—महेशचन्द्र रावत	१.७५
सप्त एकाङ्की—कृष्णमूर्ति मेहरोत्रा	०.७५
पत्थर और परछाइयाँ—मार्कण्डेय	२.५०
सिद्धनाथकुमार	४.५०
मैकबैथ— ,,	१.७५
जैसा तुम चाहो— ,,	१.७५
वेनिस का सौदागर— ,,	१.७५
जूलियस सीजर— ,,	१.७५
तिरङ्गा झण्डा—विराज	१.२५

प्राप्ति-स्थान—साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्याय मन्त्री—महेशचन्द्र रावत	१.७५
सप्त एकाङ्की—राममूर्ति मेहरोत्रा	०.७५
आदिम युग और अन्य नाटक—उदयशङ्कर भट्ट	४.००
कावेरी में कमल—लक्ष्मीनारायण मिश्र	२.००
कवि भारतेन्दु— ,,	२.००
कर्पूर मंजरी—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	१.२५
बाल वीर कृष्ण—रघुवीरशरण मित्र	१.००
प्रकाश और परछाँई—विष्णु प्रभाकर	२.७५
धर्मराज—आचार्य चतुरसेन शास्त्री	३.००
नव प्रभात—विष्णु प्रभाकर	१.२५
दिवास्वप्न—प्रेमनारायण टण्डन	१.००
ओथेलो—अनु०-रांगेय राघव	१.७५
सौवर्ण—सुमित्रानन्दन पन्त	२.५०
गोविन्ददास ग्रन्थावली—गोविन्ददास	७.००
एकाङ्की सप्तक—रामचन्द्र श्रीवास्तव	१.७५
नये गुलाम—कृष्णचन्द्र	२.००
दुःख क्यों?—सेठ गोविन्ददास	२.५०
तरकस के तीर—श्रीकृष्ण	३.००
मृत्यु की ओर—सन्तोषकुमार	२.००
कसम कुरान की—विनोद रस्तोगी	३.००
डेढ़ अरब—हरिकृष्ण	२.००
अजीतसिंह—चतुरसेन	२.२५
सृष्टि की साँझ और अन्य काव्य नाटक—	
सुबह के घण्टे—नरेश मेहता	३.००
पनाह—बलराम चौहान	२.५०
हक के गुलाम—मामा वरेरकर	२.२५
भविष्यवाणी तथा अन्य नाटक—सेठ गोविन्ददास	३.००
भूमिजा—सर्वदानन्द	१.५०
कुछ फीचर कुछ एकांकी—भगवतशरण उपाध्याय	३.५०
श्री प्रजापति—मामा बरेरकर	२.५०
मादा कैक्टस—लक्ष्मीनारायणलाल	१.७५
चिलिका—राधानाथराम	१.५०
नवरंग—सत्येन्द्र शरद	३.५०
अटैची केस—राजेन्द्रकुमार शर्मा	२.००
ओथेलो—अनु-बच्चन	३.५०
काली आकृति—राजकुमार	१.५०
किशोर अभिनय—प्रशान्त एम० ए०	१.५०
मीर साहब की ईद—शौकत थानवी	३.२५
आनन्द मठ पातीराम भट्ट	१.५०
सप्त स्वर—प्रेमनारायण टण्डन	५.००
डूबते तारे—अभयकुमार यौधेय	१.७५
मेरे नाटक—रवीन्द्रनाथ ठाकुर	३.५०
बाबा की सारङ्गी—बाबू रामसिंह लमगोड़ा	२.००
स्वतन्त्रता संग्राम—कुँवर वीरेन्द्रसिंह	४.००
संयम सम्राट— ,,	२.७५
विष कन्या—गोविन्दवल्लभ पन्त	४.००
दस बजे रात—विष्णु प्रभाकर	४.००
अभिनव एकाङ्की—श्रीमती राजकुमारीप्रसादासह	३.५०
प्रेरणा और अन्य एकाङ्की—डा. प्रेमनारायण टण्डन	१.५०
सपना टूट गया—ब्रजकिशोरनारायण	२.००
यज्ञ का शाप—डा. रामचरण महेन्द्र	१.००
धरती की महक—चेतन	३.००
पाषाणी—जानकीवल्लभ शास्त्री	४.००
अन्तर्दर्शन लीन चित्र—उदयशङ्कर भट्ट	२.००
जन शत्रु—ओमप्रकाश शर्मा	२.७५
अन्तिम सम्राट ओंकारनाथ दिवाकर	२.७५
जनम कैसे—गिरजाकुमार माथुर	२.५०
सुन्दर रस—लक्ष्मीनारायणलाल	१.५०
सोने का शिखर—मामा वरेरकर	२.५०
सात यवनिकाएँ— ,,	१.७५
विवाह विभ्राट—प्रतापनारायण श्रीवास्तव	५.७५
रूप लक्ष्मी—कृष्णचन्द्र शर्मा	१.५०
वासवदत्ता का चित्रालेख—भगवतीचरण वर्मा	३.००
श्री चैतन्य - पातीराम भट्ट	१.००
मछली के आँसू—कृष्णकिशोर श्रीवास्तव	३.००
और भगवान देखता रहा—वरेरकर	२.००
ग्रहों का निर्णय—अनिलकुमार	२.५०

 प्राप्ति स्थान—साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्यासी—लक्ष्मीनारायण मिश्र २.५०
राक्षस का मन्दिर— ,, २.५०
आधोरात ,, २.५०
त्रिकोण—शारदा मिश्र ३.००
दूल्हे का दाम—सरयू पण्डा गौड़ ३.००
देवलोक में महात्मा गान्धी—उग्रमोहन झा ३.००
श्रम देवता—केशवचन्द्र वर्मा १.२५
आदर्श राम—ब्रजरत्नदास १.२५
और खाई बढ़ती गई—भारतभूषण अग्रवाल २.५०
जब पर्दा उठा—प्रकाश पण्डित ४.००
एकाङ्की सौरभ—धर्मचन्द सन्त ३.००
एकाङ्की सुषमा—जी० एल० लूथरा २.००
सामू शाह—आई० सी० नन्दा १.००
आषाढ़ का एक दिन—मोहन राकेश २.००
धरती हमारी है—भ० लै० काकलेको २.००
क्या यही सभ्यता है—मधुसूदनदत्त १.५०
ओ मेरे सपने—जगदीशचन्द माथुर ३.००
भोर का तारा— ,, ३.००
सिद्धार्थ बुद्ध—बनारसीदास २.००
सरजा शिवाजी—गोपालचन्द देव १.५०
सोरों का सन्त—रामदत्त भारद्वाज १.५०
रङ्गारङ्ग—चिरंजीव २.५०
चार अभिनय एकाङ्की—कृष्णदत्त भारद्वाज १.७५
चक्रव्यूह—रघुवरदयाल श्रीवास्तव १.००
परिवार का शत्रु—इन्द्रसेनसिंह २.२५
बाबू—आचार्य आत्रेय। २.००

कोश

हिन्दी साहित्य कोष २०.००
हिन्दी शब्द सागर—रामचन्द्र वर्मा
कुल ८ भाग हैं, जिसमें ४ भाग प्राप्य हैं ४५.००
संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर—रामचन्द्र वर्मा १५.००
प्रामाणिक हिन्दी कोश— ,, १२.५०
कोश कला— ,, १.५०
हिन्दी मुहावरा कोश—भोलानाथ तिवारी ७.५०
हिन्दी पर्यायवाची कोश— ,, ७.५०
संक्षिप्त हिन्दी कोश— ,, ३.००
वृहद हिन्दी कोश—मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव २१.००
ज्ञान शब्द कोष १५.००
राष्ट्रभाषा शब्द कोष—इण्डियन प्रेस १४.००
भाषा शब्द कोश—रसाल १२.००
नालन्दा विशाल सागर १५.००
नालन्दा अद्यतन कोश ६.००
अभिनव हिन्दी कोश—हरिशङ्कर शर्मा ८.००
नारायण हिन्दी शब्द सागर—
श्यामसुन्दर दीक्षित ५.००
अग्रवाल हिन्दी कोश ५.००
आधुनिक शब्द कोश—केदारनाथ भट्ट ४.५०
आदर्श हिन्दी शब्द कोश—पाठक १२.००
आदर्श हिन्दी शब्द कोश—पाठक ६.००
बाल हिन्दी कोश—पाठक ३.००
प्रचारक हिन्दी कोश—लालधर त्रिपाठी १२.००
प्रचारक हिन्दी कोश—लालधर त्रिपाठी ८.००
दोहा कोश—राहुल १३.२५
पारिभाषिक शब्द कोश—
मुकुन्दलाल श्रीवास्तव ४.००
भार्गव डिक्सनरी अंग्रेजी से हिन्दी— १०.००
भार्गव डिक्सनरी अंग्रेजी से हिन्दी— ४.००
भार्गव डिक्सनरी हिन्दी से अंग्रेजी— १०.००
भार्गव डिक्सनरी हिन्दी से अंग्रेजी— ४.००
राजनीति शब्दावली—केला २.००
अर्थशास्त्र शब्दावली—केला २.००
समाचार पत्र शब्द कोश—डॉ. सत्यप्रकाश १.५०
राजकीय कोश—गोरखनाथ चौबे १.५०
भूगोल शब्द कोश—रामनारायण मिश्र २.००
वाणिज्य शब्द कोश १.५०
उर्दू हिन्दी कोश—रामचन्द्र वर्मा ४.५०
रामायण कोश—केदारनाथ भट्ट ४.००
तुलसी शब्द सागर १२.००
ब्रजभाषा शब्द कोश ७ भाग—
डॉ० दीनदयाल गुप्त २१.००
विविध ज्ञान शब्द कोश २.००
प्रशासन शब्दावली—विशन एम. ए. १.५०

प्राप्ति-स्थान—साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी मराठी कोश—कृष्णलाल वर्मा ७.००
संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ—
द्वारिकाप्रसाद चतु. १४.००
अशोक हिन्दी शब्दकोश—
आदित्येश्वर कौशिक ३.७५
प्रसाद साहित्य कोश—हरदेव बाहरी ९.००
अभिनव अंग्रेजी हिन्दीकोश—
केदारनाथ भट्ट ७.२५
हिन्दुस्तानी कोश—हरिशङ्कर शर्मा ६.००
अवधी कोश—रामाज्ञा द्विवेदी ७.५०
हिन्दी कथा कोश—भोलानाथ तिवारी ३.००
प्रत्यक्ष शरीर कोश—एस. सी. सेन गुप्त ८.००
भूतत्त्व विज्ञान कोश—ब्रजकिशोर मालवीय २.२५
जीव रसायन कोश ६.००
हलायुध कोश २३.००
नालन्दा करेंट डिक्शनरी (अंग्रेजी हिन्दी)-१५.००
नालन्दा स्टूडेण्ट डिक्शनरी- ९.७५

विविध

कहाँ या क्यों—रामप्रसाद मिश्र २.५०
सामान्य मनोविज्ञान—हंसराज भाटिया १०.००
भारतीय इतिहास की मीमांसा—
जयचन्द विद्यालङ्कार १२.००
बाहर भीतर—आचार्य चतुरसेन ४.००
सम्राट अशोक—अनन्तबहादुरसिंह एम. ए. २.००
अन्तरिक्ष की लहरें—सत्यदेव चतुर्वेदी ४.००
साहित्य परीक्षण— ,, ३.००
साहित्य दर्शन— ,, ४.५०
हिन्दी काव्य में भक्त कालीन साधना-,, ५.००
सुमित्रानन्दन पन्त—बच्चन २.००
रामेश्वर शुक्ल 'अञ्चल'—पद्मसिंह शर्मा २.००
हरवंशराय बच्चन—चन्द्रगुप्त विद्यालङ्कार २.००
अजय की डायरी—देवराज ५.००
आवरण—वनफूल ३.००
भग्न मन्दिर—अनन्तगोपाल शेवड़े ५.००
अंधी दृष्टि—प्रतापनारायण टण्डन २.००
दुखवा मैं कासे कहूँ—आचार्य चतुरसेन ४.००

माखनलाल चतुर्वेदी—हरिकृष्ण 'प्रेमी' २.००
क्रान्तिकारी—उदयशङ्कर भट्ट २.००
मुक्तिदूत— ,, २.००
कुछ पुरानी चिट्ठियाँ-जवाहरलाल नेहरू १०.००
अछूता प्यार—मामा वरेरकर ४.००
भाग्य के निर्माता-डा. राजेश्वरप्रसाद चतुर्वेदी २.५०
एक वर्ष—विपिनकुमार २.७५
रानी तिष्यरक्षिता—सत्यदेव चौधरी ४.००
भारत दर्शन—चञ्चल ५.५०
उल्कापात—द्वारिकानाथ माधवराव ३.००
साहित्यिक निबन्ध—गणपतचन्द्र गुप्त ८.००
भारतीय मुक्तक परम्परा—
डा. रामप्रकाश त्रिपाठी ७.५०
विनम्रता—विद्यास्वरूप वर्मा ८.००
फिल्म अभिनय कला-डी. पी. बेरी ५.००
हिन्दी और मलयालम में कृष्ण भक्ति काव्य-
डा० के० भास्करन नायर १०.००
बदलते इरादे—प्रतापनारायण टंडन ४.७५
मुझे भूल जाना—हेमराज निर्मल ४.००
हिन्दी साहित्य समस्यायें और समाधान—
डा० गणपतिचन्द्र गुप्त ५.००
भारतीय शिल्प का इतिहास-सूर तथा दुबे ८.५०
हिन्दी साहित्य युग और प्रगतियाँ—
प्रो० शिवकुमार ८.००
सिंहल घुमक्कड़ जयवर्द्धन—
राहुल सांकृत्यायन ३.००
करुण रस—डा. ब्रजबासीलाल श्रीवास्तव १२.५०
घाटियाँ और घुमाव—महेशचन्द्र शर्मा ४.००
आदिम मानव समाज-भूपेन्द्रनाथ सांड्याल ४.००
कबीर: एक विवेचन-डा. सरनामसिंह शर्मा १२.५०
कलाधार—जीवनप्रकाश जोशी ४.००
विकासात्मक मनोविज्ञान-एम. पी. जैसवाल ६.००
स्वयंसिद्धा—मणिलाल वन्द्योपाध्याय ३.५०
हिन्दी गद्य के सोपान—जीवनप्रकाश जोशी ७.००
नीम की छाँह और पकाधान और उलझन—
मानिक वच्छावत ३.००

 प्राप्ति-स्थान—साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवध के प्रमुख कवि—ब्रजकिशोर मिश्र ११.००
ललित कला की धारा—
अजितकुमार हालदार ७.५०
वह कौन थी—इन्द्रा नूपुर ३.५०
बेला—श्यामनारायणप्रसाद ३.२५
संगीत सम्राट तानसेन : जोवनी और रचनायें—
प्रभूदयाल मीतल ३.००
संगीताचार्य बैजू और गोपाल : जीवनी और रचनायें—
प्रभूदयाल मीतल १.५०
वृन्दावनलाल वर्मा—विश्वप्रकाश दीक्षित २.५०
महादेवी वर्मा—प्रो. देवराजसिंह भाटी २.५०
मैथिलीशरण गुप्त—प्रो. विनयकुमार २.५०
निबन्ध सौरभ—श्री कृष्ण एम. ए. १.५०
कालिदास—सन्तोष व्यास ४.००
गोल-गोल गप्पा—मुकुलकुमार सिन्हा २.५०
कवि समीक्षा—प्रो. श्यामलाकान्त वर्मा ४.५०
गुप्तजी की काव्य साधना—
उमाकान्त एम. ए. ८.००
प्रियप्रवास में काव्य संस्कृति और दर्शन—
—डा० द्वारिकाप्रसाद सक्सेना ९.००
इत्ता इत्ता पानी—ब्रह्मदत्त २.५०
सप्तशील—सीताराम गोयल ८.५०
जीवन-ज्वार—गुरुदत्त ७.००
स्नेह बाती और लौ—
—भगवतीप्रसाद बाजपेयी ५)
काले नाग सफेद केंचुए— कमल शुक्ल ३.००
खुर्पा बहादुर—मिर्जा अजीम बेग चगताई ३.००
विनोबा के जंगम विद्यापीठ में-कुन्दन दीवान २.५०
भारत का आर्थिक भूगोल तथा
आर्थिक विकास—कुम्भट एवं पुरोहित ७.५०
विज्ञान शिक्षण-रावत एवं मुकुटबिहारीलाल ५.००
वेदना— प्रतापनारायण श्रीवास्तव ६.५०
हौलदार— शैलेश मटियानी ६.००
भारतीय अर्थशास्त्र— जतार्थ तथा वेरी ७.५०
मानव और संस्कृति— श्यामाचरण दुबे ७.५०
हिन्दी भाषा में अन्योक्ति-डा. संसारचन्द्र १२.५०

शिक्षा की पुनः रचना— के. जी. सैदैन ७.००
सुहाग के नूपुर— अमृतलाल नागर ४.५०
प्राचीन तथा नवीन शिक्षण विधियाँ—
के. सी. मलैया ५.५०
मेरे अनेक संसार— पर्ल बक ७.००
शाही कमरबन्द— बाबूराव अनिलकर ३.००
हिन्दी उपन्यासों का वैज्ञानिक मूल्याङ्कन—
ब्रह्मनारायन शर्मा ४.२५
साहित्य और कला-भगवतशरण उपाध्याय ६.००
काव्य प्रकाश— आचार्य विश्वेश्वर १६.००
आस्ट्रेलिया— रघुनाथसिंह ७.००
मुट्ठी भर फूल— श्रीधर सक्सेना २.२५
परिवार के शत्रु— इन्द्रसेनसिंह २.२५
विवाह की मञ्जिलें—जीवनप्रकाश जोशी ५.५०
दूर के दीप— शुकदेवसिंह सौरभ ३.५०
पथ की खोज में— महेन्द्रकुमार पगारे ४.५०
सुलगती परछाइयाँ— रमेशचन्द्र भारती ४.५०
घने और बने— बलभद्र ठाकुर ७.५०
आर्य चाणक्य— डा० यतीन्द्र ६.००
विश्व इतिहास की वेदी पर—
प्रतापनारायण श्रीवास्तव ५.७५
इमली— हित वल्लभ गौतम ५.५०
प्राचीन भारत में रसायन का विकास—
आयुर्वेद का बृहत इतिहास—
सत्यदेव विद्यालङ्कार ११.००
हरवंश पुराण का सांस्कृतिक विवेचन—
श्रीमती वीणा पाण्डेय ४.५०
स्पात का उत्पादन— डा० दयास्वरूप ५.००
विकासात्मक मनोविज्ञान—
एस. पी. जायसवाल ६.००

उत्तर प्रदेशीय सरकार के प्रकाशन

संघर्षकालीन नेताओं की जीवनियाँ—
स्वतन्त्रता संग्राम इतिहास समिति १.००
वाजिदअली शाह और अवध राज्य का पतन—
परिपूर्णानन्द वर्मा ४.५०
स्वतन्त्र भारत की एक झलक-बाबूराम मिश्र ४.५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गदर के फूल—अमृतलाल नागर ४.५०
भारतीय ज्योतिष का इतिहास—
डा० गोरखप्रसाद ४.००
तत्त्व ज्ञान—डा० दीवानचन्द्र ४.००
पश्चिमी दर्शन— „ ४.००
दर्शन संग्रह— „ ४.५०
हिन्दू गणितशास्त्र का इतिहास—
डा० विभूति भूषणदत्त ३.००
अरिस्तू की राजनीति—भोलानाथ शर्मा ८.००
सामाजिक पोषण—डा० बूलचन्द्र ३.००
उत्तर प्रदेश में बौद्ध धर्म का विकास
डा० नलिनाक्षदत्त ६.००
संस्कृति का दार्शनिक विवेचन-डा. देवराज ६.००
संस्कृत आलोचना—बलदेव उपाध्याय ४.००
भारतीय ज्योतिष—शिवनाथ झारखण्डी ८.००
भारतीय दर्शन—डा० उमेशचन्द्र ८.००
स्वतन्त्र दिल्ली—डा. सैयद अतहर रिजवी ४.००
जीव जगत—सुरेशसिंह १४.००
राइफल—रामचन्द्र वर्मा ४.००
हलायुध कोष—(अभिधान ग्रंथमाला) २३.००
उर्दू हिन्दी कोश—मु. मुस्तफा खाँ मद्दाह ६.००
कला और आधुनिक प्रवृत्तियाँ-रामचंद्र शुक्ल ३.५०
कोयला—फूलदेवसहाय वर्मा ८.००
सङ्गीत शास्त्र—के. वासुदेव शास्त्री ६.५०
मृत्तिका उद्योग—हीरेन्द्रनाथ बोस ८.००
राजनय—राघवेन्द्रसिंह ३.००
जातिविज्ञान का आधार—
कान्तिकिशोर भरतिया ४.००
भौतिक विज्ञान में क्रांति—लुई दे ब्रोगली ५.००
भारत का भाषा सर्वेक्षण-सर जार्ज ग्रियर्सन ७.००
भरत का संगीत सिद्धान्त—
कैलासचन्द्र देव बृहस्पति ६.५०
बुद्ध चित्रावली-(बुद्ध जयन्ती पर प्रकाशित) ६.००
आजादी के तराने—(राष्ट्रीय गीत) ०.१२
श्रीरामावतार शर्मा निबन्धावली—
रामावतार शर्मा ८.००

प्राङ्मौर्य बिहार—डा. देवसहाय त्रिवेद ७.२५
गुप्त कालीन मुद्राएँ—डा० अनन्त सदाशिव ६.००
भोजपुरी भाषा और साहित्य —
डा० उदयनारायण तिवारी १३.७५
राजकीय व्यय-प्रबन्ध के सिद्धान्त—
गोरखनाथसिंह १.५०
रबर —फूलदेवसहाय शर्मा ७.५०
ग्रह नक्षत्र— त्रिवेणीप्रसादसिंह ४.५०
नीहारिकाएँ —डा० गोरखप्रसाद ४.५०
हिन्दू धार्मिक कथाओं के भौतिक अर्थ—
—त्रिवेणीप्रसादसिंह ३.००
ईख और चीनी— फूलदेव सहाय वर्मा १३.००
शैवमत— डा० यदुवंशी ८.००
मध्य देश —डा. धीरेन्द्र वर्मा ७.००
प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण (पहला और दूसरा खण्ड)-डा. धर्मेन्द्रब्रह्मचारी शास्त्री ५.००
शिवपूजन रचनावली भाग १-शिवपूजनसहाय ८.७५
„ „ २ „ ६.००
„ „ ३ „ १०.००
राजनीति और दर्शन-डा० विश्वनाथप्रसाद १४.००
बौद्ध धर्म दर्शन „ १४.००
मध्य एशिया का इतिहास भाग १—
राहुल सांकृत्यायन १२.००
„ भाग २ „ ८.५०
दोहाकोष —अनु० १३.२५
हिन्दी को मराठी सन्तों की देन—
आचार्य विनयमोहन शर्मा ११.२५
रामभक्ति साहित्य में मधुर उपासना—
भुवनेश्वर मिश्र 'माधव' १०.२५
अध्यात्म योग और चित्तविकलन—
वेंकटेश्वर शर्मा ७.५०
प्राचीन भारत की सांग्रामिकता—
—रामदीन पाण्डेय ६.५०
बाँसुरी बज रही— जगदीश त्रिगुणायत ८.००
चतुर्दश-भाषा-निबन्धावली—
(चौदह प्रमुख भाषाओं के विद्वानों द्वारा) ४.००

 प्राप्ति-स्थान—साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

...hennai and eGangotri

द्विवेदी-अङ्क

साहित्य सन्देश

साहित्य रत्न भण्डार,
आगरा

G...kul ... ection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निबन्धकार : गुलाबराय

लेखक : देवेन्द्र जैन

★

बाबूजी के निबन्धों पर समीक्षात्मक दृष्टि से यह प्रथम प्रयास है। बाबूजी केवल आलोचक ही नहीं वे गद्य शैली निर्माता और उच्चकोटि के साहित्य निबन्ध लेखक भी थे। यह प्रबन्ध सारगर्भित एवं प्रामाणिक पद्धति से लिखा है।

मूल्य ३.५०

★

हिन्दी आलोचना : सिद्धान्त और विवेचन

सम्पादक—श्री महेन्द्रजी ● मूल्य ४.००

इस पुस्तक में—

साहित्य-सन्देश में अब तक प्रकाशित हिन्दी के मूर्धन्य एवं प्रकाण्ड विद्वान् लेखकों के २६ आलोचना-विषयक निबन्धों का संग्रह है। आलोचना के प्रत्येक प्रकार व पहलू पर कई विद्वानों के निबन्धों में विशद-रूपेण प्रकाश डाला गया है। आलोचना के गुण-दोषों का सम्यक्-विवेचन प्रस्तुत पुस्तक में प्राप्य है डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ० गुलाबराय, डॉ० नन्ददुलारे वाजपेयी तथा डॉ० नगेन्द्र के आलोचना-विषयक विचार एकाधिक निबन्धों में उपलब्ध हैं। हिन्दी-साहित्य के विद्यार्थियों तथा निष्पक्ष आलोचक के पदाभिलाषियों के लिए पुस्तक पथ-प्रदर्शक का काम करेगी।

●

हमारे तीन नये आलोचनात्मक प्रकाशन

- हिन्दी आलोचना सिद्धान्त।
- हिन्दी उपन्यास।
- निबन्धकार गुलाबराय।

हिन्दी उपन्यास : सिद्धान्त और विवेचन

सम्पादक—श्री महेन्द्रजी मूल्य ४.५०

●

हिन्दी की उपन्यास विधा पर अनेक विद्वानों के लेखों का इसमें संग्रह किया गया है। सम्पादन इस ढङ्ग से हुआ है कि उपन्यास सम्बन्धी कोई बात छूटने नहीं पाई है सैद्धान्तिक लेख में साथ ही साथ विभिन्न प्रकार के उपन्यासों पर अलग-अलग विस्तृत विवेचन किया गया है। उपन्यास विधा पर ऐसी मूल्यवान पुस्तक नहीं मिलेगी।

न्याय मन्त्री

★

लेखक—महेशचन्द्र रावत मूल्य दो रुपये

इस पुस्तक में प्रसिद्ध हिन्दी कहानियों का नाट्य रूपान्तर करने में मूल लेखकों की भावनाओं को पूरी तरह सुरक्षित रखा है। इस नाटक का यह द्वितीय संस्करण है—पहला संस्करण हाथों हाथ बिक गया।

प्रकाशक—

साहित्य-रत्न-भण्डार,

साहित्य-कुञ्ज, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कथा साहित्य (उपन्यास तथा कहानियाँ)

गुलशन नंदा

अंधेरे चिराग	४.५०	उपन्यास
गेलार्ड	५.००	"
नीलकण्ठ	६.००	"
सितारों से आगे	३.५०	"
सांझ की वेला	३.००	"

कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी

अभिशाप	६.००	उपन्यास
स्वप्नद्रष्टा	६.००	"
लोपामुद्रा	६.५०	"
पर्दे के आरपार	३.५०	"
गुजरात के गौरव (दो भागों में)	१०.००	"
गौरव का प्रतीक	४.५०	"
मेरी कमला	६.५०	कहानी संग्रह
शम्बर कन्या	२.००	नाटक
विश्वामित्र	२.५०	"

शौकत थानवी

बकवास	४.२५	उपन्यास
मौलाना	३.५०	"
चार गलतियाँ	३.००	कहानी संग्रह

आदिल रशीद

समय के पंख	५.००	उपन्यास
मीर साहब	४.५०	"

हंसराज रहबर

हम लोग	३.७५	कहानी संग्रह

श्रीराम शर्मा 'राम'

कल्पना के आंसू	४.५०	उपन्यास
रेणु	४.७५	"

कमल शुक्ल

कूल और कगार	३.००	उपन्यास

कृपाशङ्कर भारद्वाज

स्मृति	५.००	"

गोर्की

अरतागा	३.५०	उपन्यास
बेकरी का मालिक	३.००	"
जीवन का सार	२.५०	कहानी-संग्रह

अन्य प्रसिद्ध लेखकों की रचनाएं

सम्मानहीन	ताजवर सामरी	उप०	४.००
कवि	ताराशंकर बन्धोपाध्याय	"	४.००
विपनेर संसार	विभूतिभूषण बन्धोपाध्याय	"	४.५०
कुलीन घराना	तुर्गनेव	"	४.००
भद्रलोक का नीड़	"	"	४.००
दुखियारी	मोपांसा	"	४.००
नदी बहती थी	राजकमल चौधरी	"	३.००
मिट्टी के मीनार	रमेश भारती	"	११.००
उलझे प्रश्न अधूरे			
उत्तर	महेन्द्र बाबा	"	५.००
छाया	देवेन्द्र जैन	"	२.५०
कपट निद्रा	भगवतीप्रसाद वाजपेयी	"	५.००
सड़क के किनारे	नूर नबी अब्बासी	कहानी संग्रह	३.५०
विद्रोही आत्माएं	"	"	२.५०
युग और देवता	गुरवचनसिंह	"	२.७५

नाटक साहित्य

गुस्ताखी माफ	सुदर्शन बब्बर	१.५०
पाँच बड़े	वीरेन्द्र कश्यप	२.००

शिक्षा साहित्य

शिक्षा सिद्धान्त की रूपरेखा	अ० अ० अनन्त	३.५०
" " प्रश्नोत्तरी	"	३.५०

शोध प्रबंध

महाकवि घाघ जीवन कला और कृतियां	डा० मनमोहनलाल	२.५०
आधुनिक भारतीय समाज तथा हिन्दी साहित्य में नारी भावना और प्रसाद के नारी चरित्र	डा० देवेश ठाकुर	१५.००

यात्रा वर्णन

आँखों देखा रूस	जवाहरलाल नेहरू	२.५०

अध्यात्म

कर्मयोग	स्वामी विवेकानन्द	२.००

निबन्ध संग्रह

साहित्यिक निबन्ध	जीवनप्रकाश जोशी	१०.००

नयुवग प्रकाशन ३९-यू० ए० बङ्गला रोड, दिल्ली—६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-साहित्य की स्थायी निधि : साहित्यिक पाठकों के लिए परम उपयोगी

नगेन्द्र साहित्य

भारतीय काव्यशास्त्र की परम्परा	२०.००	भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका	१२.५०
देव और उनकी कविता	७.००	रीतिकाव्य की भूमिका	५.५०
विचार और अनुभूति	४.५०	विचार और विवेचन	४.५०
विचार और विश्लेषण	५.५०	अनुसन्धान और आलोचना	४.००
आधुनिक हिन्दी कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ	४.००	कामायनी के अध्ययन की समस्याएँ	३.००
सियारामशरण गुप्त	५.५०	रस सिद्धांत	(यंत्रस्थ)

अन्य महत्वपूर्ण साहित्यिक प्रकाशन

डा० नगेन्द्र के आलोचना-सिद्धात : नारायणप्रसाद चौबे ७.००

डा० नगेन्द्र की आलोचना की मूलभूत विशेषताओं एवं उनके समीक्षा-सिद्धान्तों का सर्वांगीण विवेचन-विश्लेषण।

साहित्य-समीक्षा : मुद्राराक्षस ६.००

उठते आलोचकों में अग्रणी 'मुद्राराक्षस' लेखक को 'जीनियस' नहीं 'फोटोग्राफर' मानते हैं। साहित्यिक परिभाषाएँ एवं समस्याएँ— सैद्धान्तिक और व्यावहारिक आकलन।

रामचरित मानस और साकेत : परमलाल गुप्त ५.००

'मानस' और 'साकेत' का तुलनात्मक अनुशीलन, प्रांजल भाषा, विद्यार्थियों और प्राध्यापकों के लिए विशेष उपयोगी।

हिन्दी साहित्य रत्नाकर : डा० विमलकुमार जैन ५.००

चन्दवरदायी, विद्यापति, कबीर, जायसी, सूर, मीरा, तुलसी, केशव, बिहारी, भूषण और देव आदि कवियों का गवेषणात्मक जीवत-वृत्त—काव्यात्मक विस्तृत आलोचना, विद्यार्थीवर्ग की शङ्काओं और समस्याओं की पूर्ति।

हिन्दी के अर्वाचीन रत्न : डा० विमलकुमार जैन ७.००

भारतेन्दु, रत्नाकर, रामचन्द्र शुक्ल, 'हरिऔध', 'प्रेमचन्द' मैथिलीशरण गुप्त, 'प्रसाद', 'निराला', पन्त और महादेवी के काव्य का सुगम शैली में समीक्षात्मक अध्ययन। महत्वपूर्ण कृतियों पर विस्तृत प्रकाश।

जैनेन्द्र और उनके उपन्यास : रघुनाथसरन झालानी ५.००

मूर्धन्य उपन्यासकार और विचारक श्री जैनेन्द्रकुमारजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का स्वच्छ अध्ययन।

प्रेमचन्द के नारी पात्र : ओम अवस्थी ५.००

प्रेमचन्द के नारी पात्रों की सामाजिक पृष्ठभूमि एवं उनकी नारी भावना का रस विवेचन।

नेशनल पब्लिशिंग हाउस

'चन्द्रलोक' जवाहर नगर, दिल्ली—६

(फोन : २२५७४२)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालयों के लिए कुछ अच्छे प्रकाशन

किशोर उपन्यास-माला के पुष्प

वीर पुरुषों पर आधारित उपन्यास

खूब लड़ी मर्दानी	मनहर चौहान	२.००
हल्दीघाटी	,,	२.००
जय भवानी	,,	२.००
चित्तौड़गढ़ की रानी	उमाशङ्कर	२.००
गढ़मण्डल की रानी	,,	२.००
बाजीराव पेशवा	,,	२.००
अर्जुन	सुदर्शन चोपड़ा	२.००
कर्ण	,,	२.००
वीर कुणाल	'वत्स'	२.००
दुर्गादास	शत्रुघ्नलाल शुक्ल	२.००
सम्राट् शिलादित्य	,,	२.५०

अन्य महापुरुषों पर आधारित उपन्यास

सम्राट् अशोक	विश्वामित्र शर्मा	२.००
रवि बाबू	लोकेन्द्र शर्मा	२.००
मीरां बावरी	वीरेन्द्रमोहन रतूड़ी	२.००
गुरु नानक देव	राजेश शर्मा	२.००
गुरु अंगद देव	,,	२.००
देवता हार गए	देशराजसिंह भाटी	२.००
ऋषि का शाप	,,	२.००
गौतम बुद्ध	यादवचन्द्र जैन	२.००
सन्त कबीर	रामकृष्ण शर्मा	२.००

शेक्सपियर के नाटकों पर आधारित उपन्यास

जूलियस सीजर	(शेक्सपियर)	२.००
राजा लियर	,,	२.००
राई से पहाड़	,,	२.००
हैमलेट	,,	२.००
मैकबेथ	,,	२.००
तूफान	,,	२.००

शिकार एवं ज्ञान-विज्ञान पर आधारित उप०

बाघ का शिकार	प्रकाश नगायच	२.००
मगरमच्छ का शिकार	भीमसेन त्यागी	२.००
पूं पूं	मनहर चौहान	२.००
रूपा और लल्ली	,,	२.००

उपन्यास-साहित्य

भग्नाश	गुरुदत्त	७.२५
विद्या दान	,,	३.००
भाग्य रेखा	,,	३.००
सभ्यता की ओर	,,	३.००
रात खो गई	मनहर चौहान	५.५०
हिरना सांवरी	,,	४.५०
आकाश तले धरती पर	उमाशङ्कर	३.५०
संगम या विछोह	यशोविमलानन्द	३.२५
कांच और कंचन	शरण	३.००

नाटक-साहित्य

नेफा की एक शाम	ज्ञानदेव अग्निहोत्री	२.५०
स्वर्ग के खण्डहर	विनोद रस्तोगी	२.७५

साहसिक कहानियाँ

नेफा और लद्दाख के साहसी वीरों की गाथाएं	वीरेन्द्रमोहन रतूड़ी	२.५०
भारत के साहसी वीरों की गाथाएँ	धर्मपाल शास्त्री	२.५०

अन्य कहानियाँ

संसार की तेरह श्रेष्ठ कहानियां	गोपाल शेखरन्	३.००
उर्दू की तेरह श्रेष्ठ कहानियां	रमेश गौड़	४.००
शेक्सपियर के नाटकों की कथाएं—भाग १	शत्रुघ्नलाल शुक्ल	५.००
,, ,,	भाग—२ ,,	५.००
मत छुओ	मनहर चौहान	३.००
देश-देश की परियां भारत आईं	,,	२.००
रंग-बिरंगी परियां	,,	२.००

विविध

गौरवमय भारत—भाग-१		५.७५
गौरवमय भारत—भाग-२		४.५०
हमारा आकाश	छोटूभाई सुथार	४.५०
हमारा समुद्र	भगीरथ	३.००

उमेश प्रकाशन,

५, नाथ मार्केट, नई सड़क, दिल्ली ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चार अभिनव प्रकाशन

संयुक्त राष्ट्रसंघ और विश्व-शान्ति

ले० श्री तेजराम उपाध्याय

वर्ष का बहुचर्चित एवं बहु प्रशंसित ग्रन्थ अपने ढंग का अनूठा तथा उपादेय राजनीति के छात्रों के लिए उपयोगी

डिमाई ४७० पृष्ठ आठ रुपये ।

साहित्यक निबन्ध

सम्पादन : कमलेश

परामर्श : डा० महेन्द्र भटनागर

भारत के ४४ श्रेष्ठ निबन्धकारों द्वारा रचित साहित्य के विभिन्न अंगों पर विद्वत्तापूर्ण निबन्धों का संग्रह ।

हिन्दी साहित्य के छात्रों के लिए उपयोगी ।

डिमाई ४६० पृष्ठ सात रुपये ।

आहार निरूपण

ले० कुमारी शकुन जोशी

आहार-शास्त्र पर विस्तृत विवेचन, हायर सेकण्डरी तथा बैचलर आफ होम साइन्स की छात्राओं के लिए अत्यन्त उपयोगी ।

डिमाई ४३० पृष्ठ सात रुपये ।

प्रमुख राजनीतिक विचारकों की चिन्तनधारा

ले० प्रो० जयनारायण पाण्डेय

प्लेटो से लेकर गांधीजी तक सभी प्रमुख विचारकों का सारगर्भित वर्णन एवं मौलिक मीमांसा ।

राजनीति के उच्चवर्ग के छात्रों में अत्यन्त लोकप्रिय ।

डिमाई ४३० पृष्ठ आठ रुपये ।

लोक-चेतना प्रकाशन, जबलपुर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी पुस्तकों के लिये आप इधर-उधर क्यों भटकते हैं ? हमें लिखें हम आपकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करेंगे ।

हमारे अनमोल प्रकाशन

१. संसार की प्राचीन सभ्यतायें और भारत से उनका सम्बन्ध — रामकिशोर शर्मा — ८.००
२. हिन्दी के श्रेष्ठ साहित्यकार — सिद्धेश — ३.००
३. वाद विवाद और व्याख्यान प्रवेशिका — तिवारी व सिद्धेश — ३.५०
४. प्रबन्ध पराग — बैजनाथराय एम० ए० — ५.००
५. निबन्ध लोक — प्रो० कमलेश — ४.००
६. हमारा सामाजिक और सांस्कृतिक इतिहास — चौहान — १०.००
७. आर्थिक और व्यापारिक निबन्ध — प्रो० रूपनारायण उपाध्याय — ५.००
८. उच्चतर निबन्ध भारती — सिद्धेश-मिश्रा — ५.००
९. नागरिकता तथा भारतीय शासन — शिवनाथ शर्मा एम० ए० — ८.५०
१०. भारतीय नागरिक शास्त्र — ,, — ८.००
११. भारतीय शासन — ,, — ५.००
१२. बलिदान (राष्ट्रीय उपन्यास) — बैजनाथराय — ५.००
१३. भगवान श्रीकृष्ण — देवदत्त मिश्र — ३.५०
१४. टिमटिमाते दीप — राजकिशोर त्रिपाठी — ३.५०
१५. सीमा रेखा (उपन्यास) — शिवमूर्ती शिव — ३.००
१६. विधाता की मूरतें (कहानियाँ) — अचल — ४.००
१७. मगध की पदमिनी — वासुदेव उपाध्याय — ३.००
१८. अर्थशास्त्र के मूलतत्व — सच्चिदानन्द मिश्र एम० ए० — ८.००
१९. त्रिपथगा (कविता) — प्रो० कमलेश — २.५०
२०. रचना रत्नाकर (निबन्ध) — रंगनाथ त्रिपाठी — ४.००
२१. समाज का अध्ययन — चौहान — ५.५०
२२. निबन्ध सुधा — त्रिपाठी बन्धु — ३.५०
२३. निबन्ध भारती — सिद्धेश — ३.००
२४. सूर साधन और साहित्य — त्रिलोकीनाथ प्रेमी एम० ए० — २.५०
२५. पनाह (नाटक) — बलराम चौहान — १.५०
२६. ये कीर्तिस्तम्भ — मानिक बच्छावत एम. ए. — १.५०
२७. उसे क्षमा करना — अरुणकुमार शर्मा — २.५०
२८. रजनीगन्धा — विवेकीराय एम० ए० — २.००
२९. आलोक अध्ययन — ,, — २.००

प्राप्ति-स्थान—

(१) प्रधान कार्यालय—
आदर्श पुस्तक भण्डार,
५८ अपर चितपुर रोड,
कलकत्ता-७
फोन नं० ३४-१८९८ (दो लाइन)

शाखा—
आदर्श पुस्तक भण्डार,
डी० ५३/८९ लक्सा रोड,
(गुरुबाग) वाराणसी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१७ अगस्त १९६४ की एक घटना.........

ओंकार शरद की पचासवीं कृति "देश, काल, पात्र" के प्रकाशनोत्सव के अवसर पर प्रयाग में आयोजित एक गोष्ठी की अध्यक्षता डा० राममनोहर लोहिया ने की और उद्घाटन किया श्रीमती महादेवी वर्मा ने।

महादेवीजी ने कहा :—इस छोटी उम्र में शरद ने जितना काम किया वह हिन्दी के लिए एक उदाहरण है।

लोहियाजी ने कहा :—ओंकार शरद गद्य के राजकुमार हैं...............

ओंकार शरद की पचासवीं कृति

देश, काल, पात्र

अपनी विशेषताओं के लिये प्रसिद्धि प्राप्त कर रहा है। संस्मरणों, रेखाचित्रों, और बीती बातों का ऐसा अनूठा संकलन अन्यथा दुर्लभ है। बहुमूल्य चित्रों से सुसज्जित

मूल्य ४.००

ओंकार शरद की अन्य कृतियाँ भी हमसे प्राप्त करें।

प्रकाशक:— **राजरंजना प्रकाशन**

ऋषि कुटी, जीरो रोड, इलाहाबाद-३

हिन्दी के अत्यन्त ही लोकप्रिय लेखक

श्री गुरुदत्तजी की

दो विचारपूर्ण रचनायें

१ धर्म संस्कृति और राज्य — मूल्य ८.००

लेखक का मत है कि शासन प्रणाली के प्राचीन भारतीय सिद्धान्त शाश्वत सत्य का प्रतिपादन करते हैं। अतः संसार की कोई भी समस्या ऐसी नहीं, जिनका सुझाव उन सिद्धान्तों से समझा अथवा प्राप्त न किया जा सके। धर्म, संस्कृति और राज्य, तीनों में समन्वय होना चाहिए और यही धर्म राज्य है। इसी को इस पुस्तक में समझाने का यत्न किया गया है।

२ इतिहास में भारतीय परम्परायें — मूल्य ८.००

पाश्चात्य इतिहासज्ञों एवं पाश्चात्य पद्धति से शिक्षित इतिहासज्ञों ने अपनी पक्षपातपूर्ण एवं मिथ्या धारणाओं के कारण भारतीय इतिहास को गलत-सलत करने का जो दुष्प्रयास किया हुआ है, उसका युक्तियुक्त एवं प्रमाणसहित खण्डन करते हुए विज्ञ लेखक ने इतिहास लिखने में भारतीय शैली का विवरण प्रस्तुत किया है।

दोनों रचनाएँ प्रत्येक अच्छे पुस्तकालय में रखने योग्य हैं।

भारती साहित्य सदन

३०।९०, कनाट सरकस, नई दिल्ली-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महत्वपूर्ण साहित्यिक प्रकाशन

शीघ्र प्रकाशित हो रहा है—

द्विवेदी-युगीन हिन्दी गद्य शैलियों का अध्ययन

सागर विश्व-विद्यालय द्वारा पी-एच० डी०
उपाधि के लिए स्वीकृत शोध-प्रबन्ध

लेखक

डॉ० शङ्करदयाल चौऋषि

मूल्य लगभग १५.००

शोध ग्रन्थ में द्विवेदीजी के व्यक्तित्व, कर्तृत्व तथा उनकी गद्य शैली के अध्ययन के साथ-साथ तत्कालीन गद्य लेखकों तथा गद्य की विभिन्न शैलियों—निबन्ध, समीक्षा, कथा-साहित्य, नाटक-साहित्य, गद्य-काव्य और पत्र-पत्रिकाओं की शैलियों पर विशद विवेचन हुआ है।

अन्य उपयोगी प्रकाशन

शोध-प्रबन्ध

हिन्दी अलङ्कार-साहित्य : डॉ० ओम्प्रकाश ६.००
हिन्दी काव्य और उसका सौन्दर्य : ,, ८.००
सूर की काव्य-कला : डॉ० मनमोहन गौतम १०.००
अपभ्रंश-साहित्य : डॉ० हरिवंश कोछड़ १०.००
हिन्दी और बंगला के वैष्णव-कवि : डॉ० रत्नकुमारी १०.००
मतिराम : कवि और आचार्य : डॉ० महेन्द्रकुमार १०.००
राजस्थानी कहावतें : डॉ० कन्हैयालाल सहल ८.५०
हिन्दी उपन्यासों में चरित्रचित्रण का विकास : डॉ० रणवीर रांग्रा १५.००
केशवदास : जीवनी, कला और कृतित्व : डॉ० किरणचन्द्र शर्मा १५.००
गोस्वामी तुलसीदास : व्यक्तित्व, दर्शन, साहित्य : डॉ० रामदत्त भारद्वाज १८.००
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल : सिद्धान्त और समीक्षा : डॉ० जयचन्द्रराय १०.००
गुरुमुखी लिपि में हिन्दी काव्य : डॉ० हरभजनसिंह १६.००
'रामचन्द्रिका' का विशिष्ट अध्ययन : डॉ० गार्गी गुप्ता १५.००
हिन्दी एकाङ्की : उद्भव और विकास : डॉ० रामचरण महेन्द्र १२.५०

विश्वविद्यालय स्तरीय साहित्यिक निबन्ध-ग्रन्थ

कला, साहित्य और समीक्षा : डॉ० भगीरथ मिश्र १०.००
मूल्य और मूल्याङ्कन : डॉ० रामरतन भटनागर ७.५०
साहित्य, अनुभूति और विवेचन : डॉ० संसारचन्द्र ६.००
साहित्य, शोध, समीक्षा : डॉ० विनयमोहन शर्मा ५.५०
साहित्य, सन्दर्भ और मूल्य : डॉ० रामदरश मिश्र ४.००
आलोचना के पथ पर : डॉ० कन्हैयालाल सहल ५.००
विचार और निष्कर्ष : डॉ० वासुदेव ७.५०
आलोचना के द्वार पर : डॉ० ओम्प्रकाश कुलश्रेष्ठ ४.५०
आलोचना की ओर : ,, ,, ४.००
साहित्यवार्त्ता : श्री गिरिजादत्त शुक्ल ५.५०
चिन्तन और कला : प्रो० जयनाथ 'नलिन' ३.५०
साहित्य के आलोक-स्तम्भ : श्री वि० 'मानव' १.००
आधुनिक हिन्दी निबन्ध : डॉ० सुरेशचन्द्र गुप्त तथा कृष्णचन्द्र विद्यालङ्कार ५.००

भारती साहित्य मन्दिर, फव्वारा दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी यूनीवर्सिटी की एम० ए० हिन्दी परीक्षा

की

पाठ्य एवं सहायक पुस्तकें

हम से मँगाएँ।

प्रभाकर पुस्तक मन्दिर,

६ गांधी मार्ग, आगरा।

बालिकाओं को स्कूल भेजिए

क्यों?

बालिकाएँ राष्ट्र की भावी नागरिक हैं।

- शिक्षित बालिकाएँ बड़ी होकर विभिन्न क्षेत्रों में राष्ट्र-हित के कार्य करेंगी।
- शिक्षित बालिकाएँ परिवार तथा राष्ट्र का पिछड़ापन दूर करेंगी।
- शिक्षित बालिकाएँ स्वावलम्बी बन राष्ट्र को सशक्त बनाएँगी।
- शिक्षित बालिकाएँ अपने देश की भावी माताएँ हैं।

एक शिक्षित माता सौ शिक्षकों से भी बढ़कर है।

शिक्षा प्रसार विभाग, उत्तर-प्रदेश।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे प्रकाशन

★ आलोचना तथा निबन्ध—

उन्नीससौ इकसठ : एक सिंहावलोकन	पं. अमरनाथ	१.५०
हिन्दी गद्यकाव्य और उसकी प्रगति	अमरनाथ	६.००
विचार अध्ययन अनुभूति	"	३.००
साहित्य मूल्याङ्कन	"	३.००
अधूरा चिन्तन	कु० ज्ञानवती	१.५०
निराला-स्मृति-ग्रन्थ	सं० अमरनाथ	२.५०
चन्दसखी का काव्य	अमरनाथ	२.००
हिन्दी गद्यकार	"	०.७५
हिन्दी के कवि	अलिन्द	१.००

★ कहानी-संग्रह—

बाँहों के घेरे गरदन की मजबूरियाँ	गंगाप्रसाद मिश्र	२.५०
नाइलान का मोजा	कुँअर राजशङ्कर	१.००

★ कविता—

नयन	दिवाकर	१.००
गोधूलि	रामबहादुरसिंह भदौरिया	१.००

★ उपन्यास—

प्रेम की अन्तिम मोड़	डा. लक्ष्मीनारायन टण्डन	५.००

★ विविध—

युग-पुरुष	अमरनाथ	०.७५
संचयन	सं० अमरनाथ	१.५०
खण्डहर	अमरनाथ	०.२५
पुरुषोत्तमदास टण्डनजी	अमरनाथ	०.२५

आगामी प्रकाशन

★ आलोचना—

साहित्य परिचय : लेखक और कवि	अमरनाथ	२.५०
डा० रांगेय राघव साहित्यकार एवं व्यक्ति	"	२.५०
विचार और समीक्षा	—अखिलेश मिश्र	४.५०

★ कविता —

अमर सेनानी	दिवाकर	१.५०

★ विविध—

राजर्षि टंडन-स्मृति-ग्रन्थ	सं० अमरनाथ	२.५०
खंडहर और पगडंडी	अमरनाथ	०.६०

ज्ञानालोक प्रकाशन

१३७ प्रकाश वीथी, ड्योढ़ी आगामीर, लखनऊ।

हमारे महत्वपूर्ण प्रकाशन

उपन्यास

यह क्यों है ?—	गुरुदत्त	८.००

एकाङ्की नाटक

देश के दुश्मन—	विनोद रस्तोगी	३.२५
मायाजाल—	गुरुदत्त	५.००
उमड़ती घटाएं	"	६.००
लुढ़कते पत्थर	"	६.००
नगर परिमोहन	"	६.००
सफलता के चरण	"	६.००
विवेक	"	६.००
सहस्रबाहु	"	६.००
मौलश्री	श्री कमल शुक्ल	६.००
राग और त्याग	"	५.००
भारतीय काव्य-शास्त्र की भूमिका	डा० नगेन्द्र	१०.००
तुलसीदास का प्रगीत-काव्य	प्रो० विनयकुमार	७.००
बीसवीं शताब्दी के महाकाव्य	डा० प्रतिपालसिंह	८.५०
हिन्दी साहित्य की परम्परा	श्री हंसराज अग्रवाल	८.००
गल्पिका	श्री धर्मचन्द सन्त	४.५०
भारतीय संस्कृति	प्रो० बलदेव कृष्ण	४.५०
सिद्धान्तालोचन	(प्रो० धर्मचन्द्र संत तथा प्रो० बलदेव कृष्ण)	४.५०
सूर मीमांसा	डा० व्रजेश्वर वर्मा	४.७५
आचार्य चाणक्य	डाक्टर यतीन्द्र	६.००
यथार्थ से आगे	श्री भगवती प्रसाद वाजपेयी	५.५०
विश्वास की वेदी पर	श्री प्रतापनारायण श्रीवास्तव	५.७५

ओरिएण्टल बुक डिपो

१७०४ नई सड़क दिल्ली—६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तक विक्रेता, पुस्तकालयाध्यक्ष, जागरूक पाठक
सभी के लिए

अत्यन्त उपयोगी, अनिवार्य, लाभप्रद

जैनेन्द्र-साहित्य

निबन्ध-साहित्य
समय और हम, इतस्ततः, पूर्वोदय, मंथन, सोचविचार
२०.०० १०.०० ४.५० ५.०० ५.५०
श्रेय और प्रेय, काम, प्रेम, परिवार, प्रस्तुत प्रश्न, ये और वे
७.०० ३.०० ४.५० ३.७५

उपन्यास
सुखदा, विवर्त, सुनीता, त्यागपत्र, कल्याणी, जयवर्द्धन
४.०० ४.२५ ३.५०, २.२५ २.५० ६.००
(अ० २.५०) (अ० १.५०)

कहानी-संग्रह
जैनेन्द्र की कहानियाँ भाग १ से ८ तक।
मूल्य प्रत्येक ३.५०

अनूदित
पाप और प्रकाश, मग्दालिनी, यामा भाग १ से ३
२.५० १.५० मूल्य प्रत्येक २.५०

नवसाक्षरी व किशोरोपयोगी
एक गौ, चिड़िया की बच्ची, लाल सरोवर, पाजेब,
किसका रुपया, नारद का निवेदन, खेल, प्रेम में भगवान्,
कितनी जमीन, धर्म-पुत्र, मूरखराज, देर हो अंधेर नहीं,
ग्राम बराबर गेहूँ, जीवन-मूल,
मूल्य प्रत्येक-सजिल्द नब्बे पैसे, अजिल्द पैंसठ पैसे।

अन्य साहित्य
जवानो, जवानो राह यह है, जीवन झाँकी, नीति की ओर
३.०० २.७५ ०.७५ १.५०
केरलसिंह (उपन्यास) मिट्टी का पुतला (उपन्यास)
३.०० २.००

पुस्तकालयाध्यक्ष अपने निकटतम के प्रमुख पुस्तक विक्रेता से माँग करें।
अनुपलब्ध होने पर हमें सीधे लिखें।
पुस्तक-विक्रेता व्यापारिक नियमों आदि के लिए सम्पर्क करें।
जैनेन्द्र साहित्य के एकमात्र अधिकारी प्रकाशक और वितरक—

पूर्वोदय प्रकाशन, ८ नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली—६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलका प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

पंछी और परदेशी—	कमल शुक्ल	४.००
मैं दुलहन बनूँगी—	साधना प्रतापी	४.००
खोटा सिक्का—	”	४.००
समाधि—	”	२.५०
आशिका—	कृपाशङ्कर भारद्वाज	४.००
दूर के बटोही—	रमेश भारती	४.००

एक मात्र वितरक—

दिल्ली पुस्तक सदन,

१६, यू० बी० बङ्गलो रोड, दिल्ली-६

इस मास के नए प्रकाशन

● एक गधा नेफा में

अपनी आत्मकथा सुनाने के बाद अब कृश्नचन्दर का जगत्-विख्यात गधा आपको नेफा और नेफा से पेकिंग तक की सैर कराने का प्रोग्राम लेकर आया है। चीन-सम्बन्धी अप्रिय तथ्यों पर व्यंगाघात। ३.५०

● लौटती लहरों की बाँसुरी

इस उपन्यास द्वारा प्रसिद्ध कवि भारत-भूषण अग्रवाल एक समृद्ध उपन्यासकार के रूप में हमारे सामने आते हैं। प्रेमी-प्रेमिका की बीस वर्ष बाद की मुलाकात की पृष्ठभूमि में डूबती-उतराती मार्मिक कहानी। ३.००

● दर्पन

प्रसिद्ध नाटककार डा० लक्ष्मीनारायण लाल ने अपने इस नये सशक्त एवं भावपूर्ण नाटक में आज के समाज को दर्पन दिखाया है। २.००

● वे महान कैसे बने (ले० राष्ट्रबन्धु)

संसार के निर्धन घरों में जन्म लेने वाले बालक अपने जीवन में कैसे महान् बने, यह सचित्र बाल-पुस्तक इसी का सरस उत्तर प्रस्तुत करती है। १.००

नये कहानीकार : नई पुस्तकमाला

सम्पादक : राजेन्द्र यादव

● मोहन राकेश की श्रेष्ठ कहानियाँ

कमलेश्वर द्वारा लिखित व्यक्तिचित्र २.५०

● मन्नू भण्डारी की श्रेष्ठ कहानियां

राजेन्द्र यादव द्वारा लिखित व्यक्तिचित्र २.५०

राजपाल एण्ड संज

कश्मीरी गेट दिल्ली ६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हमारी पीढ़ी के सबसे महान व्यक्ति की यह प्रबल इच्छा थी कि हर आँख के आँसू को खुशी के मोती में बदल देना चाहिए। यह लक्ष्य दूर हो सकता है पर यह सही है कि जब तक एक आंख में भी आँसू झलकते रहेंगे, तब तक हमारा काम अधूरा ही रहेगा। इसलिए हमें मेहनत करनी है, कड़ा परिश्रम करना है ताकि हमारे स्वप्न साकार हो सकें।"

—जवाहरलाल नेहरू

हर आँख का आँसू खुशी का मोती बन जाए . .

"तो आइये, हम मिल कर आज़ाद भारत को खुशहाल और मजबूत बनाने में लग जाएं। एक ऐसी दुनिया बनाने में जिसमें युद्ध के लिए कोई जगह न हो। यह महान कार्य हमारे सामने है और उसे हमें पूरा करना है। क्या हम गांधी जी और जवाहरलाल जी के प्रति इससे ज्यादा सच्ची और अच्छी श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं।"

—लालबहादुर शास्त्री
प्रधान मंत्री

हमारा लक्ष्य साफ है : हरेक के लिए सुखी जीवन।

इसलिए हमें गरीबी और बेरोजगारी मिटाने के लिए पूरी शक्ति लगानी है तथा सबके लिए भोजन, कपड़े और रहने के स्थान का प्रबन्ध करना है।

आइये हम कदम से कदम मिला कर समाजवाद के इस लक्ष्य की ओर आगे बढ़ें।

आज की चुनौती का एकमात्र जवाब है - अनुशासन और संगठित कार्य

जय हिन्द

एकता बनाये रखिये, मुस्तैदी से काम कीजिये।

डी ए ६५/२२०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार-राष्ट्र-भाषा-परिषद्

के

बहुमूल्य नवीन प्रकाशन

तान्त्रिक वाङ्मय में शाक्तदृष्टि :
म० म० डॉ० श्रीगोपीनाथ कविराज ७.५०

भारतीय संस्कृति और साधना
(प्रथम खण्ड) : " " ११.५०
(द्वितीय खण्ड) " " ७.००

पतञ्जलिकालीन भारत :
डॉ० श्रीप्रभुदयाल अग्निहोत्री ११.५०

भारतीय वाङ्मय में श्रीराधा :
आचार्य श्रीबलदेव उपाध्याय १०.५०

रहस्यवाद : आचार्य श्रीपरशुराम चतुर्वेदी ५.००

साहित्य-सिद्धान्त : डॉ० श्रीरामअवध द्विवेदी ५.००

हिन्दी साहित्य और बिहार (द्वितीय खण्ड) :
आचार्य श्रीशिवपूजनसहाय ८.००

कृषि-विनाशी कीट और उनका दमन :
श्रीशैलेन्द्रकुमार 'निर्मल' ५.५०

मात्रिक छन्दों का विकास :
डॉ० श्रीशिवनन्दनप्रसाद ८.५०

भारतीय अब्दकोश (ईयरबुक–१९६४ ई०) ८.००

हरिचरित (प्रथम खण्ड) :
सम्पा० आ० श्रीनलिनविलोचन शर्मा ३.२५

हर्षचरित : एक सांस्कृतिक अध्ययन
(द्वि० संस्क०) डॉ० श्रीवासुदेवशरण अग्रवाल ९.५०

कम्ब रामायण (दूसरा खण्ड)
अनु० श्री न० वी० राजगोपालन १०.७५

प्राचीन हस्तलिखित पोथियों का विवरण
(छठा खण्ड) २.००

*** अबतक परिषद् द्वारा प्रकाशित ९२ ग्रन्थों का सूचीपत्र मँगाइए ***

साहित्य – संस्कृति – साधना – प्रधान

त्रैमासिक

परिषद्-पत्रिका

भारतीय वाङ्मय के मूर्धन्य मनीषियों, विद्वानों एवं सुचिन्तकों के उच्चस्तरीय विद्याविलास का अन्यतम माध्यम।

वार्षिक मूल्य ६.००
एक प्रति का १.५०

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्, पटना–४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-जगत् को अनुपम भेंट—

आचार्य किशोरीदास वाजपेयी

(व्यक्तित्व और कृतित्व)

सम्पादक—राष्ट्रकवि दिनकर और डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी

इस महत्वपूर्ण ग्रन्थ के कुछ प्रमुख लेखक ये हैं—

१—महापण्डित राहुल सांकृत्यायन, २—महामहोपाध्याय पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी, ३—आचार्य शिवपूजनसहाय, ४—डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, ५—राजर्षि टण्डन (आशीर्वाद), ६—पं० नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ, ७—डा० रामविलास शर्मा, ८—पं० बनारसीदास चतुर्वेदी, ९—पं० मौलिचन्द्र शर्मा, १०—डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, ११—पं० कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर', १२—डा० मुन्शीराम शर्मा 'सोम', १३—डा० हरिदत्त शर्मा (सप्ततीर्थ), १४—पं० गया प्रसाद शुक्ल, १५—डा० अम्बाप्रसाद 'सुमन' आदि। सम्पादकों के भी लेख हैं।

बड़े आकार के **पौने तीनसौ पृष्ठ,** बढ़िया कागज, मोनो टाइप की छपाई, कई आकर्षक चित्र और मूल्य **पाँच रुपये मात्र ।**

मँगाने का पता—

हिमालय एजेंसी, कनखल (उ० प्र०)

★ अमृत से भी अधिक मधुर और सत्य की भाँति शाश्वत

★ एक है जीवन दर्शन दूसरा है जीवन परिचय

गीता मृत — श्री शिवकुमार मिश्र 'मयूर' मूल्य ३.००

कविरत्न सत्यनारायण की जीवनी — श्री बनारसीदास चतुर्वेदी मूल्य ४.००

अनुशीलन के नये मानदण्ड और नये शिल्प से हिन्दी साहित्य को अलंकृत करने वाले चार संग्रहणीय ग्रन्थ

प्रबोध चन्द्रोदय और उसकी परम्परा

डा० सरोज अग्रवाल मूल्य १०.००

दक्खिनी हिन्दी का उद्भव और विकास

डॉ० श्रीराम शर्मा मूल्य १२.००

रसशास्त्र

डॉ० अत्रिदेव विद्यालङ्कार मूल्य ७.००

रस और रसास्वादन

डॉ० हरद्वारीलाल शर्मा मूल्य ४.५०

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्विवेदी स्मृति अङ्क—

विषय-सूची

१—हमारी विचारधारा	—सम्पादक	१
२—मेरी जीवन-रेखा	—आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी की अपनी कलम से	५
३—हिन्दी के सजग प्रहरी : आचार्य द्विवेदी	—श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी	११
४—आचार्य द्विवेदी का व्यक्तित्व	—डा० कन्हैयालाल सहल	१३
५—आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी : व्यक्तित्व की एक झलक	—डा० रामप्रसाद त्रिपाठी	१५
६—द्विवेदी-युग : नवमूल्याङ्कन की आवश्यकता	—डा० रामरतन भटनागर	१६
७—युग प्रवर्तक द्विवेदी	—डा० सत्येन्द्र	२१
८—युगपुरुष द्विवेदीजी और द्विवेदी-युग	—डा० विश्वम्भरनाथ उपाध्याय	२४
९—सम्पादकाचार्य द्विवेदी	—श्री बाबूराव विष्णु पराड़कर	२६
१०—द्विवेदीजी का आचार्यत्व	—डा० रामकुमार वर्मा	३१
११—द्विवेदीजी की साहित्य-सेवा	—श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी	३३
१२—आचार्य शुक्ल की दृष्टि में आचार्य द्विवेदी	—सङ्कलनकर्त्ता—श्री महेन्द्र	३६
१३—द्विवेदी युग एवं उसका गद्य साहित्य	—श्री गोपीचन्द गुप्त	४२
१४—खड़ी बोली की कविता और द्विवेदीजी	—श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	४५
१५—कवि द्विवेदी	—श्री गोपालप्रसाद व्यास	४६
१६—द्विवेदीजी के काव्य सम्बन्धी विचार	—डा० गुलाबराय	५०
१७—द्विवेदी युग के काव्य में सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना	—डा० मुरारीलाल शर्मा 'सुरस'	५४
१८—निबन्धकार द्विवेदी	—डा० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल	५६
१९—द्विवेदीजी के निबन्ध	—प्रो० प्रकाशचन्द्र गुप्त	५८
२०—द्विवेदी युगीन समीक्षा	—डा० मक्खनलाल शर्मा	६०
२१—आलोचक द्विवेदी	—डा० गुलाबराय	६५
२२—आचार्य द्विवेदी के समीक्षा-सिद्धान्त	—डा० गणेश खरे	६६
२३—आचार्य द्विवेदी की काव्य-दृष्टि पर पाश्चात्य प्रभाव	—डा० प्रेमप्रकाश गौतम	७२
२४—आ० महावीरप्रसाद द्विवेदी का भाषा-सुधार	—डा० नत्थनसिंह	७६
२५—द्विवेदीजी का पत्र-साहित्य	—डा० कैलाशचन्द्र भाटिया	८०
२६—द्विवेदीजी की देन : शैली	—डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी	८२
२७—द्विवेदीजी का हिन्दी-साहित्य में स्थान	—डा० नगेन्द्र	८५
२८—आचार्य द्विवेदीजी का हिन्दी-साहित्य में स्थान	—डा० बलवन्त लक्ष्मण कोतमिरे	८७
२९—रसज्ञ-रञ्जन	—डा० पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश'	८९
३०—द्विवेदी अभिनन्दन ग्रन्थ	—श्री श्रीरञ्जन सूरिदेव	९२
३१—सिद्धान्तवादी सम्पादक द्विवेदीजी	—डा० श्यामसुन्दरदास	९४
३२—दूसरों की दृष्टि में—द्विवेदी	—सङ्कलित	९५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आचार्य

म
हा
वी
र
प्र
सा
द

द्विवेदी-अङ्क

जुलाई-अगस्त १९६४

सम्पादक

महेन्द्र

इस अङ्क का मूल्य

१·५०

सधारण प्रति

०·५०

वार्षिक मूल्य

५.००

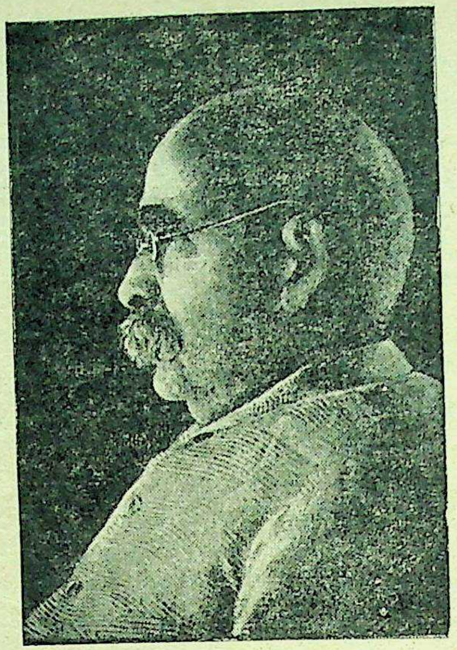

आचार्य श्री महावीरप्रसाद द्विवेदी

* श्रद्धाञ्जलि *

भारतेन्दु कर गए भारती की वीणा निर्माण,
किया अमर स्पर्शों ने जिसका बहु विधि स्वर संधान।
निश्चय, उसमें जगा आपने प्रथम स्वर्ण झङ्कार,
अखिल देश की वाणी को दे दिया एक आकार।
पंखहीन थी अहा कल्पना, मूक कण्ठगत गान,
शब्द शून्य थे भाव, रुद्ध, प्राणों से वञ्चित प्राण।
सुख दुख की प्रिय कथा स्वप्न बन्दी थे हृदयोद्गार,
एक देश था सही, एक था क्या वाणी व्यापार?
वाग्मि! आपने मूक देश को कर फिर से वाचाल,
रूप रङ्ग से पूर्ण कर दिया जीर्ण राष्ट्र कङ्काल।
शत कण्ठों से फूट आपके शतमुख गौरव गान,
शत शत युग स्तम्भों में तानें स्वर्णिम कीर्ति वितान।
चिर स्मारक सा, उठ युग युग में, भारत का साहित्य,
आर्य, आपके यशः काय को करे सुरक्षित नित्य।

—सुमित्रानन्दन पन्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य सन्देश

सम्पादक : महेन्द्र   सहकारी : डा० मक्खनलाल शर्मा

भाग २६]   आगरा—जुलाई-अगस्त १९६४   [अङ्क १-२

हमारी विचारधारा

द्विवेदी-विशेषाङ्क—

यह वर्ष आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी की जन्म-शताब्दी का है, इसी कारण स्थान-स्थान पर उनकी जन्म-शती मनाई गई और प्रायः सभी पत्रों ने उनके सम्बन्ध में विशेष लेख प्रकाशित किए। द्विवेदीजी ने हिन्दी के लिए जो कार्य किया है वह इतना महान् और इतना व्यापक है कि हिन्दी-साहित्य में उनके नाम से एक युग ही स्थापित हो गया है। इस युग-पुरुष की जन्म शती पर हमने भी द्विवेदीजी के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करना आवश्यक समझा और उसी के फल-स्वरूप यह अङ्क हिन्दी-संसार की भेंट है।

साहित्य-सन्देश के द्वितीय वर्ष में द्विवेदीजी के स्वर्गवास के पश्चात् अप्रैल १९३९ में भी हमने इसी प्रकार का एक अङ्क निकाला था जिसकी हिन्दी-जगत् ने बड़ी सराहना की थी। यह विशेषाङ्क अब दुष्प्राप्य है। अनेक बार अनेकों स्थानों से इस अङ्क की माँग हुई, हमें स्वयं इस अङ्क की रूपरेखा तैयार करते समय यह अङ्क कई स्थानों पर तलाश करने पर मिल पाया। जब हमने अप्रेल १९३९ का यह अङ्क देखा तो हमें ऐसा विदित हुआ कि यह अङ्क तो इतना सुन्दर निकला है कि इसके पुनर्मुद्रण की आवश्यकता है। फलतः हम उस अङ्क के कई लेख प्रस्तुत विशेषाङ्क में दे रहे हैं। इस अङ्क के ३० लेखों में से आधे लेख अप्रैल १९३९ के द्विवेदी अङ्क से लिये गये हैं। शेष आधे लेख अब के लिखे हुए हैं और वे इस विशेषाङ्क को द्विवेदीजी और द्विवेदी युग के अध्येताओं की माँग की पूर्ति करने वाले हैं।

पाठक देखेंगे कि प्रारम्भ से ही साहित्य-सन्देश के विशेषाङ्कों की यह विशेषता रही है कि वे जिस विषय या व्यक्तियों के सम्बन्ध में निकाले गए हैं उनके प्रशंसात्मक या संस्मरणात्मक लेखों का ही उनमें संग्रह नहीं किया गया है वरन् उनके व्यक्तित्व और कृतित्व के विभिन्न पहलुओं पर निष्पक्ष विवेचन किया गया है। यही कारण है कि शोध के विद्यार्थियों और साहित्य के अध्येताओं को जितनी उपयोगी सामग्री साहित्य-सन्देश के निराला, रांगेयराघव और गुलाबराय अङ्कों में मिलेगी उतनी उनके सम्बन्ध में निकले हुए अन्य विशेषाङ्कों में शायद ही मिल पाए। यह बात साहित्य-सन्देश के अप्रैल १९३९ के द्विवेदी अङ्क और उससे भी पूर्व प्रकाशित प्रसाद अङ्क में भी मिलेगी। साहित्य-सन्देश के १९३९ के द्विवेदी अङ्क में प्रकाशित सम्पादकीय वक्तव्य आज भी हमारे इस अङ्क के लिए लिखा ज्ञात होता है, अतः उसको यहाँ छापने का लोभ संवरण हम नहीं कर पाते।

हमारी १९३९ की श्रद्धाञ्जलि—

आचार्य श्री महावीरप्रसाद द्विवेदी की सेवा में अपनी श्रद्धाञ्जलि-स्वरूप यह विशेषाङ्क प्रकाशित करते हुए हमें बड़ी प्रसन्नता है। इस विशेषाङ्क में कोई भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसा लेख नहीं है, जो द्विवेदीजी की प्रशंसा में लिखा गया हो, सभी लेखों में भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों से द्विवेदी जी के वास्तविक स्वरूप का दिग्दर्शन कराने की चेष्टा की गई है। इस चेष्टा में कहाँ तक सफलता मिली है— यह हमारे कहने की बात नहीं, इसका निर्णय प्रेमी पाठक और सहृदय समालोचक ही करेंगे। इतना हम कह सकते हैं कि इन लेखों में जो विचार प्रकट किये गये हैं, वे किसी व्यक्तिगत भावना या राग-द्वेष से प्रभावित होकर नहीं लिखे गये। वे तो समालोचकों के अपने विचार हैं। इन विचारों में मतभेद हो सकता है क्योंकि सब की विचारधारा और सब का दृष्टिकोण एक नहीं होता। वैसे भी मतभेद होना बुरी बात नहीं, उसका तो स्वागत ही होना चाहिए, वह साहित्य की सजीवता का लक्षण है। बुरी बात तो है पक्षपातपूर्वक लिखा जाना। हमारा विश्वास है कि पाठकों को इस अङ्क के प्रकाशित लेखों में इस दूषित भावना की गन्ध न मिलेगी। रह गयी अतिरञ्जना की बात सो अब हिन्दी उस अवस्था में नहीं रही, जब प्रशंसात्मक लेख लिख-लिख कर लेखकों का उत्साह बढ़ाया जाय। अब तो हिन्दी के विद्यार्थी यह जानने को उत्सुक हैं कि उनके लेखकों की यथार्थ स्थिति क्या है? वे चाहते हैं यह जानना कि जिस लेखक या महापुरुष की चर्चा है—हिन्दी-साहित्य में उसका क्या स्थान है। इस दृष्टि से देखा जाने पर ही, हमारा विश्वास है कि पाठक हमारे इस विशेषांक का असली मूल्य आँक सकेंगे और इसी दृष्टि से देखकर ही यदि इसकी समालोचना की जायगी तो हमारी दृष्टि में वह मूल्यवान होगी। हिन्दी पत्र जगत में इस प्रकार का यह पहला प्रयास है। साहित्य-सन्देश को यह अङ्क इस रूप में प्रस्तुत करने का सौभाग्य मिला, यह हमारे लिए गौरव की बात है। वास्तव में है भी यह हमारा ही क्षेत्र। समालोचना के ही लिए इस पत्र का जन्म हुआ है।

द्विवेदीजी की साहित्य सेवा के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालने का प्रयत्न इस अङ्क में किया गया है। कई लेखकों के लेख होने के कारण दृष्टिकोण का वैविध्य इसमें अवश्य झलकेगा किन्तु यह वैविध्य विषय की पूर्णता में सहायक ही होगा, भ्रम और विरोध पैदा नहीं करेगा।

इस अङ्क के तैयार करने में जिन विज्ञ लेखकों ने हमारा हाथ बँटाया है, उनके हम अत्यन्त आभारी हैं। अपने उन लेखकों से हम क्षमा चाहते हैं जिनके लेख हम इस अङ्क में नहीं छाप सके हैं। विवश होकर ही हमें कोई २५—३० लेख लौटाने भी पड़े हैं। इसलिए नहीं कि वे लेख अच्छे न थे, इनमें से कुछ लेख तो बहुत अच्छे थे तथा हिन्दी की अच्छी से अच्छी पत्रिका की शोभा बढ़ा सकते थे। लेकिन हम उनका उपयोग न कर सके। केवल इसलिए कि वे हमारे दृष्टिकोण से नहीं लिखे गये थे। इन सब लेखकों से एक बार पुनः हम क्षमा चाहते हैं।

इतना विलम्ब क्यों ?—

साहित्य-सन्देश का यह अङ्क २—३ महीना देर से निकल रहा है। इसका कारण लिखते हुए भी हमें खेद है। कारण जिस महापुरुष के सम्बन्ध में यह अङ्क निकल रहा है वह सम्पादकाचार्य अपनी ओर से 'सरस्वती' को कभी 'लेट' नहीं होने देते थे। परन्तु यह अङ्क हमारे ही कारण देरी से निकल रहा है। दुर्भाग्य से मई में हमें पक्षाघात का शिकार होना पड़ा जिसके कारण तीन-चार महीने हमें विश्राम करना पड़ा। उसके पश्चात् भी कमजोरी बहुत रही जिसने अभी तक पीछा नहीं छोड़ा है। फिर भी परमात्मा का अनुग्रह है कि हम ठीक हो गए और यह विशेषाङ्क प्रस्तुत है। इसके विलम्ब के लिए क्षमायाचना करने का भी साहस हम में नहीं हैं। आशा है, हमारे पाठक और कृपालु ग्राहक हम पर स्नेह और सहानुभूति रखते हुए साहित्य-सन्देश की सेवा लेते रहेंगे।

हिन्दी की दो महान् संस्थाएं—

हिन्दी की निरन्तर सेवा करने वाली दो महान् संस्थाओं—हिन्दी साहित्य-सम्मेलन (प्रयाग) और दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा (मदरास) को केन्द्रीय सरकार ने देश की महान संस्था मानते हुए उन्हें राष्ट्रीय महत्व की संस्था बनाने की कृपा की है। इस आवश्यक और विशिष्ट निश्चय के लिए हम अपनी सरकार को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बधाई देते हैं। हिन्दी साहित्य-सम्मेलन इधर अनेक वर्षों से 'पार्टी बन्दी' और 'मुकदमे बाजी' का शिकार हो रहा था, फिर भी उसका काम विधिवत चल रहा था। अब तो उसे पूर्णतः सरकार का करावलंबन मिल गया है। हम आशा करेंगे कि सरकार उसके परीक्षा-विभाग को हिन्दी का एक विशाल विश्वविद्यालय बनाने की योजना बनाएगी और उसके प्रकाशन के काम को भी और अच्छे रूप में चलाने की व्यवस्था करेगी।

द० भा० हिन्दी प्रचार सभा ने अहिन्दी प्रदेशों में, विशेष रूप से दक्षिण में, हिन्दी प्रचार का जो काम किया है और कर रही है वह स्वर्णाक्षरों में लिखा जाने योग्य है। वैसे भी इस सभा की व्यवस्था इतनी अच्छी रही है कि उसमें पैसे की कभी कमी नहीं रही, अब तो सरकार का वरद् हस्त पाकर यह सभा दिन-दूनी रात चौगुनी उन्नति करेगी—ऐसी हम आशा करते हैं। दक्षिण भारत में हिन्दी का प्रचार जिस प्रबल वेग से हो रहा है उससे ऐसा विदित होता है कि निकट भविष्य में ही हिन्दी के मामले में भी दक्षिण उत्तरवासियों (हिन्दी भाषियों) से आगे बढ़ जायगा। हिन्दी के लिए तो यह सौभाग्य की ही बात होगी।

स्वेच्छिक हिन्दी संस्थाओं का सङ्घ—

केन्द्रीय हिन्दी सरकार एक और अच्छा काम करने जा रही है। भारतवर्ष में हिन्दी-प्रचार का काम करने वाली अनेकों संस्थाएँ हैं। इन संस्थाओं का एक सङ्घ बनाया गया है जो ठीक काम कर सका तो हिन्दी प्रचार में और हिन्दी की प्रचलित परीक्षाओं में एकरूपता लाने का बड़ा महत्वपूर्ण कार्य हो सकेगा। द० भा० हिन्दी प्रचार सभा और राष्ट्रभाषा प्रचार समिति जैसी लोकोपयोगी संस्थाओं के अतिरिक्त ऐसी भी कुछ संस्थाएँ देश में खुल गईं हैं जो केवल व्यवसाय वृत्ति से चल रही हैं। इन सब पर इस सङ्घ का नियन्त्रण होगा, होना चाहिए। इनकी परीक्षाओं का स्तर एकसा होना चाहिए, उन में एकरूपता आनी चाहिए। उनकी परीक्षाओं के नाम भी एक से होने चाहिए। यह सब इस सङ्घ के द्वारा हो सकेगा—ऐसा हमारा विश्वास है।

माननीय श्री क० मा० मुन्शी ने जब आगरा विश्वविद्यालय के अन्तर्गत हिन्दी विद्यापीठ की स्थापना की थी तब लक्ष्य यह था कि यह विद्यापीठ वही काम करेगा जिसे यह सङ्घ करना चाहता है। परन्तु आगरा विश्वविद्यालय का यह हिन्दी विद्यापीठ भाषा विज्ञान के चक्कर में फँस कर कहीं और ही चला गया। अहिंदी क्षेत्रों में हिन्दी प्रचार के काम में एकरूपता लाने के लिए द० भा० हिन्दी प्रचार सभा के सहयोग से श्री मट्टूरी सत्यनारायणजी ने आगरा में एक विद्यालय की स्थापना की थी। प्रारम्भ के ८-१० वर्ष हमने भी इस काम में यथाशक्ति सहयोग दिया। सौभाग्य से इस विद्यालय को केन्द्रीय सरकार का प्रश्रय मिल गया और आज वह एक महान संस्था बन गई। पर उसे हिन्दी प्रचार की संस्था न रखकर शिक्षण संस्था (ट्रेनिङ्ग कालेज) का रूप दे दिया गया और वह अपने मूल उद्देश्य से कोसों दूर चली गई। ऐसी दशा में स्वेच्छिक हिन्दी संस्थाओं का संघ बनने की महती आवश्यकता अनुभव कर केन्द्र के वर्तमान उप शिक्षामन्त्री माननीय श्री भक्तदर्शनजी ने जो कदम उठाया है—हम उसका हृदय से स्वागत करते हैं। साथ ही हम इस बात की भी आवश्यकता समझते हैं कि एक ही ध्येय को लेकर काम करने वाली अनेक संस्थाओं के बजाय एक ही व्यापक संगठन हो तो अधिक उपयोगी और सफल रहेगा। इस सम्बन्ध में श्री भक्तदर्शनजी के भाषण का कुछ अंश हम यहाँ दे रहे हैं।

भक्तदर्शनजी का भाषण—

महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा का पदवीदान समारोह २ अगस्त को पूना में हुआ था। भारत-सरकार के उप-शिक्षामन्त्री श्री भक्तदर्शनजी ने दीक्षान्त भाषण दिया। इस भाषण में उन्होंने कहा—

'वीरों और देशभक्तों के प्रदेश महाराष्ट्र को देखने की मेरी आकांक्षा बहुत पुरानी थी। आज तीसरी बार यहाँ आने में एक अनिर्वचनीय आनन्द प्रतीत होता है। देश के गौरव का एक केन्द्र-बिन्दु महाराष्ट्र है। पूना एक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तीर्थ-क्षेत्र है। साहित्य और संस्कृति के उत्थान, गम्भीर गवेषणा तथा क्रियात्मक राजनीति में जो योगदान पूना ने दिया वह इतिहास में सुवर्णाक्षरों में अङ्कित रहेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा को कई ज्ञानवृद्ध और तपोनिष्ठ व्यक्तियों का सहयोग प्राप्त है। महामहोपाध्याय पोत्दारजी अपनी विद्वत्ता के लिए देश भर में सुविख्यात हैं। गम्भीर साधना के द्वारा उन्होंने महामहोपाध्याय की उपाधि प्राप्त की। केन्द्रीय संस्कृत बोर्ड के अध्यक्ष के नाते वे संस्कृत के विकास में तेजी ला रहे हैं। आदरणीय काकासाहेब गाडगिल सारे देश के काका हैं। श्रद्धेय स्वामी रामानन्द तीर्थ ने अपना सारा जीवन राष्ट्र के लिए समर्पित किया है। श्री नेनेजी विनोद से 'बनारस का पण्डा' कहलाए जाते हैं। वे असाधारण कोटि के पण्डा हैं जिन्होंने राष्ट्रभाषा के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया।

इस सभागृह में लोकमान्य तिलक की तस्वीर है। वह भूमि धन्य है जिसने ऐसी महान् आत्मा को जन्म दिया। उनके नाम-स्मरण से आज भी राष्ट्र-सेवा की प्रेरणा का सञ्चार होता है। विदेशी शासन के दिनों में एक समय था जब राष्ट्रभाषा का कार्य करना अपराध माना जाता था। वह स्वातन्त्र्य-संग्राम के कार्यक्रम का एक अङ्ग था। उस समय जिन लोगों ने तपस्या और लगन के साथ इस कार्य को अपनाया और आज तक उस पर डटे रहे, उन्हें हम कभी नहीं भुला सकते।

मराठी भाषियों ने हिन्दी की बहुमोल सेवा की है। सम्पादकाचार्य बाबूराव विष्णु पराडकर का हिन्दी की पत्रकारिता के प्रति योगदान अविस्मरणीय है। महाराष्ट्र की सरकार ने हिन्दी को बढ़ावा देने में अतीव महत्वपूर्ण कार्य किया। स्व० बालासाहेब खेर ने इस कार्य की नींव डाली। हिन्दी के प्रति महाराष्ट्र और गुजरात में जितना प्रेम और आस्था पायी जाती है, अन्य राज्यों में नहीं।

सारी क्षेत्रीय भाषाएँ जब तक सम्मिलित प्रयत्न न करें, तब तक हिन्दी को उसकी राजभाषा का स्थान व्यावहारिक रूप में नहीं प्राप्त होगा। राजभाषा आयोग ने क्षेत्रीय भाषाओं के स्थान के बारे में महत्वपूर्ण विवेचन किया है। सभी भारतीय भाषाओं का सहयोग और सद्भावना प्राप्त हो तो हिन्दी के बारे में अनुकूल वातावरण पैदा होगा। संवैधानिक स्थान, बोलने वालों की संख्या तथा आम व्यवहार की दृष्टि से भारतीय भाषा-भगिनियों में हिन्दी सबसे बड़ी बहन है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि वह सबसे बुद्धिमान और सुन्दर है। फिर भी छोटी बहनों का कर्तव्य है कि वे बड़ी बहन का समुचित आदर करें। इस दृष्टि से मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि महाराष्ट्र में हिन्दी के प्रति सम्मान का भाव है।

हिन्दी-प्रचार संस्थाओं की बढ़ती हुई संख्याओं को देख मैं एक सुझाव देना चाहता हूँ। स्वैच्छिक हिन्दी-प्रचार संस्थाओं का संघ केन्द्रीय शिक्षा-मन्त्रालय के प्रयत्न के फलस्वरूप बन रहा है। सङ्घ को गम्भीरता से इस बात पर सोचना है कि विभिन्न संस्थाओं के काम में 'ओवरलैंपिंग' न हो। उदाहरणस्वरूप कहूँ कि मणिपुर जैसे छोटे से राज्य में छः-सात संस्थाएँ हैं, जिसका परिणाम यह होता है कि होड़ और खींचातानी चलती है। इस दयनीय स्थिति पर गम्भीरता से सोचना आवश्यक है। समय, धन और श्रम का इससे जो अपव्यय होता है उसे रोकना चाहिए। कार्य और क्षेत्र का बँटवारा ही इसका उपाय हो सकता है। ऐसा हो जाए तो सरकारी सहायता का उचित परिणाम होगा।

केरल व्यास की जन्म शती—

केरल प्रदेश की भाषा मलयालम है। जिस प्रकार केरल अपने प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध है उसी प्रकार मलयालम भाषा भी अपने साहित्य सौन्दर्य के लिए कम प्रसिद्ध नहीं है। इस महीने में केरल अपने एक बहुत प्रतिभा सम्पन्न और प्रसिद्ध लेखक 'केरल-व्यास' की जन्म शती मना रहा है। इस परम मेधावी महाकवि का असली नाम कुञ्जिक्कुट्टन तंपूरन था, 'केरल व्यास' के नाम से तो वे प्रसिद्ध हो गए। कारण यह था कि सुप्रसिद्ध संस्कृत महा काव्य महाभारत का आपने केरल भाषा में अनुवाद किया। बहुत लोग यह शङ्का करते हैं कि महाभारत जैसा विशाल ग्रन्थ एक व्यक्ति की कृति नहीं हो सकती। यह शङ्का केरल व्यास ने निर्मूल जैसी कर दी। आपने महाभारत के अठारहों पर्व का अनुवाद ८७४ दिनों में यानी दो साल चार महीने और चौबीस दिन में पूरा कर दिया। अनुवाद भी आपका इतना उच्च कोटि का है कि उसमें भरती का कोई शब्द नहीं दिखाई देता। ऐसे महान् लेखक को हम भी अपने और अपने पाठकों की ओर से इस पुनीत अवसर पर हार्दिक श्रद्धाञ्जलि अर्पण कर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी प्रकाशित प्रमुख पुस्तकें

थीसिस (शोध-प्रबन्ध)

मुक्तक काव्य परम्परा और बिहारी :
डॉ० रामसागर त्रिपाठी १६.००
(२१०० रु० का प्रथम डालमिया पुरस्कार प्राप्त)
बंगला पर हिन्दी का प्रभाव : डॉ० ब्रह्मानन्द १५.००
आधुनिक हिन्दी काव्य में वात्सल्य रस :
डॉ० श्रीनिवास शर्मा १२.५०
हिन्दी उपन्यासों में नायिका की परिकल्पना :
डॉ० सुरेश सिन्हा १२.५०
कामायनी की भाषा : रमेशचन्द्र गुप्त ७.५०

सटीक काव्य

कबीर ग्रन्थावली सटीक :
प्रो० पुष्पपालसिंह एम० ए० १२.५०
घनानन्द कवित्त सटीक : लक्ष्मण दत्त गौतम ३.५०
पृथ्वीराज रासो (तीन अ०) :देशराजसिंह भाटी ३.५०
मीराबाई और उनकी पदावली सटीक :
प्रो० देशराजसिंह भाटी ५.००
केशव और उनकी रामचन्द्रिका :
प्रो० देशराजसिंह भाटी ७.००
विद्यापति और उनकी पदावली सटीक :
प्रो० कृष्णदेव शर्मा ५.००
जायसी ग्रन्थावली सटीक : डॉ० श्रीनिवास शर्मा ८.००
बिहारी सतसई सटीक : प्रो० विराज एम० ए० ४.००
कबीर साखी समीक्षा : प्रो० पुष्पपालसिंह ३.५०

टीकाएँ

महादेवी वर्मा और उनकी दीपशिखा :
डॉ० शान्तिस्वरूप ४.५०
दिनकर और उनकी उर्वशी : प्रो० देशराजसिंह ७.५०
दिनकर और उनका कुरुक्षेत्र: देशराजसिंह भाटी ३.५०
पन्त और उनका रश्मिबन्ध : ,, ,, ३.५०
साकेत की टीका : प्रो० ब्रजभूषण शर्मा ५.००
भ्रमरगीतसार समीक्षा एवं व्याख्या :
प्रो० पुष्पपालसिंह ५.००
निराला और उनकी अपरा : देशराजसिंह भाटी ४.५०
रत्नाकर उनका उद्धवशतक : देशराजसिंह भाटी २.५०

निबन्ध

साहित्यिक निबन्ध : डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त ८.००
अशोक निबन्ध सागर:प्रो० विजयकुमार एम. ए. ५.००
अशोक निबन्ध माला : प्रो० शिवप्रसाद शास्त्री ३.००
निबन्ध सौरभ (मिडिल स्तर) प्रो० कृष्णानन्द १.५०
विचार विन्दु प्रो० नरेन्द्र एम० ए० २.५०

साहित्यिक

पद्मावत में काव्य और दर्शन :
डॉ० गोविन्द त्रिगुणायत १५.००
भारतीय मुक्तक परम्परा: डॉ० रामसागर त्रिपाठी ७.५०
हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ :
प्रो० शिवकुमार एम० ए० (हिन्दी व संस्कृत) ८.००
हिन्दी साहित्य समस्याएं और समाधान :
डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त ५.००

आलोचनात्मक

मीरा की काव्य-कला : प्रो० देशराजसिंह भाटी २.५०
प्रमुख कवियों की काव्य-साधना :
प्रो० देशराजसिंह भाटी ३.५०
चिन्तामणि विवेचन : प्रो० कृष्णलाल एम०ए० २.५०
गोदान समीक्षा : डॉ० रामगोपाल शर्मा २.५०
चन्द्रगुप्त समीक्षा : कृष्णदेव शर्मा २.५०
गबन समीक्षा : रमेशचन्द्र २.५०
हिन्दी-साहित्य का इतिहास: डॉ० राजेश्वरप्रसाद २.५०
कबीर समीक्षा : कृष्णदेव शर्मा २.५०
कवि प्रसाद : प्रो० भारतभूषण सरोज २.५०
महादेवी वर्मा : प्रो० देशराजसिंह भाटी २.५०
बाणभट्ट की आत्म कथा एक विवेचन :
देशराजसिंह भाटी २.५०
वृन्दावनलाल वर्मा : आचार्य बटुक २.५०
साकेत समीक्षा : प्रो० ब्रजभूषण २.५०
कामायनी समीक्षा : आचार्य कुसुम २.५०
प्रियप्रवास समीक्षा : प्रो० कृष्णकुमार २.०५
रस छन्द अलङ्कार : आचार्य कुसुम १.५०
भारतीय काव्य-समीक्षा : डॉ० श्रीनिवास शर्मा २.५०
पाश्चात्य काव्य-समीक्षा : प्रो० ब्रजभूषण शर्मा ३.००
भाषा-विज्ञान-समीक्षा प्रो० शिवशङ्कर २.५०
अशोक पत्र लेखन : शिवप्रसाद १.५०

परीक्षोपयोगी (साहित्य सम्मेलन प्रयाग)

अशोक हिन्दी प्रथमा गाइड : १९६४ संस्करण ७.००
अशोक हिन्दी मध्यमा गाइड : १९६४ संस्करण ६.००
अशोक वैद्यविशारद गाइड : (प्रथम भाग) ६.००
अशोक वैद्यविशारद गाइड : (द्वितीय भाग) ८.००
अशोक आयुर्वेद रत्न गाइड (प्रथम भाग) १५.००
अशोक आयुर्वेद रत्न गाइड (द्वितीय भाग) १५.००

—सभी प्रकार की अन्य प्रकाशकों की साहित्यिक पुस्तकें उचित मूल्य पर मिलने का एकमात्र स्थान—

अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली—६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे नवीन प्रकाशन

अनेक राज्यों में स्वीकृत

स्वतन्त्रता के बाद की ५० सर्व श्रेष्ठ कहानियाँ—**सं० कृष्ण चन्द्र, अमृता प्रीतम** आदि : उर्दू, पंजाबी व हिन्दी के ५० कहानीकारों की ५० श्रेष्ठ कहानियाँ—कहानीकारों के कलात्मक रेखाचित्रों एवं हस्ताक्षरों से युक्त। मूल्य १०.००

स्वतन्त्रता के बाद का सर्वश्रेष्ठ उर्दू साहित्य—**सं० कृष्ण चन्द्र, फैज अहमद 'फैज'** आदि : उर्दू के १०० लेखकों की १३० प्रतिनिधि रचनाओं का सङ्कलन। मूल्य १०.००

स्वतन्त्रता के बाद का सर्वश्रेष्ठ उर्दू हास्य-व्यंग्य—**सं० 'फिक्र' तौंसवी**। उर्दू की प्रतिनिधि हास्य-व्यंग्य रचनाओं का सङ्कलन। मूल्य ३.५०

सर्वश्रेष्ठ पंजाबी कहानियाँ—**अमृता प्रीतम** द्वारा सम्पादित। इस पुस्तक में पञ्जाबी के बीस शीर्षस्थ कहानीकारों की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ सङ्कलित की गई हैं। कहानीकारों के कलात्मक रेखाचित्रों व हस्ताक्षरों से युक्त, पञ्जाबी साहित्य का पहला हिन्दी सङ्कलन। मूल्य ४.५०

बिना दिल का इन्सान—'हीर' के लेखक **वेदप्रकाश** का फेन्टेसी की शैली में नवीन उपन्यास। 'सदाचार-मन्त्री' का विचार है कि मनुष्य प्रेम के 'पाप' के कारण अत्यन्त पतित हो गया है। बिना दिल के मशीनी इन्सान का निर्माण किया जाता है, पर क्या वह भी प्रेम के 'पाप' से बच पाता है? मूल्य ३.५०

स्वतन्त्रता के बाद की सर्वश्रेष्ठ हिन्दी कहानियाँ—**सं० विजय चन्द**। हिन्दी के बीस कहानीकारों की श्रेष्ठ कहानियाँ, उनके कलात्मक रेखाचित्रों व हस्ताक्षरों सहित। मूल्य ४.५०

स्वतन्त्रता के बाद की सर्वश्रेष्ठ उर्दू कहानियाँ—अपने-जैसे अकेले **कृष्ण चन्द्र** द्वारा सम्पादित उर्दू के १० सर्वश्रेष्ठ कहानीकारों की सर्वश्रेष्ठ कहानियों का सङ्कलन। कृष्ण चन्द्र की कलम से कहानीकारों के पैने रेखाचित्र, चित्र व हस्ताक्षरों से युक्त। मूल्य ४.००

स्वतन्त्रता के बाद की सर्वश्रेष्ठ उर्दू शायरी—हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के सबसे बड़े शायर **फैज अहमद 'फैज' व 'मखमूर जालन्धरी'** द्वारा ७५ उर्दू शायरों की १०० सर्वश्रेष्ठ नज्मों और गजलों का सङ्कलन। शायरों के कलात्मक रेखाचित्रों व हस्ताक्षरों से युक्त। उर्दू शायरी की इससे अच्छी पुस्तक अभी तक प्रकाशित नहीं हुई। मूल्य ४.००

चेहरे—अनेक भारतीय भाषाओं—तेलगू, तमिल, उर्दू, पञ्जाबी और अंग्रेजी में अनुवादित 'वेश्या' के लेखक **विजयचन्द** की नई पुस्तक—जो 'हिन्दुस्तान' के मतानुसार–हिन्दी कविता में एक नया मोड़ है।' मू० ४.५०

सड़क—अन्तर्राष्ट्रीय लेखक **डॉ० मुल्कराज आनन्द** का नवीनतम उपन्यास। अस्पृश्यता और ग्राम-जागरण की समस्या पर आधारित। मूल्य ३.००

हम हिन्दुस्तानी—सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार **फिक्र तौंसवी** की चुटीली कलम द्वारा हर क्षेत्र के प्रसिद्धतम बारह हिन्दुस्तानियों—नेहरू, नम्बूदरीपाद, विनोबा, बिरला आदि पर तलवार की धार से भी पैने व्यंग्य-स्केच। किसी भी उपन्यास से ज्यादा दिलचस्प। मूल्य ३.२५

पराई डाल का पंछी—'सूखा पत्ता' के लेखक **अमरकान्त** का नवीनतम उपन्यास। मध्यवर्ग के काम-अतृप्त बुजुर्गों का अत्यन्त सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक चित्रण। मूल्य ३.७५

हमारे पूर्व प्रकाशन

बर्फ के फूल : —कृष्ण चन्द्र
प्रसिद्ध व्यक्तियों के प्रेमपत्र : —सं० विजय चन्द
वेश्या : —विजय चन्द
सिंदूरी ग्रह की यात्रा : —रमेश वर्मा
हीर : —वेद प्रकाश
उर्दू की बेहतरीन रुबाइयाँ और कतए : स० प्रकाश पंडित

प्रगतिशील प्रकाशन

असाधारण पुस्तकों के प्रकाशक

१९७६, कटरा खुशाल राय, किनारी बाजार, दिल्ली–६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा प्रेमियों के लिये

शुभ सूचना

राष्ट्रभाषा प्रचार और प्रसार के लिये अमूल्य सहयोग देकर लाभ उठावें और राष्ट्रभाषा की सेवा भी करें।

गृह पुस्तकालय योजना

के

सदस्य बनकर

विशेष जानकारी के लिये पत्र-व्यवहार करें:—

राष्ट्रभाषा प्रचार मण्डल,

१८९२, चाँदनी चौक, दिल्ली-६

हमारे प्रमुख प्रकाशन

आदर्श नागरिकता तथा समान्य ज्ञान	प्यारेलाल सूरी एम० ए०	५.००
गोली मनोव	माधवसिंह दीपक	२.२५
अनावरण	वीरेन्द्र पाण्डे	२.७५
मैं मेरा बाप दुश्मन	शम्भुप्रसाद शाह	३.००
अनुपम गाथायें	श्यामलाल मधुप	१.२५
आकाश पर चढ़ाई	आनन्द मेहरा	.६०
रेत की आग	माधवसिंह दीपक	२.७५
मांझी, पतवार और किनारा	कमल शुक्ल	३.००
डेढ़ अरब	हरिकृष्ण	१.७५
बर्फ की समाधि	यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'	२.७५
ग्रहों का निर्णय	अनिलकुमार	२.७५
ताजमहल	रामकुमार शर्मा 'निशंक' एम० ए०	४.५०

राष्ट्रभाषा प्रचार मण्डल

१८९२, चाँदनी चौक, दिल्ली-६

छात्रोपयोगी उत्कृष्ट प्रकाशन

प्राचीन भारत	डॉ० आर० सी० मजूमदार	१२.००
प्राचीन भारत का इतिहास	डॉ० आर० एम० त्रिपाठी	१५.००
मुगलकालीन भारत	डॉ० उपेन्द्रनाथ ठाकुर	५.४०
प्राचीन भारतीय अभिलेखों का अध्ययन	डॉ० वासुदेव उपाध्याय	२०.००
विश्व सभ्यता का संक्षिप्त इतिहास	डॉ० बी० पी० सिन्हा	११.००
तुलनात्मक भाषा विज्ञान : पी० डी० गगे	अनुवादक—डॉ० भोलानाथ तिवारी	१०.००
भारत में विवाह एवं परम्परा	डॉ० के० एम० कापड़िया	१०.००
सामाजिक रूपरेखा	जे० आर० हिक्स	५.००
कालिदास और उसकी काव्यकला	श्री वागीश्वर विद्यालङ्कार	१०.००
प्राचीन भारतीय साहित्य : प्रथम भाग, खण्ड १	एम० विन्टर निट्ज	१०.००
संस्कृत साहित्य का इतिहास	(कीथ) अनु० डॉ० मंगलदेव शास्त्री	२५.००
ध्वन्यालोक : २ भाग	डॉ० रामसागर त्रिपाठी	२५.००
मेघदूत	डॉ० संसारचन्द्र	५.००
नाट्यशास्त्र : भाग १	डॉ० रघुवंश	१५.००
उत्तर रामचरित	श्री आनन्दस्वरूप	६.००
संस्कृत-इंगलिश डिक्शनरी	आप्टे	६.००
इंगलिश-संस्कृत डिक्शनरी	आप्टे	४.००
साहित्यदर्पण	विमला व्याख्या	१०.००
बृहद अनुवादचन्द्रिका	चक्रधर हंस	१०.००

मोतीलाल बनारसीदास

बंगलो रोड, जवाहरनगर

दिल्ली-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'साहित्य-सन्देश' आगरा की विगत १२ वर्षों की फाइलों का विवरण

सन्	पाठ्य सामग्री की पृष्ठ संख्या	लेखों की संख्या	विशेषाङ्क जो सम्मिलित हैं	मूल्य	डाक-व्यय
१९५१-५२	५३२	१०५	आलोचनाङ्क	१)	१)६६
१९५२-५३	५१८	११४	कहानी अङ्क	१)	१)६६
१९५३-५४	५१८	१०६	आधुनिक काव्याङ्क	१)	१)६६
१९५४-५५	४८०	९६			१)६६
१९५५-५६	५०१	१०८	अन्तः प्रान्तीय नाटकाङ्क	१)५०	१)५४
१९५६-५७	५०१	११८	* आधुनिक उपन्यास अङ्क	१)	१)७८
१९५७-५८	५५६	१२८	* (१) भाषा विज्ञान (पुस्तक रूप में)	२)	१)८४
			(२) प्रगति विशेषाङ्क	१)	
१९५८-५९	५५८	१३४	* (१) सन्त-साहित्य विशेषाङ्क	१)५०	१)६०
			* (२) ऐतिहासिक उपन्यास अङ्क	२)	
१९५९-६०	५२०	१२४	* (१) रीतिकाव्यालोचनाङ्क	२)	१)८४
			* (२) प्रगति अङ्क १९६०	१)	
१९६०-६१	५०८	१०५	* (१) शोध विशेषाङ्क	२)	१)६०
			* (२) प्रगति विशेषाङ्क १९६१	१)	
१९६१-६२	५८४	१३४	* (१) निबन्ध-विशेषाङ्क	२)	१)६१
			(२) निराला विशेषाङ्क	१)	
१९६२-६३	५२५	१२४	* (१) साहित्य-शास्त्र विशेषांक	१)५०	१)६१
			* (२) रांगेय राघव स्मृति अंक	१)	
१९६३-६४			* (१) शिवपूजनसहाय स्मृति अंक	)५०	
			* (२) आचार्य बाबू गुलाबराय स्मृति अङ्क	१)	१)६१
			* (३) वीर काव्य विशेषाङ्क	१)	

मोटी वसली की जिल्द, आवरण पृष्ठ और विषय-सूची के साथ

प्रत्येक फाइल का मूल्य ६) है। पृथक-पृथक मँगाने पर डाक-व्यय २३)२४ न० पै० लगेंगे जैसा प्रत्येक फाइल के सामने लिखा है। पूरा सैट एक साथ मँगाने पर रेल से हम अपने खर्चे पर ७८) में आपके पास भेज देंगे। आर्डर भेजते समय आप अपने रेलवे स्टेशन का नाम अवश्य लिखें।

पहले पाँच वर्षों की फाइल बहुत कम बची हैं। १९५१ से पूर्व का एक भी अङ्क शेष नहीं है।

* चिन्हित विशेषाङ्क फुटकर प्रतियों में भी मिल सकेंगे—शेष सभी विशेषाङ्क फाइलों में ही मिलेंगे।

'साहित्य-सन्देश'

आलोचना-प्रधान मासिक-पत्र वार्षिक मूल्य ५)

पता—'साहित्य-सन्देश' कार्यालय, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी जीवन-रेखा

आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी की अपनी कलम से

मुझे आचार्य की पदवी मिली है। क्यों मिली है, मालूम नहीं। कब, किसने दी है, यह भी मुझे मालूम नहीं। मालूम सिर्फ इतना ही है कि मैं बहुधा इस पदवी से विभूषित किया जाता हूँ।

यह लक्षण मुझ पर तो घटित होता है नहीं, क्योंकि मैंने कभी किसी को इक्का एक भी नहीं दिया। शंकराचार्य, मध्वाचार्य, सांख्याचार्य आदि के सदृश किसी आचार्य के चरण-रजकण की बराबरी मैं नहीं कर सकता। बनारस के संस्कृत कालेज या किसी विश्वविद्यालय में भी मैंने कभी कदम नहीं रक्खा। फिर इस पदवी का मुस्तहक मैं कैसे हो गया? विचार करने पर मेरी समझ में, इसका एक मात्र कारण मुझ पर कृपा करने वाले सज्जनों का अनुग्रह ही जान पड़ता है। जो जिसका प्रेम-पात्र होता है, उसे उसके दोष नहीं दिखाई देते। जहाँ दोष देख पड़ते हैं, वहाँ तो प्रेम का प्रवेश ही नहीं हो सकता। नगरों की बात जाने दीजिये, देहात तक में माता-पिता और गुरुजन अपने लूले, लंगड़े, काने, अन्धे, जन्मरोगी और महा-कुरूप लड़कों का नाम श्यामसुन्दर, मनमोहन, चारु-चन्द्र और नयनसुख रखते हैं। जिनके कब्जे में अंगुल भर जमीन नहीं वे पृथ्वीपति और पृथ्वीपाल कहाते हैं। जिनके घर में टका नहीं वे करोड़ीमल कहे जाते हैं। मेरी आचार्य पदवी भी कुछ-कुछ इसी तरह की है, पर इससे पदवी-दाताजनों का जो भाव प्रकट होता है उसका अभिनन्दन मैं हृदय से करता हूँ। यह पदवी उनके प्रेम, उनके औदार्य, उनके वात्सल्य-भाव की सूचक है। अतएव प्रेमपात्र में अपने इन सभी उदारा-शय प्रेमियों का ऋणी हूँ। बात यह है कि—

वसन्ति हि प्रेम्णि गुणा न वस्तुनि

अर्थात् गुणों का सबसे बड़ा आधार प्रेम होता है, वस्तु विशेष नहीं। जो जिस पर कृपा करता है—जिसका प्रेम जिस पर होता है—वह उसे आचार्य क्या यदि जगद्गुरु समझ ले तो आश्चर्य की बात नहीं।

तथापि मेरी धृष्टता क्षमा की जाय, मुझे ऐसी बातों से, स्तुति और प्रशंसा से बहुत डर लगता है। क्योंकि वे अहंकार को जन्म देने वाली ही नहीं, उसे बढ़ाने वाली हैं, और इस अहंकार नामक शत्रु का शिकार मैं चिरकाल तक हो चुका हूँ। यह उसी की कृपा का फल था जो कभी मैंने किसी सभा की खबर ली, कभी किसी लाला या बाबू पर वचन-रूपी शर-सन्धान किया, कभी किसी ग्रन्थकार या ग्रन्थ-प्रकाशक पर अपना रौब जमाया।

जब मुझ में ज्ञान की कुछ यों ही जरा-सी झलक थी तब मैं मदान्द हाथी-सा हो रहा था—तब मुझमें अहंकार की मात्रा इतनी अधिक थी कि मैं अपने को सर्वज्ञ समझता था परन्तु किसी अदृश्य शक्ति की प्रेरणा से जब मुझे कुछ विज्ञ विद्वानों की संगति नसीब हुई और जब मैंने प्रकृत पण्डितों की कुछ पुस्तकों का मनन किया; तब मेरी आँखें खुल गईं, तब मेरा सारा अहंकार चूर्ण हो गया। उस समय मुझे ज्ञात हुआ कि मैं तो महामूर्ख हूँ। नतीजा यह हुआ कि मेरी झूठी सर्वज्ञता का वह नशा उसी तरह उतर गया जिस तरह १०४ डिग्री तक चढ़ा हुआ ज्वर उतर जाता है।

मेरी झूठी विज्ञता के आवेश ने मुझ से पूर्वावस्था में अनेक अनुचित काम करा डाले। उस दशा में मुझसे जो दुष्कृत्य हो गये, उन्होंने मेरी आत्मा को कलुषित कर दिया। उन्होंने उस पर काला पर्दा सा डाल रक्खा है। इस कारण मैं थोड़ा-सा प्रायश्चित करके उस पर्दे के बहुत न सही, थोड़े ही अंश को हटा ही देना चाहता हूँ।

शठ सेवक मैं चर-अचर, आप सभी भगवान।
दीन हीन मुझको अधम, समझो दयानिधान॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहंकार की व्याप्ति से बचने ही के लिए मैंने आज तक, आमन्त्रित होने पर भी साहित्य-सम्मेलन के सभापति-पद को स्वीकार नहीं किया। अनेक महानुभावों ने जिस आसन की शोभा बढ़ाई उसी पर बैठना मेरे लिए बड़ी गुस्ताखी भी होती।

मैं क्या हूँ, यह तो प्रत्यक्ष ही है। परन्तु मैं क्या था, इस विषय का ज्ञान मेरे मित्रों और कृपालु हितैषियों को बहुत ही कम है। उन्होंने मुझे अनेक पत्र लिखे हैं, अनेक उलाहने दिये हैं। अनेक प्रणयानुरोध किए हैं, वे चाहते हैं कि मैं अपनी जीवन-कथा अपने ही मुँह से कह डालूँ। पर पूर्ण रूप से उनकी आज्ञा का पालन करने की शक्ति मुझमें नहीं। अपनी कथा कहते हुए संकोच भी बहुत होता है। उसमें कुछ तत्त्व भी तो नहीं। उससे कोई कुछ सीख भी तो नहीं सकता। तथापि जिन सज्जनों ने मुझे अपना कृपापात्र बना लिया है उनकी आज्ञा का उलंघन भी धृष्टता होगी। अतएव मैं अपने जीवन से सम्बन्ध रखने वाली कुछ बातें, सूत्र रूप में, सुना देना चाहता हूँ। बड़े-बड़े लोगों ने इस विषय में मेरे लिए मैदान पहले ही से साफ भी कर रक्खा है।

मैं एक ऐसे देहाती का एकमात्र आत्मज हूँ जिसका मासिक वेतन १०) था। अपने गाँव में देहाती मदरसे में थोड़ी सी उर्दू और घर थोड़ी-सी संस्कृत पढ़कर १३ वर्ष की उम्र में २६ मील दूर, रायबरेली के जिला स्कूल में अँग्रेजी पढ़ने गया। आटा, दाल घर से पीठ पर लादकर ले जाता था। दो आने महीने फीस देता था। दाल ही में आटे के पेड़े या टिकियाएँ पका करके पेट-पूजा करता था। रोटी अछूत समझी गई थी जैसी मद्रास के नम्बूदरी ब्राह्मणों में वहाँ की शूद्र जाति समझी जाती है। विवश होकर अँग्रेजी के साथ फारसी पढ़ता था। एक वर्ष किसी तरह वहाँ काटी। फिर पुरवा, फतेहपुर और उन्नाव के स्कूलों में चार वर्ष काटे। कौटुम्बिक दुरवस्था के कारण मैं उससे आगे न बढ़ सका। मेरी स्कूली शिक्षा की वहीं समाप्ति हो गई।

एक साल अजमेर में १५) रुपये महीने पर नौकरी करके, पिता के पास बम्बई में पहुँचा और तार का काम सीख कर जी० आई० पी० रेलवे में ५०) रुपये पर तार का बाबू बना। बचपन ही से मेरी प्रवृत्ति सुशिक्षित जनों की सङ्गति करने की ओर थी, दैवयोग से हरदा और हुशङ्गाबाद में मुझे ऐसी सङ्गति सुलभ रही। फल यह हुआ कि मैंने अपने लिए चार सिद्धान्त या आदर्श निश्चित किये। यथा (१) वक्त की पाबन्दी करना, (२) रिश्वत न लेना, (३) अपना काम ईमानदारी से करना और (४) ज्ञान वृद्धि के लिए सतत् प्रयत्न करते रहना। पहले तीन सिद्धान्तों के अनुकूल आचरण करना तो सहज था पर चौथे के अनुकूल सचेष्ट रहना कठिन था। तथापि सतत् अभ्यास से उसमें भी सफलता होती गई। तारबाबू हो कर भी, टिकट बाबू, मालबाबू, स्टेशन मास्टर, यहाँ तक कि रेल की पटरियाँ बिछाने और उसकी सड़क की निगरानी करने वाले प्लेटियर तक का भी काम मैंने सीख लिया। फल अच्छा ही हुआ। अफसरों की नजर मुझ पर पड़ी। मेरी तरक्की होती गई। वह इस तरह कि एक दफे छोड़कर मुझे कभी तरक्की के लिए दरख्वास्त नहीं देनी पड़ी। जब इंडियन मिडलैंड रेलवे बनी और उसके दफ्तर झाँसी में खुले तब जी० आई० पी० रेलवे के मुलाजिम जो साहब वहाँ जनरल ट्राफिक मैनेजर मुकर्रर हुए वे मुझे भी अपने साथ झाँसी लाये और नये-नये काम मुझसे लेकर मेरी पदोन्नति करते गये। इस उन्नति का प्रधान कारण मेरी ज्ञान-लिप्सा और गौण कारण उन साहब बहादुर की कृपा या गुणग्राहकता थी। दस-बारह वर्ष बाद मेरी मासिक आय मेरी योग्यता से कई गुनी अधिक हो गई।

जब इण्डियन मिडलैंड रेलवे जी० आई० पी० रेलवे से मिला दी गई, तब कुछ दिन बम्बई में रहकर मैंने अपना तबादिला झाँसी को करा लिया। वहीं रहना मुझे अधिक पसन्द था। पाँच वर्ष मैं वहाँ डिस्ट्रिक्ट सुपरिण्टेण्डेन्ट के दफ्तर में रहा। वे दिन मेरे अच्छे नहीं कटे। लार्ड कर्जन का देहली दरबार उसी जमाने में हुआ था। मेरे गौराङ्ग प्रभु अपनी रातें अपने बँगले या क्लब में बिताते थे। मैं दिन भर दफ्तर का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम करके रात भर अपनी कुटिया में पड़ा हुआ, उनके नाम आये हुए तार लेता और उनके जवाब देता था। ये तार उन स्पेशल रेलगाड़ियों के सम्बन्ध में होते थे जो दक्षिण से देहली की ओर दौड़ा करती थीं। उन चाँदी के टुकड़ों की बदौलत जो मुझे हर महीने मिलते थे, मैंने अपने ऊपर किये इस अत्याचार को महीनों बर्दाश्त किया।

मैं यदि किसी के अत्याचार को सह लूँगा तो उससे मेरी सहनशीलता अवश्य सूचित होती है, पर उससे मुझे औरों पर अत्याचार करने का अधिकार नहीं प्राप्त हो जाता। परन्तु कुछ समयोत्तर बानक ऐसा बना कि मेरे प्रभु ने मेरे द्वारा औरों पर अत्याचर करना चाहा। हुक्म हुआ कि इतने कर्मचारियों को लेकर रोज सुबह ८ बजे दफ्तर में आया करो और ठीक दस बजे मेरे कागज मेरी मेज पर मुझे रक्खे मिलें। मैंने कहा, मैं आऊँगा पर औरों को आने के लिए लाचार न करूँगा। उन्हें हुक्म देना हुजूर का काम है। बस, बात बढ़ी और बिला किसी सोच-विचार के मैंने इस्तीफा दे दिया। बाद को उसे वापस लेने के लिए इशारे ही नहीं, सिफारिशें तक की गईं। पर सब व्यर्थ हुआ। क्या इस्तीफा वापस लेना चाहिए? यह पूछने पर मेरी पत्नी ने विषण्ण होकर कहा—"क्या थूक कर भी उसे कोई चाटता है?" मैं बोला, नहीं, ऐसा कभी न होगा, तुम धन्य हो! अब उसने तो आठ आने रोज तक की आमदनी से भी मुझे खिलाने-पिलाने और गृह-कार्य चलाने का दृढ़ सङ्कल्प किया और मैंने "सरस्वती" की सेवा से हर महीने जो २०) रुपये उजरत और ३) रुपये डाक खर्च की आमदनी होती थी उसीसे सन्तुष्ट रहने का निश्चय किया। मैंने सोचा किसी समय तो मुझे १५) रुपये ही मिलते थे, २३) रुपये तो उसके ड्योढ़े से भी अधिक हैं। इतनी आमदनी मुझ देहाती के लिए कम नहीं।

मेरे पिता ईस्ट इण्डिया कम्पनी की एक पलटन में सैनिक वा सिपाही थे। मामूली हिन्दी पढ़े-लिखे थे। बड़े भक्त थे। सिपाहियों के काम से छुट्टी पाने पर राम-लक्ष्मण की पूजा किया करते थे। इसी से साथी सिपाहियों ने उनका नाम रखा था—लछिमनजी। गदर में पिता की पलटन बागी होगई, जो बच निकले वे बच गये। बाकी जवान तोपों से उड़ा दिये गये। पलटन उस समय होशियारपुर (पञ्जाब) में थी। पिता ने भागकर अपना शरीर सतलज की वेगवती धारा को अर्पण कर दिया। एक या दो दिन बाद बेहोशी की हालत में सैकड़ों कोस दूर, आगे की तरफ, कहीं वे किनारे लग गये। होश आने पर सँभले और हरी मोटी घास के तिनके चूस-चूस कर कुछ शक्ति सम्पादन की। भागते-भागते, साधुवेश में कई महीने बाद वह घर आये। घर पर कुछ दिन रहकर, इधर-उधर भटकते हुए, वे बम्बई पहुँचे। वहाँ वल्लभ-सम्प्रदाय के एक गोस्वामीजी के यहाँ वे नौकर हो गए। इस तरह यहाँ भी उन्हें ठाकुरजी की सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मेरे समर्थ होने तक वे इसी सम्प्रदाय के गोस्वामी की मुलाजिमत में रहे। फिर सदा के लिए उसे छोड़कर घर चले आये।

मेरे पितामह संस्कृतज्ञ थे और अच्छे पण्डित भी थे। बङ्गाल की छावनियों में स्थित पलटनों को वे पुराण सुनाया करते थे। उनकी एकत्र की हुई सैकड़ों हस्तलिखित पुस्तकें बेच-बेच कर मेरी पितामही ने पिता और पितृव्य आदि का पालन किया। वयस्क होने पर दो-चार पुस्तकें मुझे भी घर में पड़ी मिलीं। मेरे पितृव्य दुर्गाप्रसाद नाम मात्र को हिन्दी क्या कैथी जानते थे। पर उनमें नये-नये किस्से बना कर कहने की अद्भुत शक्ति थी। रायबरेली जिले में दानशाह के गौरा के तत्कालीन ताल्लुकेदार, भूपालसिंह के यहाँ किस्से सुनाने के लिए वे नौकर थे। मेरे नाना और मामा भी संस्कृतज्ञ थे। मामा की संस्कृतज्ञता का परिचय स्वयं मैंने, उनके पास बैठकर प्राप्त किया था।

नहीं कह सकता, शिक्षा-प्राप्ति की तरफ प्रवृत्ति होने का संस्कार मुझे किससे हुआ—पिता से या पितामह से या अपने ही किसी पूर्वजन्म के कृतकर्म से। बचपन ही से मेरा अनुराग तुलसीदास की रामायण और ब्रजवासीदास के ब्रजविलास पर हो गया था। फुटकर कवित्त भी मैंने सैकड़ों कण्ठ कर लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे। हुशङ्गाबाद में रहते समय भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के कवि वचन-सुधा और गोस्वामी राधाचरण के एक मासिक पत्र ने मेरे उस अनुराग की वृद्धि कर दी। वहीं मैंने बाबू हरिश्चन्द्र कुलश्रेष्ठ नाम के एक सज्जन से, जो वहाँ कचहरी में मुलाजिम थे, पिंगल का पाठ पढ़ा। फिर क्या था, मैं अपने को कवि ही नहीं महा-कवि समझने लगा। मेरा यह रोग बहुत समय तक ज्यों का त्यों बना रहा। झाँसी आने पर जब मैंने, पंडितों की कृपा से प्रकृत कवियों के काव्यों का अनुशीलन किया, तब मुझे अपनी भूल मालूम हो गई और छन्दोबद्ध प्रलापों के जाल से मैंने सदा के लिए छुट्टी ले ली। पर गद्य में कुछ न कुछ लिखना जारी रक्खा। संस्कृत और अंग्रेजी पुस्तकों के कुछ अनुवाद भी मैंने किये।

जब मैं झाँसी में था तब वहाँ के तहसीली स्कूल के एक अध्यापक ने मुझे कोर्स की एक पुस्तक दिखाई नाम था तृतीय रीडर। उसने उसमें बहुत से दोष दिखाये। उस समय तक मेरी लिखी हुई कुछ समालोचनाएँ प्रकाशित हो चुकी थीं। इससे उस अध्यापक ने मुझसे रीडर की भी आलोचना लिखकर प्रकाशित करने का आग्रह किया। मैंने रीडर पढ़ी और अध्यापक महाशय की शिकायत को ठीक पाया। नतीजा यह हुआ कि उसकी समालोचना मैंने पुस्तकाकार में प्रकाशित की। इस रीडर का स्वत्वाधिकारी था, प्रयाग का इण्डियन प्रेस। अतएव इस समालोचना की बदौलत इण्डियन प्रेस से मेरा परिचय हो गया और कुछ समय बाद उसने 'सरस्वती' पत्रिका का संपादन-कार्य मुझे दे डालने की इच्छा प्रकट की। मैंने उसे स्वीकार कर लिया। यह घटना रेल की नौकरी छोड़ने के एक साल पहले की है।

नौकरी छोड़ने पर मेरे मित्रों ने कई प्रकार से मेरी सहायता करने की इच्छा प्रकट की। किसी ने कहा—'आओ, मैं तुम्हें अपना प्राइवेट सेक्रेटरी बनाऊँगा।' किसी ने लिखा—'मैं तुम्हारे साथ बैठकर संस्कृत पढ़ूंगा।' किसी ने कहा—मैं तुम्हारे लिए छापाखाना खुलवा दूँगा।' इत्यादि। पर मैंने सबको अपनी कृतज्ञता की सूचना दे दी और लिख दिया कि अभी मुझे आपके सहायतादान की विशेष आवश्यकता नहीं। मैंने सोचा अव्यवस्थित चित्त मनुष्य की सफलता में सदा संदेह रहता है। क्यों न मैं अङ्गीकृत कार्य ही में अपनी सारी शक्ति लगा दूँ। प्रयत्न और परिश्रम की बड़ी महिमा है। अतएव 'सब तज हरि भज' की मसल को चरितार्थ करता हुआ, इण्डियन प्रेस के प्रदत्त काम ही में मैं उसमें अनुवाद आदि का कुछ काम और करता था। समय की कमी के कारण मैं विशेष अध्ययन न कर सका। इसी से 'संपतिशास्त्र' नामक पुस्तक को छोड़कर और किसी अच्छे विषय पर मैं कोई नई पुस्तक न लिख सका।

उस समय तक मैंने जो कुछ लिखा था उससे मुझे टकों की प्राप्ति तो कुछ हुई ही न थी। हाँ, ग्रन्थकार, लेखक, समालोचक और कवि की जो पदवियाँ मैंने स्वयं अपने ऊपर लाद ली थीं, उनसे मेरे गर्व की मात्रा में बहुत कुछ इजाफा जरूर हो गया। मेरे तत्कालीन मित्रों और सलाहकारों ने उसे पर्याप्त न समझा। उन्होंने कहा—अजी कोई ऐसी किताब लिखो जिससे टके सीधे हों। रुपये का लोभ चाहे जो करावे। मैं उनके चकमे में आ गया। योरुप और अमेरिका तक में प्रकाशित पुस्तकें मँगाकर पढ़ीं। संस्कृत भाषा में प्राप्त सामग्री से भी लाभ उठाया। बहुत परिश्रम करके कोई दो-सौ सफे की एक पुस्तक लिख डाली। नाम उसका रक्खा तरुणोपदेश। मित्रों ने देखा कहा, 'अच्छी तो है, पर इसमें सरसता नहीं। पुस्तक ऐसी ही होनी चाहिए जिसका नाम ही सुनकर और विज्ञापन पात्र ही पढ़कर खरीदार पाठक उस पर इस तरह टूटें जिस तरह गुड़ नहीं, बहते हुए व्रण या गन्दगी पर मक्खियों के झुण्ड के झुण्ड टूटते हैं। काम-कला लिखो, काम किल्लोल लिखो, कंदर्प-दर्पण लिखो, रति-रहस्य लिखो, मनोज-मञ्जरी लिखो, अनंग-रंग लिखो। मैं सोच विचार में पड़ गया। बहुत दिनों तक चित्त चलायमान रहा। अन्त में जीत मेरे मित्रों ही की रही। उनके प्रस्तावित नाम मुझे पसन्द न आये। मैं उनसे भी बांस भर आगे बढ़ गया। कवि तो मैं था ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने चार-चार चरण वाले लम्बे-लम्बे छन्दों में एक पद्यात्मक पुस्तक लिख डाली—ऐसी पुस्तक जिसके प्रत्येक पद्य से उसकी नदी नहीं तो बरसाती नाला जरूर बह रहा था। नाम भी मैंने ऐसा चुना जैसा कि उस समय तक उस रस के अधिष्ठाता को भी न सूझा था। मैं तीस-चालीस साल पहले की बात कह रहा हूँ। आजकल की नहीं। आजकल तो नाम बाजारू हो रहा है और अपने अलौकिक आकर्षण के कारण निर्धनों को धनी और धनियों को धनाधीश बना रहा है। अपने बूढ़े मुँह के भीतर धँसी हुई जबान से, आपके सामने, उस नाम का उल्लेख करके मुझे बड़ी लज्जा मालूम होगी। पर पापों का प्रायश्चित करने के लिए, आप पञ्च-समाज रूपी परमेश्वर के सामने, शुद्ध हृदय से उसका निर्देश करना ही होगा। अच्छा, तो उसका नाम था या है—सोहाग रात। उसमें क्या है, यह आप पर प्रकट करने की जरूरत नहीं, क्योंकि—

परेङ्गितज्ञानफला हि बुद्धयः

मेरे मित्रों ने इस पिछली पुस्तक को बहुत पसन्द किया, उसे बहुत सरस पाया अतएव उन्होंने मेरी पीठ खूब ठोंकी। मैंने भी अपना परिश्रम सफल समझा। अब लगा मैं हवाई किले बनाने। पुस्तक प्रकाशित होने पर उसे युक्ति-पूर्वक बेचूँगा, मेरे घर रुपयों की वृष्टि होने लगेगी। शीघ्र ही मैं मोटर नहीं, तो एक विक्टोरिया खरीद कर उस पर हवा खाने निकला करूँगा। देहात छोड़ कर दशाश्वमेध घाट पर कोई तिमंजिला मकान बनवाकर या मोल लेकर वहीं काशीवास करूँगा। कई कर्मचारी रक्खूँगा। अन्यथा हजारों वैल्यू-पेबिल कौन रवाना करेगा।

परन्तु अभागियों के सुख-स्वप्न सच्चे नहीं निकलते। मेरे हवाई महल एक पल में ढह पड़े। मेरी पत्नी कुछ लिखी-पढ़ी थी। उससे छिपाकर ये दोनों पुस्तकें मैंने लिखी थीं। दुर्घटना कुछ ऐसी हुई कि उसने ये पुस्तकें देख लीं। देखा ही नहीं, उलट-पलट कर पढ़ा भी। फिर क्या था, उसके शरीर में कराला काली का आवेश हो आया। उसने मुझ पर वचन-विन्यास रूपी इतने कड़े कशाघात किये कि मैं तिलमिला उठा। उसने उन पुस्तकों की कापियों को आजन्म कारावास या काले पानी की सजा दे दी। वे उसके सन्दूक में बन्द हो गईं। उसके मरने पर ही उनका छुटकारा उस 'दायमुलहृदस' से हुआ। छूटने पर मैंने इन्हें एकान्त सेवन की आज्ञा दे दी है। क्योंकि सती की आज्ञा का उलंघन करने की शक्ति मुझ में नहीं। इस तरह मेरी पत्नी ने तो मुझे साहित्य के उस पङ्कपयोधि में डूबने से बचा लिया। आप भी मेरे उस दुष्कृत्य को क्षमा कर दें तो बड़ी कृपा हो। इसी से मैंने बहुत कुछ अप्रासंगिक विषय के उल्लेख की यहाँ जरूरत समझी।

'सरस्वती' के संपादन का भार उठाने पर मैंने अपने लिये कुछ आदर्श निश्चित किये। मैंने सङ्कल्प किया (१) वक्त की पाबन्दी करूँगा (२) मालिकों का विश्वासपात्र बनने की चेष्टा करूँगा (३) अपने हानि-लाभ की परवा न करके पाठकों के हानि-लाभ का सदा ख्याल रक्खूँगा और (४) न्याय-पथ से कभी न विचलित हूँगा। इनका पालन कहाँ तक मुझसे हो सका, संक्षेप में, सुन लीजिये—(१) संपादकजी बीमार हो गये, इस कारण 'स्वर्ग समाचार' दो हफ्ते बन्द रहा। मैनेजर महाशय के मामा परलोक प्रस्थान कर गये, लाचार 'विश्वमोहनी' पत्रिका देर से निकल रही है। 'प्रलयङ्करी' पत्रिका के विधाता का फोन्टेनपेन टूट गया। उसके मातम में १३ दिन काम बन्द रहा। इसी से पत्रिका के प्रकाशन में विलम्ब हो गया। प्रेस की मशीन नाराज हो गई। क्या किया जाता। 'त्रिलोकपति' का यह अंश, इसी से समय पर न छप सका। इस तरह की घोषणाएं मेरी दृष्टि में बहुत पड़ चुकी थीं। मैंने कहा—मैं इन बातों का कायल नहीं। प्रेस की मशीन टूट जाय तो उसका जिम्मेदार मैं नहीं। पर कापी समय पर न पहुँचे तो उसका जिम्मेदार मैं हूँ। मैंने अपनी इस जिम्मेदारी का निर्वाह जी-जान होम कर किया। चाहे पूरा का पूरा अङ्क मुझे ही क्यों न लिखना पड़ा हो, कापी समय पर ही मैंने भेजी। मैंने तो यहाँ तक किया कि कम से कम छः महीने आगे की सामग्री सदा अपने पास प्रस्तुत रखी। सोचा कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि मैं महीनों बीमार पड़ जाऊँ तो क्या हो ? 'सरस्वती' का प्रकाशन तब तक बन्द रखना क्या ग्राहकों के साथ अन्याय करना न होगा ? अस्तु ! मेरे कारण सोलह-सत्रह वर्ष के दीर्घकाल में, एक बार भी सरस्वती का प्रकाशन नहीं रुका । जब मैंने अपना काम छोड़ा तब भी मैंने नये संपादक को बहुत से बचे हुए लेख अर्पण किये । उस समय के उपार्जित और अपने लिखे हुए कुछ लेख अब भी मेरे संग्रह में सुरक्षित हैं ।

(२) मालिकों का विश्वास-भाजन बनने की चेष्टा में मैं यहाँ तक सचेत रहा कि मेरे कारण उलझन में पड़ने की नौबत नहीं आई । 'सरस्वती' के जो उद्देश्य थे उनकी रक्षा मैंने दृढ़ता से की । एक दफे अलबत्ते मुझे इलाहाबाद के डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट के बँगले पर हाजिर होना पड़ा । पर मैं भूल से तलब किया गया था । किसी विज्ञापन के सम्बन्ध में मैजिस्ट्रेट को चेतावनी देनी थी । वह और किसी को मिली, क्योंकि विज्ञापनों की छपाई से मेरा कोई सरोकार न था ।

मेरी सेवा से 'सरस्वती' का प्रचार जैसे-जैसे बढ़ता गया और मालिकों का मैं जैसे-जैसे अधिकाधिक विश्वास-भाजन होता गया वैसे ही वैसे मेरी सेवा का बदला भी मिलता गया, और मेरी आर्थिक स्थिति प्रायः वैसी ही हो गई जैसी कि रेलवे की नौकरी छोड़ने के समय थी । इसमें मेरी कारगुजारी कम, दिवंगत बाबू चिन्तामणि घोष की उदारता ही अधिक कारणीभूत थी । उन्होंने मेरे सम्पादन-स्वातन्त्र्य में कभी बाधा नहीं डाली । वे मुझे अपना कुटुम्बी-सा समझते रहे, और उनके उत्ताराधिकारी अब तक भी मुझे वैसे ही समझते हैं ।

(३) इस समय तो कितनी ही महारानियाँ तक हिन्दी का गौरव बढ़ा रही हैं, पर उस समय एक मात्र 'सरस्वती' ही पत्रिकाओं की रानी, नहीं पाठकों की सेविका थी । तब उसमें कुछ छापना या किसी के जीवन-चरित्र आदि प्रकाशन करना जरा बड़ी बात समझी जाती थी । दशा ऐसी होने के कारण मुझे कभी-कभी बड़े-बड़े प्रलोभन दिये जाते थे । कोई कहता मेरी मौसी का मरसिया छाप दो, मैं तुम्हें निहाल कर दूँगा । कोई लिखता—अमुक सभापति की 'स्पीच' छाप दो, मैं तुम्हारे गले में बनारसी दुपट्टा डाल दूँगा । कोई आज्ञा देता—मेरे प्रभु का सचित्र जीवन-चरित्र निकाल दो तो तुम्हें एक बढ़िया घड़ी या पैरगाड़ी नजर की जायगी । इन प्रलोभनों का विचार करके में अपने दुर्भाग्य को कोसता और कहता कि जब मेरे आकाश-महलों को खुद मेरी ही पत्नी ने गिरा कर चूर कर दिया, तब भला ये घड़ियाँ और गाड़ियाँ मैं कैसे हजम कर सकूँगा । नतीजा यह होता कि मैं बहरा और गूँगा बन जाता और 'सरस्वती' में वही मसाला जाने देता जिससे मैं पाठकों का लाभ समझता । मैं उनकी रुचि का सदैव ख्याल रखता और यह देखता कि मेरे किसी काम से उनको, सत्पथ से विचलित होने का साधन न प्राप्त हो । संशोधन द्वारा लेखों की भाषा अधिक-संख्यक पाठकों की समझ में आने लायक कर देता । यह न देखता कि यह शब्द अरबी का है या फारसी का या तुर्की का । देखता सिर्फ यह कि इस शब्द, वाक्य या लेख का आशय अधिकांश पाठक समझ लेंगे या नहीं । अल्पज्ञ होकर भी किसी पर अपनी विद्वत्ता की झूठी छाप छापने की कोशिश मैंने कभी नहीं की ।

(४) सरस्वती में प्रकाशित मेरे लघु लेखों (नोटों) और आलोचनाओं ही से सर्वसाधारण जन इस बात का पता लगा सकते हैं कि मैंने कहाँ तक न्याय मार्ग का अवलम्बन किया है । जानबूझकर मैंने कभी अपनी आत्मा का हनन नहीं किया । न किसी के प्रसाद की प्राप्ति की आकांक्षा की न किसी के कोप से विचलित हुआ । इस प्रान्त के कितने ही न्यायनिष्ठ सामाजिक सत्पुरुषों ने 'सरस्वती' का जो 'बायकाट' कर दिया था वह मेरे किस अपराध का सूचक था, इसका निर्णय सुधीजन कर सकते हैं ।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी के सजग प्रहरी : आचार्य द्विवेदी

श्री नर्मदेश्वर चतुर्वेदी

आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी का जन्म रायबरेली जिले के दौलतपुर नामक गाँव में वैशाख शुक्ल ४ सं० १९२१ में हुआ था। इनके पिता श्री रामसहाय द्विवेदी ने अपने इष्टदेव के नाम पर इनका नाम महावीर सहाय रखा। परन्तु प्रारम्भिक शिक्षा की समाप्ति पर इनका "प्रमाण पत्र" लिखते समय इनके अध्यापक ने भूल से इनका नाम महावीरप्रसाद लिख दिया और तब से यह स्थायी हो गया। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा हिन्दी, उर्दू और गणित की हुई थी साथ ही साथ कुछ न कुछ फारसी का अभ्यास भी चलता रहा। परन्तु पारिवारिक जीवन में इनका संपर्क संस्कृत से भी बना रहा। इनके चाचा ने इन्हें अमरकोश, दुर्गा सप्तशती, विष्णु, सहस्र नाम आदि को कण्ठस्थ करा दिया था। इनकी अँग्रेजी शिक्षा का आरम्भ जिला स्कूल रायबरेली में हुआ था। अठारह कोस की दूरी तय करने के बाद वहाँ ये आटा-दाल पीठ पर लाद कर पढ़ने जाते थे। अपना भोजन ये जैसे-तैसे स्वयं तैयार कर लिया करते थे। बचपन से ही ये बड़े साहसी थे। एक दिन ये जाड़े में रात भर चल कर पौ फटते-फटते अपने घर पहुँचे थे जबकि इनकी माँ चक्की पीस रही थी। वहाँ इन्हें अचानक पाकर माँ की ममता उमड़ पड़ी और उसकी अविरल अश्रुधारा में इनकी क्लान्ति धुल गई। ऐसे ही कठोर, किन्तु स्नेहिल वातावरण में द्विवेदी जी का चरित्र-निर्माण हुआ था।

जिला स्कूल रायबरेली में द्विवेदीजी की शिक्षा एक वर्ष तक चलती रही, जहाँ संस्कृत के अभाव में इन्हें फारसी का अभ्यास करना पड़ा था। दूसरे वर्ष ये उन्नाव जिले के रनजीत पुरवा स्कूल में भेजे गये जो कुछ दिनों बाद ही टूट गया। इसके बाद ये फतेहपुर गये। किन्तु वहाँ डबल प्रोमोशन नहीं मिला और इन्हें उन्नाव जाना पड़ा। वहाँ इनका मन रम न सका और अन्त में कुछ महीने बाद ये अपने पिता के पास बम्बई चले गये। वहाँ इन्होंने संस्कृत, मराठी, गुजराती और अँगरेजी का अभ्यास किया।

बम्बई के प्रवास-काल में द्विवेदीजी का सम्पर्क अपने पड़ोसी रेलवे-कर्मचारियों से बढ़ा। उनके प्रभाव में आकर इन्होंने रेलवे की नौकरी करली और नागपुर चले गये। परन्तु वहाँ उनका जी नहीं लगा और ये अजमेर में अपने गाँव के रेलवे-कर्मचारियों के पास आ गये। वहीं इन्हें पन्द्रह रुपये मासिक की नौकरी लग गई इन्होंने उस पन्द्रह रुपये का उपभोग भी अपने ढङ्ग से ही किया। पाँच रुपये ये अपने खाने-पीने आदि में खर्च करते थे और पांच रुपये अपनी माँ के पास भेज दिया करते थे। इसी प्रकार पाँच रुपये का इन्होंने ट्यूटर रख लिया था जो इन्हें विद्याभ्यास कराया करता था।

फिर भी द्विवेदीजी का मन अजमेर में न लगा और बम्बई अपने पिता के पास लौट आये। इस बार तार सीख कर इन्होंने जी० आई० पी० रेलवे में लगभग बीस वर्ष की वय में सिगनेलर की नौकरी करली। वहाँ काम करते हुये इन्होंने टिकट बाबू से लेकर स्टेशन मास्टर तक के काम सीखे और इनकी पदोन्नति होने लगी। इंडियन मिडलैंड रेलवे के ट्रैफिक मैनेजर डबल्यू० बी० राइट की प्रेरणा से ये झाँसी में टेलीग्राफ इन्स्पेक्टर के पद पर नियुक्त हुए। कुछ काल बाद ये उसके हैड भी हो गए। परन्तु दौरे से घबड़ाकर इन्होंने अपनी बदली ट्रैफिक मैनेजर के आफिस में करा ली। वहाँ ये असिस्टेण्ट चीफ क्लर्क तक के पद पर उन्नति करते हुए पहुँचे। फिर रेट्स के चीफ इंस्पेक्टर के पद पर आसीन हुये। उक्त रेलवे जब जी० आई० पी० में अन्तर्भुक्त हुई तो पुनः ये बम्बई आये। परन्तु वहाँ का वातावरण इन्हें अनुकूल नहीं जँचा और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये झाँसी लौट आये। यहाँ ये डिस्ट्रिक्ट ट्रैफिक सुपरिन्टेण्डेन्ट के आफिस में चीफ क्लर्क का काम करते रहे। इसके बाद द्विवेदीजी ने साहित्यिक जीवन में पदार्पण किया।

साहित्यिक क्षेत्र में आचार्य द्विवेदी के प्रवेश पाने तक हिन्दी का बिरवा अंकुरित होकर पनपने लगा था। ईस्ट इण्डिया कम्पनी की राज्य-व्यवस्था के संचालकों को यह समझते देर नहीं लगी कि फारसी भारतीय भाषा नहीं है। ऐसी दशा में देशी भाषाओं को प्रश्रय देना उनके लिए अनिवार्य हो गया। इसका आरम्भ उन्होंने बङ्गाल से किया। उन्नीसवीं शती के पूर्वार्ध में बंगला फारसी का स्थानापन्न हो गई। कम्पनी का प्रभाव क्षेत्र जैसे-जैसे विस्तृत होता गया वैसे-वैसे देशी भाषाओं को महत्व मिलता गया। कालान्तर में पश्चिम में भी उसका प्रभुत्व बढ़ा और देशी भाषा को प्रश्रय देने का प्रश्न उपस्थित हुआ। इस पद की प्राप्ति के लिये हिन्दी और उर्दू के बीच प्रतिद्वन्द्विता हुई। शासन में उर्दू के सर सय्यद अहमद खाँ जैसे पक्षपातियों का जोर था इसलिए कम्पनी के अधिकारियों ने सन् १८३८ ईसवीं में उर्दू को ही पश्चिमोत्तर प्रदेश की भाषा घोषित कर दिया। हिन्दी के समर्थकों में राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द हिन्दी के लिए वैसे प्रभावशाली सिद्ध न हुए। हिन्दी के विरुद्ध फारसी-प्रेमी हिन्दू मुसलमान तो थे ही उसे संस्कृत प्रेमियों का समर्थन भी सुलभ न हो सका। इस प्रकार हिन्दी के विपक्षी दो वर्गों में विभक्त थे। एक वर्ग उर्दू के पक्ष में हिन्दी का विरोध करता था और दूसरा संस्कृत के अनुराग में इसके प्रति उपेक्षा का भाव रखता था।[1] उर्दू के हिमायती हिन्दी का कोई भाषा मानने को तैयार न थे। उनका यह भी आरोप था कि इनके पास तालीम देने लायक किताबें तक नहीं हैं। इसी प्रकार देववाणी संस्कृत के समर्थक जनवाणी हिन्दी को प्रश्रय न दे सके। हिन्दी के लिए यह परीक्षा की घड़ी थी। ऐसे अवसर पर राजा शिवप्रसाद ने धैर्य और सूझ से काम लिया और अपने सहयोगियों सहित उन्होंने कई पुस्तकें तैयार कर लीं। फलस्वरूप हिन्दी भी शिक्षा का माध्यम मान ली गई। उन दिनों स्कूलों में जो हिन्दी पुस्तकें प्रचलित थीं वे हिन्दी शिक्षावली थी। उनका संपादन लाला सीताराम और दीनदयाल तिवारी ने किया था। इस संदर्भ में राजा लक्ष्मणसिंह के संस्कृत नाटकों के अनुवाद और श्रीधर पाठक के गोल्डस्मिथ के पद्यानुवाद भुलाये नहीं जा सकते। उस समय कवि तथा पत्रकार अपना ध्यान समस्या-पूर्ति तक प्रायः केन्द्रित रखते थे। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की प्रेरणा से हिन्दी का क्षेत्र विस्तार की ओर उन्मुख हुआ और उसके विकास के नये-नये द्वार खुल गये।

ऐसी ही पृष्ठभूमि में आचार्य द्विवेदी ने हिन्दी की बागडोर सँभाली। भारतेन्दु ने जहाँ हिन्दी का क्षेत्र-विस्तार किया, वहाँ द्विवेदीजी ने उसका संस्कार तथा परिष्कार करने और उसे समृद्ध बनाने में योगदान दिया। इन्हें कुछ लिखने की प्रेरणा 'कवि वचन सुधा' द्वारा प्राप्त हुई। होशङ्गाबाद में रेलवे की नौकरी करते समय सं० १९४२ में इनका सम्पर्क श्री हरिश्चन्द्र कुलश्रेष्ठ से हुआ। उन्हीं से पिगङ्ग-शास्त्र की शिक्षा इन्हें मिली और 'महिम्न स्तोत्र' जैसी रचनाओं के अनुवाद का इन्होंने आरम्भ किया। वहाँ से झाँसी आने के बाद इनकी साहित्यिक प्रवृत्ति और भी जाग्रत हुई। लाला सीताराम के अनुवादों से असन्तुष्ट होकर इन्होंने उनकी कटु आलोचना की। सं० १९५८ में इनकी आलोचना पुस्तक 'हिन्दी कालिदास की समालोचना' प्रकाशित हुई। इसके पूर्व सं० १९४८ से ही महिम्न स्तोत्र, गङ्गा लहरी आदि के अनुवाद तथा नैषधचरित चर्चा जैसे ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके थे। लिखने का यह क्रम सं० १९८६ तक चलता रहा और सं० १९८७ तक में इनके इक्यासी ग्रन्थ प्रकाश में आये जिनमें मौलिक तथा अनुवाद ग्रन्थ दोनों ही शामिल हैं।

परन्तु द्विवेदीजी के जीवन का सर्वाधिक महत्व

(शेष पृष्ठ १४ पर)

[1] हिन्दी को जो लोग हिन्दुओं की भाषा कहते नहीं अघाते उन्हें इस कथन की संगति पर पुनर्विचार करना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आचार्य द्विवेदी का व्यक्तित्व

डा० कन्हैयालाल सहल

द्विवेदीजी केवल एक व्यक्ति ही नहीं, वह अपने आप में स्वयं एक संस्था थे। आधुनिक हिन्दी साहित्य के इतिहास में आचार्य द्विवेदीजी का जो स्थान है, उसकी किसी से तुलना नहीं की जा सकती। वे युग-पुरुष थे, हिन्दी-साहित्य के इतिहास का एक युग ही उनके नाम पर द्विवेदी-युग कहलाता है।

द्विवेदीजी ने जब सरस्वती के सम्पादन का कार्य-भार सम्हाला था, उस समय व्याकरण-विशुद्ध परिमार्जित हिन्दी लिखने वाले बहुत कम थे। उन्होंने व्याकरण-सम्मत भाषा की ओर लेखकों का ध्यान आकृष्ट कर हिन्दी-भाषा का परिष्कार किया। उन्होंने अपनी पारदर्शिनी सूक्ष्म दृष्टि से देख लिया था कि खड़ीबोली को गद्य की भाषा तक ही सीमित न रख कर यदि उसे काव्य की भाषा बना दिया जाय, तो वह काव्योचित भाषा के समस्त गुणों से अलंकृत होकर समय की कसौटी पर खरी उतरेगी। उन्होंने जहां गद्य-लेखकों को तैयार किया, वहाँ गुप्तजी जैसे खड़ी-बोली के यशस्वी कवि भी प्रतिष्ठित कर दिये। गुप्तजी ने साकेत की भूमिका में आचार्य को जिस श्रद्धा एवं भक्तिपूर्वक स्मरण किया है, वह उन्हीं के अनुरूप है—

करते तुलसीदास भी कैसे मानस-नाद ?
महावीर का जो उन्हें मिलता नहीं प्रसाद ॥

अभी हाल ही में पत्र-पत्रिकाओं में आचार्य विषयक जो संस्मरण गुप्तजी ने लिखे हैं, उनसे भी आचार्य के प्रति उनकी श्रद्धा को बड़ी सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है।

किसी भी भाषा के परिष्कार का प्रारम्भिक कार्य बड़ा कठिन होता है, और जब उस भाषा का परिमार्जित रूप हमारे सामने आता है, तो हम शायद यह भूल जाते हैं कि उसका पूर्व रूप कितना अधिक विकृत रहा होगा। आज जब खड़ीबोली हिन्दी में गद्य-पद्य की परिनिष्ठित एवं उच्च स्तर की प्रचुर रचनाएँ उपलब्ध हैं तथा वह राष्ट्र-भाषा के गौरवशाली पद को भी सुशोभित किये हुए है तो सम्भव है, हम ऐतिहासिक चेतना के अभाव में द्विवेदीजी के कार्य का महत्व न समझ सकें। किन्तु आचार्य का मूल्याङ्कन करते समय हमें यह कदापि नहीं भूलना चाहिये कि वर्तमान हिन्दी को जो रूप और गौरव प्राप्त हुआ है, उसके इतिहास के पन्ने-पन्ने पर द्विवेदीजी की छाप है। भारतेन्दु के पश्चात् यदि द्विवेदी जैसे निर्माता का जन्म न हुआ होता तो हिन्दी का प्रवाह आज किस ओर बह गया होता, नहीं कहा जा सकता। द्विवेदीजी लेखक, आलोचक, बहुभाषाविज्ञ तथा सम्पादक सभी कुछ थे, किन्तु उनका सबसे बड़ा महत्व इसमें है कि वे निर्माता थे, स्रष्टा थे, एक शब्द में कहें तो वे साहित्य के रत्नाकर थे जिन्होंने अनेक रत्न हिन्दी-संसार को भेंट किये।

द्विवेदीजी का व्यक्तित्व प्रखर एवं प्रभावशाली था। विरोधियों से टक्कर लेना वे खूब जानते थे। जब वे सीना खोलकर मैदान में आ डटते थे तब उनसे लोहा लेने की हिम्मत किसी की नहीं होती थी और यदि कोई दुस्साहस करता था तो उसे उल्टे मुँह की खानी पड़ती थी। जो यह नहीं समझते कि महापुरुष वज्र से भी कठोर और पुष्प से भी कोमल होते हैं, वे ही कभी-कभी द्विवेदीजी के उग्र अथवा कठोर स्वभाव की चर्चा करते हुए पाये जाते हैं किन्तु जिन्हें द्विवेदीजी के निकट साहचर्य अथवा सम्पर्क का अवसर प्राप्त हुआ है, वे भलीभाँति जानते हैं कि उनका हृदय कितना मृदुल एवं कोमल था। उच्च कोटि के विद्वान होते हुए भी वे निरभिमान थे, किन्तु आत्म-गौरव उनमें कूट-कूट कर भरा था। उनके आत्म-सम्मान को जब कभी भी ठेस पहुँचती तो वे उसके अस्तित्व को प्रकट किये बिना कभी नहीं रहते थे, उस समय उनका ब्रह्म-वर्चस जाग्रत हो उठता था, जिसकी आभा से अभिभूत हो जाने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिवाय प्रतिपक्षियों के पास और कोई चारा ही नहीं रहता था।

पद-प्राप्ति के भूखे वे कभी नहीं रहे। बार-बार प्रार्थना किये जाने पर भी सम्मेलन का सभापतित्व उन्होंने स्वीकार नहीं किया, किन्तु उन्होंने जो रचनात्मक कार्य कर दिखाया, वह उनकी पुण्यस्मृति को चिरस्थायी बनाये रखेगा। किसी विश्वविद्यालय में उच्च शिक्षा उन्होंने प्राप्त नहीं की, किन्तु स्वाध्यायशीलता के सहारे बड़े-बड़े ग्रन्थ-रत्न उन्होंने हिन्दी-संसार को भेंट किये। उन्होंने साहित्य के भाण्डार को विविध विषयों से विभूषित करने की कोशिश की। 'सम्पत्ति-शास्त्र' और 'शिक्षा' द्वारा भी उन्होंने हिन्दी-साहित्य की श्रीवृद्धि की। सच तो यह है कि उन्होंने अपने आपको हिन्दी-साहित्य के हेतु अर्पित कर दिया था। उन्होंने अपना सारा समय, यहाँ तक कि अपना स्वास्थ्य भी, साहित्य-यज्ञ में होम दिया था। वे साहित्य-महर्षि थे, जिनके अनुष्टुप छन्दात्मक आशीर्वाद प्राप्त कर हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादक अपना अहोभाग्य समझते थे।

एक बार श्री बनारसीदासजी चतुर्वेदी को आशीर्वाद देते हुए उन्होंने निम्नलिखित वर्णिक छन्द का प्रयोग किया था—

"आत्मानुकूलं च विधाय कार्यं
सदैव सत्येन पथा प्रयाहि
कुर्वन्स्वशक्त्याऽथ परोपकारं
बनारसीदास सुखी भव त्वम्।"

उक्त छन्द में आचार्य द्विवेदी ने वस्तुतः सुख-प्राप्ति के तीन उपाय ही बता दिये हैं जो निम्न-लिखित हैं—

१—आत्मानुकूल कार्य करना।

२—सदा सत्य मार्ग का अनुसरण करना।

३—अपनी शक्ति भर परोपकार करना।

उक्त श्लोक की व्यञ्जना यह भी है कि आचार्य द्विवेदी के व्यक्तित्व में भी उपर्युक्त तीनों गुणों का समाहार था। द्विवेदीजी वस्तुतः केवल साहित्य-निर्माता और उसके नियामक होने की दृष्टि से ही महान् नहीं थे, मनुष्य की दृष्टि से तो वे और भी बड़े थे। उनकी-सी नियमबद्धता, परहित आकुलता आज-कल इने-गिने व्यक्तियों में ही देखने को मिलती है। संपादन कौशल की दृष्टि से वे माडर्न रिव्यू के यशस्वी संपादक श्री रामानन्द चटर्जी के समकक्ष थे तथा नियम-बद्धता की दृष्टि से यदि महात्मा गांधी से भी उनकी तुलना करें तो कदाचित् अनुचित न होगा।

आचार्य द्विवेदी सब भाँति नमस्य एवं प्रणम्य हैं।

—बिड़ला कालेज, पिलानी।

(पृष्ठ १२ का शेषांश)

का काम था 'सरस्वती' पत्रिका का सम्पादन। 'सरस्वती' का प्रकाशन नागरी प्रचारिणी सभा की प्रेरणा से इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद द्वारा हुआ, जिसके सम्पादक बाबू श्यामसुन्दरदास थे। अपनी व्यस्तता के कारण बाबू साहब सम्पादन-कार्य में यथेष्ट समय नहीं दे पाते थे। इसलिए इण्डियन प्रेस के मालिक श्री चिन्तामणि घोष को इसकी चिन्ता थी। संयोगवश द्विवेदीजी जिनका सम्पर्क 'सरस्वती' से था, रेलवे की नौकरी से मुक्त हो चुके थे। इसका लाभ उठाकर श्री घोष ने इन्हें सम्पादन-कार्य के लिए आमन्त्रित किया जिसे इन्होंने स्वीकार कर लिया। यह समय जनवरी सन् १९०३ ई० का था। सन् १९०४ ई० तक उसका सम्पादन झाँसी से ही होता रहा। फिर ये जुही-कानपुर में रहकर सम्पादन करने लगे। सत्रह वर्ष तक कार्य करने के बाद सन् १९२० ई० में इन्होंने अवकाश लिया। इस बीच केवल सन् १९१० ई० में अस्वस्थता के कारण एक वर्ष की छुट्टी इन्हें लेनी पड़ी थी।

सम्पादन-कार्य से अवकाश ग्रहण करने के बाद द्विवेदीजी ने अपने जीवन के शेष अठारह वर्ष अपने गाँव में ही बिताये। इस बीच में आनरेरी मुन्सिफ तथा ग्राम-पञ्चायत के सरपञ्च पद पर आसीन रहे। अन्त में सं० १९९५ के २१ दिसम्बर को प्रातःकाल पौने पाँच बजे इन्होंने देह-मुक्ति प्राप्त की।

—प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी : व्यक्तित्व की एक झलक

डा० रामप्रसाद त्रिपाठी

आचार्य द्विवेदीजी के व्यक्तित्व की जो छाप मेरे मन पड़ी हुई है उसका विश्लेषण करना सुगम नहीं है।

काशी में सर्व प्रथम किसी साहित्यिक आयोजन में उनसे भेंट हुई थी। उस समय मैं सम्भवतः फर्स्ट इयर कक्षा का विद्यार्थी था। द्विवेदीजी की प्रशान्त गम्भीर मुद्रा में उनका आत्मविश्वास झलकता था। उन दिनों साहित्यिकों के बीच यह चर्चा का विषय बना हुआ था कि 'बिहारी सतसई' की टीका जो पं० ज्वालाप्रसाद मिश्र ने प्रकाशित की थी वह अर्थ का अनर्थ करने वाली और दोषपूर्ण है। यह मत 'मनसाराम' नामक किसी व्यक्ति ने चला दिया था जिनकी आलोचनाओं के औचित्य पर द्विवेदीजी ने ध्यान नहीं दिया। परन्तु मैं सोचता था बातें एक सीमा तक सही प्रतीत होती हैं। मेरा विश्वास था कि वे आलोचनाएँ सम्भवतः श्री पद्मसिंह शर्मा कर रहे थे, क्योंकि शैली और वस्तुनिष्ठा उन्हीं की थी।

द्विवेदीजी का मेरा बौद्धिक सम्पर्क भी हुआ। मैंने सरस्वती में 'ब्रजभाषा और शृङ्गार' पर एक लेख पं० देवीदत्तजी के आग्रह से लिखा। सुन रखा था कि सरस्वती में ब्रजभाषा सम्बन्धी लेख छपने का नियम नहीं है। इसलिए देवीदत्तजी ने लेख देखकर महावीर प्रसाद द्विवेदी के पास दो अङ्कों में प्रकाशित करने के सुझाव के साथ भेज दिया। आचार्य द्विवेदीजी ने एक अङ्क में प्रकाशित करने का निश्चय किया और लेख स्वीकृत कर पूछा कि "ये महाशय कौन हैं, अब वे जब प्रयाग आएँगे उनसे मिलेंगे।" मेरी भी उत्सुकता इस घटना से बढ़ गई।

कुछ दिनों बाद उनके प्रयाग आने पर देवीदत्तजी से सूचना पाकर मैं उनसे मिला। परन्तु इस बार उनका जो स्वरूप सामने आया वह पहली भेंट से सर्वथा भिन्न था। इस बार उनके व्यक्तित्व में काया-कल्प सा जान पड़ा। वे अतिशय विनम्रता और अकिञ्चन भाव से मुझसे मिले। व्यक्तित्व का यह द्विपक्षात्मक स्वरूप विश्लेषण की वस्तु है।

यद्यपि द्विवेदीजी ने 'सरस्वती' में खड़ी बोली को मान्यता दी और ब्रजभाषा का साथ न दिया, किन्तु निजी तौर पर ब्रजभाषा की माधुरी का रस लेते हुए वे अश्रुपात तक करते देखे गए।

सम्भवतः यही कारण है कि नागरी प्रचारिणी सभा के बाबू श्यामसुन्दरदासजी से मतभेद रखते हुए और काफी विवाद में पड़े रहते हुए भी द्विवेदीजी ने अपनी पुस्तकें आदि सभा को ही प्रदान कीं।

आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी ने जिस गम्भीरता से हिन्दी गद्य शैली का परिष्कार किया और नए लेखकों को लिखने के लिए उत्साहित किया वह श्रद्धा का विषय है।

—

४५ वर्ष पुराना पुस्तक प्रतिष्ठान—

साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा

यहाँ से आप पुस्तकों का बड़ा सूचीपत्र मँगायें और उसमें से पुस्तकें चयन कर राष्ट्रभाषा हिन्दी में प्रकाशित पुस्तकों के लिये लिखें। यहाँ से आपको पूर्ण सन्तोषप्रद उत्तर और सही जानकारी प्राप्त होगी और आपकी इच्छित पुस्तकें तुरन्त भेज दी जायेंगी।

प्रत्येक प्रकार की हिन्दी पुस्तकें मिलने का सबसे पुराना प्रतिष्ठान—

साहित्य-रत्न-भण्डार, साहित्य-कुञ्ज, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'द्विवेदी-युग' : नवमूल्याङ्कन की आवश्यकता

डॉ० रामरतन भटनागर

आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी (१८६४–१९३८) के नाम पर हमारे साहित्य के इतिहासकारों ने एक विशिष्ट साहित्यिक युग की कल्पना की है और उसे 'द्विवेदी युग' कहा है। सामान्यत: १९०३ से १९२० तक के १८ वर्ष इस युग के अन्तर्गत आते हैं और ये ही आचार्य द्विवेदी के 'सरस्वती' सम्पादन के वर्ष हैं। इन अठारह वर्षों में उनका नेतृत्व सर्वमान्य रहा है। कहीं-कहीं बीसवीं शताब्दी के पहले दो दशकों को भी 'द्विवेदी-युग' की संज्ञा दे दी जाती है। जो हो, स्पष्ट है कि आचार्य द्विवेदी के नाम से हम एक युग चला रहे हैं। आचार्य शुक्ल ने इसे आधुनिक काल के भीतर 'तृतीय उत्थान' माना है।

कठिनाई तब प्रस्तुत होती है जब हम द्विवेदी-युग को काल-प्रवाह में स्वतन्त्र स्थान चाहते हैं और उसकी व्यक्तिगत विशेषताओं की अवधारणा करते हैं। इस युग को नीतिवादी और इतिवृत्तात्मकता प्रधान कहा गया है। उसमें पौराणिकता की ओर रुझान की प्रधानता बतलाई गई है। भाषा-शैली की रूक्षता, तथ्य-वादिता और परोन्मुखी दृष्टि को भी महत्वपूर्ण कहा गया है। कहने का तात्पर्य यही है कि यह युग भावों की प्रबलता का युग नहीं है। वह ज्ञान-संपादन और सतर्क अभिव्यक्ति का युग है। उसमें क्लासिकल युग होने की क्षमता नहीं है परन्तु मर्यादा, औचित्य तथा रचना-सौष्ठव पर विशेष ध्यान है। छायावाद के समर्थ आलोचकों ने ही द्विवेदी युग की पहले पहल छानबीन की और उसे छायावाद-काव्य के विरोध में रखा। स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियों के जन्म के लिए एक संकोची, यथातथ्य और विषयप्रधान शैली की कल्पना द्विवेदी युग के साहित्यिक कृतित्व के भीतर से की गई और गद्य के क्षेत्र में आचार्य द्विवेदी के कार्य की सराहना करते हुए भी उन्हें व्यक्तिगत निबंध-लेखन तथा भारतेन्दु द्वारा स्थापित रसात्मक काव्य की परम्परा का विरोधी समझा गया।

एक अन्य कठिनाई भी है कि १९१० में काव्य का स्वर बदल जाता है और 'प्रसाद' तथा 'भारतीय आत्मा' की रचनाएँ सामने आने लगती हैं। उस समय तक स्वयं द्विवेदीजी की कतिपय रचनाओं (जिनमें १९०२ में प्रकाशित उनका 'कुमारसम्भव' का अनुवाद विशेष महत्वपूर्ण है) और श्री मैथिलीशरण गुप्त की कुछ प्रारम्भिक रचनाओं के अतिरिक्त ऐसा बहुत कम आया था जो काव्य में द्विवेदी-कलम का सूचक हो। वास्तव में बीसवीं शताब्दी के पहले दस वर्ष पद्य में प्रयोग के वर्ष हैं और १९१० के बाद काव्य के क्षेत्र में द्विवेदी-प्रभावापन्न काव्य के साथ खड़ी बोली के कवित्त-सवैयों की धारा और छायावाद की कविता का प्रारम्भिक-उन्मेष समानान्तर चलता रहा है। एक प्रकार से इन्हें खड़ी बोली काव्य की तीन शैलियाँ भी माना जा सकता है। ब्रजभाषा का काव्य पूर्व परम्परा के प्रसाद के रूप में चल ही रहा है। यह स्थिति काव्यालोचक को असमञ्जस में डाल देती है। सच तो यह है कि "वादों" की भूमिका पर से ऐतिहासिक अध्ययन को उठाने का फल यह होता है कि युग का रूप ही स्पष्ट नहीं हो पाता। जहाँ व्यक्ति-विशेष के नाम पर चालू किया जाता है वहाँ यह भी कठिनाई है कि कोई भी व्यक्तित्व युग की सारी प्रवृत्तियों को समेट नहीं सकता।

हम युग को छोटा करें या व्यक्ति-विशेष को छोटा करें? क्यों हम "द्विवेदी युग" को "भारतेन्दु-युग" का ही प्रसार नहीं मानें? सच तो यह है कि आधुनिक साहित्य-चेतना का जन्म भारतेन्दु के "कवि-वचन-सुधा" पत्र १८६७ से होता है और १८१७ तक के पचास वर्ष एक इकाई के रूप में ही कथित किये जा सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यापक पीठिका पर पेशवाई के अन्त १८१८ ई० से नये भारत का जन्म होता है और पहले पचास वर्ष अंग्रेजी आधिपत्य के प्रसार और विदेशी राजसत्ता के उन्नयन के वर्ष हैं। इसके बाद संस्कृति का नया अध्याय शुरू होता है। बङ्गाल में यह नव-जागरण की प्रबल चेतना के रूप में सामने आता है और माइकेल मधुसूदन दत्त की रचनाओं से रवीन्द्रनाथ की "बलाका" १९१८ तक उसका चरम विकास हमें मिलता है। हिन्दी को भारतेन्दु हरिश्चन्द्र १८५०—१८८४ के बाद कोई महत्वपूर्ण व्यक्तित्व नहीं मिल सका। उसकी शक्ति-सञ्चय की कहानी जन-शक्ति के अभ्युदय की कहानी है। वह धीरे-धीरे खुलती है और उसके विकास में सीमान्ती प्रदेशों की सांस्कृतिक और साहित्यिक गति-विधियों की यथेष्ट सामग्री मिलती है। आवश्यकता इस बात की है कि हम विरोध की अपेक्षा विकास के सूत्रों पर अधिक ध्यान दें। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हिन्दी साहित्य में जिन प्रवृत्तियों का जन्म हुआ वही बीसवीं शताब्दी के पहले दो दशकों में एक नए उत्कर्ष को प्राप्त होती हैं। ब्राह्म समाज, आर्यसमाज, नव्य-वेदांत श्री रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानन्द द्वारा प्रवर्तित नया भक्तिवाद और राष्ट्रीयता के रूप में हमें समाज-सुधार, धार्मिक चेतना और राष्ट्रधर्म के क्षेत्रों में तीन स्वर्ण-सूत्र मिलते हैं। आध्यात्मिक, सामाजिक और साहित्यिक संक्रान्तियों के भीतर से हमें नये भारत के जन्म की कहानी विकसित होती दिखलाई देती है। द्विवेदीजी इन सूत्रों को पकड़ कर चलते हैं परन्तु उनका क्षेत्र साहित्य तक ही सीमित है। वह हिन्दी साहित्य को बँगला और मराठी भाषाओं के साहित्यों के समक्ष देखना चाहते हैं। उनकी दृष्टि गद्य के परिमार्जन और लेखक-निर्माण पर है परन्तु पद्य के क्षेत्र में खड़ीबोली का पक्ष ग्रहण कर वह नई शक्तियों की पहचान को प्रामाणिकता भी देते हैं। वह निस्सन्देह हिन्दी प्रदेश के सामान्य बौद्धिक जन का प्रतिनिधित्व करते हैं और भाषा तथा साहित्य के क्षेत्रों में उनके नये प्रवर्त्तनों का मुख एतद्देशीय संस्कृति, राष्ट्रीयता तथा नैतिकता की ओर ही है। परन्तु ये तत्व ऐसे नहीं हैं जिन्हें हम उनकी सीमा मान लें। खड़ी बोली के गद्य को विचार और चिन्तन की गरिमा देकर और उसकी अभिव्यञ्जना को सरल और प्रामाणिक बना कर उन्होंने कम महत्व का काम नहीं किया। परन्तु आव-श्यकता यह है कि हम उसकी सीमाओं को ही नहीं देखें, युग की सम्भावनाओं को भी देखें।

१९१५ में सर जेम्स कजिन्स की एक पुस्तक "द रेनेसां ऑफ इन्डिया" प्रकाशित हुई थी और उसकी समीक्षा करते हुए योगी अरविन्द ने इसी नाम से एक लेखमाला 'आर्य' पत्रिका में प्रकाशित कराई थी। वास्तव में रेनेसां (नवजागरण) शब्द में द्विवेदी युग की केन्द्रीय चेतना आ जाती है। यह दूसरी बात है कि नवजागरण की गति और उत्कर्ष में यहाँ वह चैतन्य नहीं है जो बङ्गाल में है, परन्तु अभिव्यक्ति दुर्बल होने पर भी स्थिति में कोई अन्तर नहीं पड़ता। वास्तव में १८१८ से १९१८ तक के सौ वर्षों का अपना मौलिक इतिहास इस देश में रहेगा। ये सौ वर्ष संक्रान्ति के वर्ष हैं। इन्हीं वर्षों में अंग्रेज जाति और उसकी संस्कृति का आधिपत्य शिखर पर पहुँच कर उतार पर आता है। काव्य-क्षेत्र में छायावाद जिस भावोन्मुक्ति का सूचक है वह गांधी-युग (१९१८-१९३८) की राजनीति में जनान्दोलनों के रूप में ही प्रगट होती है। उसमें बन्धनों के प्रति उत्कट विद्रोह दिखाई देता है जिसका काव्य-प्रतीक निराला का मुक्त छन्द है। इस सौ वर्षों के काल-खण्ड के पूर्व छोर पर हम खड़े होते हैं तो हमें कुछ भी उत्साहजनक दिखलाई नहीं देता। पश्चिम का नया सांस्कृतिक प्रवाह मदिरा की नदी जैसा उमड़ता आ रहा है और भारतीय नवयुवक उस बाढ़ में बहते जाते हैं। कहीं भी सुरक्षा नहीं है। भारतवर्ष के अतीत गौरव की कोई भी सुनिश्चित चेतना हमारे मन में नहीं है, सब कहीं पराजय कुण्ठा और अक्ष-मता का राज्य है। धीरे-धीरे नशे का पहला दौर समाप्त होता है। शताब्दियों के काल विस्तार में फैली भारतीय संस्कृति धीरे-धीरे अपने ज्योति-पटल खोलती है। इतिहास-चेतना के स्वर्ण-सूत्रों को पकड़ कर हम भारतीय धर्म, दर्शन, साहित्य और कला के पृष्ठ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ पलटते जाते हैं और सौ वर्षों की साधना के बाद जब हम इस काल-खण्ड के उत्तर छोर पर पहुँचते हैं तो यूरोप का आतङ्क हमारी चेतना पर से उतर जाता है। हम स्वस्थ और आत्मस्थ हो जाते हैं। माइकेल मधुसूदनदत्त से महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर तक अर्द्ध-शताब्दी का नया बँगला-साहित्य कल्पना, सौन्दर्य-निष्ठा और भावुकता के नये मानदण्ड लेकर प्रकाशस्तम्भ सा खड़ा हो जाता है। शेक्सपियर, मिल्टन और वर्ड्सवर्थ ही नहीं, कालिदास, भवभूति और शूद्रक भी हमारी साहित्यिक चेतना में जागते हैं। कला के क्षेत्र में अजन्ता के भी चित्र हमारी नई प्रबुद्धता के प्रमाण बनते हैं और विष्णु दिगम्बर तथा भातखण्डे द्वारा सङ्गीत-शिक्षा का नया आयोजन आरम्भ होता है। भारतीय चेतना का यह अभिज्ञान कालिदास की शकुन्तला के अभिज्ञान से कम विस्मयजनक नहीं है और उसने हमारी नई मुग्ध दृष्टि को रहस्यमय बना दिया है। यह हमारी नई संस्कृति का पादपीठ है। अगले बीस वर्षों में हम अनुकर्ता नहीं, सर्जक हैं। राजनीति के क्षेत्र में हमने गांधीजी के नेतृत्व में अपने आत्म-विश्वास की अभिव्यक्ति के लिए सत्याग्रह के अस्त्र का प्रयोग किया है और साहित्य तथा कला में स्वच्छन्दतावाद, रोमाण्टिसिज्म, के आन्दोलन ने हमारी प्रबुद्ध सौन्दर्य-चेतना को मुक्ति का नया सन्देश दिया है। मनुष्य की मुक्ति की तरह हमने साहित्य की भी मुक्ति की कल्पना की है और उसे वेदान्त की अद्वैत निष्ठा देकर नये सिरे से आध्यात्मिकता से मण्डित किया है। संक्षेप में जिसे द्विवेदी-युग कहा गया है वह हमारी मध्यवर्गीय चेतना के पुनसंङ्गठन और नये संस्कार का युग है। नई भाषा खड़ीबोली के अपनाने के कारण इस युग के हिन्दी-साहित्य में अभिव्यक्ति की वह सघनता और साहित्यिकता नहीं है जो बँगला-साहित्य में है। परन्तु जातीय पुनरुत्थान की जैसी कर्मठ चेतना और अनाविल बौद्धिकता हिन्दी भाषा में आर्यसमाज के मञ्च पर भाषण, लेखन और पद्य में अभिव्यक्ति पा सकी है वह हिन्दी-क्षेत्र में अपनी शक्ति की सूचक है। आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के गद्य का सारा सङ्गठन और प्रेमचन्द के कथा-साहित्य का भावुकता से मुक्त सहज स्वरूप इस आन्दोलन का ही फल है। यह चीज हमें बँगला-साहित्य में भी नहीं मिलेगी : हिन्दी के आधुनिक साहित्य की मूल प्रवृत्ति का निर्माण बीसवीं शताब्दी के पहले दो दशकों में ही हुआ है। इन वर्षों में तुलसी के रामचरितमानस की कथा-वार्त्ता और साहित्य-विवेचन के मानदण्ड के रूप में मध्यदेश व्यापी लोकप्रियता प्राप्त हुई और 'गीताञ्जलि' १६१३ की नोबुल पुरस्कार प्राप्ति ने हमारा ध्यान कबीर जैसे सन्तों की ओर आकर्षित किया। रवीन्द्रनाथ द्वारा कबीर की सौ कविताओं के अनुवाद ने हमारी स्वनिष्ठा में आस्था की एक महत्वपूर्ण कड़ी जोड़ दी। आध्यात्मिक राष्ट्रीयता, वैष्णव धर्म की नई चेतना और गान्धीवादी नैतिकता से पुष्ट होकर ही हम काव्य और कला के क्षेत्र में नई उड़ानों के लिए तैयार हुए। गद्य और पद्य के क्षेत्रों में यह हमारी नई तैयारी इन वर्षों को ऐतिहासिक महत्ता प्रदान करती है।

आवश्यकता इस बात की है कि हम आचार्य द्विवेदी के कर्तृत्व और उनके द्वारा स्थापित प्रवृत्तियों को द्विवेदी युग की सीमाएँ नहीं बना लें, वरन् उनसे बाहर जा कर राजनीति, साहित्य और कला के क्षेत्रों में उस व्यापक निर्माण की ओर भी ध्यान दें जिसने गांधी युग (अथवा छायावाद युग) में हमें नई ऊँचाइयाँ दी हैं। निस्सन्देह युगपुरुष के रूप में हम आचार्य द्विवेदी की अभ्यर्थना करेंगे परन्तु उनकी सीमाएँ हमें युग की विराट सांस्कृतिक चेतना और नव जागरण की बहुस्तरीय, बहुउद्देशीय कर्मण्यता की ओर ले जायेगी। काव्य में खड़ी बोली के कवित्त-सवैयों की परम्परा में जो परिपुष्ट रसबोध था और ब्रजभाषा के काव्य में सत्यनारायण 'कविरत्न' और 'रत्नाकर' द्वारा जो नया भावोन्मेष आ रहा था वह हमारे काव्य-संस्कार का अभिन्न अङ्ग कहा जायेगा। छायावाद के कवियों ने इन दोनों स्रोतों से लाभ उठाया है। उनमें बहुत कुछ स्वदेशी है। बंगला और अंग्रेजी काव्य-साहित्य छायावाद के कवियों के उत्प्रेरक चाहे रहे हों, भाषा और कला की उनकी भूमिकाएँ पूर्ववर्ती काव्य-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विकास से ही जुड़ती हैं। हिन्दी प्रदेश के अपने सांस्कृतिक आन्दोलन (आर्यसमाज) के प्रति हम उतने जागरूक नहीं हैं जितने बंगाल के ब्रह्म समाज और नव्य वेदान्त के आन्दोलनों के प्रति। परन्तु १८७५ ई० से १९२५ ई० तक के पचास वर्ष एक प्रकार से आर्य-समाज के जन्म और विकास के ही वर्ष हैं। वहीं हिन्दी प्रदेश की कर्मण्यता का प्रतीक है। कर्म का कार्मुक उसी के हाथ में है। नये पाण्डित्य के प्रतिनिधि पण्डित रामावतार शर्मा और पण्डित चन्द्रधर शर्मा गुलेरी जैसे व्यक्तित्व उस युग के हिन्दी साहित्य के सुदृढ़ स्तम्भ हैं। गुलेरीजी की 'उसने कहा था' कहानी आज भी हिन्दी कहानी का मानदण्ड बनी हुई है। अनन्त सम्भावनाओं के बीज हमें जिस युग में मिलते हैं उसे अभिनन्दनीय ही कहा जा सकता है। परन्तु युग की इस सम्पूर्ण कर्मण्यता को पकड़ने के लिए हमें द्विवेदी जी के व्यक्तित्व और कृतित्व से बाहर निकलना होगा। उनके साहित्य में विचारक का व्यक्तित्व उतना नहीं है जितना प्रचारक का। उन्होंने भाषा और अभिव्यञ्जना को भीतर से नहीं खोला है, कल्पना और भावना का निर्बन्ध उड़ान के पंख नहीं दिये हैं। व्यक्तिप्रधान आत्मगत निबन्धों की परम्परा की हानि ही उनके द्वारा हुई है क्योंकि उनमें सूचना का सङ्कोच मिलता है और उनकी भाषा तथा शैली सम्बन्धी जागरूकता आत्मदुर्बलता भी बन जाती है जो साहित्य और कला को साहित्यिक अभियान की छूट नहीं दे पाती। इन सीमाओं के साथ ही हमें द्विवेदीजी के व्यक्तित्व और कृतित्व को स्वीकार करना होगा। "सरस्वती" की फायलों में जो कुछ है और उसके पीछे आचार्य द्विवेदी का जैसा घोर परिश्रम है वह उनके द्वारा संशोधित पाण्डुलिपियों से स्पष्ट है। परन्तु अप्रकाशित रचनाओं के बण्डल भी कुछ कह रहे हैं, यह भी हमें ध्यान में रखना है। उनमें आचार्य का दृष्टि-संकोच, रुचि-अनरुचि, अंतःविरोध तथा व्यक्ति-विरोध के भी प्रमाण मिलेंगे। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से आचार्य महावीर-प्रसाद द्विवेदी तक हिन्दी के गद्य-पद्य के विकास की एक अखण्ड परम्परा ही इस युग के साहित्यिक इतिहास के प्रति न्याय कर सकती है, अन्यथा हम या तो उसे ऐतिहासिक औपचारिकता देते रहेंगे अथवा उसे परवर्ती साहित्य की भूमिका मात्र मानकर छोटा करेंगे। उसके साहित्य का सर्वश्रेष्ठ हमारी अर्चना का विषय नहीं बनेगा।

मध्यदेश, हिन्दीप्रदेश, परम्पराओं के प्रति संरक्षणशील रहा है। बङ्गाल जैसे सीमान्ती प्रदेश हवा में उड़ सकते थे; अङ्गरेजी शासन की जड़ें वहीं जमी थीं और अङ्गरेजों के भारत-विजय के अभियान में बङ्गाल का काफी धन-जन लगा था। विद्रोह का केन्द्र हिन्दी-प्रदेश ही था। वहां अंग्रेज आधिपत्य तथा विदेशी संस्कृति के प्रति मोर्चा सबसे बड़ा रहा है। महामना पण्डित मदनमोहन मालवीय से लेकर जननायक जवाहरलाल नेहरू तक हिन्दी प्रदेश की राजनीतिक जागरूकता और राष्ट्रीयता प्लावित हुई है। हिन्दोस्तान की खोज की कहानी इसी प्रदेश के सर्वाधिक संवेदित व्यक्ति की जीवन-गाथा है। हिन्दी साहित्य के भीतर से जयशंकर और प्रेमचन्द अतीत और वर्तमान के सूत्र पकड़ कर भारतवर्ष की जिन प्रतिमाओं को गढ़ते हैं वे कम समर्थ नहीं हैं। नेहरू राजनीतिज्ञ होने के नाते हमारे भविष्य के निर्माता हैं तो ये महान कवि और कथाकार भी भविष्यद्रष्टा हैं। स्वयं नेहरू जैसा देदीप्यमान, उद्दण्ड और मेधावी व्यक्तित्व, काव्य के भीतर से, निराला को प्राप्त हुआ है। इन सब व्यक्तित्वों का पोषण द्विवेदी युग में ही हुआ और इनके साहित्य का अधिकांश उस युग की प्राणवत्ता का ही प्रमाण है। प्रश्न है कि क्या हम हिन्दी प्रदेश की पीठिका पर बीसवीं शताब्दी के इन प्राथमिक दो दशकों को वह महानता दे सकेंगे जो आधुनिक हिन्दी साहित्य के सम्यक् मूल्याङ्कन के लिए नितान्त वांछनीय है? क्या आचार्य द्विवेदी के प्रति हमारी अभ्यर्थना का अर्थ यही है कि हम उस युग की सारी साहित्यिक और सांस्कृतिक चेतना को 'सरस्वती' की फायलों में बाँध दें या यह कि हम उनके द्वारा प्रस्थापित नए प्रवर्तनों का समुचित मूल्याङ्कन करें और उन्हें नवोदित भारतीय साहित्यिक चेतना और नवजागरण के व्यापकतम जीवन-संदर्भ दें। मेरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार में अब इस दूसरी दिशा में हमें प्रयत्नशील होना है। व्यक्तित्वों के स्थान पर प्रवृत्तियों और लोक-मानस के आलोड़न-विलोड़न को आधार बना कर ही हम शेष अध्याय लिख सकेंगे। महापण्डित राहुल सांकृत्यायन की आत्मकथा में इस ओर एक प्रयत्न दिखलाई देता है। ऐसे अनेक प्रयत्न ही "द्विवेदी-युग" की भूमिका पर प्रतिष्ठित कर सकेंगे। उसे विराट् भारतीय जीवन और सांस्कृतिक नवजागरण से संबंधित करने के बाद ही अपने नए साहित्य की आधार-शिला को पुष्ट करना हमारे लिए सम्भव है। 'मिश्रबन्धु-विनोद' के द्वारा हिन्दी साहित्य को जो विराट व्यक्तित्व मिला और पण्डित पद्मसिंह शर्मा के द्वारा गद्य में पाण्डित्य-पूर्ण विवेचना के साथ नोकझोंक की जो सजीवता आई वह क्या कम महत्वपूर्ण है? उर्दू भाषा और साहित्य के नये-पुराने संस्कारों को साहित्य और कला में ढालने के प्रयत्नों का इतिहास हमने अभी कहाँ लिखा है? नये संस्कृति-संगम में विभिन्न देशों-कालों-साहित्यों-कलाओं का जो जल आकर मिला है, उसके सम्बन्ध में प्रबुद्धता क्या आज वांछनीय नहीं है? अर्द्ध सत्य असत्य से भी अधिक ग्लानिकर होता है क्योंकि उसमें चलता सिक्का बनने की क्षमता अधिक होती है, इस सत्य को हमें दीपदण्ड की तरह आगे रखना है। छायावाद के समीक्षकों ने द्विवेदी-युग की नीतिवादी और इतिवृत्तात्मक रचनाओं का युग कह कर उसे संकुचित किया है और हमारे मानस में उसका बिंब धुँधला हो गया है। विरोधात्मक नहीं, विकासात्मक बन कर ही हम निरन्तर अधिकाधिक पूर्णता प्राप्त करते हैं। द्विवेदी युग में हम आधुनिक चेतना के विकास के सूत्र खोजें और उसकी सांस्कृतिक प्रबुद्धता को नये सिरे से स्थापना करें, यह आज नितान्त आवश्यक है। तभी हम छायावाद के मूर्धन्य कवियों की आचार्य द्विवेदी के प्रति कृतज्ञता को समीक्षात्मक चरितार्थता दे सकेंगे। मध्यवर्गीय चेतना के नये विकास के जिस सोपान पर द्विवेदी-युग हमें मिला है, उसे प्रशस्त करना और उसकी पृष्ठभूमि में आचार्य द्विवेदी और उस युग के अन्य साहित्य-मनीषियों की साधना का अध्ययन ही हमें द्विवेदी-युग के नये मूल्याङ्कन की ओर बढ़ा सकेगा। यह हमारे आत्म-बोध का प्रश्न है। क्योंकि खड़ी बोली की साहित्यिक और सांस्कृतिक प्रकृति के निर्माण के उन प्रारम्भिक दिनों में ही उसकी जन्मपत्री लिखी गई है। आधुनिक-साहित्य की सामुद्रिकी के लिए जिस नई अन्तर्दृष्टि की आवश्यकता है वह हमें यहीं मिलेगी। १९१० ई० से हमें जिस तरुण पीढ़ी का योग मिलने लगता है उसकी उपेक्षा इस युग में भी नहीं हो सकेगी क्योंकि युग का सच्चा स्वरूप उन दो पीढ़ियों को लेकर ही बनता है जो एक-दूसरे का हाथ थामे चलती हैं। द्विवेदीजी की पीढ़ी ने मैथिलीशरण गुप्त और प्रेमचन्द को ही उँगली पकड़ कर आगे नहीं बढ़ाया, उसने 'प्रसाद', 'निराला', पंत और 'एक भारतीय आत्मा' (माखनलाल चतुर्वेदी) के रूप में चार नये युगप्रवर्तक कवि भी हमें दिये। इन दो पीढ़ियों के आदान-प्रदान, संघात और नवप्रवर्तन में ही उस युग के साहित्य की कहानी लिखी गई है। उस ज्योतिपत्र को अभी हमें पढ़ना है।

—सागर विश्वविद्यालय सागर (म० प्र०)

हिन्दी-उपन्यास : सिद्धान्त और विवेचन

हिन्दी की उपन्यास विधा पर अनेक विद्वानों के लेखों का इसमें संग्रह किया गया है। सम्पादन इस ढङ्ग से हुआ है कि उपन्यास सम्बन्धी कोई बात छूटने नहीं पाई है। सैद्धान्तिक लेखों में विभिन्न प्रकार के उपन्यासों पर अलग-अलग विस्तृत विवेचन किया गया है। उपन्यास विधा पर ऐसी मूल्यवान पुस्तक दूसरी नहीं मिलेगी।

मूल्य ४.५० रुपये

अग्रिम आर्डर प्राप्त होने पर पोस्टेज फ्री

पता—**साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युग प्रवर्त्तक द्विवेदी

डा० सत्येन्द्र

स्वर्गीय पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी का परिचय 'सरस्वती' के आरम्भ से ही हिन्दी को मिला। १९०३ में तो वे प्रत्यक्ष 'सरस्वती' के सम्पादक हो ही गये। हिन्दी में उनके आने के समय से ही एक नया परिवर्त्तन दिखाई पड़ने लगा। सन् १९०३ के प्रथम अङ्क में सरस्वती के नियमों में ७ वाँ नियम है—सरस्वती-पत्रिका हिन्दी-साहित्य में एक नई वस्तु है। इसे उड़ा लेने वाले सब जगह उपस्थित रहते हैं—और यह बात कोई गलत नहीं थी। सरस्वती का आकार-प्रकार सज-धज सभी हिन्दी के लिए नया था। इसके साथ ही उसमें जो शक्ति और स्फूर्ति काम कर रही थी वह भी नयी थी।

हमें विदित होता है कि 'भारत-मित्र' 'हिन्दी-बंगवासी', 'हितवार्त्ता', 'श्री वेंकटेश्वर समाचार', 'बिहार-बन्धु', 'भारत-जीवन' साप्ताहिक पत्र थे, 'हिन्दोस्तान' एक दैनिक पत्र था, जो उस समय प्रकाशित होते थे। 'छत्तीसगढ़ मित्र', 'सुदर्शन', 'ब्राह्मण' तथा 'हिन्दी-प्रदीप' उस काल के मासिक-पत्र थे। समस्या पूर्तियों के लिए उस काल में 'रसिक-वाटिका थी'। इन सब पत्रों में भारतेन्दु शैली की प्रधानता थी। भाषा और विषय दोनों ही दृष्टियों से इसमें एक स्वच्छन्दता थी। 'साहित्य' के मूल संस्कार का इनमें प्रायः अभाव रहता था। लेखों में किसी रुचि विशेष का परिचय नहीं मिलता था। शैलियों में व्यक्तित्व का अभाव था। पत्र में वस्तु-स्थापन तथा क्रम-आयोजन में भी कोई सौन्दर्य-कल्पना नहीं थी। व्यवस्था में सुरुचि देखने को नहीं मिलती। विषय सीमित थे। 'हिन्दी-प्रदीप' भारतेन्दु-युग का एक प्रमुख साहित्यिक पत्र था। उसके पहली सितम्बर १८७८ के द्वितीय वर्ष के प्रथम अङ्क में विषय इस प्रकार थे—मुख पृष्ठ हर—एक बधाई का 'मलार' प्रेस ऐक्ट के विरोध में 'हम चुप न रहें—पृष्ठ २; 'पुराने और अब के हाकिम'—पृष्ठ ३; 'पश्चिमोत्तर के शिक्षा-विभाग में अन्धा-धुन्ध'—पृष्ठ ५; मलार-पृष्ठ ६; बंगाल और यहाँ के सुशिक्षित, प्रेरित। सच मत बोलो-पृष्ठ ६; 'हम लोगों में दान का क्रम'—पृष्ठ १२; सभ्यता का एक नमूना—पृष्ठ १३; चतुर्थ अङ्क प्रथम गर्भाङ्क (किसी नाटक का जिसका नाम नहीं दिया)—पृष्ठ १४, संक्षिप्त समाचार स्थानिक'—पृष्ठ १५; साधारण समाचार पृष्ठ १६; यह लेखों की सूची है। इन सब में संपादक का उद्देश्य सामयिक तथा व्यावहारिक आवश्यकताओं तथा अपेक्षाओं पर विचार करना रहा है। जहाँ परामर्श है वहाँ आदर्श के लिए पुराने तथा अप्राण उदाहरणों का सहारा लिया गया है। विविध ज्ञानवर्द्धक नये विचारपूर्ण विषयों का प्रायः अभाव है। जो कुछ हैं उनमें संस्कृति और परिमार्जन की कोई एक सूत्र परम्परा नहीं मिलती। प्रायः सारा पत्र सम्पादक के निजी उद्योग और अध्यवसाय का परिणाम है। जो नवोन्मेष तथा संस्कृति शून्यता इन पत्रों में दिखाई पड़ती है, वह भारतेन्दु युग का एक भारी अभाव है। आगे बढ़ने और बढ़ाने का प्रोत्साहन तो है, विविधता की ओर प्रयास भी है—अपनी बात कहने की लालसा भी है—इस सब के साथ एक कुहल की भावना भी है। भारतेन्दु युग में साहित्य-कर्म अभी मध्यकालीन मानसिक-विलास की छाया से किञ्चित आच्छन्न था। वेदना की झलक जहाँ भी थोड़ी-बहुत प्रकट होती है, उसमें शाब्दिक अभिव्यक्ति है—कोई हार्दिक अभिनिवेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं—'दुष्काल' पर एक 'सच्चा कहने वाला पाठक' दिसम्बर १८७८ के 'हिन्दी-प्रदीप' में लिखता है :—

"........मैंने निज नेत्रों से देखा है कि मथुरा में १५ के लगभग दुर्भिक्ष पीड़ित कंगले रो-रो कर और पेट देखा-देखा यही कहते थे कि आज हमें तीन दिन बिना अन्न के हो गया। उस समय मुझे रोमाञ्च हो आया और अपने जी में मैंने कहा कि शिमले और नैनीताल में फेमिन कमीशन ने बैठकर यही दुष्काल का प्रबन्ध किया, परन्तु इसमें हमारी सरकार का क्या अपराध है, यह हमीं लोगों का अभाग है, जो ऐसे प्रबन्धकर्त्ता हमें मिले।"

इसके अन्तर में हृदयाभिनिवेश नहीं, दुःख अवश्य है। भाषा में व्याकरण की उपेक्षा के साथ-साथ इसमें अनगढ़ शब्दों तथा ग्राम्य-प्रयोगों का बाहुल्य है। सम्पादकों ने स्वयं ऐसी भाषा का प्रयोग किया है, जिससे शब्द-चयन में कोई उन्नत-उत्थान नहीं मिलता। शब्दों में संयम और मर्यादा का अभाव है। ऐसे प्रयोगों के प्राचुर्य से भाषा में चुहल आ जाती है, और भावों के साथ पूर्ण साम्य न होने के कारण गम्भीरता की सार्थक अभिव्यञ्जना नहीं हो पाती। एक उदाहरण से इसे भी समझा जा सकता है।

"परस्पर के विरोध और फूटन का यही बाइस है, जो यहाँ सैकड़ों भिन्न-भिन्न मत प्रचलित हैं आपस ही में लत्तियाँ चल रही हैं तो किसी तीसरे के मुकाबिले में हम तुम एक हो सकेंगे।" इस एक वाक्य में ही यह बात देखी जा सकती है कि लेखक गम्भीर बात कहना चाहता है किन्तु 'विरोध' और 'फूटन' 'प्रचलित' और 'लत्तियाँ' जैसे विरोधी स्वभाव वाले शब्दों को जोड़ कर रख दिया है—इस कारण भाषा में गम्भीर सार्थकता नहीं आ पायी।

द्विवेदी-युग सरस्वती के साथ आरम्भ हुआ और उसने हिन्दी में एक वास्तविक क्रान्ति उपस्थित कर दी। प्रचारात्मकता भारतेन्दु-युग में बहुत थी—वह युग था प्रचार का—किन्तु प्रचारात्मकता द्विवेदी-युग में भी रही। एक में भाषा को ही प्रिय बनाने की बात थी, उसके अस्तित्व की उपयोगिता सिद्ध करने की बात थी, उसके अस्तित्व की उपयोगिता सिद्ध करने की बात थी, दूसरे के विषय और संपत्ति की वृद्धि और संग्रह की प्रेरणा का प्रचार था। द्विवेदी-युग की प्रधान चेष्टा, संस्कार तथा संग्रह था। भाषा का संस्कार, रुचि का परिमार्जन तथा विविध विषय से हिन्दी के भण्डार को भरना।

द्विवेदीजी के सात्विक स्पर्श से भाषा का रूप बदलने लगा। शब्द-चयन के लिए रुचि बन गयी और उनके प्रयोगों में एक चेतना का प्रवेश हुआ—ऐसे महाविरे—'घूरे के लत्ता बिनें, कनातन के डौल बांधे' अथवा ऐसे शब्द कैसे गंवुच्चा और फुटहा—अब काम में नहीं लाये जा सकते थे। काव्यों में घनिष्ठता आई। लम्बे-लम्बे, शिथिल शब्दों से परिपूर्ण, कुछ हल्कापन लिए वाक्य लुप्त होने लगे। छोटे छोटे वाक्य आये।

भाषा की शैली अथवा उसका विन्यास भावों की परम्परा पर बड़ा प्रभाव डालता है। वाक्यों की घनिष्ठता से भावों में घनिष्ठता आने लगी। व्याकरण भाषा-सौष्ठव पर विचार होने लगा। क्या उचित है क्या उचित नहीं, यह विवेचन जड़ पकड़ उठा था। द्विवेदीजी ने 'सरस्वती' के सम्पादक की हैसियत से लेखकों के अनेकों लेखों को काटा-छाँटा था, उनकी भाषा व्यवस्थित की थी और उसी समय उन्होंने भी इस बात का अनुभव किया कि भाषा में एक अस्थिरता है। सरस्वती के छटवें भाग के ग्यारहवें अङ्क में उन्होंने 'भाषा और व्याकरण' शीर्षक विचार पूर्ण लेख लिखा। इस लेख से उस काल के सम्पादकों और लेखकों को अपनी भाषा की व्यवस्था और सुकरता पर विचार करना पड़ा। श्रीयुत बालमुकुन्द गुप्त ने 'आत्माराम' नाम से एक लेखमाला द्विवेदीजी का मजाक बनाते हुए निकाली। द्विवेदीजी के 'अनस्थिरता' शब्द प्रयोग पर बहुत हँसी उड़ाई गयी। इस प्रकार भाषा और शब्द तथा व्याकरण पर कुछ काल तक गम्भीर भी और विनोदात्मक भी वाद-विवाद होता रहा। इस विवाद का परिणाम यही हुआ कि लेखकों में भाषा-चैतन्य उत्पन्न हो गया। द्विवेदीजी से पहले जो लापर-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाही भाषा और शब्दों के सम्बन्ध में थी, वह धीरे-धीरे दूर होती गयी। द्विवेदीजी द्वारा उस भाषा में सुकरता लायी गयी, सुरुचि का उन्नयन हुआ और अब भाषा की एक विशेष संस्कृति बन गयी।

भाषा के संस्कार के साथ-साथ विषय-संग्रह की ओर द्विवेदीजी का विशेष ध्यान गया। १९०३ ई० में सरस्वती के अन्त में प्रति मास वे एक व्यङ्ग चित्र दिया करते थे। उसका नाम उन्होंने 'साहित्य-समाचार' रखा था। उन्हीं में से एक चित्र है 'आदित्य-सभा' इस चित्र में परिचय देते हुए नीचे इस प्रकार लिखा है—

'१–इतिहास (खाली)। २–जीवन-चरित (खाली) ३–पर्य्यटन। ४–समालोचना। ५–उपन्यास। ६–व्या (धि) करण। ७–काव्य। ८–नाटक। ९–कोश (खाली)। सरस्वती सभा की ओर देख-देख रोरही है।'

इस उल्लेख से यह विदित हुआ कि द्विवेदीजी ने हिन्दी का विषयवार निरीक्षण किया। उन्होंने इस बात का अनुभव किया कि साहित्य की कुछ शाखाएँ तो बिलकुल 'खाली' हैं। जो सूची ऊपर दी गयी है, वह किसी रूप में भी पूर्ण नहीं, किन्तु इससे एक बात यहीं बहुत स्पष्ट प्रतीत होती है कि वे हिन्दी-साहित्य की अवस्था से पूर्ण अवगत होकर उसे सम्पन्न करना चाहते थे। यही कारण था कि वे एक विशेष कोटि के लेख चाहते थे। जिस लेख में वे अपने मन्तव्य का अभाव देखते थे, उसे लौटा देते थे। अपने पहले वर्ष के सरस्वती के सम्पादन का सिंहावलोकन करते हुए द्विवेदीजी ने लिखा था—

"जो लेख हमने लौटाये वे समझ बूझ कर लौटाये, किसी और कारण से नहीं। अतएव यदि इसमें किसी को बुरा लगा, तो हमको खेद है। यदि हमारी बुद्धि के अनुसार अच्छे लेख हमारे पास आवें, तो हम उन्हें क्यों लौटावें? उनको हम सादर स्वीकार करें, भेजने वालों को धन्यवाद भी दें, और उसके साथ ही यदि हो सके तो, कुछ पुरस्कार भी दें।"

इससे स्पष्ट है कि बहुत से लेख आते थे और वे उनके मन्तव्यानुकूल न होते थे। इसका फल यह होता था कि उन्हें स्वयं बहुत परिश्रम करना पड़ता था। १९०३ की सरस्वती में वर्ष भर में १०९ शीर्षक प्रकाशित हुए थे। इनमें से ७० स्वयं सम्पादक के लिखे हुए थे। इस उद्योग का अर्थ यह नहीं था कि द्विवेदीजी को स्वयं लिखने का शौक था, अर्थ यह था कि वे अपने मन का-सा लेखक नहीं पाते थे। जैसे-जैसे उन्हें सरस्वती की कोटि के लेखक मिलते गये, उनकी संख्या बढ़ती गयी। १९०३ के प्रथम अङ्क में ११ शीर्षक हैं, और केवल एक लेख पं० गिरिजादत्त वाजपेयी का है, शेष सब सम्पादक के हैं। दूसरे अङ्क में ऐसे अन्य लेखक ३ हैं, सातवें में चार हैं और बारहवें में सात हैं। इन संख्याओं से यह निर्विवाद आभास मिलता है कि सम्पादक बड़े परिश्रम से अपनी कोटि बना रहा है, और हमें यह भी अनुभव होता है कि उसमें ठोसता आरही है। सम्पादक के लिखे लेखों में हमें विविधता का प्रेम दिखाई पड़ता है। कोई जीवन-चरित्र, कोई वैज्ञानिक, कोई साहित्य-सम्बन्धी, कोई परिचय, कोई आलोचना, कोई भौगोलिक, कोई ऐतिहासिक, कोई विनोद और आख्यायिका। एक नहीं अनेकों हिन्दी के अज्ञात विषय सरस्वती में सम्पादक की लेखनी से प्रकाशित हुए। इन सब में विविधता के साथ अध्ययन की छाप भी थी। सम्पादक के ये लेख उदाहरण बने और इन्होंने लोगों को विविध अध्ययन की स्फूर्ति प्रदान की। उस अध्ययन की दिशा भी सम्पादक ने निर्धारित की। बहुत कुछ सामग्री अँग्रेजी और बङ्गाली से ली गयी थी। लेखक होने की अभिलाषा रखने वाले व्यक्ति इन भाषाओं से स्फूर्ति पाने लगे। नया दृष्टिकोण, नये विचार ऐसे वाह्य क्षेत्रों से हिन्दी में आने लगे। द्विवेदीजी ने ऐसे अध्ययनशील तथा विद्वानों को बार-बार हिन्दी में लिखने के लिए प्रोत्साहित किया। उनकी प्रेरणा से अनेकों बी० ए०, एम० ए० तथा अन्य अनेक ऊँची योग्यता वाले व्यक्ति हिन्दी क्षेत्र में आये। काव्य, नाटक, इतिहास, आलोचना, उपन्यास, कहानी, गद्य-काव्य सभी में नवोन्मेष आ गया।

काव्य में मैथिलीशरण गुप्त द्विवेदी-युग की मौलिक भावना का प्रतिनिधित्व करते हैं। प्राचीनता से प्रेम,

(शेष पृष्ठ २८ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युगपुरुष द्विवेदीजी और द्विवेदी-युग

डा० विश्वम्भरनाथ उपाध्याय

कुछ व्यक्ति यह समझते हैं कि साहित्य कतिपय विशिष्ट व्यक्तियों की विशिष्ट चेतना और शैली का वरदान है। यदि किसी प्रवृत्ति के कार्य-कारण की शोध न की जाए और केवल प्रतीति पर ही ध्यान दिया जाये तो यह बात सही प्रतीत होती है। अन्ततः हिन्दी उसके लेखकों द्वारा ही विकसित और संवर्धित हुई है किन्तु विज्ञान ने हमारी व्यक्तिवादी धारणाओं के आगे प्रश्न चिह्न लगा दिया है। जब हम किसी विशिष्ट व्यक्ति की चेतना का विश्लेषण करने चलते हैं तो उसकी विशिष्टता या अद्वितीयता के अन्तर्गत अनेक ऐसे तत्व मिलते हैं, जो उस व्यक्ति की उस अद्वितीय चेतना के स्वरूपनिर्माण में अनिवार्य रूप से सहायक तत्त्वों के रूप में सम्मुख आने लगते हैं। लेखन एक बहुत ही संकुल क्रिया है जिन्हें लेखक "अनायास प्राप्त" या "स्वयंप्रकाश्यज्ञान से उद्भूत" समझ बैठता है और बार-बार विचार करने पर भी वह यह नहीं समझ पाता कि उसे अमुक "धारणा" या बिम्ब या "सत्य" कैसे प्राप्त हुआ। वे धारणाएँ; विम्ब और विचार आदि उस लेखक के सामाजिक पारिवारिक जीवन के सन्दर्भ से उत्पन्न होते हैं। शून्य में भ्रमणशील कीटाणु कवि नहीं हो सकते। ठोस यथार्थ जीवन से क्षोभ का जन्म होता है जो एक स्नायुविक प्रक्रिया है। ये 'क्षोभ' सुखकर और दुःखद दोनों प्रकार के हो सकते हैं। इन तनावों से मुक्ति का उपाय, एक स्नायुविक प्रक्रिया के रूपमें ही हमारी चेतना में उदित होता है, भले ही इसका स्पष्ट विश्लेषण सम्भव न हो। इन 'दबावों' और 'तनावों' को समझे विना उनसे उत्पन्न उपाय रूप में प्राप्त 'आविष्कार' और 'सत्य' समझे ही नहीं जा सकते।

इन 'दबावों' और 'तनावों' के लिए मनुष्य का आर्थिक और सामाजिक जीवन उत्तरदायी होता है। इनमें वांछित परिवर्त्तन के लिए मनुष्य साधनों की खोज करता है और साधनों के अनुसार उनसे प्राप्त 'समाधानों' में अन्तर आजाने से युगपरिवर्त्तन होता है। इस नए युग में पुनः नए ढङ्ग के आवेशों और दबावों का जन्म होता है, बहुत कुछ 'तनाव' पुराने ही चले आते हैं। कार्य-कारण पर विचार न करने वाला व्यक्ति समझता है कि इस संकुल परिस्थिति का स्रष्टा कोई दैवी शक्ति है अथवा यह कि इसके आगे हम विवश हैं अथवा यह कि इसमें 'असाधारण प्रतिभा' या 'अवतार' ही परिवर्त्तन कर सकता है किन्तु इन 'दबावों' का एक आवश्यक परिणाम यह होता है कि मनुष्य की सामूहिक चेतना पर भी इनका सामूहिक प्रभाव पड़ता है और अनिवार्य रूप से कुछ या अधिक ऐसे व्यक्ति उत्पन्न हो जाते हैं जिनके पथप्रदर्शन में मनुष्य समाज अपने ऊपर पड़ने वाले बाह्य-परिस्थितिजन्य इन दवावों के विरुद्ध सङ्घर्ष करते हैं। महावीरप्रसाद द्विवेदी ऐसे ही 'युगपुरुष' थे, जिन्हें उस युग के स्नायुमण्डल पर पड़ने वाले बाह्य और आन्तरिक परिस्थिति भार ने उत्पन्न किया था, "यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत" की मनोवैज्ञानिक व्याख्या यही है।

द्विवेदीजी बीसवीं शताब्दी के प्रथम बीस पचीस वर्षों की साहित्यिक चेतना के नेता रहे। 'सरस्वती' के सम्पादक होने के पूर्व (सन् १९०३ ई०) सन् १८८५ में भारतेन्दुजी अस्त हो चुके थे। भारतेन्दुयुग जागरण-युग था, जागरण इसलिए आवश्यक होगया था कि विदेशी साम्राज्यवाद इस देश के व्यवस्थित शोषण के द्वारा इग्लैण्ड में पूँजीवाद का विकास कर रहा था। इस 'दबाब' को देश संवेदनशील मस्तिष्क महसूस कर रहे थे अतः रीतिकाल के विरुद्ध नए प्रकार के साहित्य का जन्म हो रहा था। साधन क्या था? प्रेस और साहित्य! अतः भारतेन्दुयुग का प्रायः प्रत्येक लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्रकार भी था और लेखक भी। १८६६ ई० में स्वेज नहर खुल गई थी, देशी उद्योग-धन्धों का सङ्कोचन और कृषि पर भार, यह मुख्य प्रवृत्ति थी। १८६८–६६ तथा १८७७ ई० के अकालों २० लाख से अधिक व्यक्तियों की मृत्यु! सन् १८६४–१६०० ई० के बीच उत्तरभारत में पुनः अकाल। दूसरी ओर ईसाई मत का प्रचार ब्रिटिशसाम्राज्यशाही के एक आवश्यक अङ्ग के रूप में होरहा था। १८०२ ई० में न्यू टेस्टामेंट का हिन्दी में अनुवाद होचुका था। १८०६ से १८२६ ई० के मध्य हिन्दी की मुख्य-मुख्य उप भाषाओं में ईसाईमत के ग्रन्थ प्रकाशित होरहे थे। हिन्दी प्रदेश के लिए यह एक "सांस्कृतिक सङ्कट" के रूप में प्रस्तुत हुआ, इस 'तनाव' का कारण अँग्रेजी साम्राज्यवाद था, अतः कलावादियों की तरह द्विवेदी युग का लेखक इसकी उपेक्षा कर ही नहीं सकता था। १८५८ ई० का ब्रह्म-समाज, १८७५ ई० का आर्यसमाज तथा रामकृष्ण-मिशन, हिन्दू धर्म महा मण्डल, गुरुकुल, डी० ए० वी० कालेज, विधवाश्रम, अनाथालय, गो रक्षिणी सभाओं आदि का आयोजन उक्त 'दवाव' के विरुद्ध स्वाभाविक प्रतिक्रिया थीं, हिन्दी में जो शुरू से ही एक पुनरुत्थान-वादी प्रवृत्ति मिलती है, उसका श्रेय बहुत कुछ साम्रज्यवादियों की धार्मिक अन्धता को है।

अकाल, टैक्स, ईसाईमत का चतुर प्रचार, भारतीय आशा-आकांक्षाओं का दमन, साम्प्रदायिक तत्वों को सरकार द्वारा प्रोत्साहन, सांस्कृतिक सङ्कट और हीनता का भाव—इस ठोस यथार्थ का अवश्यम्भावी परिणाम यही होता कि राष्ट्रीय चेतना एक झटके के साथ पुरानी चेतना के साथ सम्बन्ध विच्छेद कर लेती—भारतेन्दु युग में गद्य के क्षेत्र में यह कार्य प्रारम्भ हो चुका था। गद्य जागरण का नया माध्यम बन चुका था, द्विवेदीजी ने इस 'जागरण माध्यम' को समर्थ और 'शुद्ध' करने का बीड़ा उठाया। काव्य के क्षेत्र में भारतेन्दु युग का माध्यम ब्रजभाषा ही रही, द्विवेदीजी ने दृढ़ता से खड़ी-बोली की शक्ति पहचान कर उसे इस जागरण युग का माध्यम बनाया। कोई राष्ट्र तभी जगता है जब उसके कथन, विश्लेषण, व्याख्या और गायन की भाषा एक हो। भारतेन्दुयुग में काव्य की भाषा ब्रजभाषा और जागरण की भाषा खड़ी बोली थी। इस अन्त-विरोध को समाप्त करना था, एक 'छलांग' की आव-श्यकता थी और द्विवेदीजी ने 'लीप' के साथ यह कार्य पूरा किया। उन्होंने मैथिलीशरण गुप्त, रामचरित उपाध्याय और लोचनप्रसाद पाण्डेय—ये तीन उच्चकोटि के कवि दिए। उनके लौह अनुशासन का प्रभाव हरि-औधजी पर भी पड़ा। कभी-कभी उनके प्रभुत्व और तानाशाही को देख कर आश्चर्य होता है। आखिर हिन्दी जगत् ने एक पत्रिका के सम्पादक को इतना महत्त्व क्यों दिया?

आज किसी भी प्रबल पत्रिका का सम्पादक वह गौरव प्राप्त नहीं कर सकता जो द्विवेदीजी को प्राप्त था। कारण यह था कि वह राष्ट्र का प्रथम जागरण था, शताब्दियों से सोए देश की प्रथम अंगड़ाई! हिन्दी का आन्दोलन राष्ट्रीय आन्दोलन का सर्वस्व था; ऐसी स्थिति में किसी एक ऐसे व्यक्ति को नेतृत्व मिलना स्वाभाविक और सहज था जो राष्ट्रीय मानस पर पड़ने वाले 'दबावों' से पीड़ित होकर भी उनका स्वरूप समझ सके और उनसे मुक्ति प्राप्ति के लिए संघर्ष कर सके। आज का हिन्दी साहित्य अनेक नए पुराने सिद्धान्तों, वर्गों और चेतनाओं का एक संघर्षपुञ्ज बन गया है अतः सारे साहित्य के एक नेता के स्थान पर 'ग्रुपलीडर' अधिक सामने आते हैं। तब राजनैतिक संघर्ष सीधा और स्पष्ट था, अब वह सैद्धान्तिक और सौन्दर्यबोध के स्तर पर चल रहा है। इतने सूक्ष्म संघर्ष के समय एक नेता को स्वीकृति न मिलना स्वाभाविक है, जितने अधिक सिद्धान्त, उतने अधिक नेता! द्विवेदी युग को यह सुविधा थी कि उस युग में समस्याएँ थीं, सिद्धान्त अधिक न थे, मिलनबिन्दु अधिक थे; अतः इन मिलनबिन्दुओं की संख्या द्विवेदीजी में अधिक होने के कारण उन्हें नेतृत्व प्राप्त हो गया। द्विवेदीजी सरस्वती के सम्पादक होने के कारण नेता नहीं बने। वह इसलिए नेता बने क्योंकि भारतीय चेतना पर होने वाले आघातों की प्रतिध्वनि वह अधिक स्पष्टता और सहानुभूति के साथ सुन सके थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत से लेखक ऐसे होते हैं जो अपनी संवेदना को ही महत्व देते हैं। वे कार्यकारण विधि से न सोचकर केवल अपने ऊपर पड़ने वाले प्रभावों को ही वाणी देते हैं और प्रभाव के स्वरूप को परिवर्तित करने की बाह्य विधियों को मात्र प्रचार समझते हैं। ऐसे लेखकों को उक्त तनावों और दबावों का पारद मानना चाहिए। पारा यह नहीं जानता कि गर्मी क्यों पड़ती है। वह कब अधिक और कब कम की जा सकती है, इससे भी उसे सरोकार नहीं। यह काम रसायनशास्त्रियों, भूगोल-वेत्ताओं और समाज के अन्य हकीमों का है। वे अन-जाने ही समाज की अन्तश्चेतना के दिग्दर्शक होते हैं। समाज के हकीम इनके लेखन को रोगनिदान करने के काम में ला सकते हैं। इसकी भी ये पारद लेखक चिन्ता नहीं करते। वे तो सारे दबाव को व्यक्तिगत नियति के रूप में लेते हैं। स्पष्टतः ऐसे लेखक द्विवेदी को यह गौरव देने को प्रस्तुत नहीं हैं जो उन्हें हिन्दी में प्राप्त हुआ है। इन पारद-लेखकों के अनुसार द्विवेदी जी एक पत्रकार थे जिन्होंने भाषा की कुछ गलतियाँ दूर कीं, कुछ नए विषय सुझाए। वे यह भी मान लेते हैं कि हिन्दी का हरएक हिमायती अँगरेजी साम्राज्य-वाद के विरोध में पड़ता है अतः आदरणीय है किन्तु वे यह मानने को प्रस्तुत नहीं हैं कि द्विवेदीजी साहित्य के कोमलतम रूप काव्य को सही दिशा दे सके। द्विवेदी जी ने उनके अनुसार साहित्य में इतिवृत्तात्मक पद्यों का ढेर लगवा दिया। श्रीधर पाठक के एकान्तवासी योगी के स्वच्छन्दतावाद को आघात पहुँचा कर संस्कृत-मय भाषा-छन्दों के आधार पर हिन्दी को पण्डितों की भाषा बना दिया और इस प्रकार हिन्दी जनभाषा के संस्पर्शों से कटकर केवल विश्वविद्यालयों के प्राध्यापकों की भाषा रह गई। कथा, नाटक, रेखाचित्र, संस्मरण और ललित निबन्धों को छोड़कर काव्य और आलो-चना की भाषा द्विवेदीजी की कृपा के कारण पण्डिताऊ हो गई। यह स्मरणीय है कि रघुबरसहाय 'फिराक' जैसे उर्दू के लेखक भी इन पारद-लेखकों से इस बिन्दु पर सहमत हैं कि द्विवेदीजी ने ही खड़ीबोली का रूप बदल कर उसे क्लिष्ट बनाया और द्विवेदीजी के कारण हिन्दी में हिन्दू-पुनरुत्थानवादी प्रवृत्तियों को बल मिला।

किन्तु यह इतिहास को मनमाने ढङ्ग से देखना है। भारतीय नव-जागरण में अनेक प्रकार की प्रतिक्रियाएँ दिखाई पड़ती हैं। हिन्दू-पुनरुत्थानवाद भी उसका एक अङ्ग है जो साम्राज्यवादियों के कारण उत्पन्न हुआ, कुछ इसलिए भी कि हीनभाव से पीड़ित जाति प्राचीन गौरव का अनुसन्धान करती ही है और प्राचीन गौरव में अबौद्धिक अंश कम नहीं होता। किन्तु द्विवेदीजी का मुख्य कार्य था—मध्यकालीन दृष्टिकोण के विरुद्ध विद्रोह। जब द्विवेदीजी नए छन्दों, नए काव्य-विषयों, प्रकृति के आलम्बनगत चित्रण आदि पर बल देते हैं। तब वे वस्तुतः मध्यकालीन और मुख्यतः रीतिकालीन संवेदना और सिद्धान्तों के विरुद्ध सङ्घर्ष करते दिखाई पड़ते हैं। यह आकस्मिक नहीं है कि फिराक जैसे लेखक नारी, प्रकृति आदि के सम्बन्ध में अब तक रीति-कालीन दृष्टि अपनाए हुए हैं जबकि द्विवेदीजी का मुख्य कार्य था, मध्यकालीन मानवीय सम्बन्धों में क्रान्ति उपस्थित करना। स्वभावतः इसके लिए उन्होंने संस्कृत काव्य के श्रेष्ठ अंशों को हमारे सम्मुख प्रस्तुत किया। सामन्तकालीन दृष्टिकोण नारी को 'भोग' का साधन समझता है और दलित वर्ग को शोषण का साधन। महावीरप्रसाद द्विवेदी ने इन दोनों बिन्दुओं पर नूतन बोध का वरदान दिया।

भारतभारती, प्रियप्रवास तथा अन्य कथात्मक काव्य द्विवेदीयुग की चिन्तनधारा को स्पष्ट करते हैं। प्रियप्रवास की 'राधा' रीतिकालीन राधा के विरुद्ध एक सर्वथा नवीन मानव मूल्यों को प्रस्तुत करने वाली नायिका है। 'कृष्ण' थोड़े से अलौकिक लगने पर भी अधिक बुद्धिसङ्गत और परोपकारी जननायक हैं। साकेत की 'उर्मिला' और यशोधरा की 'गोपा' वस्तुतः द्विवेदीजी की काव्यचेतना की ही प्रतिमूर्तियाँ हैं। रीति-कालीन 'भोग्या' नारी की मूर्ति से यह नवीन मूर्ति कितनी अधिक प्रेरणाप्रद, भव्य और सुन्दर है! इनमें सार्वभौमिकता है और ऐसे नारी पात्र आधुनिक युग के बोध के अधिक निकट हैं। इसी प्रकार देश की गरीबी पर द्विवेदी युग में सतही तौर पर ही सही परन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार्मिक चित्रण मिलते हैं। प्रकृति के रूपों के साथ द्विवेदीयुगीन कवि की प्रीति रीतिकालीन कवि की प्रीति के विपरीत अधिक मानवीय है। यह स्मरणीय है कि प्रकृति का आलम्बनगत चित्रण द्विवेदीजी के ही प्रयत्न का फल था, अतः प्रेम के क्षेत्र में कठोर नैतिकतावाद से स्वच्छन्दतावाद की भले ही थोड़ी हानि हुई हो पर रीतिकालीन उच्छृङ्खलतावाद के विरुद्ध इस नैतिक कठोरतावाद से ही मुक्ति प्राप्त हो सकती थी। किसी व्यापक रोग को दूर करने के लिए कठोर औषधि की आवश्यकता होती है, द्विवेदीजी रीतिकालीन रोगों के एक औषधि के समान ही थे। आर्यसमाजी चेतना ने भी यही कार्य किया था। कठोर प्रतिक्रिया के कारण जहाँ लाभ होता है, वहीं दूसरा पक्ष उपेक्षित हो जाता है। इसी प्रकार यदि स्वच्छन्दतावाद को द्विवेदी युग में कुछ हानि पहुँची तो उसकी क्षतिपूर्ति छायावाद द्वारा पूरी हो चुकी है। किन्तु छायावाद में नारी की जो भव्य मूर्ति चित्रित हुई है, उस भव्यता (नारी, माँ, सहचरि, प्राण —पन्त) की पृष्ठभूमि में रीतिकालीन भोगवाद के विरुद्ध द्विवेदी का 'वक्रभृकुटिवाद' ही था, और इस योगदान के लिए हमें द्विवेदीजी और उनके युग का आभार मानना होगा।

इस प्रकार सामन्तवाद से सबसे अधिक पीड़ित वर्ग 'नारी' और 'दलित वर्ग'—इन दोनों को द्विवेदी-युग में अत्यधिक सहानुभूति प्राप्त हुई।

भाषा और छन्दों के संस्कृतीकरण के विषय में निवेदन यह है कि संस्कृत भाषा पण्डितों और पुरोहितों की बपौती नहीं है। वह भारतीय जनता की एक महान भाषा है जिसमें केवल पुरोहितों की ही प्रवृत्तियाँ सुरक्षित नहीं हैं बल्कि भारतवर्ष के पास जो कुछ अच्छा और बुरा था, वह सब सुरक्षित है। यह इतिहास की देन है कि भारतीय मानस का बहुलांश संस्कृत से अधिक निकटता अनुभव करता है। इस भारतीय मानस में बौद्ध, वैष्णव, शैव, शाक्त आदि अनेक सम्प्रदाय भी हैं और साधारण जनता भी है। संस्कृत में मेघदूत भी है और सत्यनारायण की कथा भी। जैन, बौद्ध और ब्राह्मणवादी दर्शन में भी इसी संस्कृत के ही शब्द अधिक हैं अतः 'उच्च हिन्दी' में यदि संस्कृत के शब्द अधिक हों तो यह उचित ही नहीं, आवश्यक भी है। काव्य में सूक्ष्म संवेदनों और धारणाओं को व्यक्त करने के लिए संस्कृत की शब्दावली से अधिक उपयुक्त शब्दावली और कहाँ मिलेगी? यह कोई दुःख की बात नहीं है कि द्विवेदीयुगीन 'प्रियप्रवास' को अहिन्दी भाषाभाषी सरलता से समझ लेते हैं। इसका यह अर्थ नहीं है कि सृजन की भाषा को जानबूझकर संस्कृतमय बनाया जाए, इसका केवल अर्थ यह है कि हिन्दी का स्वरूप मूलतः संस्कृत के निकट रहेगा, जबकि उसमें बोलियों और अन्य भाषाओं के शब्दों का धड़ल्ले से प्रयोग चलेगा। सैद्धान्तिक भाषा संस्कृत के अधिक समीप होगी। व्यवहार की भाषा लोक के अधिक निकट। दार्शनिक, वैज्ञानिक और सूक्ष्म धारणात्मक विषयों की अँगरेजी भी 'आमफहम' अँगरेजी नहीं होती, हो नहीं सकती। इसी प्रकार हिन्दी आलोचना, दर्शन, अर्थशास्त्र, राजनीति आदि की भाषा में संस्कृत के शब्द अधिक होंगे। किन्तु जहाँ आवश्यक हो उठेंगे वहाँ व्यावहारिक शब्दों का बहिष्कार नहीं होगा। काव्य के विषय में भी लोग यह भूल जाते हैं कि काव्य विविध रूपी होता है। महावीरप्रसाद द्विवेदी के तीन महाकवियों में गुप्तजी, लोचनप्रसाद पाण्डेय और रामचरित उपाध्याय की भाषा के तीन रूप हैं। पाण्डेयजी की हिन्दी प्रियप्रवास की हिन्दी से अत्यधिक सरल है। हरिऔधजी ने भी भाषा के विविध रूप प्रस्तुत किये हैं। गुप्तजी के काव्य में भी भाषा के विविध प्रयोग हैं। छायावाद की भाषा यदि फिराक जैसे कवियों को पसन्द नहीं है तो विवशता है। बात यह है कि एक खास ढाँचे की ही कविता को पसन्द करने वाले पारद लेखक हिन्दीकाव्य की विविधरूपता को देख ही नहीं पाते। हिन्दी में प्रसाद, महादेवी, निराला ने कठिन और सरल सभी प्रकार के प्रयोग किए हैं। उदात्त शैली में कामायनी, राम की शक्ति-पूजा और दीपशिखा लिखे गए हैं तो गुरुभक्तसिंह, नेपाली, बच्चन आदि ने सरल भाषा अपनाई है। गद्य के क्षेत्र में प्रसाद और महादेवी ने भी अपेक्षाकृत सरल भाषा में लिखा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुख्य बात यह है कि द्विवेदीजी ने हिन्दी के लिए संस्कृत का अक्षय भण्डार खोल दिया किन्तु उन्होंने यह कहीं नहीं लिखा कि केवल हिन्दी क्रियाओं को छोड़ कर सभी शब्द संस्कृत के हों। सूक्ष्मतम संवेदनों और उदात्ततम धारणाओं के लिए शैली की भङ्गिमा 'हिन्दुस्तानी' नहीं बन पाती, वह हाई हिन्दी हो ही जाती है, सरल विषयों के सरल हिन्दी। द्विवेदीजी के गद्य-प्रयोगों में एक निबन्ध 'भैंसागाड़ी' पर भी है और उनकी आल्हा शुद्ध बैसवाड़ी में।

द्विवेदीजी की 'तानाशाही' भारतवर्ष के सामान्य जनों के प्रतिनिधि लेखक की तानाशाही थी। डा० जान्सन से उनकी तुलना सीमित तुलना है। द्विवेदीजी राष्ट्रभाषा हिन्दी के शिक्षक और दिशानिर्देशक थे। कोई शिक्षक न सर्वज्ञ होता है, न उसके प्रयत्नों में सर्वत्र पूर्णता होती है। विकास अन्तर्विरोधात्मक होता है और द्विवेदी-युग में हिन्दू-पुनरुत्थानवाद जैसे तत्वों को इतिहास की प्रक्रिया में रखकर देखना चाहिए कि उसे उत्तेजित करने वाली कौनसी परिस्थितियाँ थीं। द्विवेदी जी को ही उसका उत्तरदायी ठहराना गलत है क्योंकि द्विवेदीजी भारतीय स्नायुमण्डल पर पड़ने वाले तनावों दबावों से उत्पन्न युग-पुरुष ही नहीं थे, उनके निर्माण में भारतीय मानस के वे सभी तत्व काम कर रहे थे जिनका निर्माण भारतीय इतिहास ने एक सुदीर्घ परम्परा में कर दिया था। महावीरप्रसाद द्विवेदी और उनके युग ने हिन्दी और हिन्दुस्तान के लिये जो कुछ किया, यदि हम उसे न भूलें तो हिन्दी के लेखकों को भविष्य के प्रति शङ्कालु होने की कोई आवश्यकता नहीं है किन्तु क्या हम द्विवेदीजी के चरणचिन्हों पर चलने के लिए पूर्णतः प्रस्तुत हैं? जब तक हिन्दी के विषय में द्विवेदीजी का स्वप्न पूर्ण नहीं होता तब तक उनका पितृ-ऋण हमारे सिर पर है!

—गव० कालेज, नैनीताल।

(पृष्ठ २३ का शेषांश)

उसकी नव व्याख्या, उसमें समयोपयोगी परिवर्त्तन, सुसंस्कृत भाषा, नवीन सुरुचि, कथात्मकता किन्तु शास्त्र की मर्यादा का चाहे आग्रह न हो किन्तु अनादर का अभाव। उनकी रचनाओं में निर्विवाद द्विवेदीजी की प्रेरणा है। स्त्री-जाति के प्रति एक तरल सहानुभूति—उसकी करुणा में प्रबुद्ध कल्याण की कामना—उसकी प्रतिमूर्तियाँ उर्मिला और यशोधरा द्विवेदीजी के दिशा-निर्देश का ही फल है। जो गति और शब्दावली हम द्विवेदीजी की आरम्भिक कविताओं में कुछ अविकसित पाते हैं, वही गुप्तजी में पूर्ण शक्ति से प्रवाहित मिलती है। द्विवेदीजी ने 'सरस्वती की विनय' लिखी—

'विश्वाधार! विशाल-विश्व-बाधा-संहारक!
प्रेममूर्ति! परमेश! अबल-अबला-हितकारक!
× × ×
यद्यपि वेश सदैव मनोमोहक धरती हूँ;
वचनों की बहु भाँति रुचिर रचना करती हूँ।
उदर-हेत मैं अलं नहीं तिस पर पाती हूँ।
हाय! हाय! आजन्म दुःख सहती आती हूँ।

यही ओज गुप्तजी ने अपनी हरिगीतिकाओं में अपनाया, यही नीति उन्होंने अपने लिए निर्धारित की।

इस संक्षिप्त विवेचन से यह विदित होता है कि द्विवेदीजी ने अपने उदाहरण और प्रेरणा से भाषा, भाव, शैली और विषयों की दृष्टि से एक नया युग स्थापित किया, जो अब धीरे-धीरे विगत काल की बात होता जा रहा है, किन्तु इस युग ने हमारी भाषा और उसके साहित्य की कोटि तथा संस्कृति को एक उत्थान दे कर सुबोध सात्विक उज्ज्वलता और ओज से परिपूर्ण कर दिया हैं, इस पर खड़े होकर अब हम दूर तक आगे, ऊपर उन्मुक्त उच्च वातावरण में साँस ले सकते हैं।

—सा० सं० अप्रेल १९३९ से।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकाचार्य द्विवेदी

श्री बाबूराव विष्णु पराड़कर

सम्पादक हम उसे कहते हैं, जो एक आदर्श को सामने रख कर उसकी पूर्ति के लिए नियत समय में जनता के सामने विचार और समाचार उपस्थित करे। विचार सयुक्तिक पर गम्भीर और पटने वाले होने चाहिए। भाषा विषयानुकूल, पर मँजी हुई और साधारण शिक्षित-समाज की समझ में आने योग्य होनी चाहिए। ऐसा न होगा तो विचारों का प्रचार न होगा और सम्पादक का उद्देश्य भी सिद्ध न होगा। समाचारों का सत्य होना, जितना आवश्यक है, उतना ही आवश्यक उनका सामयिक, समाज के जीवन से सम्बंध रखने वाला, भविष्य का संकेत करने वाला और सर्वोपरि सत्य होना आवश्यक है। समाचारों की भाषा जहाँ तक हो सके सहज होनी चाहिए। वाक्य छोटे होने चाहिए और असल बात पहले और आकर्षक रूप में कही जानी चाहिए। सम्पादक को इन दो प्रधान कर्त्तव्यों का पालन करना पड़ता है। पत्रकार-कला के और भी अङ्ग हैं; पर वे सब इनके अन्तर्भूत हैं। अवश्य शुद्ध साहित्य, विज्ञान, कला, कौशल आदि के पत्रों का सम्बन्ध साधारण समाचारों से नहीं होता; पर उनके अपने समाचार होते ही हैं; जैसे – नवीन गद्य-पद्य-रचना, आविष्कार, चित्रादि, यन्त्रादि। जिस प्रतिभाशाली सम्पादक के सम्बन्ध में इस लेख में विचार करना है, उनका सम्बन्ध दूसरे प्रकार के नियतकालिक पत्र से था। 'सरस्वती' का सम्बन्ध साधारण समाचारों से नहीं था, यद्यपि महत्व की सब प्रकार की घटनाओं पर उसके यशस्वी सम्पादक टीका किया करते थे।

जहाँ तक मुझे स्मरण है 'सरस्वती' के दूसरे या तीसरे वर्ष से उसका सम्बन्ध स्वर्गीय पण्डित महावीरप्रसादजी द्विवेदी से हुआ। तभी से उस पर सम्पादक के व्यक्तित्व की मुहर लग गयी। सम्पादक का व्यक्तित्व उसके पत्र के प्रत्येक अङ्क में प्रस्फुट न हुआ, तो वह सफल सम्पादक नहीं कहा जा सकता। इंगलैण्ड और अमेरिका में अब तक जो यशस्वी सम्पादक हो गये हैं (और देशों का ज्ञान मुझे नहीं है) उनमें यही विशेषता रही है कि उनके पत्र उनके व्यक्तित्व की घोषणा करते रहे और वह व्यक्तित्व समय को भी प्रभावित करता रहा। हमारे जैसे साधारण सम्पादक समय के प्रवाह में बहते हुए कुछ अपना कल्याण कर लेते हैं पर सच्चा सम्पादक, एक प्रतिभाशाली राजनीतिज्ञ की तरह, समय की गति में भी कुछ परिवर्त्तन कर ही जाता है। यह बात हम आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी में पाते हैं और इसलिए उन्हें गुरु—अनुसरणीय पुरुष मानते हैं। 'सरस्वती' के पहले अनेक मासिक निकले, पर अपने लिए समाज में स्थान न कर सके। उनके सम्पादक शायद यह जानते ही नहीं थे कि उन्हें करना क्या है और वह कैसे किया जायगा। कोई प्राचीन काव्य के गीत गाता था, तो कई नयी कविताओं में अपने शब्द-चातुर्य का परिचय देने का यत्न करता था। कोई वर्तमान विषय पर विचार करने की प्रतिज्ञा करके 'जो था वही अच्छा था' कह कर लेख समाप्त कर देता था। अधिकतर सम्पादक बँगला के ऋणी थे। हिन्दी गद्य-शैली पर बँगला गद्य-शैली का जो प्रभाव पड़ा है, उसका कारण यही है।

पण्डित महावीरप्रसाद द्विवेदी ने इस अव्यवस्था में एक व्यवस्था उत्पन्न की। उन्होंने हिन्दी को एक ऐसी शैली दी जो गम्भीर विषयों का विवेचन करने योग्य भी थी और उस समय के शिक्षित समाज में सहज समझी भी जा सकती थी। उस शैली में विशेष गुण यह था कि वह लचीली थी और भिन्न-भिन्न लेखकों के हाथ में पड़कर उसने कहीं-कहीं बड़ा ही मनोहर रूप धारण किया है। साथ ही खड़ी बोली में कविता सम्भव करके आपने उस काव्य का बीजारोपण किया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो आज फलता-फूलता दिखाई दे रहा है। इस पर अधिक विचार करना, साहित्यालोचन हो जायगा, जिसका मैं अपने आपको अधिकारी नहीं समझता। मेरे कथन का तात्पर्य केवल यह है कि आचार्य महावीर-प्रसाद द्विवेदी ने सरस्वती के द्वारा हमें वह शैली दी है जिसका संस्कृत और परिवर्त्तित रूप आज दृष्टिगोचर हो रहा है और जो वर्तमान काल के सर्वथा उपयोगी है। एक मासिक-पत्रिका के सम्पादक के लिए यह कम गौरव की बात नहीं है कि वह एक शैलीकार भी हो। सरस्वती का प्रत्येक अङ्क आदि से अन्त तक भाषा की दृष्टि से अनिन्द्य ही नहीं प्रत्युत प्रशंसनीय भी हुआ करता था। ऐसे कई नाम लिये जा सकते हैं, जिन पर यशस्तिलक सरस्वती में लगा, पर उनकी स्वतन्त्र कृतियों ने उसे धो डाला। इसका कारण यह था कि आचार्य द्विवेदीजी निर्दयता के साथ सम्पादन किया करते थे।

मैंने द्विवेदीजी की संशोधित कापी देखी है। मालूम होता था कि बीच-बीच में कुछ शब्दों को छोड़ कर आपने सारा मजमून फिर से लिख डाला है। एक ख्यातनाम साहित्यिक की पुस्तक का एक अध्याय आपके पास संशोधनार्थ भेजा गया था। संयोगवश उसकी कापी मेरे देखने में आ गयी थी। देखकर आश्चर्य हुआ। उसमें मूल कम और संशोधन अधिक था। आपके सम्पादन काल में सरस्वती में प्रकाशित सब लेख इसी प्रकार संशोधित हुआ करते थे। यह संशोधन कार्य अत्यन्त कठिन है। स्वयं लिखना सहज है पर संशोधन कठिन। लेखक के भावों की और यथासम्भव, शब्दों की भी रक्षा करते हुए कापी प्रेस के लायक बनाना कम सम्पादकों के लिए ही साध्य है। द्विवेदीजी ने इस दुःसाध्य को साध्य किया था। आलस्य या समयाभाव के कारण सरस्वती में कभी ऐसा लेख वा नोट भी नहीं निकला, जो सावधानतापूर्वक संशोधित न हुआ हो। आपने हिन्दी सम्पादकों के सामने यह आदर्श तो रखा पर दुःख के साथ कहना पड़ता है कि, हम में बहुत कम ऐसे हैं, जिन्होंने उसे निर्मल करने का यत्न किया है। दैनिकों और साप्ताहिकों की तो बात ही जाने दीजिये। आज अधिकतर मासिकों के लेखों का सम्पादन नहीं होता। लेख ज्यों-के-त्यों प्रेस में भेज दिये जाते हैं और बाद में प्रूफ के समय इधर-उधर संशोधन किया तो किया, नहीं तो वह भी नहीं। सम्पादक के इस कर्तव्य में आज जो उपेक्षा हो रही है, उसके कारण भी प्रतिमास बहुत-सा अपाठ्य और कुपाठ्य साहित्य जनता के सामने उपस्थित होता है। मासिकों के पृष्ठों की वृद्धि के साथ-साथ उनके गौरव की हानि हो रही है।

आचार्य द्विवेदीजी की दूसरी विशेषता थी सम्पादन। मैं नहीं जानता, इस गुण की व्याख्या कैसे करूँ। ईंट, पत्थर, चूना, लोहा, लक्कड़ सब का एक ढेर और उन्हीं पदार्थों से बनाया हुआ एक सुन्दर मन्दिर, इनमें क्या अन्तर है ? ईंट बनानेवाले, संगतराश, लुहार, बढ़ई सबने अपनी-अपनी कला दिखा दी, पर वह ढेर का ढेर ही रह गया—मन्दिर न हुआ। यह काम मेमार का है। सम्पादक इञ्जिनियर भी है और आर्किटेक्ट भी। प्रत्येक अङ्क का रूप पहले से निश्चित करके यथा-स्थान आवश्यक पदार्थों को जोड़ कर जैसे मेमार एक सुन्दर भवन बना सकता है, उसी तरह सम्पादक एक सुन्दर अङ्क निकाल सकता है। आचार्य द्विवेदीजी के समय की "सरस्वती" का कोई अङ्क निकाल देखिए, मालूम होगा कि प्रत्येक लेख, कविता और नोट का स्थान पहले निश्चित कर लिया गया था और बाद में वे उसी क्रम से मुद्रक के पास भेजे गये। एक भी लेख ऐसा न मिलेगा जो बीच में डाल दिया गया-सा मालूम होता हो। सम्पादक की यह कला बहुत ही कठिन है और एकाध को ही सिद्ध होती है। द्विवेदीजी को सिद्ध हुई थी और इसी से 'सरस्वती' का प्रत्येक अङ्क अपने रचयिता के व्यक्तित्व की घोषणा अपने अङ्ग-प्रत्यङ्ग के सामञ्जस्य से देता है। मैंने अन्य भारतीय भाषाओं के मासिकों में भी यह विशेषता बहुत कम पायी है और विशेषकर इसी के लिए मैं स्वर्गवासी पं० महावीर-प्रसाद द्विवेदी को सम्पादकाचार्य मानता और उनकी पुण्यस्मृति में यह श्रद्धाञ्जलि अर्पण करता हूँ।

—सा० सं० अप्रैल १९३९ से।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्विवेदीजी का आचार्यत्व

डॉ० रामकुमार वर्मा

नवम्बर सन् १९०२ में 'कुमारसंभवसार' के प्रथम पाँच सर्गों का अनुवाद कर पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी ने हिन्दी पाठकों का ध्यान इसलिए आकर्षित किया था कि खड़ी बोली हिन्दी में भी कविता की जा सकती है और उसमें संस्कृत भाव व्यञ्जना की उपयुक्त क्षमता भी उत्पन्न की जा सकती है। यद्यपि द्विवेदीजी की कविता "वही सुघरता सफल समझिए जो प्रियतम को सके लुभाय" (पंचम सर्ग) के शब्द-विन्यास से ऊपर नहीं उठ सकी और उसमें खड़ी बोली का सौष्ठव स्पष्ट नहीं हो सका, तथापि उनके प्रयास से खड़ी बोली की कविता अपने निर्माण-पथ पर अग्रसर हो गई और इस प्रकार काव्य-क्षेत्र में परिवर्तन का सूत्र-पात हुआ। जिस प्रकार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने समकालीन खड़ी बोली गद्य को सशक्त बनाकर उसमें प्राण-प्रतिष्ठा की थी, उसी प्रकार पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी ने खड़ी बोली की परुष कही जाने वाली शब्दावली में कविता की पंक्तियां लिख कर उसमें संगीत की शक्ति प्रेरित की। गद्य और पद्य में नवीन उन्मेष उत्पन्न करने वाले भारतेन्दु और महावीरप्रसाद हिन्दी-साहित्य के दो कर्मयोगी थे जिन्होंने परिश्रम और अध्यवसाय से खड़ी बोली साहित्य को शक्ति-सम्पन्न बनाया। खड़ी बोली कविता में उन्मेष द्विवेदीजी के कार्य-काल से ही प्रारम्भ होता है। इसी उन्मेष में हिन्दी के राष्ट्रीय कवि बाबू मैथिलीशरण गुप्त की कविता की रूप-रेखा निर्मित हुई।

पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी का सम्पादन उन्हें गद्य के निकटतम सम्पर्क में ला सकने में समर्थ हुआ। भारतेन्दु के व्यवस्थित किये हुए गद्य में ऐसे कितने ही अभाव थे, जो गम्भीर साहित्य के प्रणयन में अवरोधक थे। कहानी और नाटक का गद्य भारतेन्दुजी निर्मित कर सके, वैज्ञानिक निबन्ध और सम्पत्ति-शास्त्र का गद्य उनके पास नहीं था। उनके गद्य में हृदय है, मस्तिष्क नहीं। उसकी पूर्ति करने के लिए एक वैय्याकरण की आवश्यकता थी। और जब पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी संस्कृत व्याकरण का ज्ञान लेकर सरस्वती का संपादन करने में सन्नद्ध हुए तो गद्य का रूपान्तर ही हो गया और उसे वह दृढ़ता प्राप्त हुई जो साहित्य के गम्भीर विचारों का भार सहन करने में समर्थ हुई। भाषा को परिमार्जित और शुद्ध करने के संकल्प में सरस्वती सम्पादक की जो साधना छिपी हुई है, उसका मूल्य नहीं आँका जा सकता। गद्य में शब्दों का उपयुक्त चयन भाव-व्यञ्जना में अधिक सहायक होता है और उसे एक विशेष नाद से समन्वित करता है। संस्कृत साहित्य-शास्त्र के विचारों का आधार लेते हुए पं० गणेश सदाशिव लेले ने मराठी में साहित्य-शास्त्र सम्बन्धी एक ग्रन्थ लिखा। उसके एक अंश को 'शब्दार्थ विचार' शीर्षक से प्रश्नोत्तर के रूप में लिखकर सन् १९०६ में पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी ने हिन्दी गद्य के शब्दार्थों की ओर पाठकों और लेखकों का ध्यान आकर्षित किया। प्रारम्भ में उन्होंने जो लेख लिखे उनमें लेखकों, सम्पादकों और पुस्तक प्रकाशकों के उत्तरदायित्व की भावना ही भरी हुई थी। सन् १९०४ से १९१० तक के उनके अधिकांश लेख भाषा के परिमार्जन की ओर ही ध्यान आकर्षित करने के लिए लिखे गये थे। गणेशदत्त और देवदत्त के वार्तालाप में अथवा प्रश्नोत्तर के रूप में शब्द और अर्थ को विकृत करने वाले लेखकों का उन्होंने यथेष्ट तिरस्कार किया था और शिष्ट भाषा में दुर्वचन तक कहे थे। इसी से ज्ञात होता है कि द्विवेदीजी भाषा का परिष्कार करने में कितने उग्र थे। भाषा के प्रति किसी प्रकार की भी उपेक्षा सहन करने में वे एकान्त असमर्थ थे। उनका यह कठोर अनुशासन ही भाषा का शुद्ध रूप निर्धारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने में समर्थ हो सका। यही उनके सम्पादन का सबसे बड़ा कार्य था, जिसमें वे जितने संयमी थे उतने ही निष्ठुर।

भाषा को साहित्य के उपयुक्त बनाने में केवल शब्दों की रुचि परिष्कृत करना ही यथेष्ट नहीं है, उसे भावों से सम्पन्न करने का यत्न भी होना चाहिए। अंगरेजी, मराठी, गुजराती और बंगाली साहित्य के विविध भावों को हिन्दी में रूपान्तरित करने की चेष्टा द्विवेदीजी की ओर से जितनी अधिक हुई, उतनी हिन्दी के किसी सम्पादक से नहीं हो सकी। भाव-जगत की विस्तृत परिधि से परिचय कराने के प्रयास में द्विवेदीजी ने भिन्न साहित्य विषयक अनेक लेख हिन्दी भाषा भाषियों को दिये। जो लेख लिखे उनमें से बहुतों में "हिन्दी के सिवा कई अन्य भाषाओं के साहित्य सम्बन्धी विचारों की भी पुट है।" इसीलिए द्विवेदीजी के लेखों का विस्तार मुक्तक रूप से अनेक विषयों में है। साहित्य का साधारण ज्ञान जिस-जिस स्थान से—जिस-जिस भाषा से उन्हें मिला, उन्होंने उसे हिन्दी-जगत् के सामने बड़े मनोरंजक ढङ्ग से रक्खा। हिन्दी लेखकों को वे केवल भाषा विषयक शुद्ध ज्ञान से ही परिचित नहीं कराना चाहते थे, वे उन्हें अपने अधिकारों से भी अवगत करा देना चाहते थे। इसलिए उन्होंने सन् १९१३ में नया कापी राइट एक्ट नामक लेख लिखा, जिसके प्रारम्भ में उन्होंने अपने इसी भाव का संकेत किया है—"इस कानून का घनिष्ट सम्बन्ध पुस्तकों के लेखकों और प्रकाशकों से है और उसका जानना उसके लिए बहुत आवश्यक भी है। अतएव उसका सारांश लिखना हम यहाँ पर उचित समझते हैं।" इस प्रकार पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी ने हिन्दी जगत के ज्ञान का परिवर्धन और परिष्करण करते हुए जिस उत्तरदायित्वपूर्ण व्यक्तित्व का परिचय दिया, उससे वे साहित्य के इतिहास में निस्सन्देह 'आचार्य' माने जायँगे।

—सा० सं० अप्रैल १९३९ से।

आपकी बचत ही आपके सुखमय भविष्य की सबसे बड़ी गारंटी है।

सोच विचार में समय नष्ट न कीजिए।

और

आज ही से पैसा बचाना प्रारम्भ कीजिए तथा अपना धन राष्ट्रीय बचत योजना में लगाइए

खरीदिए

१२ वर्षीय राष्ट्रीय सुरक्षा प्रमाण-पत्र

प्रीमियम इनामी बांड

१० वर्षीय सुरक्षा डिपाजिट प्रमाण-पत्र

और

आयकर रहित बढ़िया ब्याज प्राप्त करने के साथ ही देश को अधिक समृद्ध बनाइए।

पूर्ण विवरण के लिए कृपया जिला संगठन कर्ता, राष्ट्रीय बचत से संपर्क स्थापित करें।

सूचना निदेशालय, उत्तर प्रदेश द्वारा प्रसारित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्विवेदीजी की साहित्य-सेवा

श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी

वह भी एक युग था। भारतेन्दुजी हिन्दी साहित्य-सेवियों के लिए पथ-निर्देश कर गये। उनके बाद साहित्य-निर्माण का भार उन लोगों पर पड़ा, जिनकी शक्ति परिमित थी। उन लोगों में साहित्य के प्रति अनुराग था, उत्साह था, सेवा-भाव था। उन लोगों ने भारतेन्दु द्वारा निर्दिष्ट पथ पर हिन्दी साहित्य को अग्रसर करने के लिए सभी तरह के प्रयास किये। उन्होंने निबन्ध लिखे, नाटकों की रचना की, उपन्यासों और आख्यायिकाओं का प्रणयन किया, अन्य भाषाओं के कुछ ग्रन्थ-रत्नों के अनुवाद भी किये, पत्र भी निकाले। पर उनमें से अधिकांश साधनहीन थे। उनके प्रयास प्रयास-मात्र रहे। पं० राधाचरण गोस्वामी का 'भारतेन्दु', पं० प्रतापनारायण मिश्र का 'ब्राह्मण' और पण्डित बालकृष्ण भट्ट का 'हिन्दी-प्रदीप' उन्हीं की जीवन-साधना के स्मृति-स्तम्भ हैं। प्रतिभा ईश्वर प्रदत्त शक्ति है, पर उसके विकास के लिए मनुष्य-प्रदत्त शक्ति की आवश्यकता है। उन दिनों हिन्दी साहित्य की ओर विद्वानों का उपेक्षा-भाव था। सर्वसाधारण को आकृष्ट करने के लिए कौतूहलवर्धक-साहित्य की आवश्यकता थी और इस आवश्यकता की पूर्ति की बाबू देवकीनन्दन खत्री ने। उनके उपन्यासों ने हिन्दी-भाषा-भाषियों के हृदय में साहित्य के प्रति अनुराग अवश्य पैदा कर दिया। काशी धाम उपन्यासों का एक प्रधान क्षेत्र हो गया और कितने ही उपन्यास प्रकाशित हुए। कुछ मौलिक थे और कुछ अनुवाद। पर सभी तरह के उपन्यासों का यथेष्ट प्रचार हुआ। यही आधुनिक हिन्दी-साहित्य का निर्माण-काल अथवा प्रयास-काल है।

साहित्य का सब से बड़ा समालोचक, काल है। अधिकांश लेखकों का गौरव अल्पकालीन होता है। कुछ ही वर्षों में उनकी रचना की महत्ता नष्ट हो जाती है! कुछ लोग अपने जीवन-काल भर गौरव का उपभोग करते हैं। उनके बाद उनका भी गौरव विलुप्त हो जाता है पर कुछ ऐसे होते हैं, जिनकी रचना साहित्य की स्थायी सम्पत्ति होती है। किस रचना में स्थायित्व है, यह कहना बड़ा कठिन है। इसकी यथार्थ परीक्षा तो काल ही करता है; पर इसमें सन्देह नहीं कि हम लोग प्रायः लोक-प्रिय साहित्य को ही स्थायी साहित्य मान बैठते हैं। आज जो काव्य, नाटक अथवा उपन्यास हमें अभूतपूर्व जान पड़ता है, उसकी नवीनता कुछ ही वर्षों में नष्ट हो जाती है और तब उसके स्थान में दूसरे अभूतपूर्व काव्य नाटक अथवा उपन्यास आ जाते हैं। आधुनिक-हिन्दी-साहित्य के निर्माण-काल में जो रचनाएँ अभूतपूर्व थीं, उनमें से अधिकांश तो बिलकुल विलुप्त हो गई हैं और कुछ केवल संग्रह ग्रन्थों में हैं। कुछ ऐसी हैं, जिनका दर्शन हमें पुस्तकालयों में ही होता है। सर्वसाधारण की पठनीय सामग्री में अब उनका स्थान नहीं है। रचनाएँ स्पृहणीय न होने पर भी उनके लेखक श्रद्धेय अवश्य हैं।

अड़तीस वर्ष का समय कुछ अधिक नहीं होता; परन्तु गत अड़तीस वर्ष हिन्दी-साहित्य के लिए विशेष महत्वपूर्ण हैं। अड़तीस वर्ष पहले हिन्दी-साहित्य की जो स्थिति थी, आज वह नहीं है। हिन्दी-साहित्य अब खूब सम्पन्न हो गया है। 'सरस्वती' का सम्पादन-भार लेने के बाद द्विवेदीजी ने हिन्दी की हीनावस्था को प्रकट करने के लिए जो एक व्यङ्ग-चित्र उसमें प्रकाशित कराया था आज वही चित्र हम लोगों को उपहास-जनक प्रतीत होगा। हिन्दी साहित्य की यह आश्चर्य-जनक उन्नति द्विवेदीजी की साधना का फल है। द्विवेदी जी ने अपनी साहित्य-सेवा के द्वारा हिन्दी में एक नया युग ही ला दिया। उस युग की विशेषता है हिन्दी में सुरुचि और सुशिक्षा का प्रचार।

जो युग के प्रवर्तक होते हैं उन्हें सब से पहले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोकरुचि को परिष्कृत करना पड़ता है। समाज की एक विशेष बौद्धिक अवस्था के अनुसार समाज की एक विशेष रुचि होती है। मध्ययुग में भक्तिभाव का प्राबल्य होने पर जो सगुणोपासना प्रारम्भ हुई उसी के कारण रीति-काल में शृङ्गार-रस, नायिका-भेद और नख-शिख-वर्णन की ओर लोगों की रुचि बढ़ी। भारतवर्ष के लिए वह अन्धयुग था। शिक्षा का प्रचार रुक गया था। लोगों में अन्ध-विश्वास और अन्धभक्ति अधिक होने के कारण ज्ञान के लिए अधिक आग्रह नहीं था। जाति में अवसाद था, आत्म-शैथिल्य था, इसीलिए कल्पना के माया-लोक में कल्पित नायक और नायिका की प्रेम लीला से ही उन्हें मनस्सन्तुष्टि होती थी। भारतेन्दुजी ने हिन्दी गद्य साहित्य में नवयुग का दर्शन तो अवश्य कराया, पर गद्य साहित्य में मध्ययुग के आदर्श ही उन्होंने स्वीकृत किये।

ब्रजभाषा में एक तो स्वाभाविक माधुर्य है और फिर ब्रजभाषा के कवियों ने उसे अलङ्कारों से सजाकर एक ऐसा मनोमोहक रूप प्रदान कर दिया है कि वह मूर्तिमती कविता ही हो गई है।

यमक और अनुप्रास की छटा में भाव का विकृत रूप हो गया था। पर लोग यही समझ रहे थे कि कविता के लिए एक मात्र ब्रजभाषा ही उपयुक्त है। गद्य और पद्य की भाषा एक हो नहीं सकती। द्विवेदीजी ने बोलचाल की भाषा में स्वयं कवितायें लिखीं और उसी का पक्ष समर्थन किया। श्रीधर पाठकजी ने गोल्डस्मिथ की एक कविता का पद्यात्मक अनुवाद बोलचाल की भाषा में किया। द्विवेदीजी ने भी उसी भाषा में कुमार-सम्भव सार लिखा। खड़ी बोली की इस प्रधानता से हिन्दी के काव्य-साहित्य में वस्तुवाद की प्रतिष्ठा हुई। कल्पना का माया-लोक टूट गया और राष्ट्रीय सदुपदेश पूर्ण कविताओं का प्रचार बढ़ने लगा।

समाज में जैसा अन्ध-विश्वास प्रबल होता है, वैसा अन्ध-भक्ति-भाव भी प्रबल होता है। उस अन्ध-भक्ति-भाव के ऊपर आघात होते ही समाज विक्षुब्ध विचलित हो उठता है। परन्तु समाज का यह विक्षोभ उसके लिए श्रेयस्कर होता है, क्योंकि तभी हम सत्य की परीक्षा के लिए उत्कण्ठित होते हैं। सत्य वही है जो तर्क का आघात सह लेता है। पर जब तर्क हम लोगों की चिरकालीन बद्ध-मूल धारणाओं को भी भ्रम-पूर्ण सिद्ध करने के लिए प्रयत्न करता है उस समय हमें वह सहन नहीं होता। पर समालोचना की उपयोगिता उसी में है। द्विवेदीजी ने समय-समय कुछ ऐसे लेख लिखे हैं जिनके कारण हिन्दी साहित्य में एक आँधी सी आ गई है। पर उन्हीं आँधियों के कारण हिन्दी में सुरुचि का प्रचार हुआ है। जब तक हम लोग सत्य को साग्रह स्वीकार करने के लिए प्रस्तुत नहीं हैं तब तक हम लोग उन्नति कर ही नहीं सकते। अपने दोषों की ओर आँख मूँद लेने से हमारी उन्नति की गति अवरुद्ध हो जायगी। पर उन समालोचनाओं से क्या लाभ जो साहित्य में नये आदर्शों की सृष्टि नहीं करतीं। इसीलिए अपने अठारह वर्ष के सम्पादन काल में द्विवेदी जी ने सरस्वती में क्या विदेशी और क्या स्वदेशी सभी श्रेष्ठ साहित्य-कला कोविदों और कलाकारों के परिचय प्रकाशित किये हैं। यही नहीं, उन्होंने सर्व-साधारण की ज्ञान-वृद्धि के लिए सभी प्रकार के उपयोगी विषयों पर लेख लिखे हैं। द्विवेदीजी के जीवन का लक्ष्य था जन-समाज की सेवा। उन्होंने जो कुछ लिखा है जन-समाज के लिए लिखा है, लोगों में शिक्षा का प्रचार हो, उनके ज्ञान की वृद्धि हो, सत्साहित्य की ओर उनकी प्रवृत्ति हो, वे अपने अधिकारों और कर्तव्यों को पहिचानें, इसी उद्देश्य से वे लेख लिखते थे; कला के लिए कला के उपासक नहीं थे। जो जीवन के लिए श्रेयस्कर नहीं है, ऐसी कला में वे किसी प्रकार का सार नहीं देखते थे। वे तुलसी और सूर के उपासक थे, देव और मतिराम के नहीं। उनके सम्पादन-काल में सरस्वती में एक भी ऐसा लेख नहीं प्रकाशित हुआ, जिसका समाज पर बुरा प्रभाव पड़े। ऐसे विज्ञापनों को भी वे सरस्वती में प्रकाशित नहीं होने देते थे, जिनमें किसी प्रकार की अश्लीलता हो। सरस्वती के द्वारा द्विवेदीजी ने हिन्दी-साहित्य में सुरुचि का प्रचार किया और साहित्य के क्षेत्र को खूब विस्तृत किया। हिन्दी में अभी किसी भी विषय पर यदि कोई लेखों का संग्रह करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहे तो उसे सरस्वती का ही आश्रय लेना पड़ेगा। अधिकांश सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ, कविताएँ, समालोचनाएँ आदि रचनाएँ उसी में निकली हैं।

मैं सरस्वती के उन भक्त पाठकों में से हूँ जिन्होंने सरस्वती के पहिले अङ्क से लेकर आज तक के सभी अङ्कों का खूब मनोयोग से अध्ययन किया है। अपने सौभाग्य से मुझे कुछ वर्षों तक सरस्वती में काम करने का अवसर भी मिल गया और सात-आठ महीने तक मैं द्विवेदीजी का सहकारी रहा। द्विवेदीजी सम्पादन-कला में कितने दक्ष थे, इसके लिए मेरे समान लोगों को अपनी सम्पति देने की आवश्यकता नहीं है। द्विवेदीजी की सबसे बड़ी विशेषता उनकी कार्य-तत्परता थी। वे अपने काम में इतने सावधान थे कि एक भी भूल उन्हें क्षम्य नहीं थी। प्रूफ की भूलों को वे सहसा क्षमा नहीं करते थे। एक बार सरस्वती के किसी अङ्क में पुराने कवरों पर चिट लगाकर उन्हें काम में लाने की आवश्यकता पड़ गई। द्विवेदीजी के लिए यह भूल भी अक्षम्य थी। उन्होंने इस सम्बन्ध में खूब डाँट कर पत्र लिखा था। सरस्वती के पाठकों के मनोरञ्जन और ज्ञानवृद्धि के लिए अङ्गरेजी, बङ्गाली, गुजराती, मराठी आदि कई भाषाओं के पत्रों से सामग्री संकलित की जाती थी। द्विवेदीजी जो कुछ लिखते थे उसकी सामग्री यदि उन्होंने किसी अन्य पत्र से ली तो उस मूल लेख या नोट को भी काट कर अपने लेख के साथ भेजते थे। रिव्यू आव रिव्यूज, माडर्नरिव्यू, प्रवासी और लीडर उन्हें विशेष प्रिय थे। गवर्नमेंट गजट और रिपोर्टों को वे खूब ध्यान से पढ़ते थे और प्रति मास दो चार नोट उन्हीं के आधार पर निकालते थे। उनमें देश की आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक स्थितियों की वे मार्मिक आलोचना करते थे। साहित्य और शिक्षा का भी सूक्ष्म विवेचन रहता था। ऐतिहासिक और पुरातत्व सम्बन्धी विषयों की भी चर्चा वे किया करते थे। द्विवेदीजी के ये नोट बड़े ही काम के हैं। मेरा तो यह विश्वास है कि अङ्गरेजी में जिस प्रकार अपने-अपने युग की विशेषता बतलाने के लिए Paston letters या फाक्स और वेसली के journal है, उसी प्रकार इस युग के बौद्धिक विकास का दिग्दर्शन हमें उन्हीं नोटों में होता है। इसी से मैंने पंडित देवीदत्तजी शुक्ल से कहा कि जब द्विवेदीजी अपने सब लेखों को पुस्तकाकार प्रकाशित करालें, तब मेरी इच्छा के अनुसार वे अपने नोटों का भी एक संग्रह प्रकाशित करावें। उन्होंने मेरी बात मान ली और अपने कुछ नोटों का एक संग्रह प्रकाशित कराया भी। यदि मेरी सम्मति का कुछ मूल्य हो, तो मैं यही कहूँगा कि ये नोट हिन्दी की स्थायी सम्पत्ति हैं। द्विवेदीजी की यथार्थ विशेषता इन्हीं नोटों से प्रकट होती है।

द्विवेदीजी गये और उनके साथ एक युग का भी अन्त हो गया। उन्होंने साहित्य की एक मर्यादा स्थापित कर दी थी और कविता का एक आदर्श निश्चित कर दिया था। उन्होंने साहित्य को जन-समाज से कभी पृथक न होने दिया। गम्भीर से गम्भीर विषयों पर लेख प्रकाशित हुए, पर वे सभी सर्वसाधारण के लिए सुपाठ्य और सरल थे। उनके काल में जो कहानियाँ प्रकाशित हुई उनमें यथार्थ जगत् के चित्र थे; पर कला के नाम से समाज की बीभत्स लीलाएँ उनमें अङ्कित नहीं हुई। कविताओं में भी सरलता के साथ सरसता थी और उनमें असंयत कल्पना नहीं आने पायी। उन्होंने सर्वत्र भाषा और भाव दोनों की विशुद्धि पर ध्यान दिया, इसीलिए उनका युग सुरुचि और सुशिक्षा का युग था।

यदि कोई मुझसे पूछे कि द्विवेदीजी ने क्या किया, तो मैं उसे समग्र आधुनिक साहित्य दिखला कर कह सकता हूँ कि यह सब उन्हीं की सेवा का फल है। कुछ लेखक ऐसे होते हैं, जिनकी रचना पर ही उनकी महत्ता निर्भर रहती है। कुछ ऐसे होते हैं, जिनकी महत्ता उनकी रचनाओं से नहीं जानी जा सकती। द्विवेदीजी की साहित्य-सेवा उनकी रचनाओं से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। उनके व्यक्तित्व का प्रभाव समग्र साहित्य पर पड़ा है। मेघ की तरह उन्होंने विश्व से ज्ञानराशि संचित कर और उसकी वर्षा कर समग्र साहित्योद्यान को हरा-भरा कर दिया। वर्तमान साहित्य उन्हीं की साधना का सुफल है।

—सा० सं० अप्रैल १९३९ से।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आचार्य शुक्ल की दृष्टि में आचार्य द्विवेदी

सङ्कलनकर्त्ता—श्री महेन्द्र

द्विवेदीजी के निबन्ध

पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी का जन्म दौलतपुर (जिला रायबरेली) में बैशाख शुक्ल ४ सं० १९२७ को और देहावसान पौष कृष्ण ३० सं० १९९५ को हुआ।

द्विवेदीजी ने सन् १९०३ में 'सरस्वती' के सम्पादन का भार लिया। तब से अपना सारा समय उन्होंने लिखने में ही लगाया। लिखने की सफलता वे इस बात में मानते थे कि कठिन विषय भी ऐसे सरल रूप में रख दिया जाय कि साधारण समझने वाले पाठक भी उसे बहुत कुछ समझ जाएँ। कई उपयोगी पुस्तकों के अतिरिक्त उन्होंने फुटकल लेख भी बहुत लिखे। पर इन लेखों में अधिकतर लेख 'बातों के संग्रह' के रूप में ही हैं। भाषा के नूतन शक्ति-चमत्कार के साथ नए-नए विचारों की उद्भावना वाले निबन्ध बहुत ही कम मिलते हैं। स्थायी निबन्धों की श्रेणी में दो ही चार लेख; जैसे— 'कवि और कविता', 'प्रतिभा' आदि आ सकते हैं। पर ये लेखन-कला या सूक्ष्म विचार की दृष्टि से लिखे नहीं जान पड़ते। 'कवि और कविता' कैसा गम्भीर विषय है, कहने की आवश्यकता नहीं। पर इस विषय की बहुत मोटी-मोटी बातें बहुत मोटे तौर पर कही गई हैं, जैसे—"इससे स्पष्ट है कि किसी-किसी में कविता लिखने की इस्तेदाद स्वाभाविक होती है। जो चीज ईश्वर प्रदत्त है। जो ईश्वरदत्त है वह अवश्य लाभदायक होगी। वह निरर्थक नहीं हो सकती। उससे समाज को अवश्य कुछ न कुछ लाभ पहुँचता है।

"कविता यदि यथार्थ में कविता है तो सम्भव नहीं कि उसे सुनकर कुछ असर न हो। कविता से दुनिया में आज तक बड़े-बड़े काम हुए हैं। ×× कविता में कुछ न कुछ झूठ का अंश जरूर रहता है, असभ्य अथवा अर्द्धसभ्य लोगों को यह अंश कम खटकता है, शिक्षित और सभ्य लोगों को बहुत। ×× संसार में जो बात जैसी देख पड़े कवि को उसे वैसी ही वर्णन करना चाहिए।"

कहने की आवश्यकता नहीं कि द्विवेदीजी के लेख या निबन्ध विचारात्मक श्रेणी में आएँगे। पर विचारों की वह गूढ़ गुम्फित परम्परा उनमें नहीं मिलती जिससे पाठक की बुद्धि उत्तेजित होकर किसी नई विचार पद्धति पर दौड़ पड़े। शुद्ध विचारात्मक निबन्धों का चरम उत्कर्ष वही कहा जा सकता है जहाँ एक-एक पैराग्राफ में विचार दबा-दबा कर कसे गये हों और एक-एक वाक्य किसी सम्बद्ध विचार खण्ड को लिए हो। द्विवेदी जी के लेखों को पढ़ने से ऐसा जान पड़ता है कि लेखक बहुत मोटी अक्ल के पाठकों के लिए लिख रहा है। एक-एक सीधी बात कुछ हेरफेर कहीं-कहीं केवल शब्दों के ही—के साथ पाँच छः तरह से पाँच छः वाक्यों में कही हुई मिलती है। उनकी यही प्रवृत्ति उनकी गद्य शैली निर्धारित करती है। उनके लेखों में छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग अधिक मिलता है। नपे तुले वाक्य को कई बार शब्दों के कुछ हेरफेर के साथ कहने का ढङ्ग वही है जो वाद या संवाद में बहुत शान्त होकर समझाने बुझाने के काम में लाया जाता है। उनकी यह व्यास शैली विपक्षी को कायल करने के प्रयत्न में बड़े काम की है।

इस बात के उनके दो लेख 'क्या हिन्दी नाम की कोई भाषा ही नहीं' (सरस्वती सन् १९१३) और 'आर्य समाज का कोप' (सरस्वती १९१४) अच्छे उदाहरण हैं। उनके कुछ अंश नीचे दिये जाते हैं—

(१) "आप कहते हैं कि प्राचीन भाषा मर चुकी है और उसे मरे तीनसौ वर्ष हुए। इस पर प्रार्थना है कि न वह कभी मरी और न उसके मरने के कोई लक्षण ही दिखाई देते हैं। यदि आप कभी आगरा, मथुरा, फर्रुखाबाद, मैनपुरी और इटावे तशरीफ ले जाएँ तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृपा करके यहाँ के एक-आध अपर प्राइमरी और मिडिल स्कूल का मुआइना न सही तो मुलाहजा अवश्य ही करें। ऐसा करने से आपको मालूम हो जाएगा कि जिसे आप मुर्दा समझ रहे हैं, वह अब तक इन जिलों में बोली जाती है। अगर आपकी इस 'भाखा' नामक भाषा को मरे तीनसौ वर्ष हुए तो कृपा करके यह बताइए कि श्रीमान ही के सधर्मी काजिमअली आदि कवियों ने किस भाषा में कविता की है? १७०० ई० से लेकर ऐसे अनेक मुसलमान कवि हो चुके हैं जिन्होंने 'भाखा' में बड़े-बड़े ग्रन्थ बनाये हैं। हिन्दू कवियों की आप खबर न रखते तो कोई विशेष आक्षेप की बात न थी।

× × ×

आनरेबिल असगरअली खाँ की पाँचवीं उक्ति यह है कि उर्दू या हिन्दुस्तानी ही यहाँ की सार्वदेशिक भाषा है। आपके इस कथन की सचाई की जाँच सहज ही में हो सकती है। ऊपर हाली साहब के दीवान और दूसरे साहित्य-सम्मेलन के सभापति के भाषण से जो अवतरण दिये गये हैं उन्हें खाँसाहब बारी-बारी से एक बङ्गाली, एक मदरासी, एक गुजराती और एक महाराष्ट्री को जो इस प्रान्त के निवासी न हों, दिखावें और उनसे यह कहें कि उनका मतलब हमें समझा दीजिए। बस तत्काल ही आपको मालूम हो जायगा कि दो में से कौन भाषा अन्य प्रान्तवासी अधिक समझते हैं। श्रीयुत असगर अली खाँ के इस कथन से कि उर्दू और हिन्दुस्तानी इ ज द लिंगुआ फ्रैंका आव द कंट्री' एक भेद की बात खुल गई। वह यह कि आप लोगों की राय में यह हिन्दुस्तानी और कुछ नहीं, उर्दू ही का एक दूसरा नाम है। अतएव समझना चाहिए कि जब हिन्दुस्तानी भाषा के प्रयोग पर जोर दिया जाता है तब 'हिन्दुतानी' नाम की आड़ में उर्दू ही का पक्ष लिया जाता है। और बेचारी हिन्दी के बहिष्कार की चेष्टा की जाती है।

जिस समाज के विद्यार्थी बच्चों तक को अपने दोषों पर धूल डालकर दूसरों को धमकाने और बिना पूछे ही उन्हें 'नेक सलाह' देने का अधिकार है उसके बड़ों और विद्वानों के पराक्रम की सीमा कौन निर्दिष्ट कर सकेगा?

× × ×

हमारे पास इससे भी बढ़कर कुतूहलजनक पत्र आये हैं। बनावटी या सच्चा नाम देकर बी० सिंह नाम के एक महाशय ने आगरे से एक पोस्टकार्ड हमें भेजा है। उसमें अनेक दुर्वचनों और अभिशापों के अनन्तर इस बात पर दुःख प्रकट किया गया है कि राज्य अँग्रेजी है, अन्यथा हमारा सिर धड़ से अलग कर दिया जाता। भाई सिंह! दुख मत करो आर्य समाज की धर्मोन्नति होती हो तो—

'कर कुठारु, आगे यह सीसा'।

द्विवेदीजी का भाषा-सुधार

गद्य साहित्य-प्रसार के द्वितीय उत्थान के भीतर बहुत दिनों तक व्याकरण की शिथिलता और भाषा की रूपहानि दोनों साथ-साथ दिखाई पड़ती रहीं। व्याकरण के व्यतिक्रम और भाषा की अस्थिरता पर तो थोड़े ही दिनों में कोप दृष्टि पड़ी पर भाषा की रूपहानि की ओर उतना ध्यान नहीं दिया गया। पर जो कुछ हुआ वही बहुत हुआ और उसके लिए हमारा हिन्दी साहित्य पण्डित महावीरप्रसाद द्विवेदी का सदा ऋणी रहेगा। व्याकरण की शुद्धता और भाषा की सफाई के प्रवर्त्तक द्विवेदीजी ही थे। 'सरस्वती' के सम्पादक के रूप में उन्होंने आई हुई पुस्तकों के भीतर व्याकरण और भाषा की अशुद्धियां दिखा दिखाकर लेखकों को बहुत कुछ सावधान कर दिया। यद्यपि कुछ हठी और अनाड़ी लेखक अपनी भूलों और गलतियों का समर्थन तरह-तरह की बातें बनाकर करते रहे, पर अधिकतर लेखकों ने लाभ उठाया और लिखते समय व्याकरण आदि का पूरा ध्यान रखने लगे। गद्य की भाषा पर द्विवेदीजी के इस शुभ प्रभाव का स्मरण जब तक भाषा के लिए शुद्धता आवश्यक समझी जाएगी तब तक बना रहेगा।

द्विवेदीजी की आलोचना

समालोचना का आरंभ यद्यपि भारतेन्दु के जीवनकाल में ही कुछ-न कुछ हो गया था पर उसका कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक वैभव इस द्वितीय उत्थान में ही दिखाई पड़ा। श्रीयुत पण्डित महावीरप्रसादजी द्विवेदी ने पहले पहल विस्तृत आलोचना का रास्ता निकाला। फिर मिश्रबन्धुओं और पण्डित पद्मसिंह शर्मा ने अपने ढङ्ग पर कुछ पुराने कवियों के सम्बन्ध में विचार प्रकट किए। पर यह सब आलोचना अधिकतर बहिरङ्ग बातों तक ही रही। भाषा के गुण-दोष, रस, अलङ्कार आदि की समीचीनता, इन्हीं सब परम्परागत विषयों तक पहुँची। स्थायी साहित्य में परिगणित होने वाली समालोचना जिसमें किसी कवि की अन्तर्वृत्ति का सूक्ष्म व्यवच्छेद होता है, उसकी मानसिक प्रवृत्ति की विशेषताएँ दिखाई जाती हैं, बहुत ही कम दिखाई पड़ी।

पण्डित महावीर प्रसाद द्विवेदी ने अपनी 'नैषध चरित्र चर्चा' में नैषध के कई एक बड़ी दूर की सूझ वाले अत्युक्तिपूर्ण पद्यों को अस्वाभाविक और सुरुचिविरुद्ध कह दिया। फिर क्या था, पं० माधवप्रसाद मिश्र एक बारगी फिर पड़े और उनकी बातों का अपने ढङ्ग पर उत्तर देते हुए लगे हाथों पं० श्रीधर पाठक के 'गुनवंत हेमन्त' नाम की एक कविता की—जिसकी द्विवेदीजी ने बड़ी प्रशंसा की थी, नीरसता और इतिवृत्तात्मकता भी दिखाई। यह विवाद कुछ दिन तक चला था।

बाबू बालमुकुन्द गुप्त बहुत ही चलते पुरजे और विनोदशील लेखक थे अतः कभी-कभी छेड़छाड़ भी कर बैठते थे। पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी ने जब 'सरस्वती' (भाग ५ संख्या ११) के अपने प्रसिद्ध 'भाषा और व्याकरण' शीर्षक लेख मे 'अनिस्थिरता' शब्द का प्रयोग कर दिया तब इन्हें छेड़छाड़ का मौका मिल गया और इन्होंने 'आत्माराम' के नाम से द्विवेदी के कुछ प्रयोगों की आलोचना करते हुए एक लेखमाला निकाली जिसमें चुहलबाजी का पुट पूरा था। द्विवेदीजी ऐसे गम्भीर प्रकृति के व्यक्ति को भी युक्तिपूर्ण उत्तर के अतिरिक्त इनकी विनोदपूर्ण विगर्हणा के लिए 'सरगौ नरक ठिकाना नाहिं' शीर्षक देकर कुछ फबता हुआ आल्हा 'कल्लू अल्हइत' के नाम से लिखना पड़ा।

कहने की आवश्यकता नहीं कि हमारे हिन्दी-साहित्य में समालोचना पहले पहल केवल गुणदोष दर्शन के रूप में प्रकट हुई। लेखों के रूप में इसका सूत्रपात बाबू हरिश्चन्द्र के समय में ही हुआ। लेख के रूप में पुस्तकों की विस्तृत समालोचना उपाध्याय पं० बदरीनारायण चौधरी ने अपनी 'आनन्द कादंबिनी' में शुरू की। लाला श्रीनिवासदास के 'संयोगिता स्वयंवर' नाटक की बड़ी विशद और कड़ी आलोचना, जिसमें दोषों का उद्घाटन बड़ी बारीकी से किया गया था, उक्त पत्रिका में निकली थी। पर किसी ग्रन्थकार के गुण अथवा दोष ही दिखाने के लिए कोई पुस्तक भारतेन्दु के समय में न निकली थी। इस प्रकार की पहली पुस्तक पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी की हिन्दी कालिदास की आलोचना' थी जो इस द्वितीय उत्थान के आरम्भ में ही निकली। इसमें लाला सीताराम बी० ए० के अनुवाद किये हुए नाटकों के भाषा तथा भाव सम्बन्धी दोष बड़े विस्तार से दिखाए गए हैं। यह अनुवादों की समालोचना थी, अतः भाषा की त्रुटियों और मूलभाव के विपर्यय आदि के आगे जा ही नहीं सकती थी। दूसरी बात यह कि इसमें दोषों का ही उल्लेख हो सका, गुण नहीं ढूँढ़े गए।

इसके उपरान्त द्विवेदीजी ने कुछ संस्कृत कवियों को लेकर दूसरे ढङ्ग की अर्थात् विशेषता परिचायक समीक्षाएँ भी निकालीं। इस प्रकार की पुस्तकों में 'विक्रमांकदेवचरित चर्चा' और 'नैषध चरित चर्चा' मुख्य हैं। इनमें कुछ तो पंडित-मण्डली में प्रचलित रूढ़ि के अनुसार चुने हुए श्लोकों की खूबियों पर साधुवाद है (जैसे, क्या उत्तम उत्प्रेक्षा है) और कुछ भिन्न-भिन्न विद्वानों के मतों का संग्रह है। इस प्रकार की पुस्तकों से संस्कृत न जानने वाले हिन्दी पाठकों को दो तरह की जानकारी हासिल होती है—संस्कृत के किसी कवि की कविता किस ढङ्ग की है, और वह पंडितों और विद्वानों के बीच कैसी समझी जाती है। द्विवेदीजी की तीसरी पुस्तक 'कालिदास की निरंकुशता' में भाषा और व्याकरण के वे व्यतिक्रम इकट्ठे किए गये हैं जिन्हें संस्कृत के विद्वान लोग कालिदास की कविता में बताया करते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। यह पुस्तक हिन्दी वालों के या संस्कृत वालों के फायदे के लिए लिखी गई, यह ठीक ठीक नहीं समझ पड़ता। जो हो, इन पुस्तकों को एक मुहल्ले में फैली बातों से दूसरे मुहल्ले वालों को कुछ परिचित कराने के प्रयत्न के रूप में समझना चाहिए, स्वतंत्र समालोचना के रूप में नहीं।

यद्यपि द्विवेदीजी ने हिन्दी के बड़े-बड़े कवियों को लेकर गम्भीर साहित्य समीक्षा का स्थायी साहित्य नहीं प्रस्तुत किया, पर नई निकली पुस्तकों की भाषा आदि की खरी आलोचना करके हिन्दी साहित्य, का बड़ा भारी उपकार किया। यदि द्विवेदीजी न उठ खड़े होते तो जैसी अव्यवस्थित, व्याकरण विरुद्ध और ऊटपटाङ्ग भाषा चारों ओर दिखाई पड़ती थी, उसकी परम्परा जल्दी न रुकती। उनके प्रभाव से लेखक सावधान हो गये और जिनमें भाषा की समझ और योग्यता थी उन्होंने अपना सुधार किया।

द्विवेदीजी का काव्य-निर्माण

रीतिकाल में रसों और अलङ्कारों के उदाहरणों के रूप में रचना होने से और कुछ छन्दों की परिपाटी बँध जाने से हिन्दी-कविता जकड़ सी उठी थी। हरिश्चन्द्र के सहयोगियों में काव्य-धारा को नव-नव विषयों की ओर मोड़ने की प्रवृत्ति दिखाई पड़ी, पर भाषा ब्रज ही रहने दी गई और पद्य के ढाँचों, अभिव्यञ्जना के ढङ्ग तथा प्रकृति के स्वरूप निरीक्षण आदि में स्वच्छन्दता के दर्शन न हुए। इस प्रकार की स्वच्छन्दता का आभास पहले पहल पं० श्रीधर पाठक ने ही दिया। उन्होंने प्रकृति के रूढ़िवद्ध रूपों तक ही न रहकर अपनी आँखों से भी उसके रूपों को देखा। 'गुनवन्त हेमन्त' में वे गांव में उपजने वाली मूली मटर ऐसी वस्तुओं को भी प्रेम से सामने लाये जो परम्परागत ऋतुवर्णनों के भीतर नहीं दिखाई पड़ती थीं। इसके लिए उन्हें पं० माधवप्रसाद मिश्र की बौछार भी सहनी पड़ी थी। उन्होंने खड़ी बोली पद्य के लिए सुन्दर लय और चढ़ाव-उतार के कई नये ढाँचे भी निकाले और इस बात का ध्यान रखा कि छन्दों का सुन्दर लय से पढ़ना एक बात है, रागरागिनी गाना दूसरी बात। ख्याल या लावनी की लय पर जैसे 'एकान्तवासी योगी' लिखा गया है वैसे ही सुथरे साइयों के सुधक्कड़ी ढङ्ग पर 'जगत-सचाई-सार', जिसमें कहा गया कि—'जगत है सचा तनिक न कच्चा समझो बच्चा। इसका भेद।' स्वर्गीय 'वीणा' में उन्होंने उस परोक्ष दिव्य सङ्गीत की ओर रहस्यपूर्ण संकेत किया जिसके ताल-सुर पर यह सारा विश्व नाच रहा है। इन सब बातों का विचार करने पर श्रीधर पाठक ही सच्चे स्वच्छन्दतावाद (रोमांटिसिज्म) के प्रवर्तक ठहरते हैं।

खेद है कि सच्ची और स्वाभाविक स्वच्छंदता का यह मार्ग हमारे काव्य क्षेत्र के बीच चल न पाया। बात यह है कि उसी समय पिछले संस्कृत काव्य के संस्कारों के साथ पं० महावीरप्रसाद द्विवेदीजी हिन्दी-साहित्य क्षेत्र में आये जिनका प्रभाव गद्य साहित्य और काव्य निर्माण दोनों पर बहुत ही व्यापक पड़ा। हिन्दी में परम्परा से व्यवहृत छन्दों के स्थान पर संस्कृत के वृत्तों का चलन हुआ। जिसके कारण संस्कृत पदावली का समावेश बढ़ने लगा। भक्तिकाल और रीतिकाल की परिपाटी के स्थान पर पिछले संस्कृत साहित्य की पद्धति की ओर लोगों का ध्यान बँटा। द्विवेदीजी 'सरस्वती' पत्रिका द्वारा बराबर कविता में बोलचाल की सीधी-सादी भाषा का आग्रह करते रहे जिससे इतिवृत्तात्मक (मैटर आफ फैक्ट) पद्यों का खड़ी बोली में ढेर लगने लगा।

द्विवेदीजी कुछ दिनों तक बम्बई की ओर रहे थे जहाँ मराठी के साहित्य से उनका परिचय हुआ। उसके साहित्य का प्रभाव उन पर बहुत कुछ पड़ा। मराठी कविता में अधिकतर संस्कृत के वृत्तों का व्यवहार होता है। पद-विन्यास भी प्रायः गद्य का सा ही रहता है। बंग भाषा की सी "कोमल कांत पदावली" उसमें नहीं पाई जाती। इसी मराठी के नमूने पर द्विवेदीजी ने हिन्दी में पद्य रचना शुरू की। पहले तो उन्होंने ब्रजभाषा का ही अवलम्बन किया। नागरी प्रचारिणी पत्रिका में प्रकाशित 'नागरी तेरी यह दशा' और रघुवंश का कुछ आधार लेकर रचित 'अयोध्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का विलाप' नाम की उनकी कविताएँ संस्कृत वृत्तों में पर ब्रजभाषा में ही लिखी गई थीं। जैसे—

श्रीयुक्त नागरि निहारि दशा तिहारी।
होवै विषाद मन मांहि अतीव भारी।।
प्राकार जासु नभ-मण्डल में समाने।
प्राचीर जासु लखि लोकप हू सकाने।।
जाकी समस्त सुनि संपति की कहानी।
नीचे नवाय सिर देवपुरी लजानी।।

इस आधुनिक काल में ब्रज-भाषा पद्य के लिए संस्कृत वृत्तों का व्यवहार पहले पहल स्वर्गीय पं० सरयू-प्रसाद मिश्र ने रघुवंश महाकाव्य के अपने 'पद्यबद्ध भाषानुवाद' में किया था जिसका प्रारम्भिक अंश भारतेन्दु को 'कवि वचन सुधा' में प्रकाशित हुआ था। पूरा अनुवाद बहुत दिनों पीछे संवत् १९६८ में पुस्तकाकार छपा। द्विवेदीजी ने आगे चलकर ब्रजभाषा एकदम छोड़ ही दी और खड़ी बोली में ही काव्य-रचना करने लगे।

मराठी का संस्कार तो था ही, पीछे जान पड़ता है, उनके मनमें वर्डस्वर्थ का वह पुराना सिद्धांत भी कुछ जम गया था कि 'गद्य और पद्य का पदविन्यास एक ही प्रकार का होना चाहिए।' पर यह प्रसिद्ध बात है कि वर्डस्वर्थ का वह सिद्धान्त असंगत सिद्ध हुआ था और वह आप अपनी उत्कृष्ट कविताओं में उसका पालन न कर सका था। द्विवेदीजी ने भी बराबर उक्त सिद्धांत के अनुकूल रचना नहीं की है। अपनी कविताओं के बीच-बीच में सानुपास कोमल पदावली का व्यवहार उन्होंने किया है। जैसे—

सुरम्य रूपे, रसराशि-रंजिते,
विचित्र वर्णाभरणे! कहाँ गई?
अलौकिकानन्दविधायिनी महा
कवीन्द्रकान्ते, कविते! अहो कहाँ?
मांगल्य-मूलमय वारिद-वारि-दृष्टि।।

पर उनका जोर बराबर इस बात पर रहता था कि कविता बोलचाल की भाषा में होनी चाहिए। बोलचाल से उनका मतलब ठेठ या हिन्दुस्तानी का नहीं रहता था। परिणाम यह हुआ कि उनकी भाषा बहुत अधिक गद्यवत हो गई। पर जैसा कि गोस्वामी तुलसीदासजी ने कहा है—'गिरा अर्थ जल बीचि सम कहियत भिन्न न भिन्न'—भाषा के विचार अलग-अलग नहीं रह सकते। उनकी अधिकतर कविताएँ इतिवृत्तात्मक (Matter of fact) हुई। उनमें वह लाक्षणिकता, वह चित्रमयी भावना और वह वक्रता बहुत कम आ पाई जो रस संचार की गति को तीव्र और मन को आकर्षित करती हैं। 'यथा', 'सर्वथा', 'तथैव' ऐसे शब्दों के प्रयोग ने उनकी भाषा को और भी अधिक गद्य का स्वरूप दे दिया।

यद्यपि उन्होंने संस्कृत वृत्तों का व्यवहार अधिक किया है, पर हिन्दी के कुछ चलते छन्दों में भी उन्होंने बहुत सी कविताएँ (जैसे, विधि-विडम्बना) रची हैं जिनमें संस्कृत शब्दों का प्रयोग भी कम है। अपना 'कुमारसम्भवसार' उन्होंने उसी ढङ्ग पर लिखा है। कुमारसम्भव का यह अनुवाद बहुत ही उत्तम हुआ है। इसमें मूल के भाव बड़ी सफाई से आये हैं। संस्कृत के अनुवादों में मूल का भाव लाने के प्रयत्न में भाषा में प्रायः जटिलता आ जाया करती है। पर इसमें यह बात जरा भी नहीं है। द्विवेदीजी की रचनाओं के दो नमूने—

आरोग्ययुक्त बलयुक्त सुपुष्ट गात,
ऐसा जहाँ युवक एक न दृष्टि आता।
सारी प्रजा निपट दीन दुखी जहाँ है,
कर्त्तव्य क्या न कुछ भी तुझको वहाँ है?

इन्द्रासन के इच्छुक किसने करके तप अतिशय भारी,
की उत्पन्न असूया तुममें, मुझसे कहो कथा सारी।
मेरा यह अनिवार्य शरासन पाँच-कुसुम-सायक धारी,
अभी बना लेवे तत्क्षण ही उसको निज आज्ञाकारी॥

द्विवेदीजी की कविताओं का संग्रह 'काव्यमंजूषा' नाम की पुस्तक में हुआ है। उनकी कविताओं के दूसरे संग्रह का नाम 'सुमन' है।

द्विवेदीजी के प्रभाव और प्रोत्साहन से हिन्दी के कई अच्छे अच्छे कवि निकले जिनमें बाबू मैथिलीशरण गुप्त, पं० रामचरित उपाध्याय और पं० लोचनप्रसाद पाण्डेय मुख्य हैं।

द्वितीय उत्थान के आरम्भ काल में हम पं० महा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वीरप्रसाद द्विवेदी को पद्य रचना की एक प्रणाली के प्रवर्तक के रूप में पाते हैं। खड़ी बोली के पद्य-विधान पर भी आपका पूरा-पूरा असर पड़ा। पहली बात तो यह हुई थी कि उनके कारण भाषा में बहुत कुछ सफाई आई। बहुत से कवियों की भाषा शिथिल और अव्यवस्थित होती थी और बहुत से लोग ब्रज और अवधी आदि का मेल भी कर देते थे। 'सरस्वती' के सम्पादन-काल में उनकी प्रेरणा से बहुत से नये लोग खड़ी बोली में कविता करने लगे। उनकी भेजी हुई कविताओं की भाषा आदि दुरुस्त करके वे 'सरस्वती' में दिया करते थे। इस प्रकार के लगातार संशोधन से धीरे-धीरे बहुत से कवियों की भाषा साफ हो गई। उन्हीं नमूनों पर और लोगों ने भी अपना सुधार किया।

द्वितीय उत्थान में कुछ दिन ब्रजभाषा के साथ-साथ चलकर खड़ी बोली क्रमशः अग्रसर होने लगी; यहाँ तक कि नई पीढ़ी के कवियों को उसी का समय दिखाई पड़ा। स्वदेश गौरव और स्वदेश प्रेम की जो भावना प्रथम उत्थान में जगाई गई थी उसका अधिक प्रसार द्वितीय उत्थान में हुआ और 'भारत-भारती' ऐसी पुस्तक निकली। इस भावना का प्रसार तो हुआ पर इसकी अभिव्यञ्जना में प्रतिभा प्रगल्भता न दिखाई पड़ी।

शैली में प्रगल्भता और विचित्रता चाहे न आई हो, पर काव्य भूमि का प्रसार अवश्य हुआ। प्रसार और सुधार की जो चर्चा नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना के समय से ही रह-रहकर थोड़ी बहुत होती आ रही थी वह 'सरस्वती' निकलने के साथ ही कुछ अधिक ब्यौरे के साथ हुई। उस पत्रिका के प्रथम दो-तीन वर्षों के भीतर ही ऐसे लेख निकले जिनमें साफ-साफ कहा गया कि अब नायिका भेद और शृङ्गार में ही बँधे रहने का जमाना नहीं है, संसार में न जाने कितनी बातें हैं जिन्हें लेकर कवि चल सकते हैं। इस बात पर द्विवेदीजी भी बराबर जोर देते और कहते रहे कि 'कविता के बिगड़ने और उसकी सीमा परिमित हो जाने से साहित्य पर भारी आघात होता है।' द्विवेदीजी 'सरस्वती' के सम्पादन काल में कविता में नयापन लाने के बराबर इच्छुक रहे। नयापन आने के लिए वे नए-नए विषयों को नयापन या नानात्व प्रधान समझते रहे और छन्द, पदावली अलङ्कार आदि का नयापन उसका अनुगामी। रीतिकाल की शृङ्गारी कविता की ओर लक्ष्य करके उन्होंने लिखा—

"इस तरह की कविता सैकड़ों वर्ष से होती आ रही है। अनेक कवि हो चुके उन्होंने इस विषय पर न मालूम क्या-क्या लिख डाला है। इस दशा में नए कवि अपनी कविता में नयापन कैसे ला सकते हैं? वही तुक, वही छन्द, वही शब्द, वही उपमा, वही रूपक। इस पर भी लोग पुरानी लकीर बराबर पीटते जाते हैं। कवित्त, सवैये, दोहे, सोरठे लिखने से बाज नहीं आते।"

द्वितीय उत्थान में काव्य की नूतन परम्परा का अनेक विषयस्पर्शी प्रसार अवश्य हुआ पर द्विवेदीजी के प्रभाव से एक ओर उसमें भाषा की सफाई आई, दूसरी ओर उसका स्वरूप गद्यवत रूखा इतिवृत्तात्मक और अधिकतर बाह्यार्थनिरूपक होगया। तृतीय उत्थान में जो प्रतिवर्तन हुआ और पीछे 'छायावाद' कहलाया वह इसी द्वितीय उत्थान की कविता के विरुद्ध कहा जा सकता है। उसका प्रधान लक्ष्य काव्यशैली की ओर था, वस्तुविधान की ओर नहीं। अर्थभूमि या वस्तुभूमि का तो उसके भीतर बहुत सङ्कोच हो गया। समन्वित विशाल भावनाओं को लेकर चलने की ओर ध्यान न रहा।

—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' से सङ्कलित।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्विवेदी युग एवं उसका गद्य साहित्य

श्री गोपीचन्द गुप्त

द्विवेदी युग का प्रारम्भ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के कथनानुसार संवत् १९५० से हुआ। इस युग की मूल-प्रवृत्ति सुधारवाद की रही। भाषा को व्याकरण की कसौटी पर कसकर शुद्ध किया गया। महावीरप्रसाद द्विवेदी ने भाषा के क्षेत्र में समस्त साहित्यकारों का मार्ग दर्शन किया। इसका विवेचन करते हुए आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है—"गद्य की भाषा पर द्विवेदी जी के इस शुभ प्रभाव का स्मरण जब तक भाषा के लिये शुद्धता आवश्यक समझी जायगी तब तक बना रहेगा।" काव्य में सुधार एवं बुद्धिवादी स्वर की विशेष गूँज रही। जन चेतना के क्षेत्र में आर्य-समाज ने जो योगदान दिया वही योगदान साहित्य के क्षेत्र में आचार्य द्विवेदीजी का रहा। इस युग के साहित्यकारों का मूल उद्देश्य सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन कर जन-समाज के सामने सुधार का नया आदर्श प्रस्तुत करना था, जिसको बुद्धि की कसौटी पर कसा जा सके। नागरी-प्रचारिणी सभा की स्थापना से हिन्दी साहित्य के विकास को गति मिली। इस सभा ने हिन्दी विशाल-शब्द कोष के प्रकाशन की व्यवस्था की। डाक्टर श्याम-सुन्दर दास ने इसका सम्पादन किया। इसमें लगभग एक लाख शब्दों का सङ्कलन किया गया। सभा ने हस्त-लिखित ग्रन्थों के प्रकाशन की व्यवस्था भी की एवं शोध-कार्य में अपना महत्वपूर्ण योग दिया। स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल काँगड़ी की स्थापना की जिसमें हिन्दी भाषा के माध्यम से उच्च-शिक्षा की व्यवस्था की गई। इस गुरुकुल से निकले हुए स्नातकों ने हिन्दी के विकास में अपना उल्लेखनीय योगदान दिया।

अंग्रेजी भाषा के उच्च विचारधारा से परिचित एवं स्वभाषा पर यथेष्ट अधिकार रखने वाले सुयोग्य लेखकों के प्रयास के फलस्वरूप हिन्दी भाषा में अर्थोद्घाटिनी शक्ति का विकास हुआ एवं अभिव्यञ्जना प्रणाली को पोषण मिला, गुम्फित विचार सूत्रों के व्यक्त करने की शक्ति हिन्दी को प्राप्त हुई।

इस काल के गद्य-साहित्य के क्षेत्र में बहुमुखी विकास हुआ। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से हम गद्य साहित्य को निम्न श्रेणियों में विभक्त कर सकते हैं।

नाटक—इस युग में मौलिक नाटकों का सृजन हुआ। किशोरीलाल गोस्वामी ने चौपट चपेट एवं मयंक मंजरी नाटक लिखे जो हिन्दी साहित्य में विशेष ख्याति प्राप्त न कर सके। हिन्दी के सुविख्यात कवि हरिऔध ने रुक्मिणी परिणय, प्रद्युम्न विजय व्यायोग नाटकों का सृजन किया जो भी सामान्य स्तर के थे। बल्देवप्रसाद मिश्र ने प्रभात मिलन, मीराबाई, लल्ला बाबू नामक नाटक लिखे। रायदेवीप्रसाद पूर्ण ने चन्द्रकला भानु-कुमार नाटक का सृजन किया। इस नाटक में इतिहास के मध्य-युग के राजकुमार एवं राजकुमारियों के जीवन का दिग्दर्शन प्रस्तुत किया गया। यह नाटक शुद्ध साहित्यिक उद्देश्य से लिखा हुआ है, उसमें अभिनेयता नहीं मिलती। बाबू राधाकृष्णदास द्वारा रचित महाराणा प्रताप नाटक ने विशेष ख्याति प्राप्त की। अभिनय की दृष्टि से यह नाटक अच्छा बन पड़ा।

बङ्ग-भाषा, संस्कृत एवं अंग्रेजी के महत्वपूर्ण नाटकों का हिन्दी में अनुवाद हुआ। बाबू रामकृष्ण वर्मा ने बङ्गला भाषा के वीर नारी कृष्णाकुमारी एवं पद्मावती नाटकों का हिन्दी भाषा में रूपान्तर प्रस्तुत किया। बाबू गोपाल राम ने बनवीर, बभ्रुवाहन, देश दशा, विद्या-विनोद एवं रवीन्द्र बाबू के चित्राङ्गदा का अनुवाद किया। पण्डित गोपीनाथ प्रोहित ने अंग्रेजी भाषा के शेक्सपियर द्वारा रचित रोमियो जूलियट, एज यू लाइक इट तथा मरचेन्ट आफ वेनिस का हिन्दी अनुवाद किया। मथुरा प्रसाद चौधरी ने शेक्सपियर के प्रसिद्ध नाटक मैकबैथ का हिन्दी रूपान्तर प्रस्तुत किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीताराम ने संस्कृत नाटकों का हिन्दी में अनुवाद किया। उन्होंने संस्कृत के नाटक मेघदूत का घनाक्षरी छन्द में अनुवाद किया। ज्वालाप्रसाद मिश्र ने वेणीसंहार एवं अभिज्ञान शाकुन्तल का हिन्दी रूपान्तर किया। संस्कृत के भवभूति कृत उत्तर रामचरित और मालती माधव नाटकों का जो अनुवाद कविरत्न पं० सत्यनारायण ने किया, उनमें मूल जैसा आनन्द मिलता है। इन नाटकों की काफी प्रसिद्धि रही। हिन्दी में इनका स्थायी स्थान रहेगा।

इस काल की मूल प्रवृत्ति पौराणिक एवं ऐतिहासिक प्रसङ्गों से कथावस्तु लेकर नाटक-साहित्य प्रस्तुत करना था। वर्तमान सामाजिक एवं पारिवारिक समस्याओं का सम्बन्ध रखने वाले प्रसङ्गों से उन्होंने कोई प्रेरणा नहीं ली। नाटक-साहित्य के दृष्टिकोण से यह काल-विशेष ख्याति प्राप्त न कर सका।

उपन्यास—इस युग में साहित्यकारों ने कई अंग्रेजी एवं बङ्गला भाषा के उपन्यासों का हिन्दी में अनुवाद किया तथा कई मौलिक उपन्यासों का सृजन भी किया गया। अनुवाद एवं मौलिक उपन्यासों के सृजन की दृष्टि से इस युग में विशेष प्रगति हुई।

बाबू गोपाल राम (गहमर) ने बङ्ग भाषा के गार्हस्थ उपन्यासों का हिन्दी में अनुवाद किया, जिनमें चतुर चञ्चला, भानमती, नये बाबू, बड़ा भाई, देवरानी, जेठानी की बहिन, तीन पतोहू उल्लेखनीय हैं। अनुवाद की भाषाओं में वक्रता एवं चटपटापन है। बङ्किमचन्द्र रमेशदत्त चण्डी चरणसेन तथा शरत्चन्द्र के उपन्यासों का भी हिन्दी में अनुवाद किया गया। अंग्रेजी उपन्यास रेनल्डस कृत लैला, लण्डन रहस्य एवं टाम काका की कुटिया का भी हिन्दी में अनुवाद हुआ। मौलिक सृजन के क्षेत्र में धूम मचाने वाले बाबू देवकीनन्दन खत्री का नाम उल्लेखनीय है। खत्रीजी के चन्द्रकान्ता सन्तति एवं चन्द्रकान्ता के अध्ययन ने हिन्दी के प्रसार एवं वर्द्धन में विशेष योग दिया। इन उपन्यासों ने कई हिन्दी लेखकों को भी जन्म दिया। देवकीनन्दनजी की भाषा सामान्य थी। साधारण पढ़ा लिखा आदमी उपन्यासों को भली प्रकार से समझ सकता है।

पण्डित किशोरीलाल गोस्वामीजी ने ६५ उपन्यासों की रचना की। वे उपन्यास के क्षेत्र में रम गये। उन के उपन्यासों में तारा, चपला, तरुण तपस्विनी, रजिया बेगम, लीलावती, राजकुमारी एवं लवंगलता उल्लेखनीय हैं। पण्डित अयोध्यासिंह उपाध्यायजी ने ठेठ हिन्दी का ठाठ, अधखिला फूल की रचना की। बाबू ब्रजनन्दन सहाय ने सौन्दर्योपासक एवं राधाकान्त नामक उपन्यास का सृजन किया।

इस युग में काव्य कला की कोटि में आने वाले भाव प्रधान उपन्यासों का सृजन नहीं हुआ। भावों अथवा मनोविकारों की व्यञ्जना करने वाले उपन्यासों का भी सर्वथा अभाव सा रहा। घटनाओं का उत्कर्ष दिखलाने वाले उपन्यासों का भी प्रायः अभाव सा रहा।

कहानियाँ—कहानियों के क्षेत्र में पर्याप्त विकास हुआ। सर्व प्रथम किशोरीलाल गोस्वामी ने इन्दुमती एवं गुल बहार नामक कहानियाँ लिखीं जो सरस्वती में प्रकाशित हुईं। रामचन्द्र शुक्ल की 'ग्यारह वर्ष का समय' तथा बंग महिला की 'दुलाई वाली' कहानी भी भाव पूर्ण हैं।

बाबू जयशङ्करप्रसाद की ग्राम नामक कहानी इन्दु में प्रकाशित हुई। इसके उपरान्त प्रसादजी ने आकाश द्वीप, बिसाती, प्रतिध्वनि, स्वर्ग के खण्डहर आदि महत्वपूर्ण कहानियों की रचना की। कहानी रचना के क्षेत्र में प्रसादजी की देन अविस्मरणीय है। विश्वम्भर नाथ शर्मा की 'रक्षा बन्धन' कहानी सन् १६१३ में सरस्वती में प्रकाशित हुई। संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की "उसने कहा था" कहानी ने हिन्दी कथा साहित्य में नया मोड़ दिया। कथा का प्रारम्भ ही पाठकों के हृदय में कौतूहल उत्पन्न करता है। तत्पश्चात् प्रेमचन्दजी ने कहानी के क्षेत्र में पदार्पण किया, उनकी कहानियां समाज की कहानियाँ हैं एवं उन्होंने कहानी के माध्यम से जन साधारण की व्यथा को व्यक्त किया है। सामाजिक चित्रों को प्रस्तुत करने में उनकी लेखनी खरी उतरी है।

निबन्ध - इस युग में अंग्रेजी निबन्धों का हिन्दी में अनुवाद हुआ। महावीरप्रसाद द्विवेदी ने लार्ड बेकन के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निबन्धों का हिन्दी में अनुवाद किया जो 'बेकन विचार रत्नावली' के नाम से प्रकाशित की गई। चिपलूणकर के मराठी निबन्धों का हिन्दी में अनुवाद गङ्गा प्रसाद अग्निहोत्री ने किया जो निबन्ध मालादर्श के नाम से प्रकाशित हुई। सरदार पूर्णसिंह ने भावात्मक निबन्धों की रचना की। मजदूरी और प्रेम, आचरण की सभ्यता, एवं सच्ची वीरता उनके उच्चकोटि के निबन्ध हैं। इनके निबन्धों में भावों को व्यक्त करने की अनूठी शैली है। निबन्धों में स्थल-स्थल पर लाक्षणिकता के दर्शन होते हैं। बाबू गुलाबरायजी ने भावात्मक तथा विचारात्मक निबन्धों की रचना की। बाबूजी की निबन्ध शैली पाठकों के हृदय पर जादू का सा असर डालने वाली है।

समालोचना—समालोचना का प्रारम्भ भारतेन्दु-काल से हुआ। आचार्य महावीरप्रसाद ने तत्कालीन प्रकाशित पुस्तकों की भाषा इत्यादि पर खरी आलोचना की। उन्होंने साहित्यकार एवं कवियों के लिए मार्ग प्रशस्त किया जिसके फलस्वरूप अव्यवस्थित भाषा का अन्त एवं विराम चिह्नों का विकास हुआ। द्विवेदीजी ने विस्तृत आलोचना के लिये मार्ग निमार्ण किया। मिश्र बन्धु एवं पद्मसिंह शर्मा ने अपने ढङ्ग से हिन्दी के पुराने कवियों की आलोचना प्रस्तुत की।

शर्माजी ने बिहारी पर आलोचनात्मक पुस्तक लिखी जिसके फलस्वरूप हिन्दी साहित्य में देव एवं बिहारी को लेकर एक परम्परा चल पड़ी। श्री कृष्ण बिहारी मिश्र ने देव एवं बिहारी का तुलनात्मक अध्ययन पाठकों के सामने प्रस्तुत किया। उन्होंने दोनों कवियों की साहित्यिक विशेषताओं का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया। लाला भगवानदीन ने देव एवं बिहारी पर एक आलोचनात्मक ग्रन्थ का सृजन किया एवं कृष्ण बिहारी मिश्र के कथन का समर्थन किया। श्री कृष्णबिहारी मिश्र ने मतिराम ग्रन्थावली निकाली। इसमें मिश्रजी ने भूमिका के रूप में तुलनात्मक आलोचना प्रस्तुत की।

जीवन-चरित—इस युग में जीवनचरित पर अनेक ग्रन्थों का प्रकाशन हुआ। माधवप्रसाद मिश्र ने विशुद्ध चरितावली की रचना की जिसमें स्वामी विशुद्धानन्दजी के जीवन का वृतान्त प्रस्तुत किया। बाबू शिवपूजनसहाय ने बाबू हरिश्चन्द्र का जीवन चरित लिखा जिसमें बाबू हरिश्चन्द्र के जीवन का सम्यक् वृतान्त प्रस्तुत किया गया। तत्पश्चात् आपने गोस्वामी तुलसीदासजी का जीवनचरित एवं चैतन्य महाप्रभु के जीवन चरित्रों की रचना की।

पत्रपत्रिकाएँ—द्विवेदीयुग की प्रमुख पत्रिका सरस्वती है। द्विवेदीजी ने इसके माध्यम से हिन्दी की बहुत बड़ी सेवा की। अपने सम्पादन काल में द्विवेदीजी ने नव लेखकों का मार्ग दर्शन किया। चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ने समालोचक नामक मासिक पत्रिका का सम्पादन किया उक्त पत्र के द्वारा गुलेरीजी ने अपनी अनूठी शैली में पाठकों के सामने अपने गम्भीर एवं पाण्डित्य पूर्ण लेख प्रस्तुत किये। नागरी, प्रचारिणी सभा ने भी एक पत्रके प्रकाशन की व्यवस्था की। जिसमें कई महत्वर्ण एवं गवेषणात्मक लेखों का प्रकाशन किया गया। सभा ने हिन्दी शब्द सागर का प्रकाशन कराया जिसमें लगभग एक लाख शब्दों का सङ्कलन हैं।

भाषा एवं व्याकरण—द्विवेदीजी ने हिन्दी भाषा की उत्पत्ति पर विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया। व्याकरण सम्बन्धी रचनाओं में कामताप्रसाद का नाम उल्लेखनीय है। गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझा ने 'प्राचीन लिपि माला' ग्रन्थ की रचना की। जगमोहनजी ने आर्य प्राकृत व्याकरण पर विस्तृत प्रकाश डाला। द्विवेदीजी ने हिन्दी भाषा के लिए सरस्वती की सहायता से बड़ा भारी काम किया।

द्विवेदी युग के साहित्यकार ने हिन्दी गद्य साहित्य के विकास में अविस्मरणीय योग दिया। भाषा परिमार्जन एवं विराम चिह्नों के क्षेत्र में द्विवेदीजी ने साहित्यकारों के सामने एक नया आदर्श प्रस्तुत किया। हरिश्चन्द्रकाल का सहित्यरूपी तरु द्विवेदी युग में जाकर पूर्ण विकसित हुआ एवं प्रसाद युग में जाकर उसकी सुमन सौरभ ने जन मानस को मुग्ध कर लिया।

—३०२, आकड़ों का रास्ता,
किशनपोल बाजार, जयपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खड़ी बोली की कविता और द्विवेदीजी

श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय "हरिऔध"

जिन दिनों खड़ी बोली की कविता पर आन्दोलन सफलता से चल रहा था, कोई ऐसा सञ्चालक उस समय तक उसको प्राप्त नहीं हुआ था, जो उसका मार्ग प्रशस्त करे और तन मन से इस कार्य में लग कर वह आदर्श उपस्थित करे, जिस पर अन्य लोग चल कर उसको उन गुणों से अलंकृत कर सकें, जो सत्कविता के लिए वांछनीय होते हैं। सौभाग्य से उस समय प्रसिद्ध मासिक-पत्रिका 'सरस्वती' का सम्पादकत्व लाभ कर पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी कार्य-क्षेत्र में उतरे और उन्होंने इस दिशा में प्रशंसनीय प्रयत्न किया। कविता-प्रणाली का मार्ग धीरे-धीरे प्रशस्त होता है, काल पाकर ही उसकी कोई पद्धति सुनिश्चित होती है। कार्य-क्षेत्र में आने पर ज्यों-ज्यों उसके दोष प्रकट होते हैं, उस पर तर्क-वितर्क और मीमांसाएँ होती हैं, त्यों-त्यों वह परिमार्जित बनती है और उसमें आवश्यकतानुसार सरस, सुन्दर और भावमयी पदावली का समावेश होता है। पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी ने जिस समय अपना कार्य प्रारम्भ किया उस समय हिन्दी खड़ी बोली की कविता का आरम्भिक काल था। उल्लेख योग्य दस-पाँच पद्य ग्रन्थ उस समय तक निर्मित हुये थे और भाषा एक अनिश्चित और असंस्कृत मार्ग पर चल रही थी। प्रत्येक लेखक खड़ी बोली की कविता-रचना का एक अपना सिद्धान्त रखता था और उसी के अनुसार कार्य-रत था। ऐसे अवसर पर जिन लोगों ने खड़ी बोली की कविता को उचित पथ पर चलाया, उनमें से पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी अन्यतम हैं। अपनी 'सरस्वती' नामक मासिक-पत्रिका में उन्होंने अधिकतर खड़ी बोली की कविता ही प्रकाशित करने की ओर दृष्टि रखी और अनेक कृत-विज्ञों को इस कार्य के लिए उत्साहित करके अपनी ओर आकर्षित किया। मुझको यह ज्ञात है कि जो खड़ी बोलचाल की कविताएँ उनके पास उस समय 'सरस्वती' में प्रकाशित करने के लिए आती थीं, उनका संशोधन वह बड़े परिश्रम से करते थे। संशोधित कविता को ही 'सरस्वती' में प्रकाशित करते थे। इससे बहुत बड़ा लाभ यह होता था कि खड़ी बोली की कविता करने वालों का ज्ञान बढ़ता था और वे यह जान सकते थे कि उनको किस मार्ग पर चलना चाहिए। इस प्रणाली से धीरे-धीरे खड़ी बोली की कविता का मार्ग भी प्रशस्त हो रहा था। पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी ने इतना ही नहीं किया, उन्होंने कुछ खड़ी बोली की रचनाएँ भी कीं और इस रीति से भी उन्होंने खड़ी-बोली की कविता-प्रणाली जनता के सामने उपस्थित की। उनका 'कुमार-सम्भव-सार' यद्यपि छोटी पुस्तक है परन्तु उसकी खड़ी बोली की कविता बहुत परिमार्जित और सुन्दर है। उसका प्रभाव भी उस काल की खड़ी बोली की कविता पर बहुत कुछ पड़ा। पं० महावीर-प्रसाद द्विवेदी संस्कृत के विद्वान् और उसके प्रेमी थे। इसलिये उनके गद्य और पद्य—दोनों की भाषा संस्कृत बहुला है। गद्य तो गद्य उनके पद्य में भी संस्कृत के कर्कश शब्द आ गये हैं। जिसका प्रभाव उनके शिष्यों की रचना पर भी पड़ा है।

— सा० स० अप्रैल १९३९ से।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवि-द्विवेदी

श्री गोपालप्रसाद व्यास

भारतेन्दु-काल से पहिले और उनके समय में भी साहित्य का इतिहास उन गोष्ठियों और समाजों का इतिहास है, जो या तो किसी शिष्य-परम्परा से सम्बन्धित थीं, अथवा रईसों की वे मजलिसें, जहाँ रूप और शब्द के रसिक एकत्र हुआ करते थे। कुछ स्वतन्त्र कवियों के भी समाज थे जहाँ काव्य-विषयक वार्तालाप हुआ करते थे। वहाँ शास्त्रीयता का दौर रहता, नायिकाओं की परख होती, अलङ्कारों की प्रतिस्पर्धा लगती और पिङ्गल के प्रश्न पूछे जाते। इन्हीं लोगों के हाथ साहित्य का तँबूरा टिका हुआ था, जिस पर रीतिकालीन झूठी रागनियाँ गाई जाती थीं।

भारतेन्दु को आदर्श मानकर कवियों ने उसी प्राचीन परिपाटी को जारी रखा। द्विवेदीजी ने इस बढ़ती हुई अस्वाभाविक शृङ्गार-भावना का विरोध किया। १९०३ की सरस्वती सं० २-३ में आपने साहित्य-सभा नाम का एक चित्र प्रकाशित किया था, उसमें आपने उपन्यास, नाटक, समालोचना आदि के बीच में जो काव्य का प्रतिनिधि बैठाया था, उसे देख कर मालूम होता है कि द्विवेदीजी शृङ्गारीपन के कितने कट्टर विरोधी थे। उस व्यङ्ग-चित्र में काव्य-प्रतिनिधि का स्वरूप नवाब वाजिदअलीशाह जैसा चित्रित किया है। उस चित्र से यह भी ज्ञात होता है कि उस काल में काव्य का स्थान एक मात्र शृङ्गार ने ग्रहण कर रखा था।

द्विवेदीजी ने ऐसी सभी रचनाओं का विरोध करना प्रारम्भ किया। वे उस परिपाटी के ही विरुद्ध थे, जो काव्य का विकृत-स्वरूप—सूने किन्तु आलीशान मकान की तरह थी। द्विवेदीजी ने युग की कविताओं में प्राण भरना चाहा था और इसके लिए उन्हें पहिले भूमि तैयार करनी पड़ी। उन्होंने सरस्वती की आराधना की, कविता का आवाहन किया—इसके लिए काव्य की प्राचीन रूढ़ियों को तोड़ देना आवश्यक समझकर कुछ ऐसे कवियों का विरोध किया।

समालोचना और कविता दो पृथक वस्तुएँ हैं और बहुत कुछ अंशों में एक दूसरे की विरोधी भी हैं। कविता का सीधा सम्बन्ध जहाँ हृदय के राग से होता है, वहाँ समीक्षा हृदय को छोड़ कर मस्तिष्क के आधार ज्ञान से अपना सीधा सम्बन्ध स्थापित करती है। एक ही साथ कवि और समालोचक होना कठिन है। कविता जहाँ उपस्थित सौन्दर्य के अङ्कन में, केवल 'क्या है' का ही निरूपण करना अधिक उचित समझती है, वहाँ समालोचक के लिए 'कैसा है' और 'क्या चाहिए' का भी दिग्दर्शन कराना अत्यन्त आवश्यक है।

श्री महावीरप्रसादजी द्विवेदी के व्यक्तित्व में ही आलोचक का रूप ऐसा जम कर बैठा था कि उसने आपके अन्य रूपों को अच्छी तरह प्रस्फुटित होने का अवसर ही नहीं दिया। द्विवेदीजी की उपस्थित सभी रचनाएँ उनके साहित्यिक जीवन के प्रारम्भ काल की रचनाएँ हैं। जैसे-जैसे वे साहित्यिक-प्रकाश में आते गये, वैसे ही वैसे उनका आलोचनात्मक रूप निखरता गया और उनके अन्दर बैठा हुआ कवि भी अपने आप को आलोचक के रूप में ही व्यक्त करने लगा। आगे चलकर तो उन्होंने कविता करना ही छोड़ दिया था। जीवन के अन्तिम दिनों में वे अधिकतर प्रशस्ति या आशीर्वादात्मक श्लोक ही लिखा करते थे। यदि वास्तव में देखा जाय तो द्विवेदीजी की कविताओं का महत्व उनके आलोचक रूप में ही निहित है। यदि द्विवेदीजी केवल कवि हुए होते, और उनकी यह रचनाएँ आज कविता की कसौटी पर कसी जातीं, तो कौन कह सकता है, कि केवल ऐतिहासिक महत्व के अतिरिक्त साहित्य में उनका कुछ स्थान होता! लेकिन आज उनकी कविताओं की उनके आलोचक रूप के नाते उपयोगिता है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और उनका अपना आदर्श है। उनमें आगे आने वाली कवि-संतति के लिए प्रेरणा और प्रणालियों का निर्देश है। आपने इन कविताओं से अनेकों विषयों की ओर संकेत किया है, काव्य में नई शैलियों की स्थापना की है और सबसे ऊपर जो उन्होंने काम किया है वह खड़ी बोली को काव्य सुलभ भाषा बना कर उसे विविध विषयों से विभूषित करने का है। आपने उसको नये-नये छन्द, कोमल-कान्त पदावली, एवं नवीन-नवीन भावों से विभूषित करके ब्रजभाषा के होनहार कवियों को इसकी ओर ललचाया और खड़ी बोली के प्राणों में अमर संगीत भरने की भूमि तैय्यार की।

द्विवेदीजी की कविताओं का महत्व साहित्य के इतिहास के साथ अधिक सम्बद्ध है। उनका अपना ऐतिहासिक महत्व है और वे इतिहास ही के लिए युग-युग तक अमर रहेंगीं। उन्होंने वर्तमान के साथ भूत की कड़ियों को जोड़ा है। भविष्य को उनसे गति मिली है, और अपने युग के लिए उन्होंने विधान तैयार किया है। आज जिस युग में हम चल रहे हैं, वह द्विवेदी-युग का ही परिष्कृत रूप है। क्या द्विवेदी-युग की इतिवृत्तात्मक परिचय प्रणाली ने ही आज की नवीन-काव्य धारा को जन्म नहीं दिया ? कुछ लोगों का कहना है कि आज की छायावादी कविताएँ द्विवेदी-युग के विरोध स्वरूप उत्पन्न हुई प्रेरणा का फल है, लेकिन बात वास्तव में यह है कि द्विवेदीजी की कविताओं ने ही इस धारा को जन्म दिया है। आज की नवीनता में द्विवेदी-युग की प्रेरणाओं का ही प्रतिफलन पाया जाता है। हम परिचय से ही विश्लेषण की ओर झुके हैं।

द्विवेदीजी ने अपनी रचनाओं से समय की आवश्यकताओं की पूर्ति की है। परिस्थितियाँ युग को जन्म देती हैं और युगीन कवियों के कण्ठ में परिस्थितियों के गान मुखरित होते हैं। द्विवेदीजी जिस युग में पैदा हुए थे, वह युग भारत में क्रान्ति का युग था। एक ओर जहाँ सुधारों की चर्चा थी स्त्री-स्वातन्त्र्य और स्वतंत्रता के बीज देश में उग रहे थे, वहाँ दूसरी ओर हमारे साहित्य में भी भाषा और विषयों के प्रश्न महत्वपूर्ण हो चले थे। समाज अपनी कुरीतियों और कमजोरियों को अनुभव कर रहा था, साहित्य अपने पुराने चोले उतार फेंक देना चाहता था। इसी समय साहित्य के क्षेत्र में द्विवेदीजी का आगमन हुआ। आपने युग के उसी यथार्थ का अपनी रचनाओं में चित्रण किया, जिसे समाज का छोटे से छोटा सदस्य अनुभव कर रहा था। कल्पना के सहारे स्वप्नों के लोक में कविता के बहाने उन्होंने विहार नहीं किया। उन्होंने अपने काव्य की वस्तु यथार्थ-चित्रण, जिसकी उपयोगिता हो, उसे बनाया।

द्विवेदीजी केवल कवि नहीं थे। कवि के अतिरिक्त उनका एक महत्वपूर्ण रूप 'कवि-निर्माता' भी था। उन्होंने अपनी कविता से प्रत्यक्ष और परोक्ष में अनेकों होनहार कवियों को प्रेरणाएँ दी हैं। साधारणतया उनकी कविताओं के दो बड़े विभाजन किये जा सकते हैं—एक तो वह रचनाएँ जो उन्होंने समाज के लिए अर्थात् पाठकों के लिए लिखीं। और दूसरी वह जो उन्होंने लेखकों के लिए लिखीं। आपका वह निर्माता रूप जो उन्हें युग प्रवर्त्तक, आचार्य और युग-युग तक अमर बनाने वाला साबित हुआ, उसकी स्पष्ट झलक हम उनकी रचनाओं में अच्छी तरह पा सकते हैं।

द्विवेदीजी की रचनाओं की कोटियाँ करते समय हमें यह ज्ञात होता है कि उन्होंने अधिकतर ज्ञान वर्द्धक प्राचीन रूढ़ियों के प्रति असन्तोष उत्पन्न करने वाली, देश विषयक, और भाषा विषयक कविताएं अधिक लिखीं हैं। कुछ ऐसी रचनाएँ भी हैं, जिन्हें देव-विषयक कहा जा सकता है। समाचार पत्र सम्पादकस्तव, कवित्ते, ग्रन्थकार लक्षण, ग्रन्थकारों से विनय, कवि स्वतन्त्रता और दूसरे साहित्य सम्मेलन के लिए दिया हुआ 'सन्देश' ऐसी रचनाएँ हैं, जो उन्होंने कवियों एवं लेखकों के लिए लिखीं हैं। कविता कलाप में संग्रहीत द्विवेदीजी की स्वयं की रचनाएँ भी इसी कोटि में आ सकती हैं, क्योंकि उन कविताओं से परोक्ष रूप में हिन्दी को एक नई प्रेरणा मिली है।

शृङ्गार में अश्लीलता न आने देकर नारी की उपयोगिता का चित्र उन्होंने अपनी इन कविताओं में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्रित किया है। द्विवेदीजी के हृदय में नारी के प्रति एक तरल सहानुभूति विद्यमान थी। 'कान्य कुब्ज अबला विलाप' में आपने उसे अधिक स्पष्ट करने की चेष्टा की है। वे 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' वाले सिद्धान्त के मानने वाले थे। इसी विलाप में आपने उसे स्पष्ट भी किया है:—

जहाँ हमारा आदर होता है, वहीं देवता करते वास।
जहाँ निरादर होता वह घर हो जाता है, सत्यानाश॥
पति को देव तुल्य हम मानें बच्चों की भी दासी हैं,
सेवा सदा करें नहिं सोचें भूखी हैं या प्यासी हैं।
धर्म कर्म तुम जिसे पुकारो उसे हमी में पाओगे।
सोचो समझो अभी, नहीं तो फिर पीछे पछताओगे—

द्विवेदीजी कविता की परिपाटी को ही बदल देना चाहते थे। साहित्य का स्थान केवल शृङ्गार तक सीमित रहे, यह उन्हें पसन्द न था। द्विवेदीजी ने उन्हें विभिन्न विषयों की ओर आकर्षित किया।

द्विवेदीजी ने ऐसी कोई कविता नहीं लिखी, जो केवल आनन्दातिरेक या अनुभूति के प्रस्फुरणस्वरूप स्वान्तःसुखाय कही जा सके। उनकी प्रत्येक कविता में लोक-कल्याण और राष्ट्र-निर्माण की स्पष्ट झलक दृष्टिगोचर होती है। जिन विभिन्न आन्दोलनों का व्यापक रूप हमें आज दिखाई देता है, उसका निर्देश बहुत पहिले द्विवेदीजी की कविताओं से हमें प्राप्त होता है। हमारा स्वतन्त्रता-आन्दोलन, और राष्ट्र-भाषा या मातृ-भाषा का प्रश्न जो आज व्यापक रूप में प्रत्येक देशवासी के मुख पर है; द्विवेदीजी ने इस पर बहुत पहिले ही बड़ा मार्मिक प्रकाश डाला था। ऐसी रचनाएँ, जो पाठकों के लिए लिखी गयीं हैं, उनमें राष्ट्र-निर्माण की ही व्यञ्जना आपने की है। इस कोटि में आपकी यह सब रचनाएँ हैं—जन्म-भूमि, स्वदेशी वस्त्र का स्वीकार, देशोपालंभ, प्यारा वतन, जै जै प्यारे भारत देश आदि रचनाएँ देश-विषयक हैं। कान्यकुब्ज लीलामृत, ठहरौनी, अबला-प्रलाप, का० कु० बन्धुओं से प्रार्थना आदि ऐसी रचनाएँ हैं, जहाँ उन्होंने कुरीतियों का विरोध किया है। द्रौपदी-वचन-बाणावली, सेवावृत्ति की विगर्हणा, तकदीर और तदबीर, शहर और गाँव, शरीर-रक्षा, विधि-विडम्बना, और विचार करने योग्य बातें आदि में आपने युव-जनोचित शिक्षा, युवकों के कर्त्तव्य, प्राचीनता से प्रेम आदि ऐसी ही ज्ञानवर्धक बातें कही हैं। इन सब कविताओं को देख कर कवि के युग-निर्माणकारी रूप का अन्दाज लगाया जा सकता है। राष्ट्र-निर्माण के लिए ऐसी ही कविताओं की आवश्यकता थी। कवि ने 'तकदीर और तदबीर कविता में तदबीर द्वारा भाग्य पर भरोसा रखने वालों को उचित ही शिक्षा दी है—

हकीमों को मैं ही बताती हूँ हिकमत।
भरी है कलों में ही मेरी करामत॥
मैं लोहे को देती हूँ सोने की कीमत।
मेरा हाथ लगने से खुलती है किस्मत॥

द्विवेदीजी युग में अपूर्व क्रान्ति और युवकों की कापुरुषता को दूर कर उनमें उत्साह और कर्त्तव्य-परायणता भर देना चाहते थे। उन्होंने युवकों को चेतावनी दी—

पाता न शिक्षण जहाँ शिशु-वृन्द सारा,
बाला समूह सब मूर्ख जहाँ हमारा।
नाना कला कुशलता न कहीं जहाँ है,
कर्त्तव्य क्या न तुझको कुछ भी वहाँ है?

इस प्रकार की कविताओं में उनका सुधारक रूप स्पष्ट हो उठा है। उन्होंने कुरीतियों को तोड़ा, युवकों को जागृति के उपदेश दिये और उन्हें देश-प्रेम की दीक्षा दी। उन्होंने ही देश में शायद सब से पहिले यह गान गाया—

इष्ट देव आधार हमारे
तुम्हीं गले के हार हमारे
भुक्ति मुक्ति के द्वार हमारे
जै जै जै जै देश

उन्होंने जनता की स्वतन्त्र भावनाओं को उभाड़ने में पर्याप्त योग दिया आपका स्वर्गीय गणेशशङ्कर-विद्यार्थी के 'प्रताप' को दिया हुआ सन्देश क्या भूल जाने वाली वस्तु है—

जिसको न निज गौरव तथा
निज देश का अभिमान है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह नर नहीं, नर पशु निरा है
और मृतक समान है।

देश की हीन दशा पर जो उन्होंने उपालम्भ देश-वासियों के लिए दिये, उन्होंने ही भारत-भारती जैसे ग्रन्थों का प्रणयन कराया।

द्विवेदीजी ने हिन्दी में भाषा का आदर्श स्थिर किया है। वे सिद्धान्त की दृष्टि से सरल और सुबोध भाषा के पक्षपाती थे। लेकिन उनकी कविताओं में हमें भाषा की स्पष्ट दो कोटियाँ दिखाई देती हैं। एक प्रकार की कविता तो आपकी ऐसी होती थी जिनकी भाषा को संस्कृत-प्रधान कहा जा सकता है और दूसरी प्रकार की कविताओं में आप बोलचाल की भाषा का प्रयोग करते थे। द्विवेदीजी संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान् थे, मराठी कविता का उन पर पर्याप्त प्रभाव पड़ा था तथा कुछ संस्कृत छन्दों के अपनाने के कारण आपकी यह कविताएँ संस्कृत-पदावली से ओतप्रोत हैं। भाषा की अपेक्षा द्विवेदीजी संस्कृत में कविता बड़ी सरलता से किया करते थे। बात की बात में श्लोक बना देना उनके बाँये हाथ का खेल था और यदि उनकी संस्कृत कविताओं को समीक्षा की कसौटी पर कसा जाय, तो यह भी कहा जा सकता है कि यदि उनकी कविताओं में कहीं हृदय का सामञ्जस्य हुआ है, तो वह उनकी संस्कृत कविताओं में ही पाया जाता है। उदाहरणार्थ—सूर्यग्रहणम्, मेघमालाँ प्रति चन्द्रकोक्तिः नामक कविताओं से भली भाँति जाना जा सकता है। अपने इसी प्रभाव के कारण उनकी कुछ कविताएँ संस्कृत गर्भित पदावली में मिलती हैं:—

सुरम्यरूपे रसराशिरञ्जिते
विचित्रवर्णाभरणे कहाँ गई?
अलौकिकानन्द-विधायनी महा-
कवीन्द्र कान्ते! कविते! अहो कहाँ?

द्विवेदीजी ने हिन्दी को नवीन भाषा में नवीन छन्द तो दिये ही, साथ ही आपने उनकी मुक्तक-प्रणाली को भी तोड़ दिया और उन छन्दों में प्रबन्धात्मकता उत्पन्न की। अब कविता की परिभाषा ४ पदों में ही सीमित नहीं रही, वह अब विषय का भार उठाने के लिये समर्थ हो चुकी थी।

कुमार-सम्भव-सार का अनुवाद आपकी रचनाओं में विशेष महत्वपूर्ण है। संस्कृत से अनुवाद करते समय प्रायः लेखकों की भाषा में जटिलता दिखाई देती है, जिसके फलस्वरूप भावों के समझने में पाठकों को बड़ी परेशानी होती है, लेकिन इसमें मूल के भाव बड़ी सफाई से लाये गये हैं। कुमार-सम्भव-सार ने खड़ी बोली में कविता करने का कार्य सुलभ कर दिया। और कविता में नवीन विषयों को लाने की सूचना भी उसके द्वारा मिली। संक्षेपतः द्विवेदीजी ने अपनी कविताओं के द्वारा हिन्दी में भाषा और भावों का परिमार्जन किया है। द्विवेदीजी की कविताएँ इतिवृत्तात्मक हैं। हिन्दी को नवीन-युग में लाने के लिए ऐसी परिचयात्मक रचनाओं की आवश्यकता थी, जिसे द्विवेदीजी ने और उनके बाद के युगीन कवियों ने पूरा किया। आज हिन्दी कविता द्विवेदी-युग से आगे निकल गयी है। उसने अपने ऊपर से उस युग का नियन्त्रण, जो छात्रालय में गुरु के समान था, दूर फेंक दिया है। अब वह स्वतन्त्र है और निरंकुश भी। समय और उसके साथ हम सब उसकी ओर टकटकी लगाये देख रहे हैं कि वह क्या होने जारही है।

—सा० सं०, अप्रेल १९३९ से।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्विवेदीजो के काव्य सम्बन्धी विचार

श्री गुलाबराय

द्विवेदीजी के काव्य सम्बन्धी विचार बहुत से ग्रन्थों और निबन्धों में बिखरे मिल सकते हैं। किन्तु यदि हम उनको किसी सम्बद्ध रूप में देखना चाहें तो रसज्ञ रञ्जन में देख सकते हैं। इस पुस्तक में कविता सम्बन्धी जो पाँच लेख दिये गये हैं, वे सब मौलिक नहीं कहे जा सकते। द्विवेदीजी ने जिन-जिन आधारों पर ये लेख लिखे हैं, उनको स्पष्ट रूप से स्वीकार किया है। किन्तु जिन विचारों को उन्होंने अपनाया है और जिनकी सराहना की है वे उनके ही कहे जायँगे।

द्विवेदीजी ने कविता के सम्बन्ध में व्यवहार बुद्धि से लिखा है। वे काव्य की आत्मा अलङ्कार रस, रीति, वक्रोक्ति व ध्वनि मानने वाले आचार्यों के झगड़ों में नहीं पड़े हैं किन्तु उन्होंने अपने मत में सभी मतों का थोड़ा बहुत सहारा लिया है। वे पारिभाषिक शब्दों के वाक्जाल से बहुत दूर रहे हैं। नीचे हम कुछ उद्धरण देते हैं, जिनसे आप देख सकेंगे कि वे कवि के हृदय में रस का होना काव्य के लिए आवश्यक मानते हैं और वे यह भी मानते हैं कि वही सफल कवि है जो उपयुक्त शब्दावली द्वारा पाठकों या श्रोताओं के हृदय में समान भाव उत्पन्न कर सके। वे कविता को प्रभावोत्पादक चाहते हैं और इस कारण उक्ति वैचित्र्य के भी पक्ष में है। लेकिन वे कोरे वक्रोक्तिवादी (अनूठी तौर से कहने को ही कविता मानने वाले) नहीं हैं। सच्ची कविता के उन्होंने दो उदाहरण दिये हैं। एक रामचरित मानस से वन गमन समय सीताजी का श्रीरामचन्द्रजी के साथ जाने का आग्रह और दूसरा पण्डित श्रीधर पाठक का 'एकान्तवासी योगी' नामक अंग्रेजी से अनुवादित काव्य से अञ्जलोना की उक्ति। यहाँ पर द्विवेदीजी के काव्य सम्बन्धी विचारों के उदाहरण दिये जाते हैं—

१—"कवियों का यह काम है कि वे जिस पात्र अथवा जिस वस्तु का वर्णन करते हैं, उसका रस अपने अन्तःकरण में लेकर उसे ऐसा शब्द रूप दे देते हैं कि उन शब्दों को सुनने से वह रस सुनने वालों के हृदय में जागृत हो उठता है।

२—कविता को सरस बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। नीरस पद्यों का कभी आदर नहीं होता। जिसे पढ़ते ही पढ़ने वाले के मुख से 'वाह' न निकले अथवा उसका मस्तक न हिलने लगे, अथवा उसकी दन्त-पंक्ति न दिखलाई देने लगे, अथवा जिस रस की कविता है उस रस के अनुकूल वह व्यापार न करने लगे, तो वह कविता कविता ही नहीं, वह तुकबन्दी मात्र है।

३—"जो बात एक असाधारण और निराले ढङ्ग से शब्दों के द्वारा इस तरह प्रकट की जाय कि सुनने वाले पर उसका कुछ न कुछ असर जरूर पड़े, उसी का नाम कविता है।"

४—"प्राचीन कवियों का सारा ध्यान अर्थ की ओर रहता था। भाषा की ओर कम रहता था। इसलिए उनकी कविता में हृद्गत भाव बहुत ही अच्छी तरह से ग्रथित हो जाता था। परन्तु उनके अनन्तर होने वाले कवियों में प्रबन्ध, शब्द-रचना और अलङ्कार आदि की ओर अधिक ध्यान जाने से कविता में अर्थ-सम्बन्धी हीनता आगई है।"

५—कविता को प्रभावोत्पादक बनाने के लिए उचित शब्द स्थापना की भी बड़ी जरूरत है। किसी मनोविकार का दृश्य वर्णन करने में ढूँढ़-ढूँढ़ कर ऐसे शब्द रखना चाहिए जो सुनने वाले के सामने वर्ण्य विषय का चित्र-सा खींच दें।

ऐसे बहुत से अमूल्य उद्धरण बिखरे पड़े हैं। उपर्युक्त उद्धरणों से हम कह सकते हैं कि यद्यपि आचार्य ने किसी एक वाद को नहीं अपनाया है तथापि वे कविता उसी शब्द-रचना को कहते हैं जिसमें सत्य पर आश्रित भावों की ऐसी सुन्दर ढङ्ग से अभिव्यञ्जना की जाय कि पाठकों के मन में समान भाव की उत्पत्ति हो और वे बोल उठें कि सच कहा।

द्विवेदीजी रसवादी भी हैं, (जैसा पहले उद्धरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से विदित होता है)। वक्रोक्तिवादी, अभिव्यञ्जनावादी भी हैं (जैसा तीसरे उद्धरण से विदित होता है) और प्रभाववादी भी हैं (जैसा कि दूसरे उद्धरण से लक्षित होता है)।

द्विवेदीजी चमत्कारवादी हैं। यदि कविता में चमत्कार नहीं तो आनन्द की प्राप्ति नहीं हो सकती, किन्तु उसी के साथ वे अलङ्कारों और शब्दाडम्बर के भी पक्षपाती नहीं हैं। सब बातों को लेते हुए द्विवेदीजी प्रभावोत्पादन को अधिक महत्व देते हुए प्रतीत होते हैं। इसीलिए वे भाषा की शक्ति पर अधिक जोर देते हैं।

द्विवेदीजी ने सभी वादों का कुछ-कुछ लिया है। किन्तु उन्होंने किसी एक बात को भी सर्व प्रधान नहीं कहा है, इसलिए वे किसी वाद में नहीं हैं।

चमत्कारवाद का पक्ष और साथ ही अलङ्कारों का विरोध आदि बातें कुछ लोगों को परस्पर विरोधी प्रतीत होती हैं। वास्तव में थोड़ी मात्रा में सभी चीजें एक दूसरे की सहायक और पूरक होती हैं। अनुचित मात्रा में विरोध हो जाता है। द्विवेदीजी ने चमत्कारवाद को इसी हद तक माना है कि वह शब्दाडम्बर न बन जाय। जहाँ प्रभाववाद में पड़े, वहाँ उसका यह अर्थ न लेना चाहिए कि कोरा सर हिलवा देना कविता की इतिकर्तव्यता है। वस्तु-विवेचन सच्चा होना चाहिए। उनके प्रभाववाद में सत्य की उपेक्षा नहीं है। वैसे प्रभाववाद में कहीं-कहीं सत्य की उपेक्षा अधिक हो जाती है।

प्रभाववाद में एक खराबी यह भी है कि किसकी वाह-वाह चाहिए। तुलसीदासजी ने बुधजनों की वाह-वाह चाही है। द्विवेदीजी का भी अभिप्राय बुधजनों से ही समझना चाहिए। इक्के ताँगे वालों का नहीं। जो कविता इक्के-ताँगे वालों की वाह-वाह ले सकती है, वह आदरणीय नहीं। जिसकी बुधजनों के साथ इक्के-ताँगे वाले भी सराहना कर सकें, वह अवश्य आदरणीय है। वे मिल्टन का उदाहरण देते हुए कविता के लिए तीन गुण आवश्यक समझते हैं --

"अँगरेजी के प्रसिद्ध कवि मिल्टन ने कविता के तीन गुण वर्णन किये हैं। उनकी राय में कविता सादी हो, शब्दाडम्बर दुरूहता और गूढ़ता से दूर अर्थात् प्रसाद गुण से युक्त, जोश से भरी (रसपूर्ण) और असलियत से गिरी न हो (कल्पनामय हो किन्तु सत्याश्रित हो)।"

द्विवेदीजी छन्द को कविता के लिये आवश्यक नहीं मानते हैं। इसीलिये वे अँगरेजी में किये हुए वर्स (Verse) अर्थात् पद्य और पोइट्री (Poetry) अर्थात् कविता पर जोर देते हैं --

"आजकल लोगों ने कविता और पद्य को एक ही चीज समझ रखा है। यह भ्रम है। कविता और पद्य में वही भेद है जो अंग्रेजी की पायट्री (Poetry) और वर्स में है। किसी प्रभावोत्पादक और मनोरञ्जक लेख, बात या वक्तृता का नाम कविता है, और नियमानुसार तुली हुई सतरों का नाम पद्य है। जिस पद्य को पढ़ने या सुनने से चित्त पर असर नहीं होता, वह कविता नहीं।"

द्विवेदीजी ने कविता के सम्बन्ध में चार बातों पर विशेष रूप से विचार किया है (१) छन्द, (२) भाषा, (३) अर्थ, (४) विषय।

छन्द—द्विवेदीजी छन्द के लिए तुकबन्दी आवश्यक नहीं बतलाते हैं। इसीलिये उन्होंने संस्कृत छन्दों के अनुकरण पर जोर दिया है। सम्भव है पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय इसी अपील से प्रभावित हुए हों। (संस्कृत छन्दों में पहले रहीम ने भी कविता की है)। आजकल के कवियों ने हिन्दी के ही छन्दों में अतुकान्त कविता कर द्विवेदीजी के उद्देश्य की पूर्णतया पूर्ति की है।

द्विवेदीजी के छन्द सम्बन्धी विचार बड़े उदार हैं। वे छन्दों में नवीनता चाहते हैं। वे संस्कृत वृत्तों तथा उर्दू तक के छन्दों के पक्ष में हैं।

भाषा—भाषा के सम्बन्ध में द्विवेदीजी कहते हैं कि कवि को ऐसी भाषा लिखनी चाहिए जिसे सब कोई सहज में समझ ले क्योंकि कविता समझी जाने के लिए ही लिखी जाती है। कविता में व्याकरण के नियमों का भी पूरी तौर से पालन होना चाहिए। उनका कहना है कि शुद्ध भाषा का जितना मान होता है, उतना अशुद्ध भाषा का नहीं। भाषा में शब्दों की उपयुक्तता पर बहुत जोर दिया है। देखिये इस सम्बन्ध में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे क्या कहते हैं: --

"विषय के अनुकूल शब्द स्थापन होना चाहिए। कविता एक अपूर्व रसायन है। रसायन सिद्ध करने में आँच के न्यूनाधिक होने से जैसे रस बिगड़ जाता है, वैसे ही यथोचित शब्दों का उपयोग न करने से काव्य रूपी रस भी बिगड़ जाता है। शब्द चुनने में अक्षर मैत्री का विशेष ध्यान रखना चाहिए।"

आचार्य द्विवेदी उन लोगों में अग्रगण्य हैं, जिन लोगों ने खड़ी बोली को काव्य की भाषा बनाने का आन्दोलन उठाया था। इस सम्बन्ध में वे लिखते हैं:—

"गद्य और पद्य की भाषा पृथक-पृथक न होनी चाहिये। हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जिसके गद्य की एक प्रकार की और पद्य में दूसरी प्रकार की भाषा लिखी जाती है।"

अर्थ के सम्बन्ध में विवेचन करते हुए द्विवेदीजी अर्थ सौरस्य को कविता का प्राण मानते हैं। इस विषय में वे लिखते हैं—

"कवि जिस विषय का वर्णन करे, उस विषय से उसका तादात्म्य हो जाना चाहिये। ऐसा न होने से अर्थ सौरस्य नहीं आ सकता। विलाप वर्णन करने में कवि के मन में यह भावना होनी चाहिए कि वह स्वयं विलाप कर रहा है और वर्णित दुःख का अनुभव कर रहा है।"

अर्थ सौरस्य के सम्बन्ध में वे तीन बातों पर जोर देते हैं— पहली बात कवि की भावुकता और सहृदयता अर्थात् वर्ण्य विषय से कवि का तादात्म्य। दूसरी बात यह है कि जो भाव कवि के हृदय में स्वभाव से उठें उन्हीं का वह वर्णन करे। बलात् किसी अर्थ के लाने की चेष्टा न करना चाहिए। इससे कविता में अस्वाभाविकता आ जाती है। तीसरी बात अर्थ की अभिव्यक्ति के सम्बन्ध में है। द्विवेदीजी कविता में प्रसाद गुण के पक्ष में हैं। वे चाहते हैं कि अपने मनोनीत अर्थ को इस प्रकार व्यक्त किया जाय कि पद्य पढ़ते ही पढ़ने वाले उसे तत्क्षण हृदयङ्गम कर सकें; क्लिष्ट कल्पना अथवा सोच विचार करने की आवश्यकता न पड़े। वे चाहते हैं कि कविगण शब्दों को तोल-तोल कर विषय और प्रसङ्ग के अनुकूल रक्खें। बामा, तन्वी, गृहलक्ष्मी, रमणी, महिला आदि सब पर्यायवाची शब्द हैं। किन्तु प्रत्येक शब्द प्रसङ्ग में शोभा नहीं देगा। महिला परिषद् की जगह तन्वी परिषद् कहना अच्छा नहीं लगेगा। द्विवेदीजी निरर्थक या भर्ती के शब्दों के पक्षपाती नहीं हैं। न वे शब्दों की तोड़ मरोड़ चाहते हैं। इसीलिए वे बार-बार तुकबन्दी के खिलाफ आवाज उठाते हैं। कविता को वे निर्दोष देखना चाहते हैं। इस सम्बन्ध में वे कहते हैं:—

"अश्लीलता और ग्राम्यता गर्भित अर्थों से कविता को कभी न दूषित करना चाहिए। न देश काल तथा लोक आदि के विरुद्ध कोई बात कहना चाहिए" (देश और काल सम्बन्धी दूषण अवश्य खटकते हैं किन्तु अधिक या न्यून पद और मामूली बात में अतिसंस्कृति दोष भी उपेक्षणीय हो सकता है यदि काव्य सरस हो) जिन लोगों ने द्विवेदीजी द्वारा की हुई 'कालिदास की निरंकुशता' शीर्षक आलोचना पढ़ी है, वे जानते होंगे कि उन्होंने दोषों को कितना महत्व दिया है। इस सम्बन्ध में लोग उनकी निर्भीकता की तारीफ करते हैं। निर्भीकता तारीफ की वस्तु अवश्य है क्योंकि हमारे देश में पूर्वजों के अत्यधिक आदर के कारण मौलिकता आने में कुछ बाधा पड़ती है किन्तु निर्भीकता केवल निर्भीकता के लिए नहीं होनी चाहिए। बड़े आदमी के खिलाफ दस बीस बातें कहने को ही शाबासी देना अच्छा नहीं। कालिदास की प्रखर प्रतिभा के सामने न्यून पदत्व या अधिक पदत्व दोष नगण्य हो जाते हैं। स्वयं कालिदासजी के शब्दों में कहा जा सकता है 'एकोहिदोषो गुण सन्निपाते निमज्जतीन्दो किरणेष्विवाङ्कः' गुणों के इकट्ठे होने पर एक दोष इसी प्रकार विलीन हो जाता है जिस प्रकार किरणों के बाहुल्य में चन्द्रमा का कलङ्क। दोषों से बचना सोने में सुगन्ध की बात हो जाती है किन्तु मुख्य और गौण बात में भेद रखना चाहिए। कविता में रस मुख्य है निर्दोषता गौण बात है और दोष भी सब बराबर नहीं होते। हाथ न धोकर भोजन करना दोष है किन्तु इतना बड़ा नहीं जितना कि किसी का सर काट लेना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्विवेदीजी भी स्वयं सब दोषों को बराबर महत्व देने वाले लोगों में नहीं थे। वे गुण-दोष का अनुमान जानते थे किन्तु उससे प्रभावित प्राचीनता के उपासक आलोचक पारिभाषिक दोषों को खोज निकालने में ही आलोचक के कर्म की इतिश्री समझ लेते हैं यह बुरा है।

काव्य विषय में द्विवेदीजी के विचार बड़े महत्व के हैं। रीतिकाल के संकुचित वातायनहीन भवन में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने आलोक आने के लिए दो एक वातायन खोल दिये थे, किन्तु वे काफी नहीं थे। विषय विस्तार के लिए कड़ी आवाज लगाई जाने की जरूरत थी और आचार्यजी ने इस सम्बन्ध में तत्कालीन कवियों को अच्छा उपदेश दिया है। आचार्य द्विवेदीजी का युग निर्माता कहा जाना इस अर्थ में सार्थक है। विषय विस्तार की इस काल में भी आवश्यकता है। कविता का पुराना भवन ढल कर नया भवन अवश्य बन गया है किन्तु अब भी उस भवन के विस्तार की आवश्यकता है। विषय विस्तार के सम्बन्ध में नीचे उद्धृत किए हुए वाक्य बड़े मार्मिक हैं :—

"चींटी से लेकर हाथी पर्यन्त पशु, भिक्षुक से लेकर राजा पर्यन्त मनुष्य, बिन्दु से लेकर समुद्र पर्यन्त जल, अनन्त आकाश, अनन्त पृथ्वी, सभी से उपदेश मिल सकता है और सभी के वर्णन से मनोरञ्जन हो सकता है। फिर क्या कारण है कि इन विषयों को छोड़ कर कोई-कोई कवि स्त्रियों की चेष्टाओं का वर्णन करना ही कविता की चरम सीमा समझते हैं ? केवल अविचार और अन्ध परम्परा।" मैं स्त्रियों के 'बायकाट' करने के पक्ष में तो नहीं हूँ क्योंकि वे चींटी और जुगनू से नहीं-नहीं हाथी से भी बढ़ कर महत्व इस जगत में रखती हैं किन्तु कविता स्त्री केन्द्रित न होनी चाहिए। वैसे तो शास्त्रों में कहा है—'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः' किन्तु इस पूजा में और चीज की उपेक्षा न होनी चाहिए। पूज्य द्विवेदीजी ने संसार की स्त्रियेतर वस्तुओं की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित कर सच्चे नेता का काम किया है। हर्ष की बात है कि वर्तमान युग में काव्य विषय के सम्बन्ध में पहले का-सा सङ्कोच नहीं है। अब कलेजे के दो टूक करने वाले भिखारी, काश्मीर, सृष्टि, प्रलय, वन, पर्वत, कछार, वियना की सड़क सभी पर कविता लिखी जाती हैं किन्तु अब विस्तार की आवश्यकता है। कविता को जीवन से अधिक सम्पर्क में आना चाहिए।

द्विवेदीजी ने कवियों के लिए नैसर्गिक शक्ति और अभ्यास दोनों को आवश्यक माना है। कवि हीरे की भाँति पैदा अवश्य होते हैं किन्तु उनके गढ़े जाने की भी आवश्यकता है। द्विवेदीजी ने कवि की शिक्षा के सम्बन्ध में क्षेमेन्द्र के उदाहरण दिये हैं। वे बड़े महत्वपूर्ण हैं। आज कल के कवियों को उनसे शिक्षा लेनी चाहिए। कवि में सहृदयता, विस्तृत निरीक्षण, अध्ययन, अभ्यास और व्यवहार की उदारता अत्यन्त आवश्यक है। क्षेमेन्द्र का बताया हुआ कवि बनने का नुसखा देखिए। क्षेमेन्द्र के नुसखे में बढ़े हुए बाल और फाउन्टेन पैन की कमी है। बिचारे के समय में फाउन्टेन पैन था ही नहीं, क्या करता ? संक्षेप में हम कह सकते हैं कि द्विवेदीजी ने निम्न लिखित बातों पर जोर देकर अपने समय के कवियों का पथ-प्रदर्शन किया है—

१—काव्य का विषय विस्तार।

२—कवि की भावुकता और हृदय की सत्यता।

३—कविता में सादगी और आडम्बरशून्यता।

४—छन्दों में नवीनता, संस्कृत छन्दों का प्रयोग और तुकबन्दी का विरोध।

५—कविता में सत्य का आधार।

६—कविता में व्याकरण के नियमों का पालन।

रसज्ञ-रञ्जन में कवियों में उर्मिला सम्बन्धी उदासीनता शीर्षक लेख यद्यपि द्विवेदीजी का नहीं है तथापि द्विवेदीजी ने उसको मुख्यता देकर श्री मैथिलीशरणजी को साकेत लिखने की आन्तरिक प्रेरणा दी। इसी प्रकार संस्कृत छन्दों का पक्ष लेकर उपाध्यायजी को प्रिय-प्रवास लिखने में प्रेरित किया। द्विवेदीजी की प्रेरणा के दो अमूल्य रत्न वर्तमान हिन्दी-साहित्य का गौरव बढ़ा रहे हैं। गोविन्द की अपेक्षा गुरु का महत्व अधिक है। 'बलिहारी वा गुरु की जिन गोविन्द दियो बताय।'

—सा० सं०, अप्रेल १९३९ से।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्विवेदी युग के काव्य में सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना

डा० मुरारीलाल शर्मा 'सुरस'

संवत् १९५० से १९७५ तक का समय हिन्दी साहित्य में 'द्विवेदी युग' के नाम से अभिहित किया जाता है। इस युग के मुख्य सूत्रधार एवं सचेतक पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी थे। वे अपने युग के समर्थ आलोचक, पत्रकार एवं कवि थे। उनके युग प्रवर्त्तन का माध्यम 'सरस्वती' पत्रिका थी जिसे यदि हम 'संस्था' ही कहें तो कोई अत्युक्ति न होगी क्योंकि आचार्य द्विवेदी ने इसी पत्रिका के माध्यम से हिन्दी के वर्तमान रूप को सजाने सँवारने और युगानुकूल बनाने के लिए भगीरथ प्रयत्न किया। उन्होंने गद्य शैली, आलोचना पद्धति और खड़ी बोली कविता को सुनियोजित रूपमें प्रस्तुत करते हुए भाषा का संस्कार किया। इस प्रकार उन्होंने भाषा की अस्थिरता को दूर कर उसे व्याकरणानुमोदित बनाने और विषय का विधिवत् प्रतिपादन करने के लिए 'सरस्वती' में लेख एवं सम्पादकीय टिप्पणियाँ दीं तथा जनता का ध्यान अप्रतिहत रूप से इस ओर आकृष्ट किया। उन्होंने अपने पक्ष को इतनी दृढ़ता से प्रस्तुत किया कि अव्यवस्थित भाषा लिखने वाले लेखकों को विवश होकर उनके निर्दिष्ट पथ का अनुकरण करना पड़ा। इस प्रकार हिन्दी के वर्तमान स्वरूप को द्विवेदीजी ने ही नई दिशा प्रदान की।

भारतेन्दु के समय में दहेज, सामाजिक कुरीतियों तथा अन्धविश्वासों के प्रति आक्रोश प्रकट करते हुए जन जागृति फैलाने की चेष्टा की गई थी। उस युग में जनता के सामने राष्ट्रीयता का स्वरूप स्पष्ट नहीं हो पाया था। लोग देश-भक्ति और राज-भक्ति को एक मानते थे फिर भी उन्होंने देश की दयनीय सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक दशा का दिग्दर्शन किया और भारत के प्राचीन गौरव, सांस्कृतिक उन्नयन और साहित्यिक श्रेष्ठता की ओर इङ्गित किया। देश की तत्कालीन दुरवस्था की ओर संकेत करते हुए महान् भारत के उच्चादर्शों को स्मरण कराने का पुनीत कार्य करना भी जन-जागृति के लिए परमावश्यक समझा गया था। भारतेन्दुयुगीन साहित्य का पर्यालोचन करने के बाद यह निःसङ्कोच स्वीकार किया जा सकता है कि उस काल के कवि और लेखकों में अनुभूति की गहराई और विचारों की परिपक्वता नहीं थी। साहित्यिक दृष्टि से उनकी रचनाओं की अधिक महत्ता नहीं है क्योंकि इन लोगों ने जो भी साहित्य लिखा उसका मुख्य लक्ष्य जनता के राजनीति और सामाजिक जीवन में चेतना और गतिशीलता उत्पन्न करना था। इतना होने पर भी साहित्यिक और सरस रचनाओं का सर्वथा अभाव नहीं रहा। भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र, बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' और बालमुकुन्द गुप्त की रचनाओं में देश भक्ति का स्वर काफी सजग और सशक्त रूप में अभिव्यक्त हुआ है।

भारतेन्दु युग के काव्य में जिन सामाजिक एवं राजनीतिक चेतनाओं को अभिव्यक्ति हुई वे द्विवेदी युग में और भी अधिक व्यापक एवं सशक्त रूप में प्रस्तुत की गई। द्विवेदी युग के कवियों ने सामाजिक कुप्रथाओं की केवल आलोचना ही नहीं की बल्कि इन कुप्रथाओं से पीड़ित प्राणियों के प्रति सहानुभूति भी प्रदर्शित की है। इस युग में अछूतोद्धार तथा दहेज प्रथा आदि कुछ नये सामाजिक विषयों को भी कविता का प्रतिपाद्य बनाया गया।

भारतेन्दुकालीन कविता की अपेक्षा द्विवेदीयुगीन कविता में राष्ट्रीयता का स्वर और भी अधिक मुखरित हो गया। कांग्रेस के स्वतन्त्रता आन्दोलनों, कृषक एवं दलित वर्ग के प्रति सहानुभूति प्रदर्शन के द्वारा तथा विज्ञान की उन्नति के कारण साहित्यकार में बौद्धिक दृष्टिकोण से धार्मिक एवं सामाजिक रूढ़ियों का खण्डन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया। इसमें और भी प्रखरता आने का कारण धार्मिक दृष्टि से स्वामी दयानन्द, आध्यात्मिक दृष्टि से स्वामी विवेकानन्द और राजनीतिक दृष्टि से लोकमान्य तिलक का योगदान है। इन लोगों ने भारत के खोये हुए गौरव को पुनः प्रतिष्ठित करने के लिए अथक परिश्रम किया, उधर संस्कृत साहित्य के अध्ययन और पुरातत्व की खोजों ने भी भारत का मान और महत्व पाश्चात्य देशों की दृष्टि में बहुत ऊँचा किया। देश में सङ्गीत, चित्रकला और स्थापत्य कलाओं के उन्नयन के लिए पुनर्जागरण हुआ, इधर देश के राष्ट्रीय गौरव को महत्ता प्रदान करने के लिए जन-जागृति का काम कांग्रेस ने आरम्भ किया। इन आन्दोलनकारी हलचलों का परिणाम यह हुआ कि हमारे साहित्य में भी नई चेतना उत्पन्न हुई। साहित्यकारों ने रीतिकालीन शृङ्गार भावना का बहिष्कार करके ऐतिहासिक और पौराणिक पात्रों को सर्वथा नये रूप में जनता के समक्ष प्रस्तुत किया और राम तथा कृष्ण और उनके परिकरों को बौद्धिकता के समन्वयात्मक परिवेश में मानवतावादी दृष्टिकोण के साथ प्रस्तुत किया। साहित्य में अद्यावधि जो पात्र सर्वथा उपेक्षित थे उनको भी काव्य का माध्यम बनाकर जनता के समक्ष रखा गया, इस प्रकार साहित्य की विविध विधाओं में सामाजिक जीवन के औचित्य को स्थापित करने तथा राष्ट्रीय और मानवतावादी परम्पराओं को अपनाने के लिए नैतिकता का दृष्टिकोण अपनाया गया।

द्विवेदी युग के प्रतिनिधि कवियों में पं० श्रीधर पाठक ने 'काश्मीर सुषमा', 'देहरादून' और 'भारत-गीत' में देश-प्रेम से सम्बद्ध कविताएँ प्रस्तुत करके प्रकृति के प्रति अपना अनुराग प्रदर्शित किया। अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने बौद्धिक युग के प्रतिनिधि-रूप में कृष्ण को भगवान् के भक्ति-भाव समन्वित रस से उतारकर पूर्णतः सामान्य मानव और जनप्रिय नेता के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने राधा के माध्यम से राष्ट्रीय जीवन को एक नई दृष्टि दी। हरिऔध की राधा वह साधारण मानवी है जो व्यक्तिगत स्वार्थों से ऊपर उठकर राष्ट्र और समाज के हित के लिए अपना उत्सर्ग कर देती है। (प्यारे जीवें, जगहित करें, गेह चाहे न आवें।) मैथिलीशरण गुप्त ने 'भारत-भारती' में देश की दीन-हीन दशा का चित्रण करते हुए हिन्दुओं के प्राचीन गौरव का वर्णन किया और नवयुवकों को समाज और राष्ट्र का उन्नयन करने के लिए प्रेरित किया। 'साकेत' में वर्णित उर्मिला प्रजा के अधिकारों की चर्चा करते हुए विश्व-बन्धुत्व और मानवता के आदर्शों की प्रतिष्ठा में अपना योगदान देती है। कवि ने कैकेयी के हृदय की कसक को व्यक्त कराने में पर्याप्त संवेदनशीलता से काम लिया है। 'द्वापर' और 'यशोधरा' में नारी की सामाजिक दुर्दशा का दिग्दर्शन कराते हुए उसके अधिकारों की माँग का व्याकुल-विह्वल रूप प्रस्तुत किया गया है। रामचरित उपाध्याय ने 'राष्ट्रभारती' और 'भारत-भक्ति' शीर्षक कविताओं में देशभक्ति का अच्छा रूप प्रस्तुत किया है। रायदेवीप्रसाद 'पूर्ण' नाथूराम 'शंकर' शर्मा तथा रामनरेश त्रिपाठी ने देश-प्रेम को प्रकृति प्रेम से सम्बद्ध करके रसात्मक रूप प्रदान किया। सत्यनारायण कविरत्न ने 'भ्रमरदूत' में भारतभूमि को यशोदा और अंग्रेजों को कंस के रूप में प्रस्तुत किया। साथ ही कृष्ण से प्रार्थना की गई कि वे अंग्रेज रूपी कंस का नाश करके देश का उद्धार करें।

उपर्युक्त पर्यालोचन के आधार पर यह स्पष्ट है कि जिन परम्पराओं का प्रवर्तन भारतेन्दु युग में हुआ उसका विस्तार तथा भावात्मक एवं कलात्मक दृष्टि से कविता की नई विधा का विकास द्विवेदी युग में हुआ जिसमें सामाजिक और राजनीतिक चेतना ने जनमत को उद्बुद्ध करके राष्ट्रीय आन्दोलनों को और भी समुज्ज्वल एवं तीव्रतर रूप प्रदान किया जिसके आधार पर मानवतावादी एवं स्वच्छन्दतावादी काव्य प्रवृत्तियों का श्रीगणेश हुआ। इन्हीं का विकसित रूप छायावादी और प्रगतिवादी काव्य में दिखाई दिया।

— आर्य कॉलिज, लुधियाना (पञ्जाब)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निबन्धकार द्विवेदी

डॉ० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल

काशी की नागरी प्रचारिणी सभा द्विवेदीजी का अभिनन्दन करने जा रही थी। वातावरण में 'अभिनन्दन' की चर्चा व्याप रही थी। उसे दृष्टि में रखकर एक अहिन्दी-भाषी धुरन्धर विद्वान् ने एक हिन्दी-भाषी विद्वान् से पूछा—"क्या द्विवेदीजी की रचना के किसी अनपहचाने अंश के सामने आते ही यह कहा जा सकता है कि यह उनके अतिरिक्त किसी दूसरे का हो नहीं सकता ?' साहित्यिक यशस्विता के लिए यह आवश्यक है कि लेखक के निर्मित-साहित्य में उसके व्यक्तित्व की छाप हो।

पाश्चात्य-साहित्य में, जो निबन्धों के लिए भी आधुनिक-प्राच्यों का आदर्श है, निबन्धों का जिस प्रकार सूत्रपात हुआ उससे वह यहाँ अब भी विशेष रूप से वैयक्तिक रचना समझी जाती है। इससे उसमें लेखक के व्यक्तित्व की छाप की आशा और भी बलवती हो जाती है। परन्तु द्विवेदीजी के निबन्धों में मन की बहक है और न भाषा की रंगीनी तथा चुलबुलाहट; जिनमें अधिकतर व्यक्ति की विलक्षणता दिखायी देती है।

द्विवेदीजी की विशेषता है अपने उद्दिष्ट विचारों को सरल और सीधे-सादे ढङ्ग से सरल और सीधी-सादी भाषा में प्रकट करना; जो विलक्षणता नहीं समझी जायगी। वे एक उद्देश्य को लेकर लिखते थे। अपने निबन्धों के द्वारा वे पाठकों की ज्ञान-वृद्धि करना चाहते थे। 'सरस्वती' में वे अकेले कई आदमियों का काम करते थे। उनकी लेखनी से निबन्धों की अजस्र धारा निकलती रहती थी, जिनके विषय-विभेद की कोई सीमा नहीं थी।[1] स्वभावतया द्विवेदीजी को न इतना समय मिल सकता था कि वे उनमें केवल अपने विचार रखते और न यही सम्भव था कि वे उन सब विषयों पर प्रभुत्व जमा लेते, जिन पर उन्हें कर्त्तव्य-वश लिखना पड़ता था। ज्ञान के क्षेत्र में, कहाँ क्या नवीन उद्भावना हुई है, इसका वे हर घड़ी पता रखने का यत्न करते थे। उन्हें किसी नवीन बात का पता लगा नहीं कि उन्होंने उसे 'सरस्वती' के पाठकों की भेंट किया। उनके निबंधों को 'बातों के संग्रह' के रूप में लिखा गया कह कर समर्थ समालोचक पं० रामचन्द्र शुक्ल ने इसी बात की ओर संकेत किया है। वस्तुतः द्विवेदीजी ने थोड़े से सीमित विषयों पर अपनी तीव्र अन्तर्दृष्टि का प्रयोग करने की अपेक्षा अपनी विशेष परिस्थिति में यही कल्याणकर समझा कि जगत में उच्च श्रेणी के विद्वान् ज्ञान की जो सामग्री प्रस्तुत कर रहे हैं, उसका जनता को परिचय करा दिया जाय। अर्थात् वे व्यापक अर्थ में ज्ञान-विज्ञान के पत्रकार थे और पत्रकार भी साहित्यिक अभिरुचि के।

परन्तु उनके रचे ऐसे निबन्धों का भी सर्वथा अभाव नहीं है, जिनमें की बातें उन्हीं के परिश्रम के फल हैं। कवि सुखदेव मिश्र पर उनका लिखा हुआ निबन्ध इसका उदाहरण है। रसज्ञ रञ्जन में प्रकाशित 'कवि और कविता' शीर्षक उनका निबन्ध भी मौलिक रचना मानी जानी चाहिए। जहाँ उन्होंने दूसरों के विचारों को निबन्ध-रूप में रक्खा है, वहाँ भी उन्होंने केवल अनुवादक का काम नहीं किया है। दूसरों के विचारों को मानसिक-पाचन के द्वारा वे सर्वथा अपना लेते थे, और इस प्रकार उन्हें वे अपने निबन्धों में जनता के सामने रखते थे कि वे मौलिक से लगने लगते थे, यद्यपि वे मूल स्रोत का सदैव उल्लेख कर देते थे। उनके अनुवादों के सम्बन्ध में भी यही कहा जा सकता है।

बात यह है कि उनके निबन्धों में वह मूल गुण

---

[1] अब तक पुस्तक रूप में उनके निबन्धों के कई संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। निम्नलिखित मेरे देखने में आये हैं। १—रसज्ञरञ्जन, २—साहित्य-सन्दर्भ, ३—साहित्य सीकर, ४—प्राचीन पण्डित और कवि, ५—प्रबन्ध-पुष्पांजलि, ६—आलोचनाञ्जलि, ७—औद्योगिकी, ८—विचार-विमर्श (छोटे लेखों और टिप्पणियों का संग्रह)—लेखक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यमान है, जिसके कारण निबन्ध नाम सार्थक हो सकता है। उनके निबन्ध बँधे हुए हैं, सुगठित हैं। उनकी विचार परम्परा गतिमय किन्तु गुम्फित तथा रचना व्यवस्थित है। शिथिलता का उनमें नाम नहीं। कहीं-कहीं पर अपनी बातों को उन्होंने दुहराया अवश्य है, परन्तु ऐसे स्थल सर्वदा समझाने के लिए पुनरुक्ति मात्र नहीं हैं, केवल व्याख्यानी ढङ्ग है। तद्गत विषय के सम्बन्ध में उनके हृदय के उत्साह को भी सूचित करते हैं इसलिए शैथिल्य के द्योतक नहीं। देखिए—

"नेत्रधारियों के नेत्रों को यदि आपका रूप देखने को मिल जाय तो मानो उन्हें सब-कुछ मिल गया—उन्हें समस्त अर्थों की प्राप्ति हो गयी, वे सफल हो गये। आपके गुण-समुच्चय और रूप राशि का वर्णन दूसरों के मुख से सुनकर मैं आप पर मुग्ध हो गयी हूँ—मेरा निर्लज्ज मन आप पर आसक्त हो गया है।"

उनके निबन्धों को नीरस या शुष्क कहना ठीक नहीं, वे चाहे शास्त्रीय अर्थ में रसवान न हों, पर रोचक अवश्य हैं। द्विवेदीजी के निबन्ध विचारात्मक और विचारोत्तेजक हैं और इसी कारण गम्भीर भी, परन्तु वे सर्वथा नीरस नहीं कहे जा सकते। द्विवेदीजी केवल मस्तिष्क को ही सजग नहीं रखते थे, कभी-कभी हृदय के प्रवाह को भी बिना रुकावट बहने देते थे। श्रीमद्भागवत से उनको बड़ा प्रेम था। 'रुक्मिणी हरण' शीर्षक निबन्ध में उन्होंने जिस उत्साह और तल्लीनता के साथ उसका स्मरण किया है, वह देखने योग्य है—

"श्रीमद्भागवत में एक नहीं, अनेक स्थल ऐसे हैं, जो महाकवियों की भी वाणी को मात करने वाले हैं। वे उत्कृष्ट कविता के नमूने हैं। वे अत्यन्त सरस, सालङ्कार और प्रसाद गुण पूर्ण हैं। किसी-किसी स्थल में तो प्रकृति रस का इतना परिपाक हुआ है कि उस स्थल की रचना के आस्वादन में हृदय तल्लीन होजाता है, कुछ समय के लिए आत्मविस्मृति सी हो जाती है और मालूम होने लगता है कि आकलनकर्त्ता का मन किसी और उच्च लोक में बिहार कर रहा है। उस समय आधि-व्याधियाँ भूल जाती हैं और हृदय में अनिर्वचनीय सात्त्विक भावों का उदय हो आता है।"

काव्यानन्द की परिभाषा का यह क्रियात्मक रूप स्वयं काव्य की कोटि तक पहुँचा हुआ दिखाई देता है।

तानेजनी में द्विवेदीजी का मन खूब रमा हुआ जान पड़ता है। जहाँ कहीं इसके लिए उन्हें अवसर मिलता है, वहाँ उनकी उमङ्ग के चारु दर्शन होते हैं और पढ़ने वाला भी बिना उनके कटाक्ष के औचित्या-नौचित्य की परवा किये उनके आनन्द में भागी हो जाता है। पुस्तकालोचन सम्बन्धी निबन्धों में उन्हें ऐसे अवसर बहुधा मिला करते थे। आर्यों की जन्म-भूमि सम्बन्धी कुछ मतों की उन्होंने एक निबन्ध में समीक्षा की है। एक भारतीय विद्वान के मत के विरोधी एक विदेशी विद्वान् को उन्होंने इस प्रकार याद किया है—

"दास महाशय के सिद्धान्तों और मतों का ज्ञान प्राप्त करके समालोचक साहब के होश उड़ गये हैं। आपकी राय है कि दास बाबू ने अपनी यह पुस्तक लिख कर बड़े साहस का काम किया है, योरप के पुरातत्त्वज्ञ ऐसी बातें सुनने के आदी नहीं, लेखक के निष्कर्षों का आधार उनका कथन-मात्र है, इसलिए भय्या, हम और कुछ नहीं कहते हम तो बस इतना ही इशारा करके कलम को कलमदान के हवाले करते हैं।"

भवभूति के एक नाटक के एक अनुवाद पर उसकी यह चपेट देखिए—'कहाँ भवभूति की सरस प्रासादिक और महा आल्हाद दायनी कविता और कहाँ अनुवादकजी की नीरस, अव्यवस्थित और दोष-दग्ध अनुवादमाला! परस्पर दोनों में सौरम्य विषयक कोई सादृश्य ही नहीं। कौड़ी-मोहर, आकाश-पाताल और ईख-इंद्रायण का अन्तर।

उनकी इस प्रकार की चपेटें कभी-कभी बहुत कटु भी हो जाया करती थीं, परन्तु वह कटुता भी सर्वथा विरस नहीं कही जा सकती।

रचना चाहे जिस प्रकार की भी उन्होंने की, इस बात का ध्यान उन्होंने कभी नहीं छोड़ा कि उनके निबन्ध कुछ चुने हुए व्यक्तियों के लिए ही नहीं लिखे जा रहे हैं किन्तु सर्वसामान्य के लिए। भाषा चमत्कार के फेर में पड़ कर उन्होंने कभी नहीं लिखा। उनकी

(शेष पृष्ठ ६४ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्विवेदीजी के निबन्ध

प्रो० प्रकाशचन्द्र गुप्त

'निबन्ध' शब्द की परिभाषा 'बेकन' Bacon ने 'बिखरे विचार" की थी। डा० जॉनसन का भी लगभग यही मत था। किन्तु अब निबन्ध-रचना एक बड़ी मँजी और प्रौढ़ कला समझी जाती है। निबन्ध किसी आन्तरिक प्रेरणा का विकसित और सम्बद्ध रूप है। निबन्ध किसी भी विषय पर लिखे जा सकते हैं। अँग्रेजी में 'छड़ी', 'छत्री', 'कुछ भी नहीं', 'हाथ मिलाना', 'सुबह उठना', 'ऋण-ग्रस्त होना', आदि विषयों पर भी निबन्ध लिखे गए हैं।

पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी ने "सरस्वती" में अनेक निबन्ध लिखे। यह निबन्ध किसी अन्तर्प्रेरणा का फल न थे। अधिकतर यह निबन्ध हमारा ज्ञान बढ़ाते हैं। इनमें किसी मनोभावना का विश्लेषण नहीं। यह एक पत्रकार के निबन्ध थे। "कापी राइट एक्ट", "चीन के अखबार", "साँची के पुराने स्तूप", "इङ्गलैण्ड के शाही खानदान का खर्च", "पानी में न डूबने वाले जहाज", "क्रय का कारखाना" आदि विषयों पर आपने निबन्ध लिखे।

कहा जाता है अपनी पत्रिका का पूरा मसाला अकेले तैयार कर डालने की आप क्षमता रखते थे। किसी रिपोर्ट, किसी प्राचीन पुस्तक, किसी नये आविष्कार की सूचना के बल पर आप लेख लिख सकते थे। आलोचनात्मक निबन्धों को छोड़ कर आपके निबन्ध अधिकतर किसी अन्य स्थान से लिए सारांश-मात्र हैं।

आपके अनेक निबन्ध-संग्रह हमारे सामने हैं— 'रसज्ञ रञ्जन', 'विचार विमर्श'; 'साहित्य सीकर', 'प्राचीन चिह्न', 'आध्यात्मिकी', 'पुरावृत्त' आदि। कालान्तर में यह संग्रह जी सकेंगे, यह कहना कठिन हैं। पत्रकार की क्षण-भंगुर रचनाएँ अधिकतर काल के गर्त्त में विलीन हो जाती हैं।

आपके निबन्धों का हम इस प्रकार श्रेणी-विभाग कर सकते हैं—(१) साहित्यिक, (२) ऐतिहासिक, (३) वैज्ञानिक, (४) आध्यात्मिक और (५) लघु जीवनियाँ।

आपके साहित्यिक निबन्ध अजर-अमर हैं। 'वेद', 'प्राकृत भाषा', 'संस्कृत साहित्य का महत्व' आदि निबन्ध अक्षय महत्ता लिए हैं। आचार्य द्विवेदीजी कवि तो न थे किन्तु रसज्ञ अवश्य थे। आलोचक भी आप उच्चकोटि के थे।

ऐतिहासिक विषयों पर द्विवेदीजी ने बहुत कुछ लिखा। प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक, युग सभी के इतिहास में आपको दिलचस्पी थी। साँची, एलोरा, खजुराहो, देवगढ़, मुगल बादशाहों की दिनचर्या, शिवाजी और अँग्रेज, महारानी विक्टोरिया का घोषणा पत्र—आपके विस्तृत और व्यापक इतिहास-प्रेम के इङ्गित हैं। आप पुराने लेख और पत्रादिकों से अपनी सामग्री लेते थे, अतएव बहुत सी नई बात हमें आपके निबन्धों में मिलती हैं और इतिहास की सूखी अस्थियों में प्राण से पड़ जाते हैं।

वैज्ञानिक विषयों में भी आपकी अच्छी गति थी। 'प्राणियों के अवयव काट कर लगाने की क्रिया', 'पेड़-पौधों में चेतना शक्ति', 'रोग परीक्षा-यंत्र', 'समुद्र-तल का तथ्य ज्ञान', 'तार द्वारा फोटो-चित्रों का भेजना' आदि वैज्ञानिक विषयों पर आपने छोटे-छोटे निबन्ध लिखे। ऐसे लेख विलायत के पत्रों में निरन्तर निकलते रहते हैं। जिनमें पाठक की ज्ञान-पिपासा की तृप्ति ही लक्ष्य है। साहित्य की बेशकीमती वस्तु उन्हें कोई नहीं समझता।

द्विवेदीजी की आध्यात्मिक विषयों में भी लगन थी। आपका एक निबन्ध-संग्रह 'आध्यात्मिकी' भी है। इन लेखों में आपने आत्मा, ईश्वर निरीश्वरवाद, जीवन आदि विषयों पर अपना मत प्रकट किया है। पुनर्जन्म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में द्विवेदीजी का विश्वास था। इस विषय पर आपने 'सरस्वती' में एक लेख-माला लिखी थी और बहुत से प्रत्यक्ष प्रमाण भी एकत्रित किये थे।

'सरस्वती' सम्पादक की हैसियत से प्रसिद्ध व्यक्तियों की मृत्यु पर द्विवेदीजी ने छोटी-छोटी टिप्पणियाँ भी लिखी थीं। इनमें कुछ लघु जीवनियाँ बहुत सुन्दर और मर्मस्पर्शी हैं। विशेषकर पं० बालकृष्ण भट्ट और राय देवीप्रसाद 'पूर्ण' की। भट्टजी की मृत्यु पर शोक प्रकट करते हुए आपने लिखा है:—

"भट्टजी तुम्हारे शरीर-त्याग का समाचार सुन कर बड़ी व्यथा हुई। हमारा कण्ठ रुँधा हुआ है, हमारे नेत्र साश्रु हैं, हमारा शरीर अवसन्न है। इलाहाबाद में तुम्हारे, वहाँ जाने पर, यह जन तुम्हारे दर्शनों से बहुधा वञ्चित नहीं हुआ। अपने आने की सूचना भी वह प्रायः दो दिन पहले ही तुम्हें देता रहा है। इसलिए कि तुम मकान पर ही मिलो और तुम्हारा गिलौरीदान भी भरा हुआ मिले। तुम्हारी इच्छा न रहते भी तुम्हारे पान हम तुम्हारे पानदान से निकाल-निकाल कर खा गए। कितनी ही दफे मिठाई और फल तुमसे बलवत् मँगवा कर हमने खाए। और न मालूम कितनी तकलीफें तुम्हें दीं।....भट्टजी अब वे सरस कथाएँ और पुराने कवियों की वे हृदय-रञ्जिनी उक्तियाँ कहाँ सुनने को मिलेंगी। तुम तो चल दिये।........"

पूर्णजी के लिए आप लिखते हैं—

"जिसकी हास्य रस-पूर्ण पर तर्क-सङ्गत और युक्ति-युक्त वक्तृता सुन कर कुछ समय पूर्व श्रोता लोग लखनऊ में मुग्ध हो गए थे। वह विद्वान्, वह नामी वकील, वह धर्म-प्राण पुरुष, केवल ४५ वर्ष की उम्र में अपने प्रेमियों का, अपने नगर के निवासियों को, अपने मित्रों और कुटुम्बियों को रुलाकर चल दिया। कानपुर में आपकी बड़ी प्रतिष्ठा थी। कोई बड़ा काम ऐसा न होता था, जिसमें आप शरीक न होते हों।"....

ऐसे ही अनेक रेखा-चित्र हमें आपके लेखों में मिलते हैं।

द्विवेदीजी के निबन्ध अधिकतर ज्ञान-वर्द्धक थे। उनके लिए कभी आपने मौलिकता का दावा नहीं किया। आपने 'आध्यात्मिकी' की भूमिका में स्वयं लिखा है—"आप देखेंगे कि इसमें मेरे जिन लेखों का संग्रह है वे कई भाषाओं के भिन्न-भिन्न ग्रन्थों की सहायता से लिखे गए हैं। विचार-परम्परा और तत्व-निर्णय दूसरों का है; उनके प्रकाशन की प्रणाली और भाषा मात्र इस निवेदनकर्त्ता की है।"

निबन्धकार की हैसियत से द्विवेदीजी का सबसे बड़ा काम गद्य-निर्माण था। आपने अपने छोटे-छोटे ललित लेखों द्वारा हिन्दी में सरस प्रवाहमय गद्य की परिपाटी चलाई। आपकी भाषा बोलचाल की भाषा के निकट और मुहाविरेदार थी। संस्कृत के पण्डित होते हुए भी आप दुरूह शब्दों का प्रयोग कम करते थे। प्रौढ़ विचार और भावनाओं को अतिरञ्जित करने वाली गद्य-शैली का विकास कर आपने हिन्दी भाषा और साहित्य का भारी उपकार किया। यह हिन्दी के ऊपर आपका बड़ा ऋण है।

—सा० स०, अप्रैल १९३९ से।

यदि आप चाहते हैं कि
भारतवर्ष में प्रकाशित
हिन्दी की उत्कृष्ट पुस्तकों की जानकारी आपको मिले—
तो कृपया हमें लिखें। हम आपकी सेवा में शीघ्र ही वृहत् सूचीपत्र भेजेंगे—

साहित्य रत्न भण्डार, आगरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्विवेदी युगीन समीक्षा

डा० मक्खनलाल शर्मा

हिन्दी-समीक्षा की जो धारा भारतेन्दु-युगीन गङ्गोत्री से निःसृत हुई थी वह द्विवेदी युगीन समतल वनस्थली में आकर विस्तृत होने के लिए गहराई में उतरी। उसे संस्कृत-परम्परा की स्थायी निधि को शीघ्रातिशीघ्र आत्मसात करने की चिन्ता हुई। आचार्य द्विवेदी ने विशेष रूप से इस उत्तरदायित्व को उठाया। भारतेन्दु-युग में सृजनात्मक साहित्य के समानान्तर समीक्षा-पद्धति का विकास हुआ था किन्तु द्विवेदी-युग में सृजनात्मक साहित्य जिस गति से अग्रसारित हुआ वह गति समीक्षा ग्रहण न कर पाई और पिछड़ गई। उसे अंग्रेजी और संस्कृत की समीक्षा पद्धतियों से अपना भण्डार भरने की चिन्ता हुई, क्योंकि व्यावहारिक समीक्षा के विकास के लिए अब सैद्धान्तिक पक्ष के समृद्ध होने का प्रश्न उपस्थित हो गया था। द्विवेदीजी ने स्वयं संस्कृत काव्यों की समीक्षा की तथा संस्कृत काव्यशास्त्रीय आधार को हिन्दी में प्रस्तुत किया, एवं अन्य लोगों से अंग्रेजी के काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ अनुवादित कराए। आलोचना के महत्व को प्रतिपादित किया। किन्तु सामयिक सृजनात्मक साहित्य की ओर इतना ध्यान नहीं दिया जा सका जितना कि भारतेन्दु-युग में दिया गया था एवं उस धारा को अग्रसारित करने की दृष्टि से दिया जाना चाहिए था। यह दूसरी बात है कि भारतेन्दु-युगीन समीक्षा के सभी प्रगतिशील तत्व किसी न किसी रूप में अक्षुण्ण बने रहे। इस युग में भारतेन्दु-युग की कसौटी मान्य रही। भारतेन्दु-युग में जनता को सच्चा समीक्षक माना गया था। आचार्य द्विवेदी ने भी अच्छी कविता की कसौटी स्रोता घोषित किया।

"अच्छी कविता की सबसे बड़ी परीक्षा यह है कि उसे सुनते ही लोग बोल उठें कि सच कहा। वही कवि सच्चे कवि हैं जिनकी कविता सुनकर लोगों के मुँह से सहसा यह उक्ति निकलती है।"[1]

भारतेन्दु-युग के जो लेखक पहले अंग्रेज की परोक्ष नीति की आलोचना करते थे, किन्तु द्विवेदी-युग में अधिक राजनीतिक चेतना आने से वे भी खुलकर अंग्रेज का विरोध करने तथा देशवासियों को सङ्गठित होने की प्रेरणा देने लगे। भट्टजी ने स्पष्ट रूप से लिखा—

"अंग्रेजी राज्य के कड़े शासन में जब हम सब ओर से दबे हैं और चारों ओर से ऐसे कस दिये गये हैं कि हिल नहीं सकते, आमदनी का कोई द्वार न खुला रह गया..........ऐसी हालत में भी जब हम न चेते तो फिर कब चेतेंगे?[2]

वे खुलकर कांग्रेस का समर्थन करने और उसकी जय बोलने लगे।

"अहा हा! आज तक हमारे कानों में और प्राणों में यही ध्वनि गूंज रही है और रह-रह के मुँह से यही निकलता है[3] कि 'कांग्रेस की जय'। क्यों न हो, कांग्रेस साक्षात दुर्गाजी का रूप है। क्योंकि वह देश-हितैषी देव प्रकृति लोगों की स्नेह शक्ति से आविर्भूत हुई है।"

विज्ञान के विकास और समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण के अनुरूप जीवन दृष्टि उस युग में आने लगी थी।

स्त्री शिक्षा की ओर अधिक ध्यान दिया जाने लगा था और शिक्षा में भी क्लर्क, मुहर्रिर और स्कूलमास्टर की अपेक्षा सच्चा उत्पादक वर्ग पैदा करने वाली शिक्षा को प्रमुखता दी जाने लगी थी। अर्थवादी शिक्षा पर ध्यान आकर्षित किया जा रहा था, जिससे सच्ची शिक्षा का सूत्रपात हो सके। इस शिक्षा के पीछे ही आर्थिक दृष्टिकोण की प्रधानता थी। ये समीक्षक शासन निरपेक्षता द्वारा जनता को सरकार का विरोध करने की

[1] सञ्चयन पृष्ठ ८।
[2] भट्ट निबन्धावली पृ० ११६।
[3] निबन्ध नवनीत पृ० ८१।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेरणा देते थे।

भारतेन्दु युगीन समीक्षकों में से प्रतापनारायण मिश्र ने खेती की हीन और किसानों की अति दयनीय स्थिति की ओर ध्यान आकृष्ट किया तथा देश में विदेशी शासन के फलस्वरूप जो कारीगरी नष्ट हो गयी थी तथा देश का धन विदेशों को खिंचा जा रहा था, उनका स्मरण दिलाया, तो बालकृष्ण भट्ट ने 'ढोल के भीतर पोल में' 'अंग्रेजों की चिउँटियाँ ढीलन' को रोकने पर जोर दिया और स्वयं आचार्य द्विवेदी ने भी इन विषयों पर अपनी सशक्त लेखनी उठाई। अमेरिकन और भारतीय कृषि कार्य की तुलना करते हुए कृषक दशा तथा उसके शोषक कारणों पर प्रकाश डालते हुए लिखा :—

'भारतवर्ष में कृषकों की दुरवस्था और निर्धनता के कई कारण हैं। एक तो यहाँ किसानों में शिक्षा का अभाव है, दूसरे यहाँ की गवर्नमेंट ने देश के कुछ अंशों को छोड़कर अन्यत्र सभी कहीं भूमि को अपने अधिकार में कर रखा है। वही उसकी मालिक बनी बैठी है, अतएव उसने भूमि के लगान और मालगुजारी के सम्बन्ध में जो कानून बनाए हैं वे बहुत ही कड़े हैं। फिर जहाँ कहीं ताल्लुकेदारियाँ हैं वहाँ किसानों के सुभीते का कम, ताल्लुकेदारों के सुभीते का अधिक ध्यान रखा गया है। यही सब कारण है जो किसानों को पनपने नहीं देते।

इसी लेख में वे भारतीय कृषक को शिक्षित होकर कृषि विकास की ओर उन्मुख होने की शिक्षा देते हैं। क्योंकि वे केवल रुपये को धन न मानकर वास्तविक सम्पत्ति उत्पादन को कहते हैं। युग ने जागरूक रह कर धर्म, मत, सम्प्रदाय जाति-पाँति विभेद मूलक अनेकता का विरोध कर आर्थिक और राजनैतिक आधारों पर सङ्गठन का बिगुल बजाया और इसी को धर्म का स्थानापन्न बनाने पर अपनी शक्ति लगाई। युग अपनी जाग्रतावस्था की सूचना निम्न शब्दों में देता दिखाई देता है—

'हिन्दू भाइयों को यह समय मतमतान्तरों में पड़ने का नहीं है और न संतोषक है और न वेदान्ती बनकर उदासीन होकर बैठने का है। भाइयो, ऐसे घोर काल में कुछ धार्मिक कार्य नहीं हो सकता न वह शास्त्र विहित ही है। केवल देश बचाने के लिए जिस तरह हो सके, कटिबद्ध होकर यत्न करो। यह समय देश-विदेश व जाति-पाँति के विचार का नहीं है, सब का प्रायश्चित केवल देश भाइयों को बचाना ही परम धर्म है। यही सबका परम कर्त्तव्य है। जैसे हो सके वैसे शिल्प-शिक्षा का प्रचार करो, जैसे बन पड़े वैसे कला-कौशल सीखने का यत्न करो। यही सबका उद्धार है और कुछ नहीं।[1]

सत्यदेव परिव्राजक जैसे धार्मिक पुरुषों ने भी धर्म की अपेक्षा राजनीति को प्रमुखता दी और बताया कि जो इस लोक को नहीं सुधार पाता है वह परलोक को कभी भी सुधार नहीं पाएगा। अतः इहलोक—अपना वर्तमान पहले सुधारना चाहिए। इस युग के मुख्य समीक्षक मिश्रबन्धुओं ने ब्राह्मणवाद का खण्डन किया और द्विज के अन्तर्गत तीन वर्णों को रखा; यह प्रगतिशील दृष्टिकोण था, जिसे स्वीकार करने के लिए उन्हें गोस्वामी तुलसीदास की महानता को भी चुनौती देनी पड़ी और उनके काव्य में दोष दिखाने पड़े।

आचार्य द्विवेदी जी की साहित्य-समीक्षा का प्रभाव न केवल साहित्य पर पड़ा वरन् उससे ज्ञान के प्रति स्पृहा उत्पन्न हुई। और इसका सम्बन्ध, समाज, देश तथा जन-जीवन की वर्तमान अवस्था से बड़ी ही घनिष्ठता के साथ जुड़ा हुआ था। साहित्य का द्वार अब तक कुछ के लिए—विशिष्ट जनों के लिए ही उन्मुक्त था उसे सर्व-साधारण के लिए खोलने का श्रेय आचार्य द्विवेदी को है। वे साहित्य को सामान्य जनता के इतना पास ले आए कि दोनों एक दूसरे को पहचानने लगे। निम्न पंक्तियाँ इस पर प्रकाश डालती हैं—

'द्विवेदीजी की कितनी ही ऐसी रचनाएँ हैं जो पाठकों में सत्साहित्य के प्रति अनुराग और ज्ञान के प्रति स्पृहा उत्पन्न करने के लिए लिखी गई हैं, और कितनी ही ऐसी हैं जिनका सम्बन्ध देश और समाज की वर्त्तमान अवस्था से है। हिन्दी भाषा-भाषियों में ज्ञान

[1] इन्दु-कला ४ खण्ड २, किरण ६; पृष्ठ ५४०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का जितना प्रचार द्विवेदी जी ने किया है, उतना अन्य किसी लेखक ने नहीं किया''''द्विवेदीजी ने रजत-शृङ्खला स्वा तोड़ी, हिन्दी साहित्य में सर्वसाधारण के लिए ज्ञान का द्वार ही उन्मुक्त कर दिया।[1]

द्विवेदीजी ने हिन्दी के पोषण के लिए अंग्रेजी का विरोध किया और यह देखकर आश्चर्य होता है कि द्विवेदीजी अंग्रेजी के विरोध के माध्यम से अंग्रेजी शासन व्यवस्था का विरोध कैसी कौशल पूर्ण शैली में कर रहे थे। उन्हें राजनीति गुलामी की अपेक्षा सांस्कृतिक गुलामी अधिक भयङ्कर लगी—

'हाय री अंग्रेजी! तूने हमारे खाद्य और पेय पदार्थों में परिवर्तन कर दिया, तूने हमारे वस्त्र-परिच्छदों में अदल-बदल कर डाला, यहाँ तक कि तूने हमारी मातृभाषा को भी तिरस्कृत कर दिया !!! अभागे हिन्दुस्तान को छोड़ कर धरती की पीठ पर एक भी ऐसा सभ्य देश नहीं, जहाँ इस तरह की अस्वाभाविक बातें होती हों।[2]

इस युग की समीक्षा का आशीर्वाद न केवल स्वतन्त्र आन्दोलन को मिला था वरन् उसके नेता महात्मा गान्धी को भी महर्षि कहा जाता था। स्वयं आचार्य द्विवेदी ने लिखा था—'गान्धीजी को आधुनिक साँचे में पला हुआ प्राचीन महर्षि समझना चाहिए। उनके लेखों और व्याख्यानों में व्यक्त किए गए उनके विचारों से हम लोगों को यथाशक्ति लाभ उठाना चाहिए।[2]

'पद्म-पराग' में समीक्षा का उपयोग लोक-कल्याण तथा राजनीति के हित के लिए किया गया है। पं० पद्मसिंह शर्मा ने काव्य से शिक्षा लेने की प्रेरणा देते हुए लिखा है—

"इसमें लीडर लोग भगवान के इस आचरण से शिक्षा ग्रहण करें तो उनका और लोक का कल्याण हो।

कांग्रेस के असहयोग आन्दोलन के समर्थक रहते हुए भी समीक्षकों ने समाज और नेता के सामने समर्पण बुद्धि से काम नहीं लिया। वे आन्दोलन के प्रतिक्रियावादी रूप को समझते तथा उसकी यथार्थवादी समीक्षा कर जनता को सच्ची तस्वीरें दिखाते रहते थे। प्रभाव उत्पन्न करने के लिए व्यंग्य का उपयोग किया गया और फब्तियाँ कसी गई—

'श्रीकृष्ण ने अपने सगे सम्बन्धी, पर अन्यायी दुर्योधन का निमन्त्रण स्वीकार नहीं किया। और एक आजकल के लीडर हैं जो कहीं निमन्त्रण पाने के प्रयत्न में रहते हैं। आज अपमानित होकर असहयोग की घोषणा करते हैं, कल उड़ती चिड़िया के द्वारा निमंत्रण पाकर सहयोग करने दौड़ते हैं। इन्हें ही लक्ष्य करके कवि ने कहा है :—

कौम के गम में डिनर खाते हैं हुक्काम के साथ।
रंज लीडर को बहुत है मगर आराम के साथ॥

इतिवृत्तात्मक युग ने रीतिकालीन मान्यताओं की अस्वीकृति का उद्घोष किया। इस युग की समीक्षा ने रीतिकालीन साहित्य को आर्षत्व से युक्त माना और दरबारी संस्कृति का तीव्र विरोध किया। इससे काव्य सामान्य जनता के स्तर पर आया एवं उसमें लोकतन्त्रात्मक प्रवृत्तियों का समन्वय हो सका। पं० पद्मसिंह शर्मा ने अमीर खुसरो की कविता के उस अंश को हेय माना जो दरबार के दबाव का परिणाम था—

"खुसरो की कविता अत्यन्त चमत्कारपूर्ण, सरस और हृदयहारिणी है। यद्यपि उन्होंने ऐतिहासिक कहानियाँ—अपने आश्रयदाता बादशाहों के कारनामे और प्रशस्तियाँ लिखी हैं जो उन्हें दरबारदारी के दबाव से लिखनी पड़ती थीं।"

लोकतन्त्रीय मान्यताओं का दबाव इतना बढ़ा कि काव्य को वर्ग विशेष के हितों के लिए प्रयोग करना भी अनुचित माना जाने लगा था। कविता की महानता स्थापित की गई और उसका दुरुपयोग करने वालों को अपराधी घोषित किया गया।

इस लोक-प्रमुखता ने देश-भक्ति के साथ अपने को जोड़ा और देश के लिए व्यक्ति के बलिदान की भावना

[1] द्विवेदी अभिनन्दन ग्रन्थ, पृष्ठ ५३७,
[2] सरस्वती, वर्ष १५ सं० ४५, पृष्ठ १९९।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बढ़ी। देश की प्रतिष्ठा विदेशियों के सामने न गिरे इसलिए साहित्य समीक्षक विदेश गमन करने वालों को लिखने लगे—"देखो, तुम विदेश में जाकर अपने को भारत का बहुत छोटा विद्यार्थी बताना और कोई ऐसा काम न करना जिससे अपने देश का ह्रास होवे। जो कुछ कहो समझ कर कहना।"[1] जो द्विवेदी युग की समीक्षा प्राचीन वैभवपूर्ण भूतकाल की ओर उन्मुख हुई उसमें अन्य तत्व भी निहित थे जैसे—व्यापार-नीति तथा आर्थिक विकास की प्रेरणा। एवं वर्तमान भारतीय अवस्था के प्रति तीव्र असन्तोष व्यक्त करके उसे दूर करने की दिशा निदेशन आदि। आचार्य द्विवेदी ने यद्यपि समीक्षा के उत्कृष्ट सिद्धान्त एवं उसकी समाजशास्त्रीय मान्यतायें स्पष्ट नहीं कीं और उनसे इस प्रकार की माँग करना भी समय से भी पूर्व की बात है। किन्तु इनकी माँग अवश्य प्रस्तुत की जिससे आगे चलकर उस युग का आविर्भाव हो सका जो प्रगतिशील दृष्टिकोण की दिशा निर्दिष्ट कर सका। समीक्षा का ध्येय रस, भाव, अलङ्कार, छन्दशास्त्र और नायिका का परिज्ञान मात्र नहीं है—ऐसा स्पष्ट रूप से कहा गया और उस परम्परागत पद्धति पर चलने वाले कवियों की और साहित्यकारों की तीव्रतर भर्त्सना की गई। मिश्र-बन्धुओं के हिन्दी-नवरत्न को इसी कसौटी पर कसा गया जिससे एक ओर तो प्रत्यालोचना (आलोचना की आलोचना) का रूप प्रकट हुआ और दूसरी ओर कलम पकड़ने का शऊर न रखने वाले अपना नया ऊँट छोड़ने से बाज आ गये।

चूँकि इस युग की समीक्षा साहित्य के इतर जीवन को प्रभावित करने के उद्देश्य से प्रेरित थी इसलिए जब भी अवकाश मिलता था ये समीक्षक राजनीति, कर्म, व्यवसाय, कृषि, विज्ञान, पुरातत्व, नृतत्व, जीव-विज्ञान, राष्ट्रीय आन्दोलन, नेताओं का स्वभाव, अंग्रेजी राज्य की शोषक नीति, जनसंख्या, लीग आफ नेशन्स, राष्ट्रीय एकता, हिन्दी-प्रचार, सङ्गठन, नव स्वतन्त्र देशों की गाथा, सच्चा प्रतिनिधित्व, गान्धीवाद, जेल न्याय और पुलिस की सख्ती, लोक-संस्कृति का अभ्युदय, सामयिक समस्या की प्रमुखता आदि विषयों को प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से स्वीकार कर लेते थे एवं इन विषयों पर अनेक विधि शैलियों में अपनी कलम चलाते थे। समीक्षकों की दृष्टि सार्वजनिक, सार्वभौमिक, सार्वकालिक साहित्य की ओर थी किन्तु ये गुण सरल भाषा के साथ ही स्वीकृत थे अन्यथा नहीं। आचार्य द्विवेदी ने इस विषय पर स्पष्ट रूप से लिखा है—

"एक बात का विचार रखियेगा भाषा सरल हो, भाव सार्वजनीन और सार्वकालिक हों। सब देशों के सब मनुष्यों के मनोविकार प्रायः एक से होते हैं। काव्य ऐसा होना चाहिये जो सबके मनोविकारों को उत्तेजित करे—देश काल से मर्यादाबद्ध हो, ऐसी ही कविता अमर होती है।"

इस युग के प्रारम्भिक काल की समीक्षा में भारतेन्दु-युग के समान ही सामायिकता तो है किन्तु खुल कर अंग्रेज के विरोध की कमी दिखाई देती है। इस वर्ग के समीक्षक सांस्कृतिक क्रान्ति के लिए प्रयत्नशील थे जो परोक्ष रूप से भी हो सकती थी। इस अन्तर-विरोध को द्विवेदीजी की निम्न पंक्तियाँ बहुत अंश तक स्पष्ट करती हैं—

"कोई बात समय और सरकार के विरुद्ध न रहे, इशारा भी न रहे। कल नया कानून बना है। कानून क्या मार्शल ला। जङ्गी कानून है। फाँसी तक की सजा है।"

इस युग के समीक्षक तथा साहित्यकार अंग्रेजी तथा यूरोपीय साहित्य से बुरी तरह प्रभावित थे। वे अंग्रेजी के साहित्य को पढ़कर प्रेरणा लेते थे एवं उनकी धारणा थी कि हिन्दी में जो विकास हो रहा है उसका मुख्य कारण अंग्रेजों का शासन है। मिश्रबन्धुओं ने अपने विनोद में लिखा था—"अंग्रेजी साम्राज्य स्थापित होने से जहाँ देश में अन्य अनेक लाभ हुए वहाँ साहित्य ही कैसे विमुख रह जाता.......। जब हम लोगों में अंग्रेजी राज्य स्थापित होने पर अन्य प्रकार के उन्नत विचार आने लगे तभी अपनी भाषा की उपयोगी उन्नति की इच्छा भी अंकुरित हुई। बस भाषा में परिवर्तन काल उपस्थित हो जाने का यही एक प्रधान कारण था।

[1] पद्मसिंह शर्मा के पत्र, पृ० १०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलोच्य युग में साहित्यालोचन को सामान्य लोगों तक पहुँचाने के लिए तथा जनता की अभिरुचि जगाने के लिए सिद्धान्त की अपेक्षा साहित्य को प्रमुखता दी गई। समाज के प्रथम सृजनात्मक साहित्य को द्वितीय और समीक्षा को तृतीय स्थान दिया गया था। समीक्षा में तत्कालीन नाटकों तथा अन्य साहित्यिक विधाओं को समक्ष रखकर सिद्धान्त निर्धारण हुआ। समीक्षा के जो उद्देश्य निश्चित हुए जिनमें साहित्य की उन्नति, साहित्य को सामान्य जनता तक पहुँचाना, साहित्य को सामान्य जनप्रिय बनाना, साहित्य की उपयोगिता स्पष्ट करना तथा साहित्य को रमणीय शिक्षाओं द्वारा जीवन को अधिक आनन्दमय बनाने की दिशा दिखाना आदि प्रमुख थे। द्विवेदीजी की साहित्य कसौटी जनमत पर आधारित होने के कारण व्यक्तिवादी समीक्षा की अपेक्षा सैद्धान्तिक समीक्षा के समाजवादी रूप को ही श्रेष्ठ मानती थी। इसलिए उन्होंने मिश्रबन्धुओं की भाववादी समीक्षा का खण्डन किया। आर्यसमाज के शास्त्रार्थों के समान समीक्षा क्षेत्र में भी उपस्थापनवाद का यथेष्ट प्रचार हुआ किन्तु उसका कारण लोकमङ्गल था। सामाजिकता की स्वीकृति का ही परिणाम यह था कि सैद्धान्तिक समीक्षा में रस को कसौटी के रूप में माना गया।

—आगरा कालेज, आगरा।

(पृष्ठ ५७ का शेषांश)

रचना उनके पाठकों और उनके अभिप्राय के बीच में अवच्छेद का काम नहीं करती वह ऋजु, सुगठित, व्यवस्थित और प्रसन्न है।

परन्तु ये कोई ऐसी विशेषताएँ नहीं, जिनसे हम द्विवेदीजी की रचना को अलग पहचान सकें। द्विवेदीजी की विशेषता यह है कि उनकी रचना विशेषता अथवा विलक्षणता से विहीन है। जिस समय उन्होंने लिखना आरम्भ किया था, उस समय की रचनाओं में लेखकों का व्यक्तित्व इतना आतिशय्य पूर्ण था कि भाषा का व्यक्तित्व ही न बन पाता था। व्यक्तिगत विलक्षणता रचना को रोचक तो अवश्य बना देती है, परन्तु पहले यह आवश्यक है कि रचना में वह स्थिर तत्त्व भी विद्यमान हो, जिस पर विलक्षणता का परिवर्तनशील आभरण अटके। द्विवेदीजी ने यही तत्त्व भाषा को प्रदान किया; परन्तु विलक्षणताओं के उस युग में व्यक्तिगत विलक्षण-हीनता भी एक विलक्षणता लगती रही होगी। इसलिए उस समय द्विवेदीजी की भी एक शैली या ढङ्ग कहा जा सकता रहा होगा और उनकी अधिकांश रचनाओं से परिचित व्यक्ति उनकी अनजानी रचना को यह मानने में समर्थ हो सकता होगा। परन्तु आगे चलकर जब द्विवेदीजी का दिखाया हुआ मार्ग लोगों को रुच गया और अधिकाधिक चलता ही गया तब द्विवेदीजी की शैली (मैनर) द्विवेदीजी की न रह कर उनके असंख्य अनुयायियों के द्वारा प्रायः सम्पूर्ण भाषा की रीति (स्टाइल) हो गयी। आज द्विवेदीजी के निबन्धों में उनके व्यक्तित्व की छाप नहीं दिखाई देती—इसलिए नहीं कि द्विवेदीजी का व्यक्तित्व ही उनकी रचनाओं में नहीं है, वरन् इसलिए कि उनका व्यक्तित्व विकसित होकर एक अधिक व्यापक व्यक्तित्व में परिणत हो गया है।

'स्टायल इज दि मैन' सरीखी भ्रामक उक्तियों से छोटे लोगों की माप हो सकती है, द्विवेदीजी सरीखे दिग्गज के लिए वह बहुत छोटा गज है।

—सा० सं०, अप्रेल १९३९ से।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलोचक द्विवेदी

श्री गुलाबराय

आचार्य द्विवेदीजी हमारे सामने कई रूपों में आते हैं। उनमें समालोचक का रूप कुछ विशेषता रखता है क्योंकि उसका सम्बन्ध सरस्वती के प्रायः बीस वर्ष के सम्पादन से है। समालोचक के लिए यह आवश्यक नहीं कि वह सम्पादक ही हो किन्तु यदि वह सम्पादक के आसन पर भी विराजमान हो, तो आलोचना का कार्य उसके जीवन के कार्य से सम्बन्धित हो जाता है। द्विवेदीजी उन लोगों में से थे जो किसी काम को बेगार के रूपमें नहीं करते थे। इसलिए उनकी आलोचनाओं और टिप्पणियों में बड़े अध्ययन और मनोयोग का परिचय मिलता है। इसीलिए उनकी आलोचनाओं ने साहित्य निर्माण में बहुत कुछ योग दिया है।

द्विवेदीजी की आलोचनाओं के सम्बन्ध में हमको तीन बातों पर विचार करना चाहिए—(१) उनके आलोचना सम्बन्धी सिद्धान्त, (२) उनकी लिखी हुई आलोचनाएँ, (३) आलोचकों में उनका स्थान।

द्विवेदीजी के आलोचना सम्बन्धी सिद्धान्त उनके कतिपय लेखों में बिखरे हुए मिलते हैं। उनके उन लेखों से यह प्रकट होता है कि वे केवल गुण दोष निरीक्षण में आलोचक की इतिकर्त्तव्यता नहीं समझते थे। द्विवेदीजी सम्पादकों, समालोचकों और लेखकों का कर्त्तव्य, शीर्षक लेख में लिखते हैं—

"छन्द, अलङ्कार व्याकरण आदि गौण बातें हुई, इन्हीं पर जोर देना अविवेकता प्रदर्शन के सिवा और कुछ नहीं। व्याकरण, आदि की भूलें होती किससे नहीं? अंग्रेजी, फारसी, अरबी, संस्कृत आदि के बड़े-बड़े विद्वानों ने क्या इस तरह की भूलें नहीं कीं? पर इससे क्या उनके ग्रन्थों की प्रतिष्ठा कुछ कम हो गई है? किसी पुस्तक या प्रबन्ध में क्या लिखा गया विषय को किस ढङ्ग से लिखा गया है, वह विषय उपयोगी है, या नहीं, उससे किसी का मनोरञ्जन हो सकता है, या नहीं, उससे किसी को लाभ पहुँच सकता है या नहीं, लेखक ने कोई नई बात लिखी है या नहीं, यदि नहीं तो उसने पुरानी ही बात को नये ढङ्ग से लिखा है या नहीं— यही विचारणीय विषय हैं। समालोचक को प्रधानतः इन्हीं बातों पर विचार करना चाहिए। लेखक ने अपने लेख या पुस्तक को जिस उद्देश्य से लिखा है वह यदि सिद्ध होता है, तो समझना चाहिए कि उसने अपने कर्त्तव्य का पालन कर दिया।"

किन्तु इसी के साथ किसी काव्य के गुण दोषों को बतलाना, द्विवेदीजी समालोचक का प्रमुख कर्तव्य समझते थे, यदि उसमें कोई व्यक्तिगत द्वेष भावना न हो। उन्होंने कवि-कुल-गुरु कालिदास की कविता में बड़ी निर्भीकता से काव्य और छन्द सम्बन्धी दोष दिखलाये हैं और अपने इस कार्य का जोर से समर्थन भी किया है। द्विवेदीजी ने जो दोष दिखलाये हैं वे यद्यपि नये नहीं है, तथापि वे उनकी निर्भीकता और उनके प्रगाढ़ अध्ययन का परिचय देते हैं। आचार्य द्विवेदीजी प्राचीन कवियों के काव्यों में दोषोद्भावना के सम्बन्ध में लिखते हैं—

"जिस देश के पढ़े-लिखे लोगों का यह हाल है कि पुराने ग्रन्थों के दोष दिखलाना वे पाप समझते हैं, उनमें गुण-दोष निर्णायक शक्ति, बतलाइए, कैसे उत्पन्न हो सकती है।? ऐसी शक्ति उत्पन्न हो या न हो, बोलो मत। बाल्मीकि और कालिदास के दोष दिखालाकर नरक में जाने का उपक्रम मत करो। यदि समालोचना किए बिना न रहा जाय तो प्राचीन ग्रन्थकारों के गुण ही गुण गावो। जब उन्हें सुनते-सुनते लोग ऊब जायँ, तब दोष दिखाना। भाषा-विज्ञान और गुण-दोष विवेचनात्मक आलोचना सीखने के लिए गवर्नमेन्ट भारतीय युवकों को विलायत भेजे तो उसे भेजने दो। तुम क्यों पुराने पंडितों के दोष दिखाकर व्यर्थ के लिए पातक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोल लेते हो।"

द्विवेदीजी ने अपने कथन की पुष्टि में रवीन्द्रनाथ, अरविंद घोष, मेकडोनैल, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर आदि विद्वानों का उदाहरण देकर बतलाया है कि उन्होंने कालिदास की किस प्रकार से आलोचना की थी। इन उदाहरणों से विदित होगा कि द्विवेदीजी यद्यपि समालोचक के कर्तव्य में लेखक की विशेषतायें और उसके कथित विषय का पाठकों को परिचय देना भी समालोचक का कर्त्तव्य मानते हैं तथापि उसके काव्य में दोष बतलाने को वे मुख्यता देते हुए प्रतीत होते हैं।

दोष-दर्शन बुरा नहीं है। पुस्तकें जनता की सम्पत्ति होती हैं और उनमें दोष-दर्शन करना कोई बुरी बात नहीं। उससे लेखकों में सावधानी और सचेतता रहती है किन्तु केवल दोषोद्भावना समालोचना में एकाङ्गीपन उत्पन्न कर देती है। कालिदास की निरंकुशता और स्वर्गीय रायबहादुर ला० सीतारामजी की हिन्दी कालिदास की आलोचनायें इसी प्रकार की एकाङ्गी आलोचनाएँ हो गई हैं। केवल दोषोल्लास पढ़ कर पाठक को यह धारणा होने लगती है कि लेख में सिवाय दोषों के कुछ नहीं है। यदि दोषों के साथ गुणों और विशेषताओं का भी वर्णन हो, तो पाठक को गुण और दोषों का अनुपात मालूम हो जायगा और उसकी जानकारी भी बढ़ेगी। मेरे कहने का अभिप्राय यह नहीं कि द्विवेदीजी ने अपनी आलोचनाओं में केवल दोष-दर्शन ही किया है या जिनमें दोष-दर्शन किया है वह किसी द्वेष-भावना से किया था। द्विवेदीजी की जो आलोचनाएँ सम्पादकीय कुर्सी से लिखी गई हैं उनमें बहुत सों में तारीफ और बुराई दोनों ही है किन्तु जहाँ बुराई करने का अवसर आया है, वहाँ उसको व्यक्त करने में उन्होंने रू-रियायत नहीं की है। रू-रियायत करना वे सम्पादकीय कर्तव्य के विरुद्ध समझते थे और यह बात बहुत अंश में ठीक भी थी किन्तु यह कहना होगा कि यह निर्भीकता कहीं-कहीं उचित मात्रा से अधिक हो जाती थी। वे हिन्दी लेखकों की कोई भी कमजोरी क्षम्य नहीं समझते थे। यदि कोई आफत का मारा लेखक या प्रकाशक अच्छी समालोचना के लिए निजी पत्र भी लिख देता, तो वे उसका उद्घाटन किये बिना, नहीं रहते। इतनी विवेचना के पश्चात् हम द्विवेदीजी की आलोचना पद्धति पर थोड़ा प्रकाश डालना चाहते हैं।

आलोचना की कई शैलियाँ हैं, उनमें निर्णयात्मक और व्याख्यात्मक प्रमुख हैं। निर्णयात्मक आलोचना उसको कहते हैं, जिसमें किसी रचना की आलोचना शास्त्रीय नियमों के आधार पर की जाती है। काव्य-शास्त्र सम्बन्धी पुस्तकों में जो काव्य के गुण-दोष बतलाये हैं, उनके आधार पर पुराने ग्रन्थों में तत्कालीन साहित्य की आलोचना होती थी। मम्मट, विश्वनाथ आदि आचार्यों ने गुण-दोषों का विवेचन करते हुए प्रमुख ग्रन्थों से उदाहरण दिये हैं। द्विवेदीजी ने भी कालिदास की निरंकुशता आदि ग्रन्थों में इसी प्रकार की आलोचना की है। कलिदास के ग्रन्थों में व्याकरण के दोष, छन्द के दोष, न्यूनपदत्व, अधिकपदत्व, औचित्य आदि के दोष दिखलाये है। इनके पढ़ने से विद्यार्थी का दोष सम्बन्धी ज्ञान बढ़ जाता है। वह काव्य के इस अङ्ग को समझ जाता है किन्तु लेखक की विशेषताओं पर उसका कम ध्यान जाता है। वह यह नहीं जानता कि कालिदास में कौन से गुण थे, जिनके कारण उनको यह आसन मिला। इस सम्बन्ध में यह अवश्य कहा जा सकता है वह एक निबन्ध मात्र था। द्विवेदीजी ने पूरे कालिदास पर कोई पुस्तक नहीं लिखी। अस्तु 'विक्रमाङ्कदेव चर्चा' में हम व्याख्यात्मक शैली का कुछ प्रयास पाते हैं। उसमें कवि का वर्णन और उसके काव्य का सहृदयता पूर्ण परिचय मिलता है। द्विवेदीजी ने बहुत सी आलोचनाएँ ऐसी भी लिखी थीं, जिनमें केवल पुस्तक का सार ही दिया गया था। उदाहरणार्थ लोकमान्य तिलक के 'गीता रहस्य' की आलोचना।* इस आलोचना में भी गुण-गान के साथ दोष निरूपण है किन्तु बहुत स्वल्प मात्रा में। अश्वघोष कृत सोदरानन्द काव्य में अश्वघोष की कालिदास से

* ये आलोचनाएँ द्विवेदीजी की आलोचनाञ्जलि में देखी जा सकती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थोड़ी बहुत तुलना भी है। इसको हम तुलनात्मक आलोचना का पूर्व रूप कह सकते हैं। पण्डित नन्दलाल विश्वनाथ दुबे के शकुन्तला के अनुवाद की आलोचना में भी थोड़ी-सी तुलनात्मक आलोचना है किन्तु इसको हम उन आलोचनाओं में रक्खेंगे, जिनमें उन्होंने लेखक की कलई खोलने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। यद्यपि पुस्तक के जो उदाहरण दिये गये हैं, उनसे मालूम तो ऐसा ही पड़ता है कि पुस्तक बहुत अच्छी नहीं है, तथापि जो गलती करता है वह उपहास का पात्र नहीं, दया का पात्र है। इसी आलोचना में द्विवेदीजी पं० पद्मसिंह शर्मा की तीक्ष्ण शैली से समानता प्राप्त कर लेते हैं। पं० पद्मसिंह शर्मा ने जिस निर्दयता से 'सतसई-संहार' नामक लेख में पं० ज्वालाप्रसाद की आलोचना की है, उसी निर्दयता से द्विवेदीजी की आलोचना की है। आलोचना में दुबेजी के पुत्र को भी नहीं छोड़ा है। जो कुछ कहा गया है सत्य अवश्य है किन्तु बड़ा अप्रिय सत्य हो गया है। द्विवेदीजी सत्य को प्रिय बनाने की परवाह नहीं करते थे। इसी प्रकार भाषा पद्य व्याकरण आलोचना में भी आपने लेखक महोदय पर खूब व्यंग बाण चलाये हैं, देखिये—

"हाँ, महाराज ! आप विद्वान, आप आचार्य, आप प्रधान पंडित, आप विख्यात पंडित और हम अगाध अज्ञ और दुर्जन, क्योंकि हमें आपका व्याकरण तोषप्रद नहीं। सरकार की सेवा करते-करते और प्रधानतया संस्कृत पढ़ाते-पढ़ाते आपने अज्ञता और दुर्जनता की अच्छी पहचान बताई। आपकी संस्कृतज्ञ लेखनी सचमुच विलक्षणता की कामधेनु है।"

अहम्मन्य लोगों के लिए ऐसी भाषा लिखना अधिक दोष पूर्ण नहीं किन्तु हमारे मत से तो वे भी दया के पात्र हैं। यह मतभेद की बात है किन्तु जहाँ कहीं सीधे-सादे आदमियों को उन्होंने अपने बाणों का शिकार बनाया है, वहाँ मेरी समझ में अन्याय किया है।

द्विवेदीजी हिन्दी में भिन्न-भिन्न विषयों पर लेख और पुस्तकें लिखवाना चाहते थे। ऐसी पुस्तकों की आलोचना में द्विवेदीजी ने पाठकों का खूब ज्ञान विस्तार किया है। ये आलोचनाएँ सम्पादकीय गौरव को बढ़ाती हैं। द्विवेदीजी की प्रोत्साहन और प्रशंसापूर्ण आलोचनाओं का थोड़ा सा उदाहरण नीचे दिया जाता है। 'भारत-भारती' की आलोचना में द्विवेदीजी लिखते हैं—

"यह काव्य वर्तमान हिन्दी-साहित्य में युगान्तर उत्पन्न करने वाला है। वर्तमान और भावी कवियों के लिए यह आदर्श का काम देगा। यह सोते हुओं को जगाने वाला है, भूले हुओं को ठीक राह पर लाने वाला है, निरुद्योगियों को उद्योगशील बनाने वाला है, आत्म-विस्मृतों को पूर्व-स्मृति दिलाने वाला है। इसमें वह सञ्जीवनी शक्ति है, जिसकी प्राप्ति हिन्दी के और किसी भी काव्य से नहीं हो सकती है।"

ऐसी प्रोत्साहन-पूर्ण आलोचना ने गुप्तजी को महाकवि बनाने में बहुत कुछ सहायता दी होगी। गुप्तजी ने भी साकेत की भूमिका में द्विवेदीजी का ऋण स्वीकार किया है। पुस्तक के लिए जो कुछ कहा गया है अनुचित नहीं है। राष्ट्रीय-जाग्रति में भारत-भारती ने बहुत कुछ काम किया है। ठाकुर गोपालशरणसिंह की कविताओं की भी द्विवेदीजी ने मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की थी।

द्विवेदीजी ने सरकारी विभागों की रिपोर्टों पर जो आलोचनाएँ लिखी हैं, वे बड़ी विद्वत्ता, मननशीलता और कुशाग्र-बुद्धि का परिचय देती हैं। कहीं-कहीं तो द्विवेदीजी सच्चे देशभक्त की भाँति सात्विक क्रोध से तिलमिला उठते हुए मालूम होते हैं और उनकी भाषा बड़ी जोरदार हो जाती है। देखिए—

"बड़े ही अफसोस की बात है कि इस सूबे में जिले की हाकिमी कर के और हजारों देहातियों की दुर्दशा का चित्र आँखों देख कर भी एडी साहब कचहरी जाना और रेल से सफर करना दीन-दुखिया किसानों के लिए आमोद-प्रमोद और मनोरञ्जन में दाखिल समझते हैं और इन बातों के वे उनके मुत-मोव्वल होने का प्रमाण मानते हैं। भेड़ बकरियों की तरह रेल के डिब्बों में भर जाना, धक्के खाना, और ५) की दीवानी की नालिश के लिए खेती, किसानी का काम छोड़ कर महीनों कचहरियों में मारे-मारे फिरना भी यदि मनोरञ्जन और चित्र-दर्शन में शामिल समझा जा सकता है, तो २४ घन्टे में एक बार रूखी-सूखी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मकई की रोटी से पेट भर लेना शायद मोहनभोग का मजा लूटने में भी दाखिल समझा जायगा।"

इस प्रकार से क्या साहित्य की आलोचना में और क्या राजनीतिक रिपोर्टों की आलोचना में द्विवेदीजी ने अपनी जोरदार लेखनी का परिचय दिया है। उनकी लेखनी से बहुत से लोग रुष्ट भी हुए होंगे, बहुत से प्रसन्न भी किन्तु वे अपने विचार में एक रेखा-मात्र भी नहीं झुके। संक्षेप में हम उनकी आलोचनाओं की पाँच विशेषताएँ बतला सकते हैं –

१—घोर निर्भीकता—जो कहीं-कहीं लोगों को अरुचिकर और कभी दोष भी हो जाती थी।

२—प्रगाढ़ पाण्डित्य—जिसमें प्राचीन साहित्य और पुरातत्व सम्बन्धी बातों से विशेष सम्पर्क रहता था। उनकी आलोचना की कसौटी अधिकतर देशी रहती थी।

३—लेखकों के रचना सम्बन्धी दोषों को सहन न करना। 'भारं न बाधते राजन यथा बाधति बाधते' की-सी बात उनमें बहुत कुछ थी।

४—अपने मत को जोरदार भाषा में प्रकट करना। उनकी आलोचनाओं में हास्य और व्यंग्य की मात्रा कुछ अधिक रहती थी।

५—विषय विवेचन में बड़ी सावधानी और सतर्कता से काम लेना। नई बात को बड़े सरल शब्दों में बड़ी स्पष्टता के साथ समझाना।

समालोचकों में द्विवेदीजी का स्थान बतलाना बड़ा कठिन है। किसी का स्थान निर्धारित करना बड़े उत्तरदायित्व का काम है। हम द्विवेदीजी का ऐतिहासिक महत्व अधिक मानते हैं। वे समालोचना के भवन में पहली ईंट जमाने वालों में से थे। पुस्तकाकार आलोचनाएँ शायद पहले-पहल उन्होंने ही प्रकाशित की थी।

द्विवेदीजी का स्थान निर्धारित करने में हमको यह न भूल जाना चाहिए कि जिस समय उन्होंने आलोचना का कार्य प्रारम्भ किया था, उन दिनों विदेश में भी आलोचना का आदर्श निश्चित नहीं हुआ था। स्वदेश में तो गुण-दोष विवेचन बहुत दिनों से आलोचना का लक्ष्य चला आ रहा था और उनके समय विदेश में भी कुछ ऐसा ही हाल था। द्विवेदीजी अपने समय से प्रभावित थे। उनके ऊपर भी बहुत-कुछ आक्षेप हुए थे और शायद अदले का बदला देने की प्रवृत्ति ने उनमें दोष-दर्शन की प्रवृत्ति को प्रबलकर दिया।

यद्यपि मिश्रबन्धुओं से द्विवेदीजी का वाद-विवाद रहा है तथापि द्विवेदीजी के और इन लेखक गणों के समालोचना सम्बन्धी आदर्श कुछ बातों में मिलते हैं। गुण-दोष विवेचन के सम्बन्ध में तो मिश्रबन्धुओं के विचार भी उनसे कुछ मिलते जुलते हैं, किन्तु भाषा का विवेचन, अलङ्कारों की विवेचना तथा अन्य बिशेषताओं के उद्घाटन में मिश्रबन्धुओं की आलोचनाएँ कुछ नवीनता लिए हुए होती हैं। पं० पद्मसिंह शर्मा और द्विवेदीजी दूसरों की हँसी उड़ाने में एक से हैं, द्विवेदीजी की आलोचना अधिक शास्त्रीय हो जाती थी। शर्माजी अपनी पसन्द के कवि की प्रशंसा में जमीन आसमान के कुलाबे मिला देते थे, यह बात द्विवेदीजी में नहीं थी। शर्माजी तुलनात्मक आलोचना में सिद्धहस्त थे। हास्य और व्यंग्य के होते हुए भी द्विवेदीजी में कुछ अधिक संयम था। भारतीय पद्धति का आधार लेने में तो शुक्लजी और द्विवेदीजी की समानता है किन्तु शुक्लजी समालोचना की विदेशी पद्धति का भारतीय पद्धति के साथ समन्वय करने में अधिक समर्थ हुए हैं। उनकी आलोचनाएँ नवीन रचनाएँ होती थीं। द्विवेदीजी की आलोचनाएँ आलोचनाएँ हीं रहती थी। द्विवेदीजी की अपेक्षा शुक्लजी का हास्य भी कुछ गम्भीर है। यह द्विवेदीजी का दोष नहीं, पचास वर्ष पहले पैदा होना पाप नहीं है। द्विवेदीजी ने अपने समय के ज्ञान से पूरा-पूरा लाभ उठाया था। वे अपने समय के किसी अंश में आगे भी बढ़े थे। उन्होंने समालोचना साहित्य की नींव डाली। हिन्दी साहित्य को अच्छी-अच्छी आलोचनाएँ दीं। लेखकों को प्रोत्साहन दिया और उनको सतर्क भी किया। प्रायः बीस वर्ष तक सरस्वती द्वारा हिन्दी-साहित्य पर एक छत्र शासन कर साहित्य के निर्माण में बहुत कुछ योग दिया। हिन्दी-साहित्य पूज्य द्विवेदी जी की सेवाओं के लिए चिर-ऋणी रहेगा।

—सा० सं० अप्रैल १९३९ से।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आचार्य द्विवेदी के समीक्षा-सिद्धान्त

डा० गणेश खरे

हिन्दी-समीक्षा की गतानुगतिका को सर्वप्रथम युगानुरूप अभिनव स्वरूप देने वाले आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी का व्यक्तित्व और कृतित्व वह ज्योतिपुञ्ज रहा है जिससे चतुर्दिक दिशाओं में निर्मल प्रकाश विकीर्ण हुआ। वे अपने आप में एक साहित्यिक संस्था थे; एक युग थे। उनका प्रखर प्रज्ञावान, साहित्य निष्ठाशील, गहन अध्यवसायी, उदात्त लोकादर्शों से अनुप्राणित, अनुशासनप्रिय व्यक्तित्व ही साकार रूप धारण करके इस युग के विविध साहित्य-रूपों में अवतरित हुआ। 'समालोचना का सत्कार' तथा अन्य अनेक निबन्धों में उनके जीवन तथा व्यक्तित्व का यह निर्भीक 'वाक्यशूर परशुराम' वाला स्वरूप समधिक स्पष्टता के साथ देखा जा सकता है। वस्तुतः सत्समालोचना की उपेक्षा, कदर्थना, झूठी और सस्ती प्रशस्ति की आसक्ति के सांघातिक काल में द्विवेदीजी का हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में अवतरण एक अप्रत्याशित घटना है।

हिन्दी-रीतिकालीन समीक्षा भारतेन्दु युग में आकर बहुत कुछ नवजागरणकालीन जीवन की अरुणिमा से अभिमण्डित हुई थी; भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, बालकृष्ण भट्ट, 'प्रेमघन' आदि ने साहित्य को जन-जीवन का प्रतिबिम्ब मानकर उसके गत्यात्मक रूप को गृहीत किया था; काव्य-कला सौष्ठव और उसकी प्राणवत्ता किसी छन्द-विशेष या लक्षण-ग्रन्थों के अनुवर्तन में न मानकर उन्होंने उसे मानवीय जीवन की संवेद्य अनुभूतियों में निर्दिष्ट की थी किन्तु फिर भी उसके तार स्वर परम्परावाद की वंशी के पुराने रंध्रों से ही निकल रहे थे। इस युग की समीक्षा का प्रमुख लक्ष्य साहित्यिक सौन्दर्य के विश्लेषण और रसास्वादन की जगह कलात्मक सुरुचिरता को प्रश्रय और असाहित्यिक वृत्तियों का निरोध करना था। इस प्रकार मूलतः भारतेन्दु युग अभिनव परम्परावादी समीक्षा का अंकुरण काल है जिसका सर्वप्रथम संवर्द्धन और पल्लवन आचार्य द्विवेदी के मनस्वी व्यक्तित्व द्वारा सम्पन्न हुआ।

द्विवेदीजी के समीक्षा-सिद्धान्तों को हम प्रमुख रूप से दो भागों में प्रस्तुत कर सकते हैं—(क) परम्परावादी और (ख) अभिनव परम्परावादी। उनके आचार्यत्व को मुखरित करने वाले परम्परावादी निबन्धों – यथा, 'नाट्यशास्त्र', 'कवि-शिक्षा', 'कवि बनने का सापेक्ष साधन', कवियों, सम्पादकों, समालोचकों, लेखकों आदि के कर्त्तव्यों से सम्बन्धित लेखों में उन्होंने संस्कृत की तद्विषयक सामग्री को उसी रूप में प्रस्तुत कर दिया है। इसी प्रकार 'कालिदास की निरंकुशता', 'हिन्दी कालिदास की आलोचना', 'नैषध चरित चर्चा', 'विक्रमाङ्क देव चरित', 'महिष शतक' आदि अपनी व्यावहारिक समीक्षा-कृतियों में उन्होंने भाषा तथा व्याकरण से सम्बन्धित दोषों का निर्देशन क्षेमेन्द्र के औचित्य-सिद्धांत के आधार पर किया है। इनमें उनकी मौलिक चिन्तना के दर्शन नहीं होते।

द्विवेदीजी रसवादी समीक्षक थे किन्तु उन्होंने रस-सिद्धान्त का कहीं भी सैद्धान्तिक विवेचन नहीं किया है। रस-सम्बन्धी विचार उनके निबन्धों में स्फुट रूप से बिखरे हुए हैं। रसवाद का समर्थन उन्होंने श्रीकण्ठ-चरित के निम्नांकित श्लोक से किया है—

तैस्तैरलंकृतिशतैरवंतसितोऽपि
रूढ़ो महत्यपि पदे घृतसौष्ठवोऽपि
नूनं बिना घनरस प्रसराभिषेकं
काव्याधिराज पदमर्हति न प्रबन्धः। - रसज्ञ रंजन

अर्थात् सैकड़ों अलङ्कारों से अलंकृत होकर भी, शब्द-शास्त्र के उच्चासन पर अधिरूढ़ होकर भी और सब प्रकार सौष्ठव को धारण करके भी, रस-रूपी अभिषेक के बिना, कोई भी प्रबन्ध काव्याधिराज पदवी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को नहीं पहुँचता। रस-मत के इस प्रस्थापन और समर्थन में वे क्षेमेन्द्र के समन्वयवादी सिद्धान्त से सर्वाधिक प्रभावित रहे हैं। वस्तुतः समन्वयशीलता और संश्लिष्टता उनके व्यक्तित्व का ही एक अभिन्न तथा महत्वपूर्ण अङ्ग है। इसी के कारण वे हिन्दी-समीक्षा को युगनद्ध रूप में उपस्थापित कर सके हैं।

समन्वयशीलता या अभिनव परम्परावादिता में ही द्विवेदीजी के साहित्यिक व्यक्तित्व और कृतित्व का सौरस्य निहित है। 'रसज्ञ रंजन' तथा कवि और काव्य सम्बन्धी निबन्धों में अनेक स्थलों पर इनके समन्वयवादी नूतन दृष्टिकोण का समावेश मिलता है। यथा, रस-प्रसङ्ग में द्विवेदीजी अनुभूति तत्व पर भी समीचीन रूप से विचार करते हैं जिसे पश्चिम के सभी समीक्षकों ने काव्यास्वादन के लिए आवश्यक वस्तु मानी है। प्रतिभा-प्रसङ्ग में वे कल्पना की भी उपेक्षा नहीं करते। कल्पना पश्चिम के सभी आचार्यों द्वारा अनुमोदित काव्य का एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपादान है। इसी प्रकार कविता के गुणों के प्रसङ्ग में द्विवेदीजी मिल्टन के द्वारा निर्देशित वास्तविकता, स्वाभाविकता और सहज उन्मेष नामक काव्य-गुणों का भी उल्लेख करते हैं।

आचार्य द्विवेदीजी ने साहित्य के विविध उपकरणों का भी युगानुरूप विश्लेषण किया है और उनके प्रवहमान रूप को समीचीन कहा है। उनके अनुसार छन्द काव्य का केवल एक शोभावर्द्धक उपादान है। इसीलिए वे प्राचीन छन्दों के स्थान पर नवीन छन्दों के प्रयोग का भी स्वागत करते हैं। अन्त्यानुप्रासहीन अतुकान्त छन्दों को भी वे प्रश्रय देने की बात करते हैं। यहाँ अतुकान्त छन्दों से उनका मन्तव्य अन्त्यानुप्रासहीन वर्णिक मात्रिक छन्दों से है। छायावादी मुक्त-छन्दों के तो वे घोर विरोधी रहे हैं क्योंकि इस प्रकार के नियमहीन और असन्तुलित छन्द उनकी दृष्टि में अराजकता को प्रश्रय देते हैं। छन्द-विधान के क्षेत्र में वे कवि की सिद्ध-हस्तता को विशेष महत्व देते हैं।

द्विवेदीजी की दृष्टि से गद्य-पद्य की भाषा में एकरूपता होनी चाहिए किन्तु उनके अनुसार साहित्य में सभ्य-समाज की भाषा का ही प्रयोग होना चाहिए। भाषा के वे व्याकरण-संमत, परिष्कृत, सहज, सुगम, मुहावरेदार और विषयानुकूल रूप के पक्षपाती हैं। खड़ी बोली का साहित्यिक स्वरूप-निर्माण करने में द्विवेदीजी की समस्त शक्ति केन्द्रित रही है। इस गुरुतर कार्य का सम्पादन उन्होंने सरस्वती पत्रिका के माध्यम से किया। उनकी साहित्य-साधना में हिन्दी-भाषा का संवर्द्धन और परिष्करण उनके व्यक्तित्व और कृतित्व के उज्ज्वल पक्ष हैं। काव्य में भाषा की उदात्तता, अर्थ की गरिमा और अलङ्कारों के सहज प्रयोग के क्षेत्रों में उनकी बहुत दूर तक तुलना लान्जाइनस से की जा सकती है।

पश्चिमी अभिनव-परम्परावादी सर फिलिप सिडनी, जान ड्राइडन, पोप, जान्सन, लेसिंग आदि समीक्षकों के समान द्विवेदीजी भी वर्ण्य वस्तु का अमित विस्तार करते हैं। उन्होंने परम्परागत यमुना-किनारे के केलि-कौतूहल के अद्भुत वर्णनों, परकीयाओं और स्वकीयाओं के गतागत की पहेली बुझाने की भर्त्सना की है और कहा है कि 'चींटी से लेकर हाथी पर्यन्त, भिक्षुक से लेकर राजा पर्यन्त मनुष्य, बिन्दु से लेकर समुद्र पर्यन्त जल, अनन्त आकाश, अनन्त पृथ्वी, अनन्त पर्वत सभी पर कविता हो सकती है, सभी से उपदेश मिल सकता है और सभी के वर्णन से मनोरञ्जन हो सकता है।" इस प्रकार वर्ण्य का विस्तार करते हुए उन्होंने साहित्य के उपदेश और मनोरञ्जन - ये दो लक्ष्य निर्दिष्ट किए हैं। पाश्चात्य नव्य शास्त्रीय सिडनी, पोप आदि अनेक समीक्षक भी काव्य में नीतिमत्ता, उपदेशात्मकता और मनोरञ्जन की भावना को सर्वाधिक महत्व देते हैं।

द्विवेदीजी का युग सांस्कृतिक पुनरुत्थान करने वाले दयानन्द सरस्वती के लोकादर्शों के संप्रभाव का युग था। उनसे अनुप्राणित होने के कारण आचार्य द्विवेदी जी का सम्पूर्ण कृतित्व भारतीयता का गौरव-गान है। वह राष्ट्रीय श्रेष्ठत्व का प्रतिपादन करता है और समसामयिक लेखकों को सामाजिक, सुधारवादी, व्यावहारिक आदर्शों के अनुरूप साहित्य-सर्जना की प्रेरणा देता है। इस प्रकार सामाजिक अभ्युदय और राष्ट्रीय चेतना का प्रकर्ष—उनकी साहित्यिक समीक्षा के मङ्गल सूत्र हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके इन साहित्यिक सिद्धान्तों के निर्माण में उनका गहरा साहित्यिक अभिनिवेश परिलक्षित होता है। आचार्य बाजपेयीजी के अनुसार द्विवेदीजी के काव्यादर्शों के मूल स्रोत के रूप में संस्कृत के समीक्षा-ग्रन्थों के अतिरिक्त कालिदास, भवभूति जैसे संस्कृत के भावनावान कवि-नाटककार; सूर-तुलसी जैसे उदात्त लोकादर्शों से अभिमंडित सन्त; भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और मैथिलीशरण गुप्त जैसे नवजागरणकालीन राष्ट्रीय भावनाओं से सम्पन्न नये युग के सचेत कलाकार रहे हैं।' इनके अतिरिक्त उन्होंने बङ्गला, मराठी तथा अंग्रेजी के लेखकों का भी मनोयोगपूर्वक अध्ययन किया था और उनके ग्रन्थों के अनुवादों के द्वारा हिन्दी की साहित्यिक सम्पदा का विकास करते हुए अपने समीक्षा-सिद्धान्तों को व्यापक परिपार्श्व प्रदान किया था।

द्विवेदीजी हिन्दी के प्रथम नव्य-शास्त्रीय समीक्षक रहे हैं। परम्परा का अनुमोदन करते हुए भी उन्होंने सर्वत्र उसका युग के अनुरूप अभिनव स्वरूप ही ग्रहीत किया। अभयतापूर्वक उन्होंने सर्वप्रथम हिन्दी साहित्य के गतानुगतिक विषयों, रूढ़ियों और अन्धविश्वासों का उच्छेदन करके जीवन के साथ उसका अविच्छेद्य सम्बन्ध निरूपित किया। हिन्दी-समीक्षा में नीति, सुरुचि, औदात्य आदि की प्रतिष्ठा करके शास्त्रीयता की भूमि में समन्वयवादी, नवीनतावादी और पुनरुत्थानवादी समीक्षा-शैलियों का बीज वपन किया। यद्यपि उनके समीक्षा-सिद्धान्तों में अनेक कमियाँ भी हैं, यथा सैद्धान्तिक विषयों का सामान्य परिचय, गम्भीर विवेचना का अभाव, उपदेशात्मक और उद्बोधनात्मक शैली का आधिक्य, मौलिक चिन्तना और सूक्ष्म तलस्पर्शिता की अपेक्षाकृत न्यूनता आदि किन्तु द्विवेदीजी के साहित्य-सृजन का लक्ष्य ही समीक्षा-सिद्धान्तों की व्यापक व्याख्या, नव-निर्माण और साहित्यिक अनुसन्धान का न होकर हिन्दी-भाषा का शुद्धीकरण, उसके साहित्यिक स्वरूप की संवर्द्धना तथा साहित्यिक नेता के रूप में उस युग के कवियों तथा लेखकों को साहित्य-सृजन की युग-जागरण-सम्बन्धी प्रेरणाओं को देना रहा है। इसी रूप में उनके व्यक्तित्व और कृतित्व का हिन्दी-साहित्य पर युगान्तरकारी प्रभाव भी पड़ा है।

हिन्दी-समीक्षा की व्यापक भूमिका का नव-निर्माण करने वाले वे एक ऐसे युग पुरुष हैं जिनके आधारों और सिद्धान्तों का अनुगमन, विशद विश्लेषण और सर्वोन्मुखी उन्नयन कर इस युग के अन्यतम समीक्षक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी-समीक्षा को चरम बिन्दु तक पहुँचा दिया है। इस प्रकार हिन्दी की अभिनव परम्परावादी समीक्षा के अग्रदूत के रूप में आचार्य द्विवेदी जी का स्थान हिन्दी-साहित्य में अच्युत है।

—सी० एम० दुबे कालेज, बिलासपुर।

(पृष्ठ ७६ का शेषांश)

वैयाकरण थे। अतः व्याकरण की शुद्धता पर बल देते थे, शैली के प्रवाह और भाषा की रवानगी पर नहीं। उनका भाषा-सुधार व्याकरण के नियमों का अक्षरशः पालन है; भाषा में बोल-चाल के शब्दों का प्रवर्तन, बामुहावरा भाषा का प्रचलन और शैली में सजीवता का आकलन नहीं। आचार्य द्विवेदी के भाषा-सुधार के फलस्वरूप भाषा टकसाली बनी, शब्दों के प्रयोग में एकता का समावेश और भाषा के रूप का निर्धारण हुआ। अतः भाषा व्यवस्थित हुई; उसमें सुष्ठुता आई; उसके साहित्योचित रूप का विकास हुआ और वह संस्कृत बनी। इतना होने पर भी शैली में एक प्रकार की कृत्रिमता आगई। उसका व्यावहारिक और प्रवाहपूर्ण रूप भाषा-सुधार के परिमार्जन का शिकार बन गया। भारतेन्दु युग के लेखकों के हाथ में हिन्दी गद्य एक कला बन गया था, अब उसकी कलात्मकता का परिहार हो गया।

—जाट वैदिक कालेज, बड़ौत (मेरठ)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ० द्विवेदी की काव्य-दृष्टि पर पाश्चात्य प्रभाव

डा० प्रेमप्रकाश गौतम

काव्य के स्वरूप, हेतु, प्रयोजन आदि के सम्बन्ध में आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी का दृग्-बिन्दु बहुत-कुछ प्राचीन भारतीय आचार्यों का अनुवर्ती है। परन्तु अनेक पाश्चात्य साहित्य-चिन्तकों से भी उनकी मान्यताएँ मिलती हैं। यह ठीक है कि द्विवेदीजी ने काव्य-कला के पश्चिमी मीमांसकों का मतानुशीलन बहुत कम किया था और उनके साहित्य-सिद्धान्तों से वे सुपरिचित नहीं थे परन्तु काव्य-विषयक उनके बहुत-से कथन मिल्टन, वर्डसवर्थ, कांट, शिलर, क्रोचे, टॉल्स्टाय, इलियट आदि कला-चिन्तकों के वक्तव्यों के निकट हैं। निस्सन्देह द्विवेदीजी की मान्यताओं को इन पाश्चात्य विचारकों से प्रभावित अथवा उनका उपजीवी नहीं कहा जा सकता, अपने चिन्तन में वे मौलिक भी हैं और यत्र-तत्र तद्भिन्न भी। फिर भी यह स्वीकार करना होगा कि काव्य-सम्बन्धी उनकी कुछ उक्तियाँ इन विद्वानों के विचारों की अनुयायिनी हैं और कुछ अचेततः उनसे चिन्तन-साम्य रखती हैं।

काव्य-स्वरूप पर विचार करते हुए द्विवेदीजी ने अनेक परिभाषाएँ प्रस्तुत की हैं—"नाना प्रकार के विकारों के योग से उत्पन्न हुए मनोभाव जब मन में नहीं समाते तब वे आप ही आप मुख के मार्ग से बाहर निकलने लगते हैं अर्थात् मनोभाव शब्दों का रूप धारण कर लेते हैं। यही कविता है। चाहे वह पद्यात्मक हो चाहे गद्यात्मक।" "किसी प्रभावोत्पादक और मनोरञ्जक लेख, बात या वक्तृता का नाम कविता है।" जब मनुष्य किसी विषय में उत्तेजित हो उठता है तब उस उत्तेजना के कारण मन को नाना प्रकार के विचार चञ्चल करने लगते हैं। 'मन की चञ्चलता के कारण इन विकारों का वर्णन जो मनुष्य के मुख से निकलता है वही कविता है;' 'अन्तःकरण की वृत्तियों के चित्र का नाम कविता है'; 'कविता प्रभावशाली रचना है जो पाठक या श्रोता के मन पर आनन्ददायी प्रभाव डालती है।' इन काव्य-लक्षणों में द्विवेदीजी ने भाव, रस, बिम्ब-विधान (कल्पना) और शब्दाभिव्यक्ति को काव्य के अनिवार्य तत्वों के रूप में स्वीकार करते हुए अनुभूति की सचाई तथा तीव्रता और कविता की प्रभावशालिता और स्वाभाविकता पर बल दिया है। द्विवेदीजी की प्रथम उक्ति वर्डसवर्थ के 'प्रबल अनुभूतियों का स्वतः प्रवर्तित प्रवाह' तथा 'उत्तेजित अभिव्यक्ति' शब्दों की याद दिलाती है।[1] साथ ही वह कीट्स के इस कथन के निकट है कि कविता 'वृक्ष पर पल्लवों की भाँति आविर्भूत स्वाभाविक रचना है।'[2] द्विवेदजी के ऊपर उद्धृत इतर वक्तव्य मेकाले, वाट्स, डंटन तथा टॉल्स्टाय की मान्यताओं के समीप हैं। मेकाले ने कल्पना में आभास (चित्र) सृष्टि करने वाले शब्द-शिल्प को और डंटन ने भावलय युक्त भाषा में मानव-हृदय की मूर्त्त कलात्मक अभिव्यक्ति को कविता कहा है।[3] टॉल्स्टाय प्रभाव (इन्फैक्शसनैस) को प्रमुख काव्य-लक्षण मानते

[1] Spontaneous overflow of powerful feelings......It is the impassioned expression which is in the countenance of all science. —Oxford Dict. of Inofatious (1956) Page 583.

[2] If poetry comes not as naturally as leaves to a tree it had better not come at all.—कीट्स।

[3] The art of employing words iu such manner as to produce an illusion on imagination—मेकाले; Concrete and artistic expression of human mind in emotional and rhythmical language—डंटन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं और कला में प्रभाव-क्षमता की प्रबलता का आग्रह करते हैं।[1]

भाव और आनन्ददायी प्रभाव को काव्य की अनिवार्यता के रूप में स्वीकार करते हुए द्विवेदीजी ने आनन्द प्रदान करने वाले रागात्मक प्रभाव (रस) को ही कविता का सबसे बड़ा गुण, उसका प्राण और आत्मा कहा है। भाव-व्यञ्जना और रस व्यञ्जना को कवि का प्रमुख कार्य मानते हुए और सरस तथा भावमयी कविता को 'अवश्य ही आदरणीय' बताते हुए वे कहते हैं कि 'रस-राशि रंजिता विचित्र-वर्णाभरणा कविता आलौकिक आनन्द विधायिनी है और 'तल्लीनता तथा आनन्दोन्मेष जो आत्मा का धर्म है' चित्रकार तथा कवि की कृति से समान रूप से होता है। आनन्द उनकी दृष्टि में प्रमुख काव्य-प्रयोजन है। वर्डसवर्थ भी तत्क्षण आनन्द देने की आवश्यकता को कवि का 'अनिवार्य प्रतिबन्ध' मानते हैं।[2]

रसज्ञ रंजन में 'कवि और कविता' शीर्षक लेख में द्विवेदीजी ने मिल्टन के अनुसार 'सादगी' 'जोश' और असलियत अर्थात् सत्य को कविता की प्रमुख विशेषताओं के रूप में स्वीकार किया हैं।[3] 'सरस्वती' के जुलाई १९०७ के अङ्क में भी उन्होंने काव्य में सत्य के महत्त्व की चर्चा की है। सादगी भी उनकी दृष्टि में काव्य के सहज सौष्ठव के लिए आवश्यक है। अनुचित नियम-बद्धता और कृत्रिमता का द्विवेदीजी ने सर्वत्र विरोध किया है और सरलता तथा स्वाभाविकता का सदैव समर्थन। सप्रयास कृत्रिम अलङ्करण सौर बलात् विन्यस्त वक्रोक्ति को वे काव्य के लिए घातक समझते हैं। समस्यापूर्ति तथा नायिका भेद के भी वे विरोधी हैं। वर्ड्सवर्थ और टॉल्स्टाय की भांति उन्होंने बहिरङ्ग की अपेक्षा अन्तरङ्ग को ही महत्त्व दिया है—'भाव ही प्रधान है, शब्द स्थापना गौण; 'छन्द, अलङ्कार, व्याकरण तो गौण बातें हुई'। भाव अर्थात अनुभूति पर बल देते हुए द्विवेदीजी ने असलियत और जोश अर्थात् अनुभूति की सचाई और तीव्रता को कवि-धर्म के लिए अपरिहार्य बताया है। डॉ० जॉनसन, वर्ड्सवर्थ और टॉल्स्टाय ने भी काव्य में सत्य की सत्ता को महत्त्व दिया है।[1] प्रभाव (इनफैक्शसनैस) को कला का प्रधान लक्षण मानते हुए टॉलस्टाय लिखते हैं कि प्रभाव मात्रा से कलाकार की अनुभूति की वैयक्तिकता, स्पष्टता तथा ईमानदारी (अनुभूति की सचाई) पर निर्भर करती है। उनके मतानुसार 'सिनसियरिटी' अर्थात् अनुभूति की सचाई (यही द्विवेदीजी की असलियत है', उनका 'जोश' भी इसमें अन्तर्भूत है) इन तीनों में प्रधान है। शेष दो इसी में अन्तर्निहित हैं।[2]

एक अन्य स्थान पर टॉल्स्टाय ने मानवता के लिए महत्वपूर्ण नवीन विषय-वस्तु, स्पष्ट अभिव्यक्ति और सर्जना की अन्तःप्रेरणा इन तीनों वस्तुओं को कला-

---

[1] The stronger the infection, rhe better is the Art – टॉल्स्टाय।

[2] The necessity of giving immediate pleusure to a human being —The critical opinions of.—W. Wordeworth (1950) Page 104.

[3] Poetry should be simple sensous and passionate.

[1] Poetry is the art of uniting pleasure with truth by calling imagination to the help of reason.

[2] The degree of the infectiousness of art depends on three conditions : (1) On the greater or lesser individuality of the feelings transmitted. (2) On the greater or lesser clearness with which the feeling is transmitted. (3) On the sincerity of the artist, that is, on the greater or lesser force with which the artist himself feels the emotion he transmits........They may all be summed up into one the last sincerity (Leo Tolestoy—What is Art and Essay on Art, Ch. XV trans. Aylmen Mande, 1959, Pages 228-29.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृति के लिए अपेक्षित बताया है ।[१] द्विवेदीजी ने काव्य कला में अभिनव वस्तु-तत्व का महत्व स्वीकार करते हुए नायिका-भेद, स्थूल अश्लील शृङ्गारिकता, अलङ्कार विधान आदि की परम्परागत पद्धति का विरोध किया है और नवीन विषय-वस्तु के अङ्गीकार की प्रेरणा दी है । प्रसादगुण और सादगी पर भी द्विवेदीजी तथा टॉल्स्टाय का समान आग्रह है । टॉल्स्टाय के मतानुसार महान् कलाकृति कभी दुर्बोध नहीं होती । अलङ्करण भी उसके लिए अपेक्षित नहीं है । कला की प्रभविष्णुता में भी दोनों की निष्ठा है । 'रसज्ञरञ्जन' में द्विवेदीजी एक स्थल पर लिखते हैं—"कवियों में कुछ ऐसी विशेष शक्ति होती है जिसके कारण उनका प्रभाव लोगों पर बहुत पड़ता है ।" टॉल्स्टाय भी 'व्हाट इज आर्ट' के चौदहवें अध्याय में लिखते हैं कि प्रभाव (इन्फैक्शन) ही कला का विशिष्ट लक्षण है और प्रभावमात्रा ही कला की उत्कृष्टता का एक मात्र माप है ।[२] 'इन्फैक्शन' से टॉल्स्टाय का अभिप्राय कला के ऐसे प्रभाव से है जिसमें कला के भावक की अनुभूति उसकी मनःस्थिति-कलाकार जैसी हो जाती है । विषय-वस्तु के औदात्य को भी दोनों ने समान महत्त्व दिया है । द्विवेदीजी की मान्यता है कि काव्य में उच्चभाव, आदर्श-चरित्र तथा महान् लक्ष्य होना चाहिए । काव्य लोक-मङ्गल-विधायक होता है, उच्च भावों द्वारा मानव-चरित्र का उन्नयन और समाज का उत्थान करता है । कला मानवता के विकास का पूर्णता की ओर मानव की प्रगति का—साधन है, यह बताते हुए टॉल्स्टाय लिखते हैं कि कला के माध्यम से मानव-भावना विकास प्राप्त करती है, कला में मानव और मानवता के आध्यात्मिक जीवन के लिए अपरिहार्य उपयोगी चेष्टा रहती है ।[१] कला उनकी दृष्टि में मानव-मानव के बीच तादात्म्य तथा ऐक्य स्थापित करती है । भारतीय रस-सिद्धान्त, जिसमें द्विवेदीजी की पूरी आस्था है, इस दृष्टि के अत्यन्त निकट है ।

टॉल्स्टाय और द्विवेदीजी दोनों सुन्दरम् की अपेक्षा सत्यम् तथा शिवम् को महत्वपूर्ण मानते हैं, दोनों नीतिवादी और नैतिकता के पोषक हैं । टॉल्स्टाय सौन्दर्य को कला का मापक नहीं मानते और भौतिक सौन्दर्य तथा स्थूल अमर्यादित शृङ्गारिकता के विरोधी हैं । द्विवेदीजी भी बाह्य सुन्दरता की अपेक्षा आन्तरिक सौन्दर्य को श्रेष्ठतर समझते हैं और रीतिकालीन शृङ्गारिकता के विरुद्ध हैं । परन्तु वे शृङ्गार के एक दम विरोधी नहीं हैं । 'उर्दू-शतक' की समीक्षा में इसकी प्रशंसा करते हुए उन्होंने लिखा है—'इसकी कविता शृङ्गार रस की है । परन्तु हमें इसके अनेक पद्यों ने मोहित कर दिया है । सौन्दर्य अथवा रमणीयता को भी वे हेय नहीं मानते । उनके विचार में 'सुरम्यता की कमनीय कान्ति है' और रमणीक और सरस कविता की कसौटी प्रतिक्षण नवता को प्राप्त होने वाली रमणीयता है । टॉल्स्टाय ने भी कला क्षेत्र में सौन्दर्य का स्थान एक सीमा तक स्वीकार किया है । वस्तुतः जैसी कि कांट और हेगेल की मान्यता है सौन्दर्य वस्तुगत और मनगत दोनों रूपों में एक स्पृहणीय उदात्त वस्तु है, ईश्वर का रूप है ।[२] जिस प्रकार की सात्त्विकता

---

[१] That the new idea; the content of the work, should be of importance to mankind; that this content shonld be expressed so clearly that peoplc may understand it, that what incites the author to work at his productiou should be an inner need and not an external inducement—'On Art'—(What is Art) - Page 54.

[२] And not only is infection a sure sign of art, but the degree of infection is also the sole measure of excellence in art—'What is Art' (1959) Intro. Page XII.

[१] So the evolution of feeling proceeds by means of art........That benificent action which is the purpose of true and good art and which is indispensable for the spiritual life of man and of humanity.—What is Art, Ch. XVI, Pages 231-250.

[२] Beauty is that which pleases....it is the form of an object—Kant, Beauty is the manifestation of the Idia god manifests himself in nature and in Art in the form of beauty. —Hegel.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और नैतिकता द्विवेदीजी तथा टॉल्स्टाय को प्रिय है, कांट, शिलर और हेगेल उससे दूर नहीं हैं।

हम पीछे लिख चुके हैं कि कलानुशीलन द्वारा तादात्म्य और ऐक्य-स्थापन के सिद्धान्त में टॉल्स्टाय और द्विवेदीजी दोनों की आस्था है। क्रोचे भी स्रष्टा और भावक के तादात्म्य की, कला के भावन में कलाकार के साथ भावक के एकात्म हो जाने की बातों कहते हैं।[1] द्विवेदीजी बाह्य सत्ता के साथ कवि की तल्लीनता की आचार्य शुक्ल के शब्दों में वर्ण्य परिस्थिति से तादात्म्य को भी कवि या कलाकार के लिए आवश्यक समझते हैं। वे लिखते हैं—'जब कवि का वर्ण्य-विषय से निकट सम्बन्ध हो जाता है तभी उसका किया हुआ वर्णन यथार्थ होता है और तभी उसकी कविता पढ़ कर पढ़ने वालों के हृदय पर तद्वत् भावनाएँ यह उत्पन्न होती हैं।....कवियों का काम है कि वे जिस पात्र अथवा जिस वस्तु का वर्णन करते हैं उसका रस अपने अन्तःकरण में लेकर उसे शब्द-स्वरूप दे देते हैं। उन सब्दों को सुनने से वह रस सुनने वालों के हृदय में जागृत हो जाता है।' शोपेनहावर, क्रोचे, कीट्स, युंग इलियट आदि प्रतीच्य चिन्तक भी वर्ण्य-वस्तु या व्यक्ति से तादात्म्य की बात कहते हैं।[2]

प्लेटो से लेकर क्रोचे तक और उसके बाद भी प्रायः सभी पाश्चात्य मनीषियों ने प्रतिभा को कवि के लिए अनिवार्य बताया है। द्विवेदीजी भी प्रतिभा को प्रधान काव्यहेतु के रूप में स्वीकार करते हैं। वे लिखते हैं—'कवि के लिए जिस बात की सबसे अधिक जरूरत होती है वह प्रतिभा है।' द्विवेदीजी के मतानुसार 'प्रतिभा सम्पन्न मनुष्य के लिए परिमार्जित समाज की सङ्गति और विद्याध्ययन की बड़ी ही आवश्यकता रहती है।' द्विवेदी ने प्रतिभा को 'एक प्रकार की विक्षिप्तता' कहा है और प्रतिभा तथा पागलपन को सम्बद्ध बताया है। शेक्सपीयर ने भी कल्पना के सन्दर्भ में विक्षिप्त, प्रेमी और कवि को एक ही श्रेणी में रख दिया है।[1] परन्तु इस सम्बन्ध में सत्य इतना ही है कि कुछ प्रतिभाशाली व्यक्तियों में कभी-कभी विक्षिप्तता का अंश रहता है। प्रतिभा के साथ कल्पना पर भी उन्होंने बल दिया है। 'नई बातों का सूझना' कवि कर्म के लिए आवश्यक है। क्रोचे ने प्रतिभा (जीनियस) और सर्जनात्मक कल्पना को अभिन्न माना है परन्तु द्विवेदीजी इन्हें पृथक मानते हैं। क्रोचे तो 'जीनियस' और 'टेस्ट' (भावक की रुचि) को भी तत्त्वतः एक मानते हैं।[2] 'प्रतिभा और कल्पना-शक्ति के अतिरिक्त मानव-मन तथा प्रकृति का ज्ञान, परिश्रम तथा अध्ययन मनन भी काव्य हेतु के रूप में द्विवेदीजी को मान्य है। काव्य के भावन में कवि और काव्य का ही नहीं, भावक की क्षमता तथा रुचि का भी महत्त्व है, यह बात द्विवेदीजी समझते थे। वे जानते थे कि कवि के हृदय का भाव सच्चे सहृदय ही जान सकते हैं।' सुसंस्कृत सहृदय ही काव्यानुशीलन का अधिकारी होता है। सच्चे सहृदय और 'कवि का हृदय एक हो जाता है।' कलानुशीलन की यह क्षमता, यह भाव ग्राहिणी शक्ति जिसे क्रोचे 'टेस्ट' कहते हैं और टॉल्स्टाय 'सैन्स ऑव् इन्फैक्शन विद् एनअदर्स फीलिंग' कलानुशीलन के लिए अनिवार्य है। द्विवेदीजी का यह कथन सर्वथा सत्य है कि इसमें भिन्नता होने से सरस रचना से भी सबका 'एकसा रसानुभव नहीं होता।' यही कारण है कि श्रेष्ठ कलाकृति भी सर्वप्रिय नहीं होती।

—सनातन धर्म कालेज, दिल्ली।

[1] In aesthetie experience connisseur and artist are spiritually identified.

—Aesthetic, Page, 124

[2] रसज्ञ रञ्जन १६५८ पृष्ठ २०, ६२

[3] इलियट वर्णित व्यक्ति और कलाकार में भेद स्वीकार करते हुए भी कला सृष्टा और वर्ण्य विषय की एकात्मता में विश्वास करते हैं। उनकी 'Passive attending upon the event' उक्ति यही ध्वनित करती है।

— (Trad and Ind. (Talent)

[1] The lunatic, the lover and the poet are of imagination all compact—A Mid—Summer Nights Dream.

[2] Genius aod taste are therfore substantially identical.—Aesthetic, Page 120.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ० महावीरप्रसाद द्विवेदी का भाषा-सुधार

डा० नत्थनसिंह

पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी हिन्दी की उन महान् आत्माओं में से एक थे, जिन्होंने हिन्दी-शब्दों के शुद्ध-रूप, शुद्ध प्रयोग वाक्ययोजना और शैली शृङ्गार के प्रश्नों को लेकर बड़े सङ्घर्ष किये, मानापमान की भावना को ताक पर रख दिया और वैयक्तिक लाभ-हानि की कभी चिन्ता न की। इन महान् आत्माओं की कर्त्तव्यनिष्ठा और प्रयत्नशीलता का फल है कि आज हिन्दी राष्ट्रभाषा के गौरवान्वित पद पर समासीन होने के योग्य बन सकी है।

यह निश्चित सत्य है कि द्विवेदी जैसे कर्त्तव्यनिष्ठ, भाषा-शास्त्री, व्याकरणार्दा और निस्पृह लेखक न होते तो हिन्दी भाषा उन्नति के इस ऊँचे आसन पर न आपहुँचती। यदि द्विवेदी जैसे लेखकों ने भाषा-कानन से अवांछनीय, अनपेक्षित और आकस्मिक रूप से पैदा हो जाने वाले पेड़-पौदों को उखाड़कर न फेंका होता तो आज हिन्दी, हिन्दी न रह गई होती। हिन्दी भाषा के स्वरूप-निर्माण और रूप-शृङ्गार में पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी ने महान् योग दिया है, इसमें दो मत नहीं हो सकते। पर मैं उन लोगों से पूर्णतः असहमत हूँ जो यह मानते हैं कि द्विवेदीजी से पूर्व भाषा-क्षेत्र में गदर मचा हुआ था, समस्त लेखक अशुद्ध भाषा लिखते थे, उनको व्याकरण का ज्ञान अल्प था, वाक्य-रचना से वे अपरिचित थे, शैली का तब तक विकास न हो पाया था। और इस समस्त अभाव की पूर्ति की आचार्य पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी ने; केवल द्विवेदीजी ने। मेरा विनम्र विश्वास है कि केवल ऐसा ही सोचना भाषा-सुधार के उस महान् कार्य से अनभिज्ञ रह जाना है, जो द्विवेदीतर क्षेत्र में हुआ था।

मेरे उक्त निवेदन का यह तात्पर्य नहीं कि भाषा सुधार के क्षेत्र में द्विवेदीजी के महान् योगदान की मैं अवहेलना करता हूँ अथवा उसको कम करके आँकता हूँ। मेरा उद्देश्य द्विवेदीजी के भाषा-सुधार के सन्दर्भ में, उस भाषा-सुधार का मूल्याङ्कन करना है जिसकी प्रायः उपेक्षा की गई है। जब तक हम आचार्य द्विवेदी के पूर्वापर हुए भाषा-सुधार का सही मूल्याङ्कन नहीं कर लेते, तब तक न तो आचार्य द्विवेदी के कार्य का सही मूल्याङ्कन हो सकता है और न हिन्दी के भाषा-सुधार का सही ज्ञान।

भारतेन्दुजी के हिन्दी-जगत में आगमन से पूर्व हिन्दी का रूप अवश्य स्थापित हो गया था, पर उसमें एकरूपता, सामञ्जस्य, परिष्कार और भाषा के जातीय रूप का प्रायः अभाव था। राजा लक्ष्मणसिंह, लल्लूलाल, राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द और ईसाई पादरी भाषा-स्वरूप की पृथकता को बढ़ावा दे रहे थे। इन लोगों की वैयक्तिक मान्यताओं के फलस्वरूप हिन्दी के अनेक रूप सामने आते जा रहे थे। भारतेन्दुजी ने इस अभाव को दूर करके हिन्दी की सर्वमान्य शैली को जन्म दिया। इसीलिए उन्होंने लिखा था—'१८७३ में हिन्दी नई चाल में ढली।' हिन्दी का नई चाल में ढलने का तात्पर्य यही था कि उसके सर्वप्रिय स्वरूप का विकास हुआ। इस प्रकार भारतेन्दुजी सर्वप्रथम भाषा-सुधारक के रूप में प्रतिष्ठित होते हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है—"उनकी भाषा में न तो लल्लूलाल का ब्रजभाषापन आने पाया, न मुन्शी सदासुख का पण्डिताऊपन, न सदल मिश्र का पूरबीपन, न राजा शिवप्रसाद का उर्दूपन और न राजा लक्ष्मणसिंह का खालिसापन और आगरापन। इतने 'पनों' से एक साथ पीछा छुड़ाना भाषा के सम्बन्ध में बहुत ही परिष्कृत रुचि का परिचय देता है।"[१] शुक्लजी ने यह भी स्वीकार किया है कि "विराम की परख भी उन्हें राजा लक्ष्मणसिंह और राजा शिवप्रसाद से कहीं अच्छी

[१] चिन्तामणि, भाग १, पृ० १८९।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी।" भारतेन्दुजी के भाषा-सुधार के कार्य की गुरुता को देख कर ही आचार्य शुक्ल ने उनको भाषा का स्वरूप प्रतिष्ठापक कहा है और डा० रामविलास शर्मा ने उनकी सरस और सर्वमान्य शैली के प्रवर्तन को युगांतरकारी महत्व की बात माना है। अस्तु, भारतेन्दु हिन्दी के प्रथम भाषा-सुधारक हैं, जिनका यह कार्य आन्दोलन का रूप धारण न कर पाया।

भारतेन्दुजी ने हिन्दी की एक सुष्ठु, परिमार्जित और सर्वप्रिय शैली का प्रचलन अवश्य किया था, पर तब तक हिन्दी व्याकरण विषयक अशुद्धियों से पूर्णतः मुक्त नहीं हो पाई थी। उस काल में भी स्वरगत अशुद्धियाँ, जैसे—'बातैं', 'मिलैं', 'चीजें', 'करै', 'पुस्तकैं', 'सकैगा', 'चलैगा', 'बतलावैंगे', 'नौवाब', 'साम्हने', 'इत्यादी', 'वायू', 'स्थाई', 'रहैगा', 'आदी'; व्यञ्जनगति त्रुटियाँ, जैसे—'उरदू', 'पार्व्वती', 'पार्लामिण्ड', 'आस्मान', 'अनवर्त', 'सिङ्गार', 'वेद', 'तृशूल', 'डाक्तर खाना', 'हठधरमी', 'पिसाच', 'जिस्पर'; लिंग सम्बन्धी अशुद्धियाँ, जैसे—"केकयी ने रामजी को बन जाते समय आज्ञा दिया", 'जिससे पूर्वोक्त बादशाहों का स्पष्ट चित्त और विचार प्रकट हो जायगी" "मूर्ति पूजा की निंदा किया" "राजा ने हम लोगों को इनके प्राण हरने की आज्ञा दिया" और वचन सम्बन्धी अशुद्धियाँ, जैसे—"जिस विजयी और विख्यात सिकन्दर ने संसार को जीता उसकी अस्थि कहाँ गढ़ी हैं।" इस काल में कारक सम्बन्धी त्रुटियाँ भी अनेक होती थीं, जैसे—"मुझको मेरे मित्रों ने कहा था", "यद्यपि महात्मा मुहम्मद को अनेक सन्तति थी", "मदालसा उससे छुड़ाना चाहा" आदि। इस युग की कुछ अन्य त्रुटियाँ इस प्रकार है—"पितृव्य यदि तुम वात्सल्य स्वरूप औषध हमको प्रदान करने चाहते हो", मिवार के राज्याभिषेक समुदय प्राचीन नियम रक्षा करने में विपुल अर्थ का व्यय होता था", जितना ग्रामगीत शीघ्र फैलते हैं और जितना काव्य को सङ्गीत द्वारा सुनकर चित्त पर प्रभाव होता है साधारण शिक्षा से नहीं होता" एवं "इस विषय में जिनको कुछ भी रचना शक्ति है।" इनके अतिरिक्त भी भारतेन्दु 'वियानुरागिता', 'श्यामताई', 'अधीरजमना' और 'नागदेश' आदि अशुद्ध शब्द लिखा करते थे।

भारतेन्दुजी ही नहीं, उनके समकालीन तथा सहयोगी लेखक—पं० प्रतापनारायण मिश्र, पं० बालकृष्ण भट्ट, लाला श्री निवासदास, प्रेमघन, ठा० जगमोहनसिंह, पं० राधाचरण गोस्वामी, गदाधर भट्ट और राधाकृष्णदास आदि भी ऐसी अशुद्धियाँ किया करते थे। मिश्रजी और बालकृष्ण भट्ट की भाषा पर व्रजभाषा के ऐकार और औकार का प्रभाव था; 'प्रेमघन'जी की भाषा में वाक्यों की दीर्घता के कारण दुरूहता आ जाती थी; श्रीनिवासदास, मिश्रजी और भट्टजी की भाषा पर प्रान्तीयता का प्रभाव था और ठा० जगमोहनसिंह पंडिताऊपन तथा पूर्वीपन के शिकार थे। अतः इनकी भाषा व्याकरण विषयक अशुद्धियों और शैलीगत शिथिलता से युक्त थी।

भाषा की इन अशुद्धियों के निवारण का दायित्व द्विवेदीजी ने सम्भाला। आपने 'भाषा और व्याकरण' नामक लेख लिखकर अपने पूर्ववर्ती तथा समकालीन लेखकों की भाषा में सुधार करना प्रारम्भ किया। इस लेख में आपने भारतेन्दु, राजा शिवप्रसाद, गदाधरसिंह, राधाचरण गोस्वामी और काशीनाथ खत्री की भाषा-सम्बन्धी त्रुटियों का परिष्कार किया। यह लेख सरस्वती, भाग ६, संख्या ११ में प्रकाशित हुआ था। इसके पश्चात् आपने हिन्दी-शिक्षावली, तृतीय भाग की समीक्षा करके हिन्दी-प्रेमियों का ध्यान लिङ्ग-सम्बन्धी त्रुटियों की ओर आकर्षित किया और 'हिन्दी कालिदास की समालोचना' लिखकर व्याकरण के अव्यावहारिक रूपों कर्ता, क्रिया और कारक चिह्नों के अशुद्ध प्रयोगों का परिमार्जन किया।

'सरस्वती' में प्रकाशनार्थ आने वाली रचनाओं और समालोचनार्थ आने वाली पुस्तकों के भाषासम्बन्धी दोष दिखाना आपने नियमित रूप से प्रारम्भ किया। मिश्र बन्धुओं के 'हिन्दी नवरत्न' की आलोचना इसका प्रमाण है। मिश्र बन्धुओं ने 'सौष्ठव' का गलत प्रयोग किया। द्विवेदीजी ने सौष्ठव के स्थान पर 'सुष्ठु' रख दिया। 'ह् व' के स्थान पर 'ब' लिखने की त्रुटि को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी आपने सम्भाला। 'विहार-बन्धु' के सम्पादक पं० केशवराम भट्ट की पुस्तक 'हिन्दी-व्याकरण' की भाषा सम्बन्धी त्रुटियों को सरस्वती के 'पुस्तक-परीक्षा' नामक स्तम्भ में दिखाते हुए, आपने लिखा था—आप 'चाहिये' को 'चाहिए' क्यों नहीं लिखते। द्विवेदीजी का मन्तव्य यह था कि 'जहाँ तक स्वरों से काम निकले तहाँ तक व्यञ्जनों के प्रयोग की क्या आवश्यकता? अकेले 'ए' का जैसा उच्चारण होता है, वैसे ही 'य—ए' का होता है।'

द्विवेदीजी ने पं० श्यायजी शर्मा की 'हिन्दी-शिक्षक' नामक पुस्तक की लिंग और वचन सम्बन्धी और काव्यतीर्थ श्री लाल जैन की 'संस्कृत प्रवेशिनी' की वचन सम्बन्धी त्रुटियों का परिष्कार किया। इसके अलावा यकारान्त और एकारान्त तथा अकारान्त और एकारान्त शब्दों के लिखने और अनुस्वार के प्रयोग सम्बन्धी त्रुटियों के निवारण के लिए पं० विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक को लिखा था—"देखिये लेने के अर्थ में जब लिये शब्द लिखा जाता है तब यकार से लिखा जाता है, और जब विभक्ति के रूप में आता है तब एकार से लिखा जाता है, जो शब्द एक वचन में यकारान्त रहते हैं वे बहुवचन में यकारान्त रहते हैं। जैसे 'किया-किये, गया-गये परन्तु स्त्रीलिंग में 'गयी' न लिख कर 'गई' लिखा जाता है। कहिए, चाहिए, देखिए इत्यादि में एकार लिखा जाता है। अकारान्त शब्दों का बहुवचन एकारान्त होता है। जैसे—'हुआ' का बहुवचन 'हुए'। जहाँ पूरा अनुस्वार बोले अनुस्वार लगाया जाता है। जैसे 'संस्कार' और जहाँ आधा अनुस्वार, जिसे उर्दू में नूनगुन्ना कहते हैं, बोले वहाँ चन्द्र बिन्दु लगाया जाता है—जैसे काँपना।"[१]

उर्दू से हिन्दी में आने वाले द्विवेदीजी के समकालीन लेखक 'इ' और 'ई' की मात्राओं के प्रयोग में भूल किया करते थे। ऐसे लेखकों को लक्ष्य करके आपने लिखा था—"ये अरबी फारसी और उर्दू के दास 'सत्य' को 'सत', 'पति' को 'पती', 'अनुभूति' को 'अनुभूती', 'लक्ष्मी' को 'लक्शमी', 'स्त्री' को 'इस्त्री', 'पाँच सौ' को 'पान्सौ', मेषराशि को मेस (खूँटा) राशि और सदच्छा को 'सदेच्छा' लिखकर अपनी जुबाँदानी साबित करते हैं। यहाँ तक कि अपना नाम लिखने में वे 'नारायण' को 'नरायण' (न), 'प्रसाद' को 'परसाद' और 'गुप्त' को 'गुप्ता' तक कर डालते हैं।"

स्पष्ट है द्विवेदीजी ने इस प्रकार स्वर, व्यञ्जन, और शब्दगत त्रुटियों का तन्मयता के साथ निवारण किया और लेखकों के सामने शुद्ध प्रयोगों के आदर्श प्रस्तुत किये।

द्विवेदीजी द्वारा संशोधित शब्दों की एक सूची इस प्रकार है—'दशावों' के स्थान पर 'दशाओं', प्रतिनिधी के 'प्रतिनिधि', 'ऋरिण' के 'ऋणी', 'पारिणनी' के 'पारिणनि', 'मलयागिरी' के 'मलयगिरि', कुटलता के 'कुटिलता', 'बैह' के 'वह', 'अश्रूधारा' के 'अश्रुधारा', 'मान्ते' के 'मानते', 'नौज्वान' के नौजवान', 'प्रकृया', के 'प्रक्रिया' 'गंधारी' के 'गान्धारी', 'हिन्दु' के 'हिन्दू', 'हृदय' के 'हृदय', 'उतपत्ति' के 'उत्पत्ति', 'लेकीन' के 'लेकिन', 'आकास' के 'आकाश', 'जूही' के 'ज्योंही', 'स्मशान' के 'श्मशान', साधारन' के 'साधारण', 'सिंघासन' के 'सिंहासन', 'प्रेममै' के 'प्रेममय', 'साह्मने' के 'सामने', 'कुच्छ' के 'कुछ', 'शगुण' के 'सगुन', 'प्रस्पर' के 'परस्पर', 'प्रैरणा' के 'प्रेरणा', 'सम्रण' के 'स्मरण' 'विभ्राड़' के 'विभ्राट' और 'जलजान' के स्थान पर 'जलयान' आदि शुद्ध शब्द आपने किये। स्वर तथा व्यञ्जनगत इन अशुद्धियों के अतिरिक्त आपने संज्ञा सर्वनाम, विशेष्य-विशेषण, क्रिया, अव्यय, लिंग, वचन कारक, समास, उपसर्ग और मुहावरों सम्बन्धी अनेक त्रुटियाँ शुद्ध कीं।

विराम-चिह्नों के संशोधन की दृष्टि से भी द्विवेदी जी का कार्य स्तुत्य है। आपने गणपति जानकीराम दुबे का 'रायगिरि अथवा-रायटेक', सूर्यनारायण दीक्षित का 'टिड्डीदल', चन्द्रहास का 'अद्भुत उपाख्यान', मिश्र बन्धुओं का 'जीवन बीमा' और बदरीनाथ भट्ट का 'महाकवि मिल्टन' आदि लेखों का संशोधन किया। सरस्वती-सम्पादन काल में आप सदैव ही इस प्रकार का संशोधन करते रहे। आपने दूसरों की भाषा-सम्बन्धी भूलों का ही परिष्कार नहीं किया, वरन् अपनी भूलें भी सुधारीं। आचार्य द्विवेदी के भाषा-सुधार के विषय में डा० उदयभानुसिंह का मत है—"द्विवेदीजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने चार प्रकार के भाषा-सुधार करके खड़ीबोली के परिष्कृत और परिमार्जित रूप की प्रतिष्ठा की। उन्होंने दूसरों के दोषों की तीव्र आलोचना की। सम्पादक-पद से 'सरस्वती' के लेखकों की रचनाओं का संशोधन किया और कराया। अपने पत्रों, सम्भाषणों, भाषणों, भूमिकाओं और सम्पादकीय निवेदनों द्वारा कवियों और लेखकों को उनके दोषों के प्रति सावधान किया और साहित्यकारों के ग्रन्थों की भाषा का भी समय-समय पर संशोधन किया।"[1]

इसमें कोई सन्देह नहीं कि आचार्य द्विवेदी ने भाषा-सुधार के कार्य में एक युगान्तकारी महत्व का कार्य किया। नए और पुराने लेखकों की भाषा सम्बन्धी अशुद्धियों का परिमार्जन करके हिन्दी को सुष्ठु और सुन्दर रूप देने का प्रयास किया और शैली को व्यवस्थित बनाया। आचार्य द्विवेदी के इस कार्य को स्तुत्य, महान् और युगान्तकारी कहा जा सकता है, पर पूर्ण नहीं।

आचार्य द्विवेदी ने जिस समय भाषा-सुधार का कार्य प्रारम्भ किया था, उस समय भी उनकी लेखनी से प्रायः वे गलतियाँ हुआ करती थीं, जिनके सुधार का कार्य वह स्वयं प्रारम्भ कर चुके थे। द्विवेदी-युग सम्बन्धी शोधार्थियों का मत है कि उनकी प्रारम्भिक रचनाओं—'अमृत-लहरी', 'भामिनी विलास', 'बेकन विचार रत्नावली', 'हिन्दी शिक्षावली तृतीय भाग की समालोचना' आदि में लेखन-त्रुटियों, व्याकरण की अशुद्धियों और रचना-सम्बन्धी दोषों की इतनी प्रचुरता है कि वे भाषा की दृष्टि से द्विवेदीजी की कृतियाँ ही नहीं प्रतीत होतीं।" 'भाषा की दृष्टि से द्विवेदीजी की कृतियाँ ही प्रतीत नहीं होतीं' यह वाक्य श्रद्धावश कहा गया है। सत्य यह है कि उस समय द्विवेदीजी भी अन्य लेखकों की भाँति भाषा-व्याकरण और रचना-विषयक त्रुटियाँ कर जाया करते थे। द्विवेदीजी द्वारा की गई त्रुटियों के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं—'समुझा', 'झुरोखे', 'भ्रकुटी', 'कीशोरी', 'प्राणीयों', 'दृष्टी', 'इष्टसिद्धी', 'चेष्ठा', 'ओष्ट', 'लडाना', 'विना' 'निर्दई', 'दुखदाई', 'निरमाण', 'वरणन', 'शोच विचार', 'रहैंगे', 'करैंगे', 'विकालत', 'बस्तुतः', 'दुरवस्था', 'उपरोक्त', 'निकलैगा', 'मिलैगा', 'खोवैगा' आदि। ये स्वर और व्यञ्जन सम्बन्धी त्रुटियों के नमूने हैं। आचार्य द्विवेदी की रचनाओं में मुहावरों का अशुद्ध प्रयोग, लिङ्ग और वचन सम्बन्धी अशुद्धियाँ, विराम-चिह्नों की भूलें और वाक्य-विन्यास की शिथिलता तथा रचना विषयक दूषित प्रयोग भी मिलते हैं। प्रारम्भ में द्विवेदीजी बिजली को 'बिजुली', और मुहावरा को 'मुहाविरा' लिखते थे।

'भाषा-सुधार' का आन्दोलन प्रारम्भ करते हुए आचार्य द्विवेदीजी ने भारतेन्दु तथा उनके सहयोगियों की भाषा का जो परिष्कार किया था, उसमें भी कुछ सीमा तक शिथिलता रह गई थी। उस सुधार से शैली में न तो निखार आ पाया था और न रवानगी। इस स्थिति को लक्ष्य करके ही द्विवेदीजी के भाषा-सुधार के सम्बन्ध में डा० रामविलास शर्मा ने लिखा था—"इस संस्कार में भारतेन्दु-युग की सजीवता भी बहुत कुछ नष्ट हो गई।" द्विवेदीजी के भाषा-सुधार के अन्दोलन में सहयोग दिया बालमुकुन्द गुप्त ने। गुप्तजी ने आचार्य द्विवेदी का ध्यान उन त्रुटियों की ओर आकर्षित किया, जो 'भाषा और व्याकरण' नामक उनके प्रसिद्ध लेख में रह गई थीं। यदि गुप्तजी ने श्रद्धावश द्विवेदीजी का अन्धानुकरण किया होता और व्याकरण-विषयक त्रुटियों की ओर उनका ध्यान आकर्षित न किया होता, तो बहुत सम्भव है कि आचार्य द्विवेदी इतनी तत्परता के साथ न तो अपनी भाषा का सुधार करने पर उतारू होते और न दूसरों की। इस तरह आचार्य द्विवेदी के भाषा-सुधार के कार्य को पूर्णता तक पहुँचाने का बहुत कुछ श्रेय गुप्तजी को है।

यदि बिना किसी पूर्वाग्रह के देखा जाय, तो निष्कर्ष यह निकलेगा कि भाषा-सुधार विषयक आचार्य द्विवेदी की नीति विस्तारवादी थी। तात्पर्य यह है कि वे मूल अंश में भर्ती के शब्द जोड़कर ईप्सित अर्थ निकालने का प्रयास करते थे—प्रमाणस्वरूप भारतेन्दु आदि के वाक्यों का सुधार देखा जा सकता है। दूसरे, द्विवेदीजी

(शेष पृष्ठ ७१ पर)

[1] महावीरप्रसाद द्विवेदी और उनका युग, पृ० २०८।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्विवेदीजी का पत्र-साहित्य

डा० कैलाशचन्द्र भाटिया

किसी युग विशेष की साहित्यिक गतिविधियों की जानकारी के लिए तत्कालीन समाचार-पत्र तथा वैयक्तिक-पत्र साहित्य विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। साहित्यकार के पत्र में व्यक्तिगत चर्चाएँ कम होती हैं और फिर उनमें भी कोई न कोई साहित्यिक समस्या गौणतः समाहित रहती है। द्विवेदीजी और उनके द्वारा सम्पादित सरस्वती हिन्दी साहित्य के एक युग विशेष का प्रतिनिधित्व करती है। इधर द्विवेदीजी का पर्याप्त पत्र साहित्य प्रकाशित हुआ है। इनमें 'द्विवेदी पत्रावली' तथा 'द्विवेदी युग के साहित्यकारों के कुछ पत्र' (हिन्दुस्तानी एकेडेमी) उल्लेखनीय हैं पर इधर जब पद्मसिंह शर्मा का सम्पूर्ण साहित्य आगरा विश्वविद्यालय के क० मुं० हिन्दी तथा भाषा-विज्ञान विद्यापीठ ने ले लिया तो उसके साथ अलभ्य पत्र-साहित्य से भरे बक्स भी प्राप्त हो गये जिनमें से कुछ पत्र सिलसिले से विद्यापीठ के मुखपत्र 'भारतीय साहित्य' में प्रकाशित हुए हैं।

द्विवेदीजी का पत्र-साहित्य अनेक दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। और कुछ नहीं तो आज का साहित्यकार तथा अनुसन्धित्सु प्रेरणा प्राप्त करने के लिए ही उनको पढ़ सकता है। भाषा-संशोधन के सम्बन्ध में तो द्विवेदीजी की सरस्वती के लिए तैयार की गईं पाण्डुलिपियाँ महत्त्वपूर्ण हैं जिनकी ओर स्वयं आचार्य द्विवेदी ने श्यामसुन्दरदासजी को एक पत्र में संकेत किया था।

"मेरे समय की सरस्वती की १७ वर्ष की हस्तलिखित कापियाँ मेरे पास हैं। किसी समय भविष्यत् में शायद मूल्यवान् समझी जायँ। उनको देखने से पता लगेगा कि आज कल के हिन्दी के अनेक धुरन्धर लेखक किस तरह राह पर लाये गये थे। वे भी दे डालूँगा। सभा चाहे तो जिल्द बाँधकर रख छोड़े।"

—१६-१०-१६२३ के पत्र से।

हिन्दी भाषा और व्याकरण के क्षेत्र में द्विवेदीजी का स्थान सर्वोच्च है। भाषा के आप पण्डित थे और शुद्धता के समर्थक। बड़ी निडरता से आपने बड़े-से-बड़े लेखक की कृति की अशुद्धियों में सुधार किया था। आपके ही इस अथक परिश्रम से हिन्दी भाषा सरल और स्वच्छ हुई। आपने 'सरस्वती' के रूप में सरस्वती की साधना की, पर घोर परिश्रम के फलस्वरूप आपका स्वास्थ्य जर्जर हो गया। रात्रि को नींद न आना तो सामान्य बात हो गई। नेत्रों की ज्योति क्षीण होती चली गई।

पं० पद्मसिंह शर्मा को लिखे गये एक पत्र में आपने लिखा है—'भाषा और व्याकरण' पर एक और लेख लिखने का हमारा इरादा है उसमें भी हम..........की त्रुटियाँ दिखलायेंगे और अच्छी तरह दिखलायेंगे।"

—दिनाङ्क ११-१-०६ के पत्र से।

ऐसा प्रतीत होता है कि 'अनस्थिरता' शब्द साधु है अथवा असाधु इस पर विशेष चर्चा चल पड़ी। संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित होते हुए भी आचार्य द्विवेदी हमेशा हिन्दी की प्रवृत्ति का ध्यान रखते थे अतएव उन्होंने हिन्दी की प्रवृत्ति के अनुसार अनस्थिरता को सिद्ध करने की चेष्टा की है। इस शब्द की ओर आपने कई पत्रों में संकेत किया है—

"अनस्थिरता को आप संस्कृत क्यों करते हैं। जैसे अनपढ़, अनगिनत आदि शब्द हैं वैसे ही उसे भी रखने में क्या हानि है।"

—दिनाङ्क १७-१२-०५ के पत्र से।

"काशी के कई पण्डितों ने अनस्थिरता को साधु बतलाया। संस्कृत-चन्द्रिका के सम्पादक आप्पा शास्त्री विद्यावागीश ने तो कई तरह से उसकी साधुता साबित की।"

—दिनाङ्क ११-१-०६ के पत्र से।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक-एक शब्द पर द्विवेदीजी विशेष ध्यान देते थे, शब्द, उससे लगे परसर्ग, वाक्यांश की उलट फेर से कहाँ तक अर्थ बदल सकता है उसकी सम्भावनाओं पर विचार करते थे। भारत-मित्र के ये वाक्य देखिए—

"लालगढ़ के द्वार पर एजेण्ट साहब आपका स्वागत करके प्रिंस के पास ले गये, सिंहासन से आधी दूर पर प्रिंस ने महाराज से हाथ मिलाया।"

इसमें 'आधी दूर पर' का आप क्या मतलब समझे? क्या सिंहासन इतना था जिससे उस पर चलना पड़ा? दूरी कैसी? लालगढ़ के द्वार और सिंहासन के अँधियारे पर तो बीकानेर वालों से मिलने प्रिंस आये ही न होंगे। 'से' से सिंहासन को छोड़कर उसकी सीढ़ियों से कहाँ तक की दूरी का आधा? इसे हम उस भाषा के उदाहरण में देना चाहते हैं जो कोई न समझ सके। क्या 'अढ़ाई' शब्द भी नागरिक बोलते हैं? हम समझते हैं 'ढाई'। यह भी बताइए कि 'भोजन पर' बैठना भी कोई मुहावरा है। चौके पर बैठना तो सुना है। अँगरेजी में टेबिल पर भी बैठना कहा जाता है—यह भी भारतमित्र का मुहाविरा है।"

—दिनाङ्क १७–१२–०५ के पत्र से।

एक-एक श्लोक का एक-एक पद आप ध्यान से देखकर उपयुक्त एवं वांछित सुधार करने से नहीं हिचकिचाते थे। लेखक को कई-कई सुझाव प्रस्तुत करते थे जिससे शब्द या शब्दों मात्र के बदलने से अर्थ-सौन्दर्य एवं भाव-गाम्भीर्य बढ़ जाता होगा।

दूसरी पंक्ति   प्रकाशते यस्य विशेष निश्चयः
येन कृतोऽति निश्चयः
येन कृतो विनिश्चयः

तीसरी पंक्ति   गृहीत सद्धर्म्म-विशेष-संत्रयः
समूह
विचार

चौथी पंक्ति   चकास्ति सोऽयं
स शोभते सौ
विभाति सोऽयं

इसमें से जो पाठ आपको अच्छा लगे रख लीजिए।

—दिनाङ्क १५–५–०६ के पत्र से।

इस 'मृगीदृशां' वाले में 'प्रणयिता.वाराङ्गनाना-मिव' की जगह 'प्रणाभिमां वाराङ्गनाना' हो तो कैसे? 'वासराः' का उपमान 'प्रणायिता' ठीक होगा?

—दिनाङ्क ४–११–०६ के पत्र से।

पारिभाषिक शब्दों में आप अधिक प्रचलित शब्द ही अपनाना चाहते थे—'गल्प शब्द बँगला में ही अधिक व्यवहृत होता है। हिन्दी में क्यों लिया जाय? आख्यायिका या कहानी से क्या काम नहीं चल सकता?

—दिनाङ्क २३–११–१६ के पत्र से।

हिन्दी-व्याकरण में लिङ्ग-निर्धारण भी एक विकट समस्या है। इस पर भी आप यत्र-तत्र प्रकाश डालते रहते थे। 'लिङ्ग के सम्बन्ध में एक पत्र में लिखा था' संस्कृत में जो शब्द जिस लिङ्ग का है हिन्दी में वह लिङ्ग हमेशा नहीं रहता है। व्यक्ति शब्द को यदि अधिकांश या सभी लेखक हिन्दी में पुलिङ्ग मानते हैं तो वह लिङ्ग उसका रहेगा।

—११–११–२३ के पत्र से।

उर्दू शब्दों के बहिष्कार के आप विरोधी थे। एक पत्र में लिखा था—

"हिन्दी लिखने में उर्दू-फारसी के शब्द आवें तो हम कोई हानि नहीं समझते। कोई-कोई उर्दू शब्द अधिक बोलचाल में आते रहने के कारण अधिक सरल और अधिक बलपूर्ण हो गए हैं। सम्मति से सलाह ही अधिक सरल है। धूल में मिला देने की अपेक्षा खाक में मिला देना कहने में अधिक बल है।

—दिनाङ्क २४–२–०३ के पत्र से।

यही कारण है कि आपके पत्रों में साबित, बेजा, मौत, उजर नफीस, बेहतर, जिक्र, मसविदा, नूह, फैसिला मुहाविरा, खतम, इन्तजार, तारीफ, मजे, दरकार, सख्त, फिक्र, कब्ज, रफा, इन्कार, दस्तन्दाजी, शरीक, मजा, गजब, जरूर, तरजीह, इसरार, दस्तखत मशगूल, आजिज, नाचीज, सतर आदि प्रचलित और अप्रचलित शब्द तक प्रयुक्त हुए हैं। 'जियादह' जैसे

(शेष पृष्ठ ८४ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्विवेदीजी की देन—शैली

आ० हजारीप्रसाद द्विवेदी

किसी ने किसी विषय को कैसे लिखा है, अर्थात् उसकी शैली क्या है, यह जानने के पहले यह जानना जरूरी है कि उसने क्या लिखा है। एक समय ऐसा भी था जब लोग 'क्या' की अपेक्षा 'कैसे' को साहित्य में प्रमुख स्थान देते थे। आज वह समय नहीं है। आज यह स्वीकार कर लिया गया है कि लेखक का वक्तव्य-विषय ही आलोच्य होना चाहिये। यदि वक्तव्य-विषय में सार है, तो वह जिस किसी ढङ्ग से लिखा गया हो, ग्रहणीय है; भले ही वह किसी रूढ़ि-समर्थित रूप में न हो। कबीर की बाणी साहित्य की आलोच्य और ग्रहणीय सामग्री मानी जायगी, भले ही उसकी भाषा, उसके छन्द, उसकी पद संघटना शास्त्रीय और रूढ़ि समर्थित न हो। और जब एक बार उसे साहित्य-स्वीकृति मिल गई तो वह स्वयं एक भावी-रूढ़ियों का रूप हो जायगी। इस प्रकार आज के युग में 'कैसे' की महिमा कुछ म्लान हो गई है।

फिर भी साहित्य के साधारण अध्येता और बिशेषज्ञ विवेचक दोनों के लिये लेखक की शैली का अध्ययन करना परम आवश्यक है। इसके तीन कारण हैं। तीनों में से एक की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती। इन कारणों की चर्चा करने के पहले द्विवेदीजी के समस्त साहित्यिक लेखों और कविताओं को स्मरण कर लेना चाहिये। यह बात निर्विवाद है कि उस युग की साहित्यिक साधनाओं की अग्रगति को दृष्टि में रखकर, विचार करने पर, द्विवेदीजी का वक्तव्य-वस्तु प्रथम श्रेणी का नहीं ठहरता : उसमें नवीन और प्राचीन प्राच्य और पाश्चात्य, साहित्य और विज्ञान सब कुछ हैं पर सभी 'सैकेण्डहैण्ढ' और अनु-सङ्कलित। इस प्रकार केवल 'क्या' अर्थात् वक्तव्य-वस्तु के अध्ययन से हम द्विवेदीजी का मूल्य नहीं आँक सकते—आँक कर गलती करेंगे। आधुनिक साहित्य के पारखी पण्डितों ने साहित्य का विश्लेषण करके देखा है कि एक लेखक की रचना दूसरे लेखक की रचना से तीन कारणों से भिन्न होजाया करती है। पहला तो यह कि एक व्यक्ति का स्वभाव, संस्कार और शिक्षण दूसरे से कभी भी हू-ब-हू नहीं मिलता। फलतः एक व्यक्ति सदा दूसरे से भिन्न हुआ करता है। और इसलिए एक व्यक्ति की रचना किसी भी दूसरे से स्वभावतः ही भिन्न होती है। उसकी शैली, जैसा कि अंग्रेजी कवि पोप ने कहा था उसके विचारों की पोशाक हुआ करती है, पर केवल पोशाक कहना उसको यथार्थ कहना नही हुआ। इसलिए सुप्रसिद्ध मनीषी कारलाइल ने उक्त वक्तव्य को संशोधन करते हुए कहा था कि शैली लेखक के विचारों की पोशाक नहीं, चमड़ा है। वह मंगनी नहीं माँगी जा सकती, उधार भी नहीं दीं जा सकती। इस बात को शैली का व्यक्तिगत पहलू कह सकते हैं। पर खेल व्यक्तिगत पहलू ही शैली का सब कुछ नहीं हैं। उसका एक दूसरा महत्वपूर्ण अङ्ग और भी है। एक खास युग के लेखक एक खास ढङ्ग की ही चीज लिखा करते हैं। बिहारी का जन्म यदि सं० १९६० में हुआ होता, तो निश्चय ही वे वैसी सतसई नहीं लिखते। क्योंकि तब जमाना बदल गया होता और सौन्दर्य, प्रेम, मिलन, विरह आदि की प्रेरणाएँ उन्हें एकदम और ढंग से प्राप्त होतीं। और अगर वे वही सतसई इस युग में बैठ कर लिखते, तो यह तो नहीं कहा जा सकता कि उन्हें देव पुरस्कार नहीं ही मिलता, पर वे जन-साधारण के चित्त को उसी मात्रा में जीतने में कदापि समर्थ न होते। क्योंकि लेखक की शैली पर समय का प्रभाव अमिट रूप से पड़ता है। वह उसकी उपेक्षा करके कहीं का नहीं होता और उसको एक दम स्वीकार करके भी अपनी महिमा कुछ कम कर देता है। द्विवेदीजी ही आज २५ वर्ष के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युवक होते, तो उनकी कविताएँ और ढङ्ग की हुई होतीं। यहां यह साफ समझ रखने की जरूरत है कि शैली के इस दूसरे पहलू—अर्थात् ऐतिहासिक अङ्ग के स्वीकार करने से पहले का महत्त्व कुछ भी कम नहीं होता। उदाहरणार्थ द्विवेदीजी इस युग में भिन्न प्रकार की कविता और लेख लिखते, यह बात जितनी निश्चित है उतना ही निश्चित उनका व्यक्तिगत गुण, अर्थात् विचारों की परुष स्पष्टता, भाषा की सफाई, और वक्तव्य वस्तु के प्रति पूर्ण ईमानदारी भी है। शैली का तीसरा महत्त्वपूर्ण पहलू उसका शास्त्रीय उपस्थापन है। इसमें वक्तव्य वस्तु के बौद्धिक, भावावेश-मूलक और सामञ्जस्य बोध सूचक उपकरण शामिल हैं। अर्थात् (१) उपयुक्त शब्दों का उपयुक्त व्यवहार, विचारों के अनुकूल वाक्यों के रूप ग्रहण करने की क्षमता और लचीलापन और औचित्यज्ञान, (२) वक्तव्य वस्तु को हृदयङ्गम कराने के लिए केवल ज्ञान का विस्तार-दर्शन ही नहीं, वरन् पाठक को आकृष्ट करने की अलौकिकमता और (३) विविध शास्त्रीय वस्तुओं का उचित सामञ्जस्य—यह सभी शामिल हैं। यदि हम इन बातों को सामने रखकर द्विवेदीजी की समीक्षा करें तो हमें एक आश्चर्य जनक अवतारी पुरुष का स्पष्ट परिचय मिलेगा उनका व्यक्तित्व उनके लेखों में अत्यन्त स्पष्ट हो उठा है। जैसाकि पहले कहा जा चुका है, उनके लेखों, कविताओं में कोई नवीनता नहीं है। अधिकांश लेख यह कह कर प्रारम्भ होते हैं कि इस विषय पर अमुक भाषा की अमुक पत्रिका में एक पठनीय लेख छपा है। इन पंक्तियों के लेखक को कभी-कभी मूल लेखों के साथ द्विवेदीजी के लेख को मिला कर पढ़ने का अवसर मिला है। मूल लेख की प्रकाशन-भंगी में द्विवेदीजी ने एकदम नया रूप दिया है। अगर वे स्वयं न कह देते कि उनका लेख उक्त विशेष लेख का सारांश है, तो दोनों के एक ही होने का सन्देह सब लोग नहीं कर सकते। मूल का वक्तव्य-वस्तु नया चोला पहन कर सामने आता है दो बातें स्पष्ट ही समझ में आ जाती हैं। पहली यह कि यह आदमी नख से शिख तक ईमानदार है। वह एक भी पंक्ति जिसे दूसरे ने लिखी है, अपने नाम से नहीं चलाना चाहता। इस नाम कमाने के उपहासास्पद युग में, जब नामी-नामी लेखकों में भी दूसरे के वक्तव्य-वस्तु को नया चोला पहनाकर अपनाने की पागलपन भरी धुन सवार है, वह अकेला प्रवाह के विरुद्ध निश्चल खड़ा है। दूसरी यह कि उसने ज्ञान के प्रचार को पूजा की बुद्धि से ग्रहण किया है। उसमें उसने आत्म-शुद्धि के साथ ही मन्दिर की सफाई की ओर भी ध्यान दिया है। जो कुछ भी सड़ा, गला, कूड़ा करकट है, उसे वह मन्दिर में देख नहीं सकता। इस विषय में वह निर्मम और कठोर है। इन लेखों को पढ़कर द्विवेदी से हजार कोस दूर और हजार वर्ष बाद भी पैदा हुआ आदमी आसानी से समझ सकता है कि इसके पीछे एक निर्मम कठोर, उच्छ्वासहीन ईमानदार, मैटर-आफ-फैक्ट व्यक्तित्व है।

द्विवेदीजी जिस युग में लेखनी—चालना कर रहे थे, उस युग का व्यक्तित्व भी उनकी रचनाओं में स्पष्ट ही दीख जाता है। उनके युग का भारतवर्ष पुराने और नए के संघर्ष से गुजर रहा है, उत्सुकता के साथ नई-नई गवेषणाओं को सुनना चाहता है, फिर कर पीछे को ओर देख कर यह भी जान लेना चाहता है कि उसके पूर्व पुरुषों ने ऐसी कोई बात कही है या नहीं और सन्देह के साथ अपने ज्ञान, विज्ञान के आभार की जांच करना चाहता है। उसके सामने नव-युग का द्वार खुल गया है। अपरिचित स्वर्ण युग विस्मृति के बहन अन्धकार से धीरे-धीरे सिर उठा रहा है। नवीनता के प्रति उत्कट औत्सुक्य और प्राचीन के प्रति दुर्दमनीय निष्ठा, यही उस भारतवर्ष का हरिचय है। द्विवेदीजी ने इन दोनों बातों का बड़ा ही प्रौढ़ सामञ्जस्य किया। वे खोज-खोज कर नवीन विषयों का ज्ञान सञ्चय करते रहे और प्राचीन गौरव की याद दिलाते रहे सर्वत्र उन्होंने युग की इस विशेषता को अपने व्यक्तिगत संयम, निष्टा और ईमानदारी से अधिकाधिक आकर्षण बना दिया। यह सब कुछ उन्हें एक दम नये सिरे से करना पड़ा। नए विचारों को नये प्राणों के स्पन्दन सहित प्रकाश कर सकने की क्षमता उस युग की भाषा में नहीं थी। प्राचीन गौरव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को नये वैज्ञानिक रूप में प्रकट करने की सामर्थ्य भी उसमें कम ही थी। इस दूसरी श्रेणी की बातें उस युग की भाषा में या तो उच्छ्वास पूर्ण आवेग के रूप में प्रकट की जाती थीं या पक्षपात पूर्ण असम्भव कल्पनाओं के रूप में। द्विवेदीजी की रचनाओं में ही सबसे पहले इस बात का आभास मिला कि भारतीय गौरव केवल देश-भक्ति के उमङ्ग में दी गई सम्भव-असम्भव उच्छ्वास मयी वक्तृताओं से नहीं बल्कि, वैज्ञानिक यथार्थवादिता के रूप में प्रकट करने से ही देशवासियों को अपनी वास्तविक स्थिति का ज्ञान कराने में समर्थ हो सकता है। असल में द्विवेदीजी की परुष और निर्मम शैली ने ही उनमें वैज्ञानिक यथार्थवादिता भरी। उन्होंने वह भाषा तैयार की, जो हमारे प्राचीन गौरव को यथार्थ रूप में प्रकट कर सके। अतिरंजित, काल्पनिक, आवेग-पूर्ण और खर्वकारी भाषा जो उन दिनों बहुत अधिक प्रचलित थी। उनके परुष हाथों में आकर संयत, उचित और साफ बन गई। यद्यपि उनकी भाषाओं का बौद्धिक उपकरण, भावावेश मूलक उपकरण से कहीं अधिक था पर जिस युग में वे पैदा हुए थे, उस युग के लिये यह कमी गुण हो गई। उनसे कम परुष, कमबुद्धि-परवश और अधिक भावावेशी पुरुष के हाथों पड़ने पर हमारी संक्रान्ति-कालीन भाषा में एक ऐसा ढीलापन रह गया होता, जिसके सुधारने के लिए शायद अब तक किसी और अवतारी पुरुष की बाट जोहते रहते।"

—सा० सन्देश अप्रेल १९३९ से।

(पृष्ठ ८१ का शेष)

शुद्ध रूप में लिखे हुए शब्द भी मिल जायेंगे जिसको आज 'ज्यादा' ही लिखा जाता है।

यही नीति उनकी अंग्रेजी के शब्दों के सम्बन्ध में रही। उनके पत्रों में फाइल, एजेंट, कार्ड, एडिटर, एडिशन, कम्पोज, मार्क, मानोग्राम आदि शब्द सहज ही मिल जाते हैं। कुछ बहुवचन वाले रूप भी मिलते हैं, जैसे रीडर्स, मिल्स, थैंक्स, रेकार्डस आदि। स्पेलिङ्ग को ध्यान में रखते हुए आपने 'मैशीन' भी लिखा जो आज अपने शुद्ध रूप में 'मशीन' बन चुका है। कुछ शब्दों की स्पेलिङ्ग आपने शुद्ध चलाने की चेष्टा की, जैसे कमिटी, अक्टोबर, सारटीफिकेट, मेडल पर आगे चलकर क्रमशः इनका रूप कमेटी, अक्टूबर, सर्टी-फिकेट, मैडल चला।

इसी प्रकार उनके पत्रों में तत्कालीन साहित्यिक गतिविधियों, नोक-झोंक आलोचना-प्रत्यालोचना, सरस्वती की समस्या, लेखकों की स्थिति आदि पर प्रकाश पड़ता है। महाकवि शङ्करजी की कविता के प्रति उनमें प्रेम था अतएव उनके सम्बन्ध में अनेक सूचनाएं बिखरी पड़ी हैं। उर्दू साहित्य के आप कितने अधिक प्रेमी थे इसकी सूचनाएं भी इन पत्रों से मिलेंगी। उनके व्यक्ति-गत स्वास्थ्य का तो पत्र-साहित्य लेखा-जोखा ही है। द्विवेदीजी जीवन पर्यन्त आर्थिक कष्ट में रहे। इसके लिए एक पत्र का अंश उद्धृत करना चाहता हूँ—

"२००) महीने की मुलाजिमत छोड़कर मैंने २३) महीने पर सरस्वती का काम शुरू किया था। सचाई, श्रम, उद्योग और निस्पृहता की बदौलत वह चल गया। मुख्य आकर्षण अपनी भाषा से प्रेम था। उस प्रेम की बदौलत जो कुछ धन खर्च से बचा वह भी मैंने हिन्दी की उन्नति के लिए ही दे डाला। यह खानगी बात के लिखने का आशय केवल इतना ही है कि निस्पृहता और स्वाभाविक प्रेम साहित्य की उन्नति में विशेष सहायक होते हैं।"

—दिनाङ्क ९-४-१९३६

वर्तमान स्थिति में चतुर्दिशाओं से हिन्दी पर किये जाने वाले प्रहारों की रक्षार्थ ऐसे ही तेजस्वी, त्यागी तथा तन-मन-धन अर्पण कर देने वाले सेवकों की आवश्यकता है जो आवश्यकता पड़ने पर बड़े से बड़े सरकारी पद, ऊँची से ऊँची गद्दी छोड़ने को तैयार हो। काश आज हिन्दी के पास एक भी 'महावीर' होता।

—अलीगढ़ विश्वविद्यालय, अलीगढ़।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्विवेदीजी का हिन्दी-साहित्य में स्थान

प्रो० नगेन्द्र

आचार्य महावीरप्रसादजी द्विवेदी की साहित्य-सेवाओं का विवेचन दो प्रकार से किया जा सकता है—एक तो अपने समय के पथ-प्रदर्शक के रूप में उन्होंने तत्कालीन प्रवृत्तियों को किस प्रकार गति-विधि दी, और दूसरे, विशुद्ध साहित्य-रचना करके सरस्वती मन्दिर में कैसी भेंट उपस्थित की। पहिला रूप उनकी ऐतिहासिक महत्ता और दूसरा उनकी अपनी आन्तरिक प्रतिभा का द्योतक है।

द्विवेदीजी का आचार्यत्व अधिकांश में उनके ऐतिहासिक गौरव की ही अर्जित सम्पत्ति है। भारतेन्दु बाबू के निधन के उपरान्त हिन्दी-साहित्य में बढ़ती हुई विशृङ्खलताओं को द्विवेदीजी ने ही सबसे पहिले सम्हाला। भारतेन्दु बाबू ने नवीन मार्ग की ओर सफल निर्देश तो कर दिया था, परन्तु दैव के अनुरोध से उनकी वाणी शीघ्र ही मौन हो गई और उस समय कोई ऐसा दृढ़-सङ्कल्प साहित्य-सेवी नहीं था, जो बिखरी हुई प्रवृत्तियों को एक सूत्र में गुम्फित करता। अतः हिन्दी साहित्य में एक विचित्र अस्वस्थ क्रम-हीनता-सी फैली गई, जो पथ-भ्रष्टता की परिचायक थी। द्विवेदीजी ने ऐसी परिस्थिति में सरस्वती का सम्पादन-कार्य अपने हाथों में लिया और अपने व्यक्तित्व के बल पर शीघ्र ही समस्त हिन्दी-जगत में अपनी प्रभुता का विस्तार कर दिया। दिवेदीजी अपने समय के साहित्यिक-मापदण्ड बन गये। उस समय के कवि और लेखक उनकी कृपा के भिखारी थे—उनके शब्द सबसे बड़ा प्रमाण-पत्र थे। उनकी वाणी का घोष साहित्यिकों को बेना-बिगाड़ सकता था। द्विवेदीजी के गौरव का वास्तविक परिचय हमें यहाँ मिलता है। उन्होंने अपनी स्थिति का दुरुपयोग नहीं किया। कितने ही नवयुवक कवियों और लेखकों की प्रतिभा को वे प्रकाश में लाए और वाञ्छित किन्तु समुचित प्रोत्साहन दे कर उनका विकास-विवर्धन किया। उन्होंने लेखकों की प्रकृति को पहिचाना और उनकी अस्वस्थ प्रवृत्तियों को कुचलने में कभी विलम्ब नहीं किया। इस प्रकार द्विवेदीजी अपने युग के साहित्यिक-देवता थे, लोग यह देखा करते थे कि उनकी दृष्टि में प्रसाद है अथवा कोप।

इस दृष्टि से उन्होंने सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य जो किया, वह था हिन्दी की, विशेषकर खड़ी बोली की, रूप-रेखा का निश्चय करना। यह वह समय था, जब हिन्दी को अङ्गरेजी, बँगला और उर्दू की प्रतिद्वन्दिता में खड़ा होना था—द्विवेदीजी को हिन्दी की सर्व-मान्यता स्वीकृत कराने के लिए बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा—उन्होंने उसके लिए न जाने किस-किस से लड़ाइयाँ लड़ीं—और अन्त में सफल ही हुए। हिन्दी को बाह्य प्रभावों से निर्मुक्त कर उसको अपना विशेष स्वरूप प्रदान करने के लिए, उन्होंने व्याकरण की शुद्धि पर अधिक ध्यान दिया और भाषा के अनियमित प्रयोगों को अक्षम्य अपराध ठहराया। यह कार्य जिस दृढ़ता और सतर्कता से किया गया, वह श्लाघ्य है। उनका महत्त्व सब से अधिक इसी कारण है। यद्यपि वे खड़ी बोली को पद्य के अनुरूप तो न बना सके क्योंकि मराठी-साहित्य के संस्कार से उनकी भाषा में कर्कशता सर्वत्र मिलती है, परन्तु उस क्षेत्र में खड़ी बोली का प्रवेश उन्होंने बड़ी सरलता के साथ कर दिया और साथ ही गद्य की भाषा को तो अत्यन्त परिमार्जित और प्रौढ़ स्वरूप प्रदान किया। कवि पन्त के शब्द "अखिल देश की वाणी को दे दिया एक आकार" बहुत अंशों में सत्य हैं। इस क्षेत्र में द्विवेदीजी की सफलता के मूल कारण दो थे—एक तो उनका दृढ़-सङ्कल्प और तदाश्रित आत्मविश्वास, और दूसरा निष्कपट सम्मति-प्रदर्शन !

आन्तरिक-महत्ता—द्विवेदीजी की वास्तविक महत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का अनुमान लगाने के लिए हमको उनकी उन सेवाओं का विवेचन करना पड़ेगा जो उन्होंने रचनात्मक-साहित्य के प्रति की हैं। उनकी परीक्षा द्वारा ही हम आचार्य द्विवेदी से ईषद् भिन्न कवि द्विवेदी, समालोचक द्विवेदी, निबन्ध लेखक द्विवेदी की आन्तरिक प्रतिभा को पहिचान सकेंगे।

इस क्षेत्र में उन्होंने काफी लिखा परन्तु उसका चिरंन्तन मूल्य कितना है ? यह प्रश्न कुछ विषम है—और विवाद वस्तु भी हो सकता है। बात सच यह है कि द्विवेदीजी थे प्रधान रूप में पत्रकार, सम्पादक और उन्नायक। पत्रकार और सम्पादक प्राय: आवश्यकता की पूर्ति के लिए लिखता है, जिसका मूल्य तात्कालिक ही अधिक होता है। विवेदीजी की सृजन-शक्ति पर उनकी परिस्थिति और अभ्यास का प्रभाव था। अतः उन्होंने इस क्षेत्र में जो कार्य किया वह सभी चिरन्तन-साहित्य की श्री-वृद्धि न कर सकेगा। उसकी प्रतिभा द्वितीय श्रेणी के कलाकारों की ही प्रतिभा थी।

कवि की दृष्टि से द्विवेदीजी, जैसा कि उन्होंने स्वयं अनुभव किया था, अधिक सफल नहीं कहे जा सकते। उनकी कविता में हमें वह, 'अनिर्वचनीय कोई वस्तु' (Mysterious something) नहीं मिलती, जो भावुकता की प्राण है। उनमें उपयोगितावाद के प्रभाव स्वरूप एक हलकी बौद्धिकता का प्रसाद मिलता है। हाँ, उनका कुमार-सम्भव का अनुवाद भाषा-प्रयोग की दृष्टि से एक विशेष महत्त्व-रखता है। शुद्ध खड़ी बोली का स्वरूप उसमें ही सबसे पहले कोमल होकर आया है। खड़ीबोली-पथ के इतिहास में उसका अपना स्थान है।

समालोचना-साहित्य में द्विवेदीजी की प्रतिभा और रुचि अधिक रमी। तत्कालीन सद्य: प्रकाशित पुस्तकों की आलोचना तो उनका नित्य का कर्तव्य-कर्म ही था। साथ ही उन्होंने संस्कृत के कुछ ग्रन्थों का भी विवेचन किया है। पुस्तक आलोचना की परिपाटी हिन्दी में उन्होंने चलाई। समालोचक के रूप में द्विवेदीजी प्राचीन आचार्यों की शैली से ही अधिक प्रभावित थे। उनकी विवेचना में गुण-दोषों का–विशेषकर भाषा के गुणदोषों का ही व्याख्यान है। मनोवैज्ञानिक विश्लेषण की उस समय थे—उनसे आशा करना अनुचित होगा। वह समालोचना का प्रारम्भिक काल था। उनके मन में जो बात सबसे ऊपर थी, वह थी भाषा की शुद्धि, और दूसरी वस्तु की उपयोगिता। इनके अभाव को वे क्षमा नहीं कर सकते थे। और जहाँ कहीं उनको इनमें दोष मिला, वहीं वे बड़े अच्छे ढङ्ग से लेखक की खबर लेते थे। उनका स्पष्ट कथन और व्यंग्य, इस विषय में अमोघ-अस्त्र का कार्य करते थे। कहने की आवश्यकता नहीं कि स्थूल-विवेचन ही द्विवेदीजी में हमें मिलता है। इसके अतिरिक्त भाषा-विज्ञान पर हिन्दी में कदाचित उन्होंने ही सबसे पहली पुस्तक लिखी हैं।

शैलीनिर्माता—शैली-निर्माता के रूपमें द्विवेदीजी का नाम विशेष अनुराग के साथ स्मरण किया जायगा। उनकी सृजन-शक्ति का सबसे मधुर निदर्शन है उनकी-प्रसाद सम्पन्न शैली द्विवेदीजी के निबन्धों को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है—भाव-प्रधान निबन्ध, वर्णनात्मक अथवा समालोचनात्मक निबन्ध एवं विचार-बहुल लेख। हिन्दी में द्विवेदीजी ही सबसे पहले लेखक हुए हैं, जिनकी लेखनी का उपरोक्त तीन विभिन्न शैलियों पर समान प्रभुत्व था। उनके भाव-प्रधान लेख छोटे-छोटे वाक्यों से संगुम्फित हैं, जो चंचल शिशुओं की भाँति एक दूसरे को ढकेलते हुए आगे बढ़ते हैं। इनमें हमें भारतेन्दुजी की चन्द्रावली आदि में प्रयुक्त लेखन-शैली और आधुनिक-युग के गद्य-काव्य के लेखकों की शैली के बीच की कड़ी मिलती है। वर्णनात्मक अथवा आलोचनात्मक लेखों में यद्यपि हास्य और व्यंग्य की शोखी है, परन्तु समय पर वाञ्छित गम्भीरता भी मिलती है। उनके व्यंग्य और वक्रोक्ति प्रसिद्ध हैं—उनके बाण आवश्यकतानुसार विष के बुझे हुए भी हो सकते हैं। उनकी यह लेखन कला पण्डित पद्मसिंह शर्मा की शैली की पूर्व-वर्तिनी है। विचार-बहुला शैली में विस्तृत वाक्य रचना और तत्सम शब्दों के प्रयोग से गाम्भीर्य की अभिव्यक्ति होती है। यहाँ हम द्विवेदीजी को कठिन विषयों को बोधगम्य बनाने के लिए एक

(शेष पृष्ठ ८८ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आचार्य द्विवेदीजी का हिन्दी-साहित्य में स्थान

डा० बलवन्त लक्ष्मण कोतमिरे

जब तक हिन्दी जीवित लोगों की भाषा रहेगी तब तक हिन्दी-साहित्य के निर्माणकर्ताओं में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदीजी का स्थान अमर रहेगा। हिन्दी साहित्य के इतिहास में भारतेन्दु-काल अपना विशेष महत्व रखता है। युग प्रवर्तक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की मृत्यु सन् १८८५ में हुई और उनके स्थान पर काम करने के लिए उनके समान परिश्रमी साहित्यकार नहीं रहा। परन्तु भारतेन्दुजी ने इतना काम किया था कि उनकी मृत्यु के बाद भी उनकी प्रेरणा हिन्दी जगत् को आगे ले जा सकी। सन् १९०० तक उनकी आकांक्षाओं की परम्परा हिन्दी में स्पष्ट रूप में दिखाई पड़ती है। परन्तु युग की परिस्थितियों के अनुसार बदलते हुए मानों को लेकर आगे बढ़ने वाले साहित्य-सेवियों की आवश्यकता थी। ठीक ऐसे समय पर आचार्य द्विवेदीजी एक युग की प्रतिभा लेकर हिन्दी संसार में आये। सन् १९०३ में आचार्यजी ने 'सरस्वती' पत्रिका की बागडोर अपने हाथ में ली। उनका 'सरस्वती' पत्रिका का सम्पादक होना, हिन्दी भाषा और साहित्य की दृष्टि से हिन्दी के लिए एक शुभ तथा महान् आशीर्वाद बन गया। द्विवेदीजी ने अपने इस स्थान पर बैठ कर हिन्दी के विविध साहित्यिक क्षेत्रों में काम करके अपनी विशेषताओं एवं साधना द्वारा हिन्दी भाषा तथा साहित्य को अलंकृत किया।

बीसवीं शताब्दी के पहले शतक से ही आचार्य द्विवेदीजी का साहित्यिक कार्य आरम्भ होता है। इस समय भाषा और साहित्य के बारे में केवल प्रयोग होते रहे। भाषा का कोई ठीक रूप लोगों के सामने नहीं था। लोग जैसे बोलते थे वैसे ही लिखा जाता था। सर्वत्र उच्चारण सम्मत भाषा का ही बोलबाला था। राजा शिवप्रसाद तथा राजा लक्ष्मणसिंह के द्वारा जो भी कार्य हुआ था उसको सुचारु रूप देने का कार्य भारतेन्दु द्वारा सक्रिय रूप में हो चुका था। तत्कालीन साहित्यकारों ने भी अपना सहयोग दिया था। बीसवीं शताब्दी के प्रथम शतक के आसपास पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय भी अपनी कृतियों के द्वारा भाषा को ठेठ हिन्दी का रूप देने का कार्य करते थे। परन्तु उनका यह कार्य केवल काव्य के क्षेत्र में अधिक काम दे सका। गद्य के क्षेत्र में वे इतने आगे नहीं बढ़े। हिन्दी की शक्ति समझकर वे अपने कार्य क्षेत्र में अग्रसर नहीं हुए थे। इसलिए वे अपने 'जीवन-कार्य' में इतने सफल नहीं हो सके।

आचार्य द्विवेदीजी के सामने अपने कार्य की निश्चित दिशा थी। वे हिन्दी की तत्कालीन प्रसिद्ध पत्रिका के सम्पादक के स्थान पर बैठे थे इसलिए तत्कालीन साहित्यिक धाराओं तथा कवियों से उनका सम्पर्क अधिक बढ़ा। किसी भी साहित्य के निर्माण में उसकी भाषा के रूप के महत्व को वे समझ गये। इसी कारण हिन्दी भाषा के शुद्धिकरण का प्रथम तथा सात्विक प्रयास उनके द्वारा हुआ। इन्शाअल्ला खाँ के समय से हिन्दी भाषा के बारे में प्रयोग होते गये हैं। इन सारी बातों का अध्ययन उनके द्वारा हुआ। भारतेन्दु के कार्य को उन्होंने ठीक समझा और भाषा के शुद्धिकरण का कार्य एक सफल शिक्षक की भाँति किया। सब दृष्टियों से भारतेन्दु का साहित्यिक कार्य अत्यन्त प्रशंसनीय है। परन्तु भारतेन्दु ने हिन्दी भाषा को ठीक करने में अपनी सारी शक्ति नहीं खर्च की। उनके सामने तत्कालीन देश की अनेक समस्याएँ थीं। वे राष्ट्र का उत्थान केवल साहित्यिक दृष्टि से नहीं करना चाहते थे। उस समय की सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक परिस्थितियों के उत्थान की साकार कल्पना उनकी रचनाओं में मिलती है। वे भाषा की उन्नति अपने देश की गुलामी नष्ट करने के लिए करने में व्यस्त थे। इसलिए उन्होंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी रचनाओं द्वारा देश की समस्याओं का सुन्दर चित्र लोगों के सामने रखा। इस प्रकार के सारे कार्य के लिए उन्हें बड़ी आयु की आवश्यकता थी। परन्तु हिन्दी के दुर्दैव के कारण उन्हें बहुत जल्दी से इस संसार से जाना पड़ा। वे हिन्दी भाषा के बारे में बहुत कुछ नहीं कर सके। हिन्दी की समस्याएँ वैसे ही पड़ी रहीं।

आचार्य द्विवेदीजी तपस्या तथा साधना के व्यक्ति थे। उन्होंने भारतेन्दुकाल की पृष्ठभूमि का अध्ययन कर अपने कार्य की दिशा निश्चित की। उन्होंने अपनी प्रतिभा तथा शक्ति का उपयोग हिन्दी के उत्थान के लिए ही करने का निश्चय किया। उन्होंने तत्कालीन नये और पुराने लेखकों एवं कवियों का ध्यान भाषा के शुद्धिकरण के प्रति आकर्षित किया। साधारण पाठक की योग्यता का विचार कर भाषा का भी रूप निर्धारित किया। उस समय भाषा के इस शुद्धि के कार्य का विरोध कुछ लेखकों के द्वारा हुआ। परन्तु द्विवेदीजी ने इस विरोध को कम महत्व देकर जन-साधारण की दृष्टि से मुहावरेदार तथा मिश्रित भाषा का प्रयोग अपनी रचनाओं के द्वारा भी पाठकों के सामने उपस्थित किया।

द्विवेदीजी केवल भाषा के रूप से सन्तोष नहीं पा सके। उनके सामने हिन्दी के नये लेखक और कवि थे। उनका मार्ग-प्रदर्शन करके हिन्दी में सरस तथा उपयुक्त साहित्य के निर्माण करने में उनका बड़ा हाथ रहा। द्विवेदीजी ने नये रचनाकारों की अनेक कृतियों को 'सरस्वती' में प्रकाशित कर साहित्य के निर्माण के लिए उत्साह का वातावरण तैयार किया। इसके लिए उन्होंने अनेक साहित्यिक तथा समीक्षात्मक निबन्ध लिखकर तत्कालीन साहित्य की विविध-गतियों तथा समस्याओं की ओर लेखकों और पाठकों का ध्यान आकर्षित किया। इसी कारण उनका कार्य हिन्दी साहित्य के निर्माण की दृष्टि से भी सफल बना। हिन्दी गद्य की दृष्टि से उनका कार्य महत्व का है। परन्तु हिन्दी नाटकों और उपन्यासों की प्रगति को गति देने का कार्य उनसे नहीं हो सका। निबन्ध, कहानी और आलोचना के क्षेत्र में वे आगे बढ़े। इस दृष्टि से उनका क्षेत्र कुछ सीमित-सा लगता है। परन्तु साहित्य के विविध स्तर के लेखकों को प्रोत्साहन देकर अपनी रचनाओं के द्वारा जिस साहित्य के आदर्श के प्रति संकेत उनके द्वारा दिया गया वह हिन्दी भाषा और हिन्दी साहित्य की दृष्टि से मौलिक कार्य है। इसी के आधार पर ही द्विवेदीजी के हिन्दी साहित्य के स्थान एवं कार्य-पद्धति की मीमाँसा की जा सकती है।

—लिंगराज कॉलेज, बेलगांव

(पृष्ठ ८६ का शेषांश)

ही बात को बार-बार दुहराते हुए पाते हैं। बाबू श्यामसुन्दरदासजी की शैली उसी का विकसित स्वरूप है। द्विवेदीजी की सभी कृतियों में उनकी शैली की प्रामाणिकता और प्राञ्जलता सर्वत्र मिलेगी।

अन्त में द्विवेदीजी का साहित्य में स्थान-निर्णय करते समय अनायास ही डाक्टर जॉन्सन का स्मरण हो आता है। दोनों के व्यक्तित्व और साहित्य-श्रम में कुछ विशेष समानताएँ हैं। हमारे आचार्य ने डाक्टर जॉनसन की भांति साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों में सफलता अथवा असफलतापूर्वक पदन्यास किया। उनकी ही भाँति वे अपने समय के साहित्य-नियन्ता रहे। कविता के क्षेत्र में एक उपार्जित भावुकता (जो हृदय की अपेक्षा मस्तिष्क का ही प्रसाद अधिक थी) दोनों में समान रूप से मिलती है। साहित्य के नियामक के रूप में दोनों ने एक-सा कार्य किया—भाषा की शुद्धि और उच्छृङ्खलताओं का नियन्त्रण, और दोनों की सफलता का रहस्य भी अतर्क्य, आत्म-विश्वास और निष्कपट मत-प्रदर्शन था। परन्तु एक बात है, डाक्टर जॉनसन की प्रतिभा का गाम्भीर्य, उसकी गहनता और सघनता द्विवेदीजी में कहां—और साथ ही, द्विवेदीजी की प्रकृति की सरलता, साहित्यिक अहम्मन्यता (Literary snobbary) के आदर्श जॉन्सन में कहाँ ?

—साहित्य-सन्देश, अप्रैल १९३९ से।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसज्ञ-रञ्जन

श्री पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश'

द्विवेदीजी का जीवन साहित्य-सेवा की अखण्ड तपस्या-वृत्ति से परिव्याप्त था। जिस समय वे 'सरस्वती' का सम्पादन करते थे, उस समय उनका ध्यान 'सरस्वती' को चित्ताकर्षक बनाने में उतना नहीं रहता, जितना उसके ठोस लेखों, गम्भीर टिप्पणियों और व्यंग्य-युक्त चुटकुलों से हिन्दी के लेखकों, कवियों, समालोचकों और अनुवादकों का मार्ग-निर्देश करना। द्विवेदीजी ने जहाँ कहीं कोई अंग्रेजी का अखबार देखा प्रान्तीय भाषाओं—बँगला, मराठी, गुजराती के पत्रों को पढ़ा और उनमें अपनी भाषा से अधिक महत्व की बात देखी, वहीं उनका हृदय तिलमिला उठता था। वे अपने हृदय की वेदना को लेखों और सम्पादकीय टिप्पणियों द्वारा प्रकट करते थे। वे हिन्दी को प्रान्तीय भाषाओं से कहीं अधिक समृद्धिशालिनी देखना चाहते थे। यही भावना, यही पुकार उनके लेखों में हमें सर्वत्र मिलती है।

'रसज्ञ-रञ्जन' आचार्य के नौ सर्वोत्कृष्ट साहित्यिक लेखों का संग्रह है। इन लेखों का श्रेणी-विभाजन करने की आवश्यकता इसलिए नहीं प्रतीत होती है कि यह सब लेख अपना विशेष महत्व रखते हैं और उनके मूल में एक ही धारा है।

इन लेखों में सबसे पहला लेख 'कवि-कर्त्तव्य' नाम का है। इस लेख में लेखक ने कवियों के कर्तव्य के ऊपर प्रकाश डाला है। कवि को किस प्रकार की भाषा लिखनी चाहिए, छन्दों का कविता में क्या महत्व है, कविता का विषय किस प्रकार का होना चाहिए, कविता में अर्थ स्पष्टीकरण की क्यों आवश्यकता है—आदि प्रश्नों की व्याख्या इस लेख में इतनी उत्तमता से की गई है कि वह पढ़कर पाठक का हृदय आनन्द के सागर में निमग्न हो जाता है। छन्द का विवेचन करते हुए लिखा गया है कि हिन्दी में 'पादान्त में अनुप्रासहीन छन्द लिखे जाने की बड़ी आवश्यकता है।' यह बात पुरानी है किन्तु उनके इस कथन का परिणाम 'प्रिय-प्रवास' की रचना है। अब भी अनूपजी का 'सिद्धार्थ' अनुप्रास-हीन संस्कृत वर्णवृत्तों में सफल काव्य लिखा गया है।

छन्द की भाँति भाषा को भी वे सरल और बोधगम्य तथा व्याकरण के नियमों से युक्त रखने के बड़े पक्षपाती थे, यह बात इस लेख में हमें पूर्ण रूप से दिखाई देती है। कविता का विषय भी वे समाज और राष्ट्र की अवस्था के अनुकूल रखने के पक्ष में थे। उन्होंने स्वयं कहा है—'कविता का विषय मनोरञ्जक और उपदेशप्रद होना चाहिए।' क्योंकि न तो केवल मनोरञ्जन ही कविता है और न उपदेश ही। कविता तो आत्मिक और लोकोत्तरानन्द को देने वाली है। अतएव उसमें जब तक हृदय को गुदगुदाने और एक सत्य भेंट करने की सामर्थ्य नहीं होगी, तब तक वह कविता कविता नहीं कहला सकती।

लेखक की रचना परिस्थितियों की देन होती है। वह जब-जब अपने जीवन-व्यापी वातावरण से प्रभावित होता है, तब-तब विवश होकर अपने हृदगत उद्गारों को व्यक्त करने के लिए प्रस्तुत होता है। द्विवेदी जी का दूसरा लेख 'कवि बनने के सापेक्ष साधन' भी इसी कथन की पुष्टि करता है। जब द्विवेदीजी ने देखा कि हिन्दी में कवि बनने की प्रथा बहुत चल पड़ी है और कुछ न जानने वाला भी कवि बना जा रहा है, तो उन्होंने यह लेख लिखा और बताया कि कवि बनने के लिए किन-किन साधनों की आवश्यकता है। यद्यपि द्विवेदीजी ने स्वयं लिखा है कि प्रतिभा, जो ईश्वर की देन है – कवि के लिए सबसे अधिक आवश्यक वस्तु है, तथापि उन्होंने इस लेख में और भी कई साधन जिनसे कवि बना जा सकता है, लिखे हैं। आज हम इस लेख की बातों पर विश्वास न करें किन्तु जब यह लिखा गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगा उस समय इस लेख ने क्या काम किया होगा यह अब भी अनुमान किया जा सकता है। द्विवेदीजी ने कहा है "कविता करना अन्य लोग जैसा समझें, हमें तो दुस्साध्य जान पड़ता है। अज्ञता और अविवेक के कारण कुछ दिन हमने भी तुकबन्दी का अभ्यास किया था पर कुछ समझ आते ही हमने अपने को इस काम का अनधिकारी समझा। अतएव उस मार्ग से प्रायः जाना ही बन्द कर दिया।"

द्विवेदीजी के इस कथन से प्रकट होता है कि यह कवि न होने पर भी कवि बनने वालों को दृष्टि में रख कर लिखा गया हैं। इस लेख में प्रतिभा को कवि की सबसे बड़ी सहायिका माना है। शिक्षा भी जिसमें अध्ययन और अभ्यास को विशेष रूप से स्थान दिया गया है, अत्यन्त आवश्यक है। चमत्कार—कोई नई बात कहना और गुण-दोष ज्ञान तथा परिचय बढ़ाने की—जानकारी के विस्तृत होने की भी भारी आवश्यकता कवि बनने के लिए उन्होंने बताई है किन्तु वे तो इसी बात को बार-बार दुहराते हैं "जिसमें कविता करने का स्वाभाविक माद्दा होता है वही कविता कर सकता है।"

तीसरा लेख 'कवि और कविता' शीर्षक है। यह लेख ऊपर के दोनों लेखों की अपेक्षा अधिक गम्भीर है। यद्यपि इसमें भी कवि और कविता के ऊपर विश्लेषण किया गया है, तथापि यह विश्लेषण कुछ भारी और प्रभावोत्पादक है। इस लेख में द्विवेदीजी की प्रतिभा और अध्ययन दोनों का अद्‌भुत सम्मिश्रण है। कवि को युग निर्माता और राष्ट्र सञ्चालक स्वीकार करते हुए लेखक ने बताया है कि कवि को समाज और राष्ट्र की वर्त्तमान दशा को छोड़ कर या जैसी वह देखता है, उसके अतिरिक्त और किसी विषय पर कविता नहीं लिखनी चाहिए। इस बिषय में उन्होंने उर्दू, संस्कृत और अँग्रेजी साहित्य के बारे में भी कहीं-कहीं विचाग प्रकट किये हैं और बताया है कि कवि को प्रकृति का पूर्ण ज्ञान तथा भाषा और शब्द कोष पर सम्यक अधिकार रखने की आवम्यकता है। अच्छी कविता की सबसे बड़ी पहिचान आचार्य ने यह बताई है कि कविता सुनकर लोग यह कहें कि सच कहा है। और अच्छे कवि वह कहे जा सकते हैं, जिनकी कविता में सादगी, असलियत और जोश हो, तथा जिनकी कविता के लिये यह 'सच कहा है' की उक्ति निकले।

'कविता' शीर्षक चौथा लेख केवल कविता की प्रशंसा के लिए लिखा गया है। इसमें उन्होंने बताया है कि कवि को सहृदय होने की सब से बड़ी आवश्यकता है। यदि वह सहृदय नहीं होगा, तो जिस विषय का वह वर्णन करना चाहता है वह विषय उसके द्वारा ठीक ढङ्ग से वर्णन न हो सकेगा। कविता में सरसता भी तभी आती है, जब कवि के हृदय में रस हो। अर्थ-सौन्दर्य भी कविता का प्राण है। द्विवेदीजी अस्पष्टता के बड़े भारी विरोधी थे। उन्होंने कहा है कि आजकल के कवि बाह्याडम्बर की ओर विशेष ध्यान देते हैं, कविता की आत्मा की ओर कम। इसीलिए कविता में अस्पष्टता है और वह अधिक प्रभावोत्पादक नहीं हो पाती।

द्विवेदीजी रीतिकालीन कविता से—उस कविता से जिसमें नायिका-भेद का बाहुल्य है—बड़े सख्त नाराज थे। वे कहते थे कि यह हिन्दी की कविता के लिए कलङ्क की बात है। जब अन्य साहित्यों में इस प्रकार की कविता है ही नहीं या है तो बहुत कम, तो हमारे यहाँ इसके अधिक होने की क्या आवश्यकता है। 'नायिका भेद' नाम का लेख व्यङ्ग्यात्मक है। इसमें बड़ी मीठी चुटकी ली गई है। कहीं-कहीं इस लेख में वे बहुत गम्भीर हो गये हैं और इस प्रकार की पुस्तकों के लिए यहाँ तक कह बैठे हैं कि "हमारी स्वल्प बुद्धि में इस प्रकार की पुस्तकों का बनना शीघ्र ही बन्द हो जाना चाहिए, और यही नही, किन्तु आज तक जितनी पुस्तकें बनी हैं, उनका वितरण होना भी बन्द होजाना चाहिए।" वे किसी बात का विरोध कितने सुन्दर ढङ्ग से कर सकते थे, इस बात का यह लेख एक अच्छा नमूना है।

'हंस का नीर-क्षीर-विवेक' नामक लेख द्विवेदीजी की तर्क युक्त लेखन शैली का जीता जागता उदाहरण है। इस लेख में विभिन्न प्रकार की उक्तियों के द्वारा हंस के नीर-क्षीर-विवेक के ऊपर वैज्ञानिक दृष्टिकोण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से विचार किया गया है। इसमें द्विवेदीजी ने खोज और अध्ययन की मिश्रित चटनी द्वारा इस उक्ति की वास्तविकता सिद्ध करने की चेष्टा की है।

'हंस-सन्देश' और 'नल का दुस्तर दूत कार्य' नाम के दोनों लेखों में द्विवेदीजी की भावुकता और काव्य-मयी शैली देखने को मिलती है। भाषा और भावों के साथ कवि का पूर्ण तादात्म्य है। द्विवेदीजी ने भावुकता का सहारा लेकर कम ही लिखा है किन्तु यह दोनों उनकी इस प्रकार की शैली के बड़े हृदयग्राही नमूने हैं। उदाहरण के लिए एक स्थल, जहाँ इन्द्र की सभा में कामेश्वर शास्त्री ने दमयन्ती के रूप का वर्णन किया है और उस वर्णन को सुन कर अप्सराओं की जो दशा हुई है काफी होगा—

"दमयन्ती का नखशिख वर्णन सुन कर उनकी अजीब हालत हुई। वे एक दूसरे का मुँह ताकने लगीं। तिलोत्तमा का चेहरा काले तिल के समान काला पड़ गया। सुलोचना ने अपने लोचन बन्द कर लिए। सुमध्यमा अपनी सखियों के मध्य में छिप गई। मेनका का मन मलीन हो गया। कलावती अपनी कलाओं को भूल गई। सुविभ्रमा का विभ्रम भ्रम में पड़ गया। शशिप्रभा निष्प्रभ हो गई और चित्रलेखा चित्र के समान बैठी रह गई।"

एक लेख जिसने आधुनिक युग के प्रतिनिधि कवि श्री मैथिलीशरणजी गुप्त को साकेत लिखने के लिए उद्यत किया—'कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता' है। यह लेख अपने ढङ्ग का अनोखा है। इसमें जो माँग की गई है, वह कितनी नम्रता और करुणा से युक्त है, यह बिना पढ़े नहीं जाना जा सकता।

'रसज्ञ-रञ्जन' के लेखों का महत्व इसलिए अधिक है कि इसमें द्विवेदीजी की लगभग सभी प्रकार की शैलियों को हम देख सकते हैं। उनके कविता सम्बन्धी विचार—कविता विषयक सभी बातों पर पूर्णरूपेण प्रकाश डालते हैं। उनकी शैली विभिन्न स्थलों पर किस प्रकार बदलती चली जाती थी, यह बात भी हम इन लेखों पर एक दृष्टि-निक्षेप द्वारा जान सकते हैं। इसमें द्विवेदीजी का जीवन परिचय और टिप्पणियां भी हैं। हिन्दी-साहित्य के विषय में विशेषकर द्विवेदी-युग के चढ़ाव के समय सम्बन्धी लगभग सभी प्रवृत्तियों का ज्ञान इसके द्वारा हो सकता है। स्थान-स्थान पर द्विवेदीजी ने दिशा-निर्देश किया है और वे एक नेता की भाँति नेतृत्व करते हुए प्रतीत होते हैं। द्विवेदीजी के अन्य निबन्ध-संग्रहों में 'रसज्ञ-रञ्जन' का विशिष्ट स्थान है, इसीलिए उसकी यहाँ विशेष चर्चा की गई है।

—सा० सं०, अप्रैल १९३९ से।

द्विवेदीजी का सभा को महत्वपूर्ण दान—

काशी नागरी प्रचारिणी सभा को द्विवेदीजी का बहुमूल्य सहयोग भाँति-भाँति से प्राप्त हुआ है जिसके लिए सभा उनकी कृतज्ञ रहेगी। सभा को अपने विद्यावैभव और कार्य की सहायता देने के अतिरिक्त उन्होंने उसे अपनी कठिन कमाई की अमूल्य सम्पत्ति, सहस्रों पुस्तकों और 'द्विवेदी पदक' की निधि के रूप में प्रदान की है। परन्तु इस सबसे कहीं अधिक साहित्यिक महत्त्व की वस्तु, जिसके लिए सभा उनकी चिरऋणी रहेगी, उन लेखों की मूल प्रतियाँ हैं जो सरस्वती में छपे थे और जिसमें द्विवेदीजी के सुधार के सुवर्णाक्षर हैं जो अनोखी दीप्ति से चमक रहे हैं। ये वे लेख हैं जो हिन्दी की सम्पादन-कला और भाषा-शैली के विकास के इतिहास में स्मरणीय रहेंगे। हिन्दी के स्थायी कला-भवन में द्विवेदी-युग की यह धरोहर आदर्श रहेगी और परम आदरपूर्वक देखी जायगी। काशी विश्वविद्यालय को भी द्विवेदीजी ने कई सहस्र रुपये दिये हैं जो उनके समान श्रमजीवी पुरुष के आजीवन अर्जित धन का वृहदंश है। द्विवेदीजी के ये दान—वृद्धावस्था की लकड़ी का सहारा भी छोड़ देना—आत्मोत्सर्ग की सीढ़ियाँ हैं जिन्हें भविष्य की सन्तान को स्मरण रखना चाहिए।

—द्विवेदी अभिनन्दन-ग्रन्थ की प्रस्तावना से।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्विवेदी अभिनन्दन ग्रन्थ : एक सिंहावलोकन

श्री श्रीरञ्जन सूरिदेव

काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा द्वारा वि० संवत् १९९० (सन् १९३३ ई०) में प्रकाशित द्विवेदी-अभिनन्दन ग्रन्थ हिन्दी-साहित्य के इतिहास की उस समय की एक महत्वपूर्ण घटना मानी जाती है। आज से तीन दशक पूर्व हिन्दी की उपलब्धि की जो सीमा थी, उसमें द्विवेदी-अभिनन्दन-ग्रन्थ जैसी श्रमसाध्य कृति को हिन्दी का गौरव-ग्रन्थ माना जाना अस्वाभाविक नहीं। साथ ही, यह भी अस्वीकार करना सम्भव नहीं कि आज के सम्पादन और मुद्रण के क्षेत्र में जिस वैज्ञानिक रुचि-विकास की आनुदिवसीय अहमहमिका दीखती है, उसका श्री गणेश इस द्विवेदी-अभिनन्दन-ग्रन्थ में ही हुआ है। तेईस उत्कृष्ट युग-प्रतिनिधि चित्रों से चमत्कृत (चित्रों के विशद परिचय ग्रन्थ के अन्त में समाविष्ट हैं) ५८२ पृष्ठों का यह ग्रन्थ उत्तम मोटे एण्टिक कागज पर मुद्रित होने तथा मोटे कागज के चित्र फलकों के सन्नियोजित किये जाने के कारण महाकार हो गया है, जिसमें अभिनन्दनीय आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के तेजस्वी एवं भास्वर व्यक्तित्व के वैराट्य की अनुकूलता प्रतिबिम्बित सी लगती है, साथ ही इस ग्रन्थ के प्रत्येक पृष्ठ में अभिनन्दन की भक्तिमती श्रद्धा शब्दित सी प्रतीत होती है। सचमुच द्विवेदी युगोत्तर हिन्दी के साधक तपस्वियों के लिए सभा के द्वारा किया गया आचार्य द्विवेदी का यह महार्घ अभिनन्दन ईर्ष्य तो है ही उनके साधक जीवन को एक चुनौती भी है।

पं० श्री रामनारायण मिश्र (तत्कालीन सभापति काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा) की प्रकाशकीय भूमिका से यह स्पष्ट है कि प्रस्तुत द्विवेदी-अभिनन्दन ग्रन्थ के मूल प्रस्तावक पुण्यश्लोक स्व० आचार्य शिवपूजनसहाय जी थे और प्रमुख अध्वर्यु भी वे ही थे। इस सन्दर्भ में श्री मिश्रजी का यह कथन उल्लेख्य है—"श्रीशिवपूजन-सहायजी ने जो बीज बोया, उसे पल्लवित करने में उनका बड़ा हाथ रहा है। लेखों के सम्पादन में उन्होंने पूरी सहायता दी है और थोड़े समय के अन्दर ही जहाँ तक बन पड़ा है, उन्होंने प्रूफ भी सतर्कता और सतत परिश्रम से देखा है।" आचार्य शिवजी आचार्य द्विवेदी जी को अपना सम्पादन-गुरु मानते थे और यह अभिनन्दन ग्रन्थ गो-गुरु-देव-ब्राह्मण के परम भक्त आ० शिवजी के अपने उस गुरु के प्रति निश्छल भक्ति का निस्सन्देह साहित्येतिहासिक प्रतीक है। सभा धन्यवादार्ह है कि उसने एक साहित्यिक श्रमी के प्रस्ताव को रूपायित कर उसका सही अर्थ में आदर तो किया ही, हिन्दी-जगत् का भी महान् उपकार किया।

बाबू श्यामसुन्दरदास और रायकृष्णदास की सम्पादकीय प्रस्तावना पर्याप्त सूचनात्मक तथ्यों से पुष्ट है। यह प्रस्तावना तो वह वैतरणी है, जिसको बिना पार किये मूल विषय के स्वर्ग तक पहुँचने की सम्भावना ही नहीं है। अगर कहा जाय, तो हम इसे (प्रस्तावना को) द्विवेदी-काल का साहित्यिक परिपार्श्व कहेंगे। इसके अतिरिक्त द्विवेदीजी की हिन्दी-साहित्य को कौन-सी देन अधिक महत्व की है, इसकी भी विशद परिचारणा प्रस्तुत की गई है। प्रस्तावना में विद्वान सम्पादकों ने द्विवेदी-साहित्य और भाषा-शैली के संरक्षण और प्रसार की कतिपय प्रक्रियाएँ भी निर्दिष्ट की हैं, जिनकी व्यावहारिक सक्रियता आज अब अपेक्षित नहीं रह गई, क्योंकि आज का हिन्दी-युग जिस तेजी से गतिशील है, उस गति के सामने द्विवेदी-युग साहित्येतिहास का एक स्मरणीय अध्याय-मात्र रह गया है, जिसमें द्विवेदीजी अपने युग के साहित्यिक आदर्शवाद के जनक तथा सिद्धान्तवादी सम्पादक के रूप में चिरप्रतिष्ठित हैं। साथ ही, द्विवेदी-युग साहित्य के कर्मयोग का युग या हिन्दी का स्वर्णयुग है, इस मान्यता में भी किसी को विप्रतिपत्ति नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलोच्य अभिनन्दन-ग्रन्थ का मुख्य भाग एक सौ रचनाओं में निबद्ध है। इनमें सैंतीस कविताएँ हैं, शेष लेख। कविताओं में ऐसे कवियों की भी कृतियाँ हैं, जो आज हिन्दी काव्य-क्षेत्र के मौलिमुकुट माने जाते हैं। जैसे—श्री सियारामशरण गुप्त, श्रीमती तोरनदेवी शुक्ल 'लली', श्री मैथिलीशरण गुप्त, श्री हरिकृष्ण 'प्रेमी', पं० हरिशङ्कर शर्मा, श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', श्रीमती महादेवी वर्मा, श्री भगवतीचरण वर्मा, डा० रामकुमार वर्मा, ठाकुर गोपालशरणसिंह, श्री पद्मकान्त मालवीय, श्री रामनरेश त्रिपाठी, श्री बालकृष्ण राव, श्री पद्मनारायण आचार्य, श्री देवीदत्त शुक्ल, श्री शान्तिप्रिय द्विवेदी, श्री सोहनलाल द्विवेदी आदि। श्री सियारामशरण गुप्त की 'पूजन' शीर्षक कविता से ग्रन्थ का प्रारम्भ हुआ है और श्री मैथिलीशरण गुप्त की 'अन्त में' शीर्षक कविता से ग्रन्थ (मुख्य भाग) का अन्त।

उपर्युक्त तत्कालीन कवियों में कतिपय ऐसे हैं जो आज कविता क्षेत्र से अलग होकर गद्य के क्षेत्र में अपना प्रातिभ चमत्कार दिखला रहे हैं। अनेक उच्च से उच्चतर साहित्यकारों के सम्बन्ध में ऐसा देखा गया है कि प्रारम्भ में तो वे कवि के रूप में साहित्य-क्षेत्र में अवतीर्ण होते हैं; परन्तु बाद में उन्हें आलोचक, कथाकार या नाटककार के रूप में ही प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। कदाचित 'कवित्वं दुर्लभं लोके' यह उक्ति अपने पूरे अर्थ में सही है।

निस्सन्देह, इस ग्रन्थ का गद्य-पक्ष पद्य-पक्ष से अधिक सबल और शास्त्रीय है। यद्यपि कहा तो यह जाता है कि आज का युग गद्य का युग है; तथापि आज से तीन दशक पूर्व भी गद्य शैली में शिथिलता या भोंड़ापन नहीं परिलक्षित होता। कहना तो यही चाहिए कि गद्य का क्षेत्र बराबर तगड़ा हो रहा है और गद्य कवियों को बराबर चुनौती देता आया है—'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति।'

प्रस्तुत अभिनन्दन-ग्रन्थ के गद्यकारों में डॉ० भगवानदास (रस-मीमांसा), आचार्य विधुशेखर (संस्कृत का वैज्ञानिक अनुशीलन), विद्यामहोदधि श्री काशीप्रसाद जायसवाल (मुसलमानों के पहले की राजपूत चित्रणकला), श्री नलिनीमोहन सान्याल (सूरदास का काव्य और सिद्धान्त), श्री जयचन्द्र विद्यालङ्कार (भारतीय वाङ्मय के अमर रत्न), म० म० पं० गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी (पुरुषार्थ), श्री वासुदेवशरण अग्रवाल (अंगिरस अग्नि), पं० रामचन्द्र शुक्ल (साधारणीकरण और व्यक्ति वैचित्र्यवाद), श्री सत्यकेतु विद्यालङ्कार (कौटिल्य अर्थशास्त्र में राज्य द्वारा समाज का नियन्त्रण), प्रिंसिपल गोपीनाथ कविराज (कुण्डलिनी-तत्त्व), श्री रामानन्द चट्टोपाध्याय (भावी भारत के पत्रकार), डा० सुनीतिकुमार चट्टोपाध्याय (हिन्दुस्तानी का सबसे प्राचीन व्याकरण), प्रो० महेशप्रसाद मौलवी आलिम-फाजिल (प्राचीन अरबी कविता), म० म० रायबहादुर गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझा (भूमि का 'पादावर्त्त' नामक प्राचीन माप), प्रो. रामेश्वर गौरीशङ्कर ओझा (महिम्न स्तोत्र की प्राचीनता और उसका मूलपाठ), सेठ कन्हैयालाल पोद्दार (अलङ्कार), डा० मङ्गलदेव शास्त्री (मनुस्मृति के सम्बन्ध में कुछ नये अनुसन्धान), प्रो० विश्वनाथ प्रसाद (नालन्दा विश्वविद्यालय), प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालङ्कार (मनु तथा इन्द्र), श्री रामचन्द्र वर्मा (अप्रौढ़ हिन्दी), श्री शङ्करदेव विद्यालङ्कार (विक्रमशिला विद्यापीठ), श्री पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल (पद्मावत की कहानी और जायसी का अध्यात्मवाद), श्री कृष्णदेवप्रसाद गौड़ (हास्य का मनोविज्ञान), प्रो० धीरेन्द्र वर्मा (हिन्दी वर्णों का प्रयोग), श्री व्यौहार राजेन्द्रसिंह (गो० तुलसीदास और समर्थ रामदास), (म० म०) श्री विश्वेश्वरनाथ रेऊ (मारवाड़ नरेश महाराज रामसिंहजी और राठौर वीरों की अद्‌भुत उदारता), आयुर्वेद पञ्चानन पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल (भारतीय चिकित्सा शास्त्र की विशेषता—नाड़ी परीक्षा), श्री गोपाल नेवटिया (भारतीय कला), पं० सूर्यनारायण व्यास (निरदी देश) आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

इन उपर्युक्त लेखकों के अपने-अपने विषय के शोध महत्त्वपूर्ण आधिकारिक लेख हैं। यहाँ स्मरणीय है कि इन स्वनामधन्य लेखकों ने प्रारम्भ से आज तक एक समान गति से चलकर लेख के क्षेत्र में आदर और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महत्त्व का स्थान प्राप्त किया है। लेख-जगत् में न जाने कितने तूफान और आँधियाँ आईं, किन्तु ये निरन्तर अचलचरण बने रहे। ये उन पैर उखड़ जाने वाले साहित्यिकों में नहीं हैं, जिनकी साहित्य-साधना की नींव व्यर्थ बकवास की बालू पर डाली जाती है। एक खूबी यह भी कि इन लोगों ने जिस विषय में प्रवेश किया, उसी की छानबीन में आज तक लगे हुए हैं। इनकी बराबर डाल बदल देने की प्रवृत्ति कभी नहीं रही। इनमें जो दिवंगत हैं, वे भी अमर हैं और जो आज जीवित हैं, वे साहित्य की साधना के द्वारा अपनी अमरता के लिए अहोरात्र आलीन हैं।

'श्रद्धाञ्जलि'-प्रकरण में केवल आचार्य द्विवेदीजी से सम्बद्ध रचनाएँ हैं। इनमें महात्मा गांधी का सन्देश तो है ही साथ ही डा० थियोडोर वान विन्टरस्टीन, नूट हामज़ून ग्रिम्सटैंड, सर जार्ज ग्रियर्सन, श्री एल० डी० वोमन, डा० वन विन्टरस्टीन जैसे विदेशी शोध-विद्वानों की भी शुभ कामनाएँ हैं। लेखों में चार अँगरेजी के भी लेख हैं, जिन्हें रेव० एडविन ग्रीव्स, प्रो० पी० शेषाद्रि, प्रो० ए० वारान्निकोव तथा श्री सन्त निहालसिंह ने लिखा है। आचार्य द्विवेदी से सम्बद्ध रचनाएँ (गद्य और पद्य) उनकी व्यक्तिगत और कृतिगत विशेषताओं को उरेहने वाली हैं, जिनसे आ० द्विवेदीजी का व्यक्तित्व-व्यापकता स्पष्ट है।

चित्रों में आचार्य द्विवेदीजी के पारिवारिक और वैयक्तिक चित्र सम्मिलित किये गये हैं। इसके अतिरिक्त अनेक उत्तरकालीन तथा द्विवेदीकालीन साहित्यकारों के भी दुर्लभ चित्र हैं, जिन्हें आज हिन्दी के महापुरुष के नाम से अभिहित किया जाता है। कुल मिलाकर यह अभिनन्दन-ग्रन्थ हिन्दी-साहित्य की एक अमूल्य निधि है, जिस पर हिन्दी-संसार गर्वोद्ग्रीव हो सकता है—होता है। हिन्दी-साहित्य के इतिहास लिखने वालों या शोध-समीक्षकों के लिए तो यह ग्रन्थ अनिवार्य और अनुपेक्षणीय है। हम इस प्रकार की, एक साहित्यकार के लिए साहित्यिक अर्चना के कायल हैं!

—बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना–४

सिद्धान्तवादी सम्पादक द्विवेदीजी—

द्विवेदीजी सिद्धान्तवादी सम्पादक थे। यद्यपि लोक-रुचि और लोकमत का उन्हें ध्यान था, परन्तु अपने सिद्धान्तों का अधिक ध्यान था वे सरस्वती के लेखकों का सुचारु संघटन कर चुके थे और उनकी सहायता से अपने मनोनुकूल विषयों की विवृत्ति करते रहते थे। संस्कृत-साहित्य, प्राचीन अनुसन्धान, इतिहास, जीवन-चरित, यात्रा-विवरण, नवीन अभ्युत्थान का परिचय, हिन्दी का प्रचार आदि विषयों से 'सरस्वती' का प्रायः प्रत्येक अङ्क विभूषित रहता था। प्रचलित साहित्य और सामयिक पुस्तकों पर भी टिप्पणियाँ रहती थीं। यदि हम इस कसौटी पर सरस्वती की समीक्षा करें कि उसके द्वारा अँगरेजी अथवा दूसरी प्रान्तीय भाषाएँ न जानने वाले व्यक्ति कहाँ तक अपने देशवासी भिन्न भाषा-भाषियों की शिक्षा-दीक्षा की समता कर सकते थे और कहाँ तक संसार की गति से परिचित हो सकते थे—यदि हम यह पता लगा लें कि जो पाठक सरस्वती की ही सहायता से अपनी विद्या-बुद्धि और मतिगति निर्माण करते थे, वे देश की पठित जनता के बीच किस रूप में दिखाई देते थे—तो हम उस पत्रिका का बहुत कुछ यथार्थ मूल्य समझ लें। हम बहुत प्रसन्नता के साथ देखते हैं कि 'सरस्वती' की सामग्री इस विचार से यथेष्ट मात्रा में उन्नत थी और उसके पाठकों को (सम्भवतः कविता को छोड़कर) किसी विषय में संकुचित होने का कुछ भी अवसर नहीं था। दूसरे शब्दों में कहा जाय तो सरस्वती अपने समय की हिन्दी जनता की विद्याबुद्धि की माप रेखा थी और वह अपने देश की अन्य भाषाओं की पत्रिकाओं से हीन नहीं थी। परिचयात्मक सामग्री देने में तो द्विवेदीजी की कुशलता अद्वितीय थी। यह उनके उत्कट अध्ययन और चयन-शक्ति का द्योतन करता है कि वे प्रतिमास मराठी, गुजराती, उर्दू, बँगला और अँगरेजी पत्रों की उल्लेखनीय टिप्पणियाँ सरस्वती में उद्धृत करते थे। (द्विवेदी अभिनन्दन-ग्रन्थ की प्रस्तावना से।)

—श्यामसुन्दरदास

—रायकृष्णदास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरों की दृष्टि में—द्विवेदी

द्विवेदीजी के निधन पर कुछ साहित्य-सेवियों के स्मरणीय सूत्र

द्विवेदीजी ने कठोर परिश्रम करके हिन्दी-गद्य-शैली में एक निश्चित शैली का स्थापन किया और नवीन शैली की कविताओं का भी प्रचार किया।

—पुरुषोत्तमदास टण्डन

द्विवेदीजी ने साहित्य ही नहीं रचा, साहित्यिकों का भी निर्माण किया और राष्ट्र-जीवन बनाने में भी उनका हाथ है। वह सेवक थे, कार्यकर्त्ता थे, विचारक थे।

—जैनेन्द्रकुमार

हिन्दी-संसार में द्विवेदीजी अपने समय के सबसे से बड़े व्यक्ति थे और बीसवीं शताब्दी के प्रथम भाग में हिन्दी-साहित्य का इतिहास—जो द्विवेदी-युग कहलाता है—उनकी सफलताओं का इतिहास है।

—गोपालशरणसिंह

स्वर्गीय द्विवेदीजी हिन्दी वाङ्मयजगत् के एक युग-प्रवर्तक थे। कुछ लिख-पढ़ लेना तो बहुत लोग जानते हैं, परन्तु द्विवेदीजी उन इने-गिने लोगों में थे जो साहित्य ही नहीं साहित्यिकों की सृष्टि करने की क्षमता रखते हैं।

—सम्पूर्णानन्द

पण्डित श्री महावीरप्रसादजी द्विवेदी क्या न थे? वे विनोद-शील व्यंग्य-चित्रकार थे (देखो सन् १९०३ की 'सरस्वती' में 'साहित्य-समाचार'), सुन्दर गद्य-लेखक थे, उत्तम पद्य-निर्माता थे, स्पष्टवादी समालोचक थे, सफल सम्पादक थे और थे कलाकोविद सहृदय पुरुष।

—गिरधर शर्मा

हिन्दी-साहित्य के इतिहास में आचार्य पण्डित महावीरप्रसादजी द्विवेदी का स्थान बहुत ऊँचा है। वे हिन्दी-भाषा के महारथी थे। उन्होंने अपने अथक परिश्रम से हिन्दी-भाषा की ग्राहिका-शक्ति को बढ़ा कर उसे विचारों के प्रकट करने का सरल माध्यम बनाया। हिन्दी-गद्य का वर्तमान रूप उन्हीं की लगन और अध्यवसाय का फल है।

—गोविन्दबल्लभ पन्त

आज से २१ वर्ष पहले, जिस सत्पुरुष को देखा था, वह एक चलता-फिरता पुनीत अश्वत्थ वृक्ष था, जिसकी डाल-डाल पर हिन्दी के प्रभात के कई मुखर द्विजवृन्द आश्रय पाते रहे और जिसने अपनी सन्निष्ठा से सात्विक साहित्य-सेवा के मार्ग को हमारे साहित्य में प्रशस्त किया।

—बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

मेरी उनकी दृष्टि मिली। दृष्टि मिलते ही ऐसा प्रतीत हुआ, मानो किसी ने सिर पर हाथ रख कर नीचे दाब दिया। मुझ पर उनका रोब छा गया। विशाल उन्नत ललाट की दमक, लम्बे बालों की घनी भौंहें, अन्तर्तल को छेदने वाले नेत्र, घनी मूँछें, गम्भीर मुद्रा—इन सब का ऐसा प्रभाव पड़ा कि मेरी आँखों के सामने से बण्डी और ऊँची धोती लुप्त हो गई—केवल उनका रोबीला मुखमण्डल आँखों के सामने रह गया। उसे देख कर मैंने समझा कि मैं किसी बहुत बड़े आदमी के सामने बैठा हूँ।

—विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक

उन्होंने अपने गद्य और पद्यात्मक लेखों से हिन्दी भाषा का रूप परिष्कृत कर दिया, 'सरस्वती' के सम्पादक की हैसियत से उन्होंने कितने ही युवकों को हिन्दी में लेख लिखने को प्रोत्साहित कर लेखक बना दिया, अपनी समालोचनाओं से हिन्दी को उच्च रूप देने में आपने बड़ी सहायता दी और व्यक्तिगत भावना की अवहेलना कर अपने युग में हिन्दी-साहित्य को दल-बन्दियों से दूर रखा। इसमें अतिशयोक्ति नहीं कि हिन्दी को आधुनिक दशा में लाने का श्रेय अन्य किसी भी व्यक्ति की अपेक्षा द्विवेदीजी को अधिक है और वर्तमान समय के लेखकों में कोई ऐसा नहीं है, जो किसी न किसी प्रकार से द्विवेदीजी से प्रभावित न हुआ हो।

—अमरनाथ झा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह सच है कि उन्होंने कलम पकड़ कर हमें हिन्दी का लिखना सिखाया है और 'ठोक पीट कर वैद्यराज' बनाया है। —देवीदत्त शुक्ल

दूर से तो सिर्फ उनका 'उग्र स्वभाव' ही दिखाई देता था। पर वे क्या थे; और क्या नहीं थे, कितने गम्भीर थे, थाह पाना मुश्किल है। नमक की पुतली समुद्र की थाह लेने गई, घुलकर उसी में रह गई ! —लक्ष्मीधर वाजपेयी

अपने इन चरितनायक के जीवन के कार्य्यकलाप पर विचार करके हम समुचित रूप से यह नहीं निर्णय कर पाते कि वे भाव-यज्ञ के ऋत्विक् थे या कर्मशाला के शिल्पी। उनका जीवन ही इस प्रकार का सामञ्जस्य-पूर्ण था। —नयनचन्द्र मुखोपाध्याय

द्विवेदीजी का ऋणी मैं भी हूँ····द्विवेदीजी ने हिन्दी भाषा और साहित्य की जो सेवा की है, वह साहित्य के इतिहास में अजर और अमर है। उन्होंने सैकड़ों लेखक तैयार कर दिए, जिनसे सहस्रबाहु होकर वे हिन्दी को इस उन्नत दशा में पहुँचाने में समर्थ हुए। —रामनरेश त्रिपाठी

द्विवेदीजी का महत्त्व उनके लेखों में नहीं है। उनका महत्त्व विशेषकर इसी बात में है कि उन्होंने भाषा को परिमार्जित और सुन्दर रूप देने का सफलता पूर्वक उद्योग किया। कहें तो कह सकते हैं कि वे वर्त्तमान हिन्दी-भाषा के निर्माता के नाम से प्रसिद्ध रहेंगे। —श्यामसुन्दरदास

द्विवेदीजी सचमुच आधुनिक हिन्दी-साहित्य के महावीर थे। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र भले ही वर्तमान हिन्दी के जनक हों, किन्तु टकसाली हिन्दी का, जिसका कि आज सब जगह प्रचलन है, स्वरूप का निर्णय और प्रचार करने में महावीरप्रसादजी का बहुत बड़ा हिस्सा है। —काका कालेलकर

हिन्दी लिखने का जो मैंने साहस किया सो भी उन्हीं के प्रोत्साहन से। साहित्य-परीक्षक यथार्थ में ऐसा ही होना चाहिए—'शत्रोरपि गुणा वाच्या दोषा वाच्या गुरोरपि।' —गङ्गानाथ झा

कवि तो बनाये नहीं जाते, परन्तु कोपभाजन होने योग्य होकर भी मैं पूज्य द्विवेदीजी महाराज का अनुग्रह-भाजन हो गया। इससे बढ़ कर किसी का क्या सौभाग्य होगा ? —मैथिलीशरण गुप्त।

द्विवेदीजी ने हिन्दी-भाषा और साहित्य को जो गौरव प्रदान किया है वह कभी घटने का नहीं, चाहे कोई भाषा और भावों के साथ कितनी हीं अशिष्टता क्यों न करे ? अनेक लेखक और कवि भी अपने उत्कर्ष के लिए द्विवेदीजी के ऋणी हैं। यदि मैं अपने विषय में कुछ कहने का साहस करूँ तो मैं कवि के शब्दों में यही कहूँगा कि—

वह चाहे बनावें, वह चाहे बिगाड़ें,
हम आखिर उन्हीं के बनाये हुए हैं।

—कामताप्रसाद गुरु

मैं उनके निधन पर रोता हूँ इसलिए नहीं कि वे हिन्दी-जगत के आचार्य थे, इसलिए भी नहीं कि वे एक अद्वितीय सम्पादक थे, किन्तु इसलिए कि वे मेरे आध्यात्मिक गुरु थे। उन्होंने मुझे मातृभाषा की ओर आकृष्ट किया। उन्होंने मुझे बताया कि राष्ट्रीयता, जातीय जीवन के उत्थान और पतन के साथ-साथ भाषा और साहित्य का कितना अटूट सम्बन्ध है। उन्होंने ही मुझे हिन्दी लिखने के लिए प्रोत्साहन दिया। हिन्दी-सेवा की दीक्षा भी उन्हीं के मुखारविन्द से मुझे मिली। उनकी कृपाओं की आज मैं याद कर-करके रोता हूँ। परम आचार्य ! तुम्हारे ऋण से मेरे लिए उऋण होना असम्भव है। —बैंकटेशनारायण तिवारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा सुझाव

आप अपने पुस्तकालय के लिये पुस्तकें खरीदते ही हैं। समय कम होने के कारण आपको पुस्तक विक्रेता पर अधिक निर्भर रहना पड़ता है। अथवा लाभ के लालच में अधिकतर पुस्तक-विक्रेता वही साहित्य बेचने का प्रयत्न करते हैं जिस पर कि अधिक लाभ हो चाहे वह निकृष्ट साहित्य हो या अच्छा। इस प्रकार सत्साहित के निर्माण और विकास में बाधा होती है। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर मण्डल ने अच्छे और सृजनात्मक साहित्य की व्यवस्था की है। मण्डल केवल थोड़ा-सा व्यवस्था खर्च रखकर अधिक पुस्तकें कम-से-कम मूल्य में वितरण करता है।

इसलिये आप से अनुरोध है कि आप राष्ट्र-भाषा प्रचार मण्डल द्वारा अपने पुस्तकालय आदि के लिए नई से नई पुस्तकें खरीद कर अपने धन का सदुपयोग करें और अच्छे साहित्य से अपने पुस्तकालय की शोभा बढ़ाने के साथ-साथ राष्ट्र-भाषा प्रसार में अपना अमूल्य सहयोग दान कर यश के भागी बनें।

नोट: —विशेष जानकारी के लिये आज ही लिखिये—

राष्ट्रभाषा प्रचार मण्डल,

१८९२, चाँदनी चौक, दिल्ली-६

नेहरू :

राजनीतिक जीवनचरित

मू० ले० माइकेल ब्रीचर

अनु० डॉ० हरिवंशराय बच्चन

हमारे भूतपूर्व प्रधान मन्त्री तथा राष्ट्र-नायक श्री पं० जवाहरलाल नेहरू के स्वर्गारोहण के बाद लोग इनके विषय में अधिक-से-अधिक जानना चाहते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने राजनीतिक सन्दर्भ को बहाना बनाकर पं० नेहरू के समूचे व्यक्तित्व को चित्रित करने का प्रयत्न किया है। वास्तव में यह पुस्तक नेहरू का एक सर्वाङ्गपूर्ण जीवनचरित उपस्थित करती है। पिछले ४० वर्षों से नेहरू का जीवन और भारत का इतिहास एक-दूसरे से इतने संपृक्त थे कि किसी एक की विवेचना बिना दूसरे की विवेचना के नहीं हो सकती थी। इस कारण प्रस्तुत पुस्तक स्वर्गीय पं० नेहरू का जीवनचरित होने के साथ ही पिछले ५० वर्षों का इतिहास भी है। जैसे अब की पीढ़ी को नेहरू और नेहरू के समय-संसार को समझने में सहायक सिद्ध होगी।

माइकेल ब्रीचर लिखित अँग्रेजी पुस्तक 'नेहरू—ए पोलिटिकल बायोग्राफी' के संक्षिप्त संस्करण का यह हिन्दी रूपान्तर हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ कवि तथा लेखक डॉ० हरिवंशराय बच्चन ने मूल लेखक के भाव-विचारों की रक्षा करते हुए, सुबोध-सुपाठ्य बनाया है।

सजिल्द मूल्य ६ रु०

मोतीलाल बनारसीदास

बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली ६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संग्रहणीय एवं उपयोगी प्रकाशन

आलोचनात्मक

१. तुलसीदास और उनके काव्य
डॉ० रामदत्त भारद्वाज १३.५०

२. काव्य-शास्त्र की रूप-रेखा
डॉ० रामदत्त भारद्वाज ७.००

३. जैनेन्द्र : व्यक्तित्व और कृतित्व
सत्यप्रकाश मिलिन्द ७.००

४. साहित्य-समालोचन
सत्यप्रकाश मिलिन्द २.५०

५. हिन्दी-साहित्य-परिचय
तनसुखराम गुप्त १.१०

निबन्ध

६. संस्कृत निबन्ध मणिमाला
प्रो० शिवप्रसाद ९.००

७. निबन्ध-प्रभाकर
डॉ० भोलानाथ तिवारी ६.५०

८. निबन्ध चन्द्रिका
डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त ४.००

९. गद्यांजलि बाँकेबिहारी भटनागर ४.००

१०. निबन्ध सुषमा डॉ० मनमोहन गौतम ३.००

११. प्रबन्ध पराग तनसुखराम गुप्त १.४०

उपन्यास तथा कहानी-संग्रह

१२. समझौता श्रीराम शर्मा 'राम' ५.००

१३. मधुबन राकेश वत्स ३.५०

१४. व्यामोह श्याम विमल २.५०

१५. अधूरे सपन
भगवती स्वरूप उपाध्याय २.५०

१६. छोटे जीजाजी
भगवतीस्वरूप उपाध्याय १.००

१७. दिन बीत गया तनसुखराम गुप्त १.००

१८. भगोड़े युद्ध-बन्दियों की सच्ची कहानियाँ
वरदाचारी पंडित ३.००

१९. गुप्तचरों की सच्ची कहानियां
वरदाचारी पंडित ३.००

२० दो हाथ (कहानी संग्रह) इन्दुबाली २.५०

जीवनी और संस्मरण

२१. जीवन के कुछ क्षणों में
तनसुखराम गुप्त १.५०

२२. भारतीय महापुरुष
तनसुखराम गुप्त ३.००

२३. महापुरुष चरितावली (संस्कृत)
प्रो० शिवप्रसाद २.५०

सूर्य-प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली ६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संग्रहणीय अभिनव शोध-ग्रन्थ

नवीन प्रकाशन १९६४

हिन्दी उपन्यास की शिल्पविधि का विकास :	डा० (श्रीमती) ओम शुक्ल	१६.००
अज्ञेय का काव्य :	सुश्री सुमन झा	१०.००
हिन्दी की नई कविता :	श्री वी० नारायण कुट्टी	१०.००
प्राकृत और अपभ्रंश : डिंगल-साहित्य पर प्रभाव :	डा० गोवर्धन शर्मा	१६.००
हिन्दी-साहित्य में निबन्ध का विकास :	डा० ओंकारनाथ शर्मा	१६.००
कविवर बिहारीलाल और उनका युग :	डा० रणधीर सिन्हा	१६.००
प्रयोगवाद :	श्री नरेन्द्रदेव वर्मा	१२.५०

अन्य प्रकाशन १९६३

आधुनिक हिन्दी-कविता में अलंकार-विधान :	डा० जगदीशनारायण त्रिपाठी	१५.००
नया हिन्दी काव्य :	डा० शिवकुमार मिश्र	१६.००
हिन्दी-उपन्यास : समाजशास्त्रीय विवेचन :	डा० चण्डीप्रसाद जोशी	१६.००
तुलसीदास : जीवनी और विचारधारा :	डा० राजाराम रस्तोगी	१६.००
निराला का परवर्ती काव्य :	श्री रमेशचन्द्र मेहरा	१०.००
छायावादी काव्य : स्वरूप और व्याख्या :	श्री राजेश्वरदयाल सक्सेना	१०.००
हिन्दी की सैद्धान्तिक समीक्षा :	डा० रामाधार शर्मा	१६.००
रामचरितमानस का काव्यशास्त्रीय अनुशीलन :	डा० राजकुमार पाण्डेय	१६.००

अनुसन्धान प्रकाशन,

(शोध ग्रन्थों के प्रकाशक)

८७।२५१, आचार्य नगर, कानपुर-३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे निजी प्रकाशन

जीवनोपयोगी

सफलता की कुञ्जी	स्वामी रामतीर्थ	१.००
आगे बढ़ो	स्वेट मार्डन	१.५०
नैतिक जीवन	रघुनाथप्रसाद पाठक	२.५०
देशभक्त बच्चे	,,	१.५०
हम क्या चाहते हैं	स्वामी विवेकानन्द	१.५०
विश्वशान्ति का सन्देश	,,	२.५०
कर्मयोग	,,	२.००
भक्तियोग	,,	२.००
भक्ति और वेदान्त	,,	२.००
विद्यार्थी जीवन	महात्मा नारायण स्वामी	१.५०

कहानियाँ

उर्दू की हास्यरस कहानियाँ	जगन्नाथ प्रभाकर	३.५०
रूस की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ	बलभद्र ठाकुर	२.५०
नारी की नवचेतना	शुकदेवसिंह सौरभ	३.५०

नाटक

डूबते तारे	अभयकुमार यौधेय	१.७५
हास्य नाटक	शौकत थानवी	३.००
इक्कीसवीं सदी बाईसवीं सदी	भगवानदास सफडिया	४.००

उपन्यास साहित्य

विवाह की मञ्जिलें	जीवनप्रकाश जोशी	५.५०
सुलगती परछाइयाँ	रमेश भारती	४.५०
शराबी का दिल	,,	३.५०
सामाजिक कारा के बन्दी	हरदयालसिंह एम० ए०	४.००
तिनके और लहरें	,,	५.००
कल्पना	रामकृष्ण कौशल	२.५०
पथ के राही	,,	२.५०
स्वयंसिद्धा	मणिकलाल वन्द्योपाध्याय	३.५०
संस्कारों के बन्धन	अभयकुमार यौधेय	५.५०
दूर के दीप	शुकदेवसिंह सौरभ	८.५०
वाह रे आँसू	,,	७.५०
पथ की खोज में	महेन्द्रकुमार पगारे	५.००
मौत और जिन्दगी	द्वारिकाप्रसाद एम० ए०	३.५०
निराश प्रणयी	बलभद्र ठाकुर	२.००
प्रयास के सुमन	आदर्शमोहन सारंग	५.५०
चमकता संसार	रामभरोसे त्रिपाठी	२.००
परिधि के परे	जगन्नाथप्रसाद मिश्र	४.००
भँवर के बीच	श्यामलकिशोर झा	३.००
अभिनव शिक्षाशास्त्र	चौ० हरिहरसिंह	१०.००
हिन्दी गद्य के सोपान	जीवनप्रकाश जोशी	७.००

शरत—टैगोर साहित्य

कुमुदिनी	रवीन्द्रनाथ टैगोर	४.००
त्याग का मूल्य	,,	४.००
नाव दुर्घटना	,,	४.००
आँख की किरकिरी	,,	५.००
घर और बाहर	,,	३.५०
गोरा	,,	६.००
शिक्षा	,,	२.००
श्रीकान्त	शरतचन्द्र	८.००
गृहदाह	,,	४.५०
सविता	,,	५.५०
चरित्रहीन	,,	७.००
शेष प्रश्न	,,	६.००
विप्रदास	,,	५.००
पथ के दावेदार	,,	५.५०
देना पावना	,,	४.००

सन्मार्ग प्रकाशन,

१६ यू० बी० बंगलो रोड, दिल्ली ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर के नवीन प्रकाशन

शोध

आधुनिक हिन्दी-मराठी में काव्य शास्त्रीय अध्ययन— डा० मनोहर काले २१.००

मौलाना दाऊद कृत चन्दायन—परमेश्वरीलाल गुप्त २०.००

शृंगार हाट—डा. वासुदेवशरण अग्रवाल एवं डा. मोतीचन्द्र २०.००

इतिहास

काशी का इतिहास— डा० मोतीचन्द्र २२.००

कोश

सामान्य अंग्रेजी-हिन्दी शब्दकोश— सं० राममूर्ति सिंह २२.००

आलोचना

आधुनिक हिन्दी कहानी— डा० लक्ष्मीनारायण लाल ३.००

मृत्युञ्जय रवीन्द्र— डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी ६.००

रवीन्द्रनाथ और लोक साहित्य— डा० सुकुमार सेन ०.७५

हिन्दी के सूफी प्रेमाख्यान— पं० परशुराम चतुर्वेदी ३.००

एकाङ्की

ये रेखाएँ : ये दायरे— विष्णु प्रभाकर ४.००

खडित यात्राएँ — नरेश मेहता ४.००

पिछली रात की बरफ— नरेश मेहता ४.००

सनोवर के फूल— नरेश मेहता ४.००

किशोर कथा

जंगल का राजा— कृश्न चन्दर १.५०

जम्बक का किला— " १.५०

पाताल नगरी — " " १.५०

मोतियों की झील — " " १.५०

कहानियाँ

कथा गुच्छ— जैनेन्द्र कुमार १.५०

कथा माला " " १.५०

कबूतर के खत — कृश्न चन्दर ३.००

कोशी— महावीर अधिकारी २.५०

नाग और शबनम— कृश्न चन्दर २.५०

झरोखे — सुदर्शन २.५०

तथापि — नरेश मेहता ३.००

रोमाञ्चक सत्य कथाएँ, भाग १—२,— मुक्ताराजे : प्रत्येक ३.५०

अभी पुण्य शेष है— गुलाबदास ब्रोकर ३.५०

उपन्यास

वह पथ बन्धु था — नरेश मेहता १२.५०

मञ्जिल से आगे— महावीर अधिकारी ८.००

मीठा पेड़ कड़ुआ फल— सुदर्शन ३.००

जीवनी

विश्व-साहित्य के ज्योतिपुञ्ज— डा० जगदीशचन्द्र जैन ३.५०

यात्रा

पश्चिमी घाटों की रानी : महाबलेश्वर— कृष्णशंकर व्यास ३.७०

हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर प्राइवेट लिमिटेड हीराबाग सी. पी. टैंक बम्बई–४

शाखा—

ब्रज भवन, दयानन्द रोड, २१, दरियागंज, दिल्ली—६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक्तिशाली प्रगति-चक्र

(१) पंचवर्षीय योजनाओं ने औद्योगिक विकास को गति प्रदान करने के अतिरिक्त आर्थिक क्षेत्र में स्वतः पूर्ण होने का मार्ग प्रशस्त किया है। यदि कृषि मात्र जीवन का मूल अवलम्ब है तो उद्योंग सुचारु जीवन का साधन। जैसे चक्र सनसनाहट के साथ गतिमान होते और हल अपने पीछे जोत की रेखा छोड़ता हुआ अग्रसर होता है, समाज एक आनन्द एवं उल्लास का चित्र प्रस्तुत करता है। इसी चित्र के निर्माण के लिए आन्ध्र-प्रदेश सरकार प्रयत्नशील रही है।

(२) तृतीय योजना में उद्योगों के लिए, संशोधित परिव्यय १६.७२ करोड़ रुपए है। राज्य उद्योग विकास निगम ने निम्नलिखित चार परियोजनाओं को प्रत्यक्ष रूप से स्थापना करने के लिये चुना है—(१) एच. टी. और एल. टी. इन्सुलेटर प्राजेक्ट, (२) स्वीकृत ग्लास प्राजेक्ट, (३) बाल बियरिंग प्राजेक्ट और (४) कच्चा लोहा प्राजेक्ट। लघु उद्योग निगम ने अब तक ६५ लाख रुपयों के मूल्य का कच्चा माल जुटाया और नियन्त्रित मूल्यों पर उसे छोटी इकाइयों में वितरित किया है।

(३) राज्य में, केन्द्रीय क्षेत्र के अन्तर्गत, २० करोड़ रुपयों की लागत का सिन्थेटिक ड्रग्स प्रोजेक्ट एवं ३५ करोड़ रुपयों की लागत का भारी-विद्युत-उपकरण प्राजेक्ट जैसे दो विशालकाय औद्योगिक व्यवसायों की स्थापना से, निकट भविष्य में राज्य का औद्योगिक स्वरूप ही बदल जायेगा। इस बात का भी निर्णय लिया जा चुका है कि हिन्दुस्तान–मशीन–औजार–कारखाने की पाँचवीं इकाई तथा प्रतिरक्षा–इलेक्ट्रोनिक्स–कारखाने की इसी राज्य में स्थापना की जाये।

सामयिक समस्याओं के प्रति जागरूक रहते हुयें,

आन्ध्र प्रदेश भविष्य में पदार्पण कर रहा है।

निदेशक सूचना एवं जन-सम्पर्क विभाग आन्ध्रप्रदेश द्वारा प्रचारित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे लोकप्रिय प्रकाशन

उपन्यास

सात लाख में से एक	मामा वरेरकर	५.००
मंगल-पथ	वासुदेव आठले	५.००
कलावे	जयसिंह	४.००
मादल का दर्द	श्याम व्यास	२.५०
कथा-चक्र	पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी	२.५०
चार दीवारी	मनमोहन मदारिया	२.००
तट की खोज	हरिशङ्कर परसाई	१.५०

कहानी-संग्रह

जितने मुँह उतनी बातें	उमाशङ्कर शुक्ल	३.००
रोटियों की वर्षा	नर्मदाप्रसाद खरे	२.००
काठ का हाथी	मुन्नालाल देवासे	२.५०

नाटक

पंचपात्र	मामा वरेरकर	४.००
यही है वर का बाप	,,	३.००
द्वारका का राजा	,,	२.५०
सिंगापुर से	,,	२.००
सारस्वत	,,	२.००
अमर बलिदान	नरेन्द्रराव	१.५०
सौन्दर्य प्रतियोगिता	गोपाल शर्मा	१.५०
हव्वा की बेटी	प्रताप मुखारया	०.७५

काव्य

गीतांजलि	अनु० डॉ० भवानीप्रसाद तिवारी	३.००
अंकुर की कृतज्ञता	दिनकर सोनवलकर	३.००
ज्योति गंगा	नर्मदाप्रसाद खरे	१.५०
दुर्गावती (खण्ड काव्य)	पूरनचन्द्र श्रीवास्तव	०.७५

साहित्य

मेरे प्रिय निबन्ध	पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी	६.००
जिन्हें नहीं भूलूँगा	,,	३.००
साहित्य साधिकाएँ	कैलाश कल्पित	२.२५
हिन्दी उपन्यास की शिल्प विधि का विकास	श्रीमती कृष्णा नाग	६.००

विविध

सुबहे बनारस	राजनाथ पाण्डेय	५.००
मजे में तो हैं	मुम्ताजुद्दीन आदि	२.५०
हिन्दी पर्याय विलोम कोष	श्रीकृष्ण दवे	२.००
उपदेश	श्री सद्गुरु ओंकार	२.५०

बाल-साहित्य

डाकू का बेटा	हरिकृष्ण देवसरे	१.५०
अभिनय-गीत	कुमारहृदय	१.५०
जंगल की सच्ची कहानियाँ	रामानुजलाल श्रीवा०	१.५०
भोला	पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी	१.५०
नयी बानी कथा पुरानी	मनमोहन	०.७५
सबेरे के फूल	व्यथित हृदय	१.२५
बचपन की झाँकियाँ	,,	१.००
चतुर चिड़िया	रामनारायण उपाध्याय	१.००
आओ बच्चो नाटक खेलें—तीन भाग	अनिलकुमार	२.५०
धन्य ये बेटियाँ—तीन भाग	जहूरबख्श—नर्मदाप्रसाद खरे	१.५०
जे पीर पराई जानें रे	श्रीचन्द्र जैन	०.७५
जीवन की नयी भूख	गौरीशंकर लहरी	०.५०

लोकचेतना प्रकाशन,

जबलपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे प्रकाशन

समाजशास्त्र

समाज मनोविज्ञान—डा० मनमोहन सहगल १५.००
विश्व सभ्यता का विकास—चिरञ्जीलाल पाराशर १५.००

राजनीति

द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात एशिया और अफ्रीका—वेदप्रकाशसिंह १९६४ १५.००
लोक-प्रशासन—डा० बी० एम० शर्मा ७.५०
अन्तर्राष्ट्रीय संगठन का इतिहास—दिनेश खरे ७.००
अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध—दीनानाथ वर्मा १९६४ १०.००
लाल चीन के काले कारनामे—चिरञ्जीलाल पाराशर ७.००
राष्ट्र और सुरक्षा— " ४.००

शिक्षा

शिक्षाशास्त्र के मूल तत्त्व—मुनेश्वरप्रसाद १९६४ १०.००
पाठशाला प्रबन्ध—डा० सहगल व निर्मम ६.००
हिन्दी भाषा की शिक्षण विधि—शत्रुघ्नप्रसाद सिन्हा १९६४ ६.५०
शिक्षण-विधि—ब्रजनन्दनप्रसाद १९६४ ३.२५
बुनियादी शिक्षा की रूपरेखा—राजेन्द्रप्रसाद भटनागर ४.००
शिक्षण-विचारधारा—वैद्यनाथप्रसाद वर्मा २ भाग ८.००
जनतंत्रात्मिक विद्यालय संगठन—डा० सरयूप्रसाद चौबे ६.००
नवीन शिक्षा-शास्त्र— " १५.००
शिक्षा-विज्ञानसार— " १५.००

मनोविज्ञान

सुबोध शिक्षा-मनोविज्ञान—मुनेश्वर प्रसाद ४.००

कहानी

खट्टा-मीठा व्यंग्य विनोद—चिरंजीलाल पाराशर ४.००
कई प्रश्न एक उत्तर—रमण २.००

यात्रा

बर्फ का संसार—हंसराज 'दर्शक' ३.००

बाल-साहित्य

बच्चों की दुनियाँ—रणजीत भाई २.००
निर्माण की राह पर हमारा राष्ट्र—डा० बी० के० आर० बी० राय० १.२५

नाटक

कारखाना – अनिलकुमार २.००
विप्लवी— " २.००
पालकी— " १.५०
जली खिचड़ी— " १.५०
संग्राम भूमि—जीवन्त १.५०
दक्षिणा—युगल १.२५
आदमी और पैसा—हिमांशु श्रीवास्तव १.२५
सुदामा चरित्र—कैलाशबिहारी १.२५
नेत्रदान—रामवृक्ष बेनीपुरी १.२५
माटी की मूरतें— " २.७५
विजेता— " १.७५
अम्बपाली— " २.५०

काम-शास्त्र

यौन-शास्त्र—श्री यक्ष ७.००

आलोचना

नीति काव्य का विकास—डा० रामस्वरूप शर्मा २०.००

उपन्यास

पराजिता—सुधीर मित्तल २.५०
सोना—रमण ४.००
किशोरी—चिरञ्जीलाल पाराशर ६.००
पङ्क और पङ्कज—कुमारेन्द्र ४.००

दिल्ली पुस्तक सदन

१६ यू० बी० बंगलो रोड, दिल्ली—६
चौड़ा रास्ता, जयपुर
गोविन्द मित्र रोड, पटना—४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा प्रकाशन

कला दर्शन :	शचीरानी गुर्टू	२०.००
मोतीलाल नेहरू :	हंसराज रहबर	२.००

(उपर्युक्त दोनों पुस्तकें सैन्ट्रल गवर्नमैण्ट से पुरस्कृत हैं)

पराया :	डॉ. रांगेय राघव	३.००
दो दुनियाँ :	मन्मथनाथ गुप्त	५.५०
चील और चट्टान :	करतारसिंह दुग्गल	४.००
कोठी की बात :	दयाशङ्कर मिश्र	२.५०
आँधी :	श्रीराम शर्मा 'राम'	२.५०
काँटे :	"	६.००
गहरी नदिया नाव पुरानी :	कमल शुक्ल	३.५०
माटी के पुतले :	"	४.००
राजधानी में :	राजेन्द्रलाल हांडा	३.००
रोचक कहानियाँ :	सम्पा. हंसराज रहबर	३.००
पहला पाठ :	प्रो. भीष्म साहनी	२.५०
व्यक्ति और वाङ्मय :	प्रभाकर माचवे	७.००
समीक्षा की समीक्षा :	"	५.००
साहित्यकला-समीक्षा :	मन्मनाथ गुप्त	६.००
विवेचन :	डॉ. कन्हैयालाल सहल	३.००
अन्धकार और प्रकाश :	उदयशङ्कर भट्ट	२.७५
शेखर :	देवदत्त 'अटल'	२.२५
कौमुदी-महोत्सव :	अनु० देवदत्त शास्त्री	२.२५
भारत-विभूति :	आचार्य एम० एन० सान्याल	२.००
गीत-गोविन्द (सचित्र) :	डॉ. रांगेय राघव	४.००
जीवन-मन्त्र :	हंसराज 'रहबर'	१.००
आजादी की प्रथम किरण :	हरिमोहन श्रीवास्तव	१.५०
सुबह का भूला :	कमल शुक्ल	१.००
नया अनोखा :	"	१.००
भारत की कहानी (दो भाग) :	डॉ. भगवतशरण उपाध्याय, प्रथम भाग	१.२५
	द्वितीय भाग	१.५०

साहनी-प्रकाशन

• स्प्लेनेड रोड, दिल्ली–६

सर्वोदय पर्व

(११ सितम्बर से २ अक्टूबर तक)

के अवसर पर

सर्वोदय विचार का जीवन प्रेरक तथा अहिंसक समाज-रचना का साहित्य खरीदकर "शरदारम्भ में शारदोपासना" का लाभ उठाइये।

१—समय और हम —जैनेन्द्र कुमार।

दर्शन, अध्यात्म, पूर्व-पश्चिम, अर्थ, सत्ता, अहं, संस्कृति, राजनीति आदि सैकड़ों विषयों पर ४५० प्रश्नोत्तर, बहुचर्चित ग्रन्थ का अल्पमोली संस्करण मू. १२.००

२—चिंगलिंग —सुश्री निर्मला देशपांडे

यह एक ऐसा आदर्शोन्मुखी उपन्यास है जिसमें चिंगलिंग नामक एक चीनी बहन भारत में विनोबाजी की पदयात्रा में शरीक होकर भीतर की आँखों से भारत की कर्म भूमि का रस-पान करती है। गाँव-गाँव का आतिथ्य प्राप्त करती है और विश्व की राजनीतिक उलझनों का ऊहापोह करती हुई तथागत अमिताभ के चरणों में शांति की प्रार्थना करती है। मूल्य ३.००

३—गांधीजी के संस्मरण—शांतिकुमार न० मुरारजी

हिन्दी में पहली बार यह रचना प्रकाशित हो रही है। श्री शांतिकुमारजी ने इसमें लगभग तीन दशकों के संस्मरण इस प्रकार संजोये हैं कि गांधीजी का व्यक्तित्व और चरित्र तो विविध रूप में व्यक्त हुआ ही है; देश का गांधीयुग का बहुत कुछ इतिहास भी अनायास तैयार हो गया है।

मूल्य ३.०० सजिल्द ४.००

भूदान, ग्रामदान, नयी तालीम, ग्रामोद्योग, खादी, शान्तिसेना, विश्वशान्ति, लोकनीति आदि विविध विषयों के साहित्य का सूचीपत्र आज ही मँगाइये।

सर्व सेवा संघ प्रकाशन,

राजघाट, वाराणसी फोन ४२८५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक सफल और

सार्थक प्रकाशन संस्था

परिमल प्रकाशन,

१९४, सोहबतिया बाग, इलाहाबाद-६

की

नातिदीर्घ प्रकाशन-यात्रा के

नवीनतम चरण

●

नागार्जुन

की

तेजस्वी लेखनी से

निराला के जीवन के अब तक अप्रकाशित जीवन-प्रसङ्गों तथा उनके सन्दर्भ में उठने वाले प्रश्नों को लेकर निःशङ्क तथा निर्भीक होकर लिखा गया एक मात्र ग्रन्थ :

एक व्यक्ति : एक युग

मूल्य २.७५ रु०

● **धुन्ध में डूबे हुए :** तरुण लेखक बद्रीनाथ का उपन्यास जिसमें निम्न मध्यवर्गीय चरित्रों के सामाजिक, आर्थिक और नैतिक सङ्घर्षों का महाख्यान अङ्कित हो उठा है। मूल्य ५.०० रु०

● **नयी धरती : नये लोग :** प्रतिभाशाली लेखक अजित पुष्कल का उपन्यास जो नये जीवन के निर्माण में लगे सामान्य देशवासियों का अत्यन्त समीप से संवेदनासिक्त चित्र उपस्थित करता है। मूल्य ३.०० रु०

● **रेशमी डोरे :** नाटकों की मञ्च प्रस्तुति में अनुभव-पक्व तथा सुदक्ष लेखिका डॉक्टर जमीला कुरैशी के 'सरगम' के बाद सात एकाङ्कियों का दूसरा संग्रह, जिसमें वे जिन्दगी की उलझी हुई गहरी गुत्थियों को मञ्चनीय संवाद-विधा में बांध सकी हैं। मूल्य ३.०० रु०

● और नयी आयोजना

विश्वामित्र द्वारा सम्पादित

मासिक

सन्धान

जिसमें उत्कृष्ट कविताओं, कहानी, एकाङ्की, स्केच, संस्मरण आदि के अतिरिक्त 'यत्किञ्चित्', 'मूल्याङ्कन' 'पुनर्मूल्याङ्कन' स्तम्भों की विचार-प्रेरक टिप्पणियाँ और कला, साहित्य एवं संस्कृति सम्बन्धी तलगामी चिन्तना प्रस्तुत की जायेगी।

मूल्य एक प्रति ५० पैसे] ● **[वार्षिक ५ रुपये]**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माध्यम

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का मासिक

सम्पादक—बालकृष्ण राव

'माध्यम' के हर अंक में 'सहवर्ती साहित्य' स्तम्भ में किसी एक हिन्दीतर भारतीय भाषा की चुनी हुई समसामयिक रचनाएँ प्रस्तुत करता है।

'विवेचना में प्रकाशित 'चारु चंद्रलेख', 'समय और हम', 'शमशेर का काव्य', 'वह पथ बंधु था' की समधीत विवेचना और अन्य स्तरीय समीक्षाओं की चर्चा आप तक पहुँची ही होगी।

'माध्यम' के विचार-प्रधान और विचारोत्तेजक लेखों को आपने पढ़ा ही होगा।

कविताओं, कहानियों, टिप्पणियों के चयन में 'माध्यम' की रुचि और स्तर से आपका परिचय हो ही चुका है।

'माध्यम' का आग्रह है, न केवल आप इसे अवश्य पढ़ें, वरन् इस पर अपनी राय भी अवश्य भेजें।

मूल्य एक प्रति १.००, वार्षिक १०.००

सम्पादकीय कार्यालय, पो० बा० नं० ६०, इलाहाबाद।

व्यवस्थापकीय कार्यालय; हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, इलाहाबाद।

महाकवि देवकृत

प्रकाशित होगया **रस-बिलास** **प्रकाशित हो गया**

सम्पादक—श्री तिलेश्वरनाथ शास्त्री

प्रस्तुत पुस्तक रीतिकाल की तरुणाई में कविता-कामिनी का सुन्दर शृङ्गार कर उसके सौन्दर्य की वृद्धि करने वाले महाकवि देव कृत नायिका भेद का सुसम्पादित संस्करण है। यह पुस्तक सात बिलासों में विभक्त है। प्रारम्भ में महाकवि देव का संक्षिप्त जीवन परिचय भी दिया गया है। पुस्तक साहित्य-प्रेमियों के काम की चीज है। (दैनिक) भारत, इलाहाबाद

देव का रस-बिलास नायिका भेद का प्रसिद्ध ग्रन्थ है। इधर यह अप्राप्त सा हो रहा था। इसलिये प्रकाशक ने इसे छाप कर काव्यप्रेमियों की सेवा की है पुस्तक अच्छे ढङ्ग से छपी है।

—सरस्वती (मासिक पत्रिका) इलाहाबाद

प्रस्तुत पुस्तक अभी तक प्रायः अप्राप्य रही है किन्तु साहित्य प्रेमियों की निरन्तर माँग के कारण हमने इसका नवीन संस्करण छापा है। सफेद कागज पर छपी, सुन्दर जिल्द तथा नयनाभिराम जैकेट। मूल्य रु० २.५० मात्र, डाक खर्च १) प्रति पुस्तक। साथ में नये वर्ष का एक आकर्षक आफसेट पर मुद्रित कलेण्डर मुफ्त। पुस्तक की प्रशंसा में देखिये उपर्युक्त पत्र क्या लिखते हैं।

प्रत्येक पुस्तकालय में इस पुस्तक का होना आवश्यक है। साहित्य-सन्देश के पाठकों एवं विद्यालयों के पुस्तकालयों को एक प्रति २.५० में तथा आधे डाक खर्च के साथ यानी ३.०० का मनिआर्डर आने पर भेजी जा सकेगी। निर्धन छात्रों को डाकखर्च सहित २.५५ में। अन्य पुस्तकों के लिये हमारा सूचीपत्र देखिये।

मँगाने का पता—

बनारस मर्केन्टाइल कं०, १२५, महात्मा गांधी रोड, कलकत्ता—७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नये प्रकाशन

श्री 'निर्मम' का नवीन सामाजिक 'उपन्यास'

वसन्त फिर आयेगा'

हिन्दी में पहली बार टेलीफोन आपरेटर के रूप में कार्य करने वाली युवती की एक सच्ची जीवन-गाथा मार्मिक शब्दों में प्रस्तुत

मूल्य केवल ६ रुपये ५० पैसे

●

श्री हरीश करुण एम० ए० की नयी कृति

ग्रीक साहित्य-शास्त्र

ग्रीक आचार्यों—प्लेटो, अरस्तू, दमित्रियस, लौंजाइनस आदि के साहित्य-सिद्धान्तों की सम्यक विवेचना तथा इनके ग्रन्थों का अनुवाद

मूल्य—पाँच रुपये पचास नये पैसे

●

डॉ० गणपतिचन्द्र के साहित्य-शास्त्रीय ग्रन्थ

★

भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य-शास्त्र के आधार पर नवीन दृष्टिकोण से साहित्य के तीन पक्षों का विवेचन—

★

साहित्य की आत्मा :

मूल्य—पांच रुपये

साहित्य के तत्त्व :

मूल्य—पांच रुपये

साहित्य की शैली :

मूल्य—सात रुपये पचास पैसे

अन्य ग्रन्थ—

आ० हजारीप्रसाद द्विवेदी : व्यक्तित्व एवं साहित्य

(आचार्य द्विवेदी के उपन्यासकार, निबन्धकार, एवं आलोचक रूपों पर ३० लेख)

मूल्य सात रुपये

—प्रकाशक—

भारतेन्दु-भवन

सैक्टर १५ ए, चण्डीगढ़—२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे हिन्दी प्रकाशन

विवेकानन्द-ग्रन्थावली

सचित्र आकर्षक गेट-अप

विवेकानन्द चरित—सत्येन्द्रनाथ मजूमदारकृत ६.००
भारत में विवेकानन्द (भारतीय व्याख्यान) ५.००
देववाणी (अमरीकी शिष्यों को दिये गए उपदेश) २.७५
पत्रावली (विवेकानन्दजी के स्फूर्तिदायक पत्र) —प्रथम भाग ५.२५
पत्रावली " —द्वितीय भाग ४.२५
विवेकानन्दजी के संगमें ५.२५
महापुरुषों की जीवनगाथाएँ १.५०
जाति, संस्कृति और समाजवाद १.२५
विवेकानन्दजी की कथाएँ १.६०
स्वाधीन भारत ! जय हो ! १.५०
परिव्राजक (मेरी भ्रमण कहानी) १.५०
आत्मानुभूति तथा उसके मार्ग १.६०
स्वामी विवेकानन्दजी से वार्तालाप २.१५
व्यावहारिक जीवन में वेदान्त १.१५
विवेकानन्दजी के सान्निध्य में ०.६०
भगवान रामकृष्ण, धर्म तथा संघ ०.८७

कर्मयोग	१.७५	भक्तियोग	१.५४
राजयोग	३.००	ज्ञानयोग	३.५०
प्रेमयोग	२.००	सरल राजयोग	०.७५
हिन्दू धर्म	१.५०	धर्म रहस्य	१.२५
धर्मविज्ञान	२.००	शिकागो वक्तृता	०.६५
विविध प्रसंग ..	१.१२	प्राच्य और पाश्चात्य....	१.२५
मेरे गुरुदेव	१.००	चिन्तनीय बातें	१.३०
शिक्षा	०.८५	भारतीय नारी	१.३०
कवितावली ..	१.६५	हिन्दू धर्म के पक्ष में	०.७५
पवहारी बाबा	०.६०	हमारा भारत	०.६५
वर्तमान भारत	०.५०	ईशदूत ईसा	०.४०
मरणोत्तर जीवन	०.५०	मन की शक्तियाँ	०.५०

विवेकानन्दजी के उद्गार (पॉकेट साइज) ०.६५
शक्तिदायी विचार (") ०.६५
मेरी समर नीति (") ०.६५
मेरा जीवन तथा ध्येय (") ०.६०

श्रीरामकृष्ण-साहित्य

सचित्र आकर्षक जैकेट सहित

श्रीरामकृष्णलीलाप्रसंग—स्वामी सारदानन्दकृत सुविस्तृत मूल बंगला जीवनी से अनुवादित। प्रथम खण्ड ६.००
द्वितीय खण्ड १०.००
तृतीय खण्ड ७.००

श्रीरामकृष्णलीलामृत—विस्तृत जीवन-चरित्र, महात्मा गाँधी द्वारा भूमिका सहित, दो भागों में, प्रत्येक भाग का मूल्य ५.००

श्रीरामकृष्णवचनामृत— 'म' कृत, श्रीरामकृष्णदेव के अमृतमय उपदेशों का अपूर्व संग्रह, तीन भागों में पूर्ण,
प्रथम भाग ६.५०
द्वितीय भाग ६.५०
तृतीय भाग ७.००

श्रीरामकृष्ण उपदेश—स्वामी ब्रह्मानन्द द्वारा संकलित, पॉकेट साइज, ०.७५

माँ सारदा—श्रीरामकृष्णदेव की लीला-सहधर्मिणी की विस्तृत जीवनी, स्वामी अपूर्वानन्दकृत, मूल्य ४.५०

रामकृष्ण-संघ—आदर्श और इतिहास—स्वामी तेजसानन्दकृत ०.७५

धर्म-प्रसंग में स्वामी शिवानन्द—श्रीरामकृष्णदेव के अन्तरंग संन्यासी शिष्य द्वारा धर्म के गूढ़ तत्त्वों पर वार्तालाप मू० ५.००

परमार्थ प्रसंग—स्वामी विरजानन्दकृत, आर्ट पेपर पर छपी हुई, ३.१५

साधु नागमहाशय – श्रीरामकृष्णदेव के अन्तरंग गृही शिष्य का जीवनचरित १.५०

गीतातत्त्व —स्वामी सारदानन्दकृत २.८०
भारत में शक्तिपूजा — " १.२५
वेदान्त—सिद्धान्त और व्यवहार—स्वामी सारदानन्दकृत, ०.५०
श्रीरामकृष्ण और श्रीमाँ—स्वामी अपूर्वानन्दकृत ३.४०

विस्तृत सूचीपत्र के लिए लिखिए

श्रीरामकृष्ण आश्रम, धन्तोली, नागपुर—१.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

१—सूर और उनका साहित्य—अलीगढ़ विश्वविद्यालय में संस्कृत-हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ० हरवंशलाल शर्मा द्वारा प्रणीत तथा नागपुर विश्वविद्यालय द्वारा डी० लिट् की उपाधि के लिए स्वीकृत शोध प्रबन्ध का संशोधित एवं परिवर्धित नवीन संस्करण। मूल्य दस रुपये

२—भागवत-दर्शन—भागवत के दार्शनिक पक्ष की शास्त्रीय विवेचना प्रस्तुत करने वाली अनुपम कृति—लेखक—डॉ० हरवंशलाल शर्मा। मूल्य बारह रुपये

३—बिहारी और उनका साहित्य—डॉ० हरवंशलाल शर्मा तथा डॉ० परमानन्द के पारस्परिक सहयोग द्वारा लिखित अनुपम आलोचनात्मक ग्रन्थ-कविवर बिहारी के काव्य (सतसई) का अनुशीलन एवं मूल्यांकन करने में अत्यन्त उपयोगी। मूल्य आठ रुपये

४—सूफी महाकवि जायसी—लेखक—डॉ० जयदेव, पी० एच-डी० की उपाधि के लिये स्वीकृत इस शोध ग्रन्थ में मलिक मुहम्मद जायसी के व्यक्तित्व, काव्य-कला और विचार दर्शन का एक सर्वाङ्गीण अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। मूल्य छः रुपये

५—रेवा तट समय—डॉ० गोवर्धननाथ शुक्ल द्वारा सम्पादित-पृथ्वीराज रासो का सत्ताईसवां समय-प्रामाणिक टीका एवं उपयोगी भूमिका। मूल्य डेढ़ रुपया

६—परमानन्द सागर—सम्पा०—डॉ० गोवर्धननाथ शुक्ल, अष्ट छाप के दूसरे रस सिद्ध कवि भक्त प्रवर परमानन्ददास के लगभग नौ-सौ पदों का विशाल संग्रह-पुष्टि मार्गीय भक्ति साहित्य के अध्ययन एवं अनुशीलन में अत्यन्त उपयोगी। मूल्य बारह रुपये

७—वार्त्ता साहित्य—'एक वृहत अध्ययन' सम्पादक—डॉ० हरिहरनाथ टण्डन, द्वारा लिखित पुष्टिमार्गीय वैष्णव जनों के वार्त्ता साहित्य का गवेषणात्मक अनुशीलन पी० एच-डी० की उपाधि के लिए स्वीकृत शोध ग्रन्थ-सांस्कृतिक तथा साहित्यिक महत्त्व की अद्वितीय कृति। मूल्य पन्द्रह रुपये

८—शेली—अँग्रेजी साहित्य के युग निर्माता कवि पी० बी० शेली की अमर कविताओं का छन्दोबद्ध अनुवाद, भारत सरकार तथा प्रान्तीय सरकार द्वारा पुरस्कृत—अनु० श्री यतेन्द्रकुमार। मूल्य ढाई रुपये

९—रस गंगाधर का शास्त्रीय अध्ययन—लेखक—डॉ० प्रेमस्वरूप गुप्त, का सत्रहवीं शताब्दी के विलक्षण आचार्य, काव्यशास्त्र के महापंडित पंडितराज जगन्नाथ के सुप्रसिद्ध काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ 'रस गङ्गाधर' की महत्त्व-पूर्ण मीमांसा और उसका मूल्याङ्कन—पी-एच० डी० की उपाधि के लिये स्वीकृत शोध प्रबन्ध। मूल्य बारह रुपया

१०—हिन्दी में भ्रमर गीत काव्य और उसकी परम्परा—लेखिका—डॉ० स्नेहलता श्रीवास्तव, का भक्ति काव्य के अनुशीलनकर्त्ताओं और विद्यार्थियों के लिये उपयोगी शोध-प्रबन्ध। मूल्य बारह रुपये

११—काव्य और कला—सौन्दर्य शास्त्र के पारखी तथा आधुनिक हिन्दी कविता के मर्मज्ञ—डॉ० हरद्वारीलाल शर्मा द्वारा लिखित काव्य और कला विषयक चुने हुए निबन्धों का संग्रह, हिन्दी कविता की नयी-प्रवृत्तियों के अनुशीलन में उपयोगी। मूल्य चार रुपये

१२—भावना और समीक्षा—हिन्दी के उदीयमान तथा हंसराज कालेज दिल्ली में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष—डॉ० ओ३म् प्रकाश द्वारा लिखित विचारणा तथा मीमांसा प्रधान चुने हुए निबन्धों का संग्रह, आलोचनात्मक प्रवृत्तियों के अनुशीलन में उपयोगी। मूल्य चार रुपये

१३—कालिदास ग्रन्थावली—महाकवि कालिदास की समस्त प्रामाणिक कृतियों का वैज्ञानिक सम्पादन। महत्त्वपूर्ण भूमिका तथा व्याख्यात्मक टीका सहित नवीन संस्करण। मूल्य बीस रुपये

१४—वाङ्मयी—डॉ० अम्बाप्रसाद सुमन द्वारा लिखित हिन्दी साहित्य के विभिन्न अङ्गों पर प्रकाश डालने वाली उपयोगी कृति। मूल्य दो रुपये

उच्चकोटि के साहित्यिक तथा समीक्षात्मक प्रकाशक

एवं

भारत के सभी प्रमुख हिन्दी प्रकाशनों तथा संस्कृत ग्रन्थों के विक्रेता

भारत प्रकाशन मन्दिर, अलीगढ़।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

१५—**कृतवासी बँगला रामायण और रामचरित मानस का तुलनात्मक अध्ययन**—हिन्दी तथा बँगला रामायणों की तुलना द्वारा महत्वपूर्ण स्थापनाओं के लिये सचेष्ट—डॉ० रामनाथ त्रिपाठी, प्रा० हिन्दी विभाग सनातन धर्म कॉलिज, द्वारा लिखित, महत्त्वपूर्ण शोधप्रबन्ध। मूल्य पन्द्रह रुपये

१६—**अन्तर्दर्शन**—तीन-चित्र सुप्रसिद्ध कवि श्री उदयशङ्कर भट्ट द्वारा लिखित तीन लघुकाव्य, रावण राम और वैदेही के जीवन के सङ्घर्षमय क्षणों की मौलिक उद्भावनाएँ। मूल्य दो रुपये

१७—**फते प्रकाश**—अब तक अप्रकाशित रहने के कारण हिन्दी संसार को भारत प्रकाशन मन्दिर अलीगढ़ की निजी भेंट—सम्पादक कैप्टेन शूरवीरसिंह पँवार, भूमिका लेखक, डॉ० हरवंशलाल शर्मा, अट्ठारहवीं शताब्दी के आचार्य कवि, रतन-कवि, द्वारा प्रणीत काव्य-शास्त्र के विविध अङ्गों का पद्यात्मक विवेचन, आचार्य मम्मट के काव्य प्रकाश पर आधारित महत्त्वपूर्ण काव्य-कृति। मूल्य तीन रुपये

१८—**आचार्य क्षेमेन्द्र**—लेखक—डॉ० मनोहरलाल गौड़, कृति भारतीय मनीषा की एक विलक्षण प्रतिभा, संस्कृत वाङ्मय के गौरव, आचार्य क्षेमेन्द्र के कृतित्व का सांगोपाङ्ग विवेचन प्रस्तुत करने वाली महत्वपूर्ण रचना है। मूल्य चार रुपये

१९—**दैहिक मनोविज्ञान**—लेखक—डॉ० जे० डी० शर्मा, की अपने विषय की हिन्दी भाषा में एक मात्र पुस्तक। मूल्य दस रुपया

२०—**समाज-मनोविज्ञान का परिचय**—लेखक—श्री जयगोपाल तिवारी, लिखित यह अपने विषय की अद्भुत पुस्तक। मूल्य चार रुपये

२१—**मिर्ज़ामजहर जान-जाना**—लेखक—डॉ० मुहम्मद उमर, द्वारा लिखित एक प्रसिद्ध सूफी सन्त जीवन और कृतित्व का मूल्याङ्कन प्रस्तुत करने वाली पुस्तक। पृष्ठ १३०। मूल्य दो रुपये

२२—**सूर मीमांसा**—लेखक—डॉ० गनेशदत्त गौड़, सूर-समीक्षा पर एक और उल्लेखनीय रचना। मूल्य ढाई रुपया

भारत प्रकाशन मन्दिर, अलीगढ़।

हमारे उत्कृष्ट प्रकाशन

आलोचना साहित्य :—

आलोचना के मान	शिवदानसिंह चौहान	३.७५
इलाचन्द्र जोशी के उपन्यास	बलभद्र तिवारी	३.७५
हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास	डा० विजयेन्द्र स्नातक	४.००

उपन्यास :—

चन्दन और पानी	भगवतीप्रसाद वाजपेयी	५.००
फागुन के दिन चार	उग्र	५.५०
मनुष्यानन्द	उग्र	४.००
जीवन : आग और आंसू	वैजनाथ गुप्त	५.००
शिवनेर केसरी	यादवचन्द्र जैन	५.००
पशु और मानव (Ape & Essence)	अल्डुअस हक्सले	३.५०
कप्तान की बेटी (Gaptain's Daughter)	अलेगजेण्डर पुश्किन	३.७५
कुँआरी धरती (Virgin Soil)	तुर्गनेव	६.५०
सुर्ख और स्याह (Scarlet & Black)	स्तांधाल	१०.००
जुर्म और सजा Crime & Punishment)	दोस्तोवस्की	१०.००
मीरी बिटिया	रजनीकान्त बरदले	२.००

कहानियाँ :—

संसार की महान् कहानियाँ		५.००
आधुनिक चीनी कहानियाँ		६.५०

नाटक :—

विवाह का बन्धन	आचार्य अत्रे	२.५०
झक्की	महेश्वरदयाल	२.५०
पाँच एकांकी	कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह	१.७५
जादू के रंग	शिवदानसिंह चौहान	१.५०

विविध :—

एक हजार वर्ष बाद	काका गाडगिल	३.००
सत्ता और व्यक्ति	बर्ट्रण्ड रसल	३.००
सितारों का सफर	रमेशचन्द्र वर्मा	२.००

रणजीत प्रिण्टर्स एण्ड पब्लिशर्स

४८७२, चांदनी चौक, दिल्ली—६।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई हिन्द पॉकेट बुक्स

प्रत्येक का मूल्य एक रुपया

- **सच और झूठ**— (उपन्यास) मन्मथनाथ गुप्त
  सच और झूठ की भूलभुलैयों में घिरे एक पिता, पुत्र और उनके प्रेम-सम्बन्धों की मनोवैज्ञानिक कहानी।
- **तीसरा आदमी**— (उपन्यास) कमलेश्वर
  नए कहानीकारों में कमलेश्वर प्रमुख हैं और 'तीसरा आदमी' उनका नवीनतम उपन्यास है।
- **सोया हुआ सपना**— (उपन्यास) राजेन्द्र अवस्थी
  एक चित्रकार और एक विवाहिता नवयुवती की कसक भरी प्रेम-कहानी।
- **महापुरुषों के साथ**— (संस्मरण) सेठ गोविन्ददास
  भारतीय महापुरुषों के निकट सम्पर्क पर आधारित रोचक, सजीव संस्मरण।
- **पथ के दावेदार**— (उपन्यास) शरत्चन्द्र की श्रेष्ठ कृति
- **नीरज की पाती**— (काव्य) नीरज
  नीरज की बहुचर्चित, चिरप्रतीक्षित कविता-संग्रह।
- **नेहरू ने कहा**— (संकलन) केवल धीर
  नेहरूजी के भाषणों, लेखों और पुस्तकों से संग्रहीत सूक्तियाँ तथा उनके व्यक्तिगत संस्मरण एवं विचार।
- **सन्तवाणी**— (सूक्तियाँ) मानसहंस
  संसार के महान सन्तों की प्रेरणाप्रद अमर वाणी।

※ भारत ज्ञानकोश १९६४ ※

भारत और संसार के बारे में आधुनिकतम प्रामाणिक जानकारी से भरपूर अत्यन्त उपयोगी पुस्तक। (केवल इसका मूल्य दो रुपये, पृष्ठ सं० २५०)

हिन्द पॉकेट बुक्स जी० टी० रोड, शाहदरा, दिल्ली-३२

---

४५ वर्ष पुराना पुस्तक प्रतिष्ठान—

साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा

यहाँ से आप पुस्तकों का बड़ा सूचीपत्र मँगायें और उसमें से पुस्तकें चयन कर राष्ट्रभाषा हिन्दी में प्रकाशित पुस्तकों के लिये लिखें। यहाँ से आपको पूर्ण सन्तोषप्रद उत्तर और सही जानकारी प्राप्त होगी और आपकी इच्छित पुस्तकें तुरन्त भेज दी जायेंगी।

प्रत्येक प्रकार की हिन्दी पुस्तकें मिलने का सबसे पुराना प्रतिष्ठान—

साहित्य-रत्न-भण्डार, साहित्य-कुञ्ज, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्विवेदी जन्मशती पर प्रकाशित

आचार्य द्विवेदी गाँव में : अमरेश : मूल्य ३.५०

कालिदास के ग्रंथों पर आधारित तत्कालीन भारतीय संस्कृति १०.००
डॉ० गायत्री वर्मा

गीतिकाव्य का विकास १०.००
लालधर त्रिपाठी 'प्रवासी'

बिहारी का नया मूल्यांकन ३.५०
डॉ० बच्चन सिंह

महाकवि मतिराम १०.००
डॉ० त्रिभुवन सिंह

कामायनी की व्याख्यात्मक आलोचना ८.००
विश्वनाथ लाल 'शैदा'

हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप-विकास १२.००
डॉ० शंभुनाथ सिंह

बीसलदेव रासो ६.००
डॉ० तारकनाथ अग्रवाल

भारतीय प्रेमाख्यान काव्य १०.००
डॉ० हरिकांत श्रीवास्तव

नाटक और रंगमंच १०.००
राजकुमार

सूरपूर्व ब्रजभाषा और उसका साहित्य १२.५०
डॉ० शिवप्रसाद सिंह

राष्ट्र-कवि मैथिलीशरण गुप्त 'अभिनन्दन-ग्रन्थ' ३०.००
सं० मं० : डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल, डॉ० मोतीचन्द, आदि

दरबारी संस्कृति और हिन्दी मुक्तक ४.५०
डॉ० त्रिभुवन सिंह

कहानी का रचना-विधान ६.००
डॉ० जगन्नाथप्रसाद शर्मा

विद्यापति ५.००
डॉ० शिवप्रसाद सिंह

मधुमालती (मंझन कृत) ८.००
डॉ० शिवगोपाल मिश्र

चित्ररेखा (जायसी कृत) २.५०
सं० शिवसहाय पाठक

रवीन्द्र कविता-कानन ०.६७
'निराला'

कबीर और जायसी का मूल्यांकन ०.२५
पुरुषोत्तमचन्द वाजपेयी

प्रसाद के नाटक ४.५०
परमेश्वरीलाल गुप्त

रस-साहित्य और समीक्षाएँ ४.००
'हरिऔध'

हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद ८.००
डॉ० त्रिभुवन सिंह

साहित्य-परिचय ३.००
डॉ० एस० पी० खत्री

सूर के सौ कूट ५.००
चुन्नीलाल 'शेष'

श्री राधा का क्रम-विकास ८.००
डॉ० शशिभूषण दास गुप्त

डॉ० इकबाल और उनकी शायरी ०.६७
डॉ० हीरालाल चोपड़ा

हिन्दी लिटरेचर (अंग्रेजी) ५.००
डॉ० रामअवध द्विवेदी

संक्षिप्त हिन्दी साहित्य और साहित्यकार ०.६७
सुधाकर पाण्डेय

हिन्दी-साहित्य २.२५
सुधाकर पाण्डेय

हिन्दी साहित्य की रूपरेखा १.५०
कृष्णदेव प्रसाद गौड़

लोकधर्मी नाट्य परंपरा ५.००
डॉ० श्याम परमार

दिग्विजय-भूषण १५.००
डॉ० भगवती प्रसाद सिंह

समस्यामूलक उपन्यासकार प्रेमचन्द ५.००
डॉ० महेन्द्र भटनागर

भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययन १०.००
डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय

हिन्दी के मुसलमान कवियों का प्रेमकाव्य २.५०
गुरुदेव प्रसाद वर्मा

काव्य रूपों के मूल स्रोत और उनका विकास १०.००
डॉ० शकुन्तला दुबे

हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास ६.००
डा० जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन
(सं० डॉ० किशोरीलाल गुप्त)

आधुनिक हिन्दी कविता की स्वच्छन्द धारा ५.००
डॉ० त्रिभुवन सिंह

रत्नाकर और उनका काव्य ५.००
उषा जायसवाल

छायावाद के गौरव चिह्न ६.००
प्रो० 'क्षेम'

बाबू श्यामसुन्दर दास व्यक्तित्व और कृतित्व २.२५
रामनाथ पाण्डेय

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय

पो० बॉक्स नं० ७०, पिशाचमोचन, वाराणसी—१
१६५/१ महात्मा गांधी मार्ग, कलकत्ता—७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की अपूर्व देन

राष्ट्रभाषा की महती उपलब्धि

* मानक हिन्दी कोश *

सम्पादक—पद्मश्री विभूषित श्री रामचन्द्र वर्मा

पाँच भागों में प्रकाशित हो रहा है। दो भाग प्रकाशित हो चुके हैं। तीसरा भाग भी सितम्बर ६४ के अन्त तक प्रकाशित हो जायगा।

प्रत्येक भाग का मूल्य २५ रु०

आकार २२"×३६"/८

पृष्ठ संख्या लगभग ६००

राष्ट्र और राष्ट्रभाषा के प्राणतत्वों द्वारा प्रशंसित

*** मानक हिन्दी कोश ***

एक सर्जनात्मक क्रान्ति है।

प्रकाशक—**हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।**

हमारा उत्कृष्ट एवं संग्रहणीय साहित्यिक प्रकाशन

कथा

१—जहाँदारशाह	(ऐतिहासिक)	वाल्मीकि त्रिपाठी	५.५०
२—विकलांग	(,,)	,,	६.००
३—प्रजाप्रिय प्रजेश	(,,)	,,	४.००
४—सत्ता और संघर्ष	(,,)	,,	५.००
५—उपेक्षिता	(सामाजिक)	,,	४.५०
६—नागमणि	(ऐतिहासिक)	शत्रुघ्नलाल शुक्ल	२.००
७—अञ्चल	(सामाजिक)	सत्यदेवसिंह	६.००
८—निंदिया लागी	(कहानी संग्रह)	भगवतीप्रसाद वाजपेयी	३.५०

समीक्षा

९—आधुनिक हिन्दी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ	डा० जगदीशनारायण त्रिपाठी	३.५०
१०—सन्तमत में साधना का स्वरूप	डा० प्रतापसिंह चौहान	३.५०
११—पन्त का काव्य दर्शन	,,	३.५०
१२—भारतेन्दु काव्यादर्श	कृष्णकिशोर मिश्र	४.००
१३—साहित्य चिन्तन	नरेशचन्द्र चतुर्वेदी	५.५०

नाटक

१४—शरणागत	(ऐतिहासिक एकांकी संग्रह)	वाल्मीकि त्रिपाठी	३.५०

प्रत्यूष प्रकाशन, रामबाग, कानपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रनायक नेहरू की स्मृति में हमारे ३ प्रकाशन

नेहरू चित्र संसार

नेहरू जी के संघर्षमय जीवन की झाँकियाँ अब चित्रों में प्रस्तुत की जा रही हैं। अपने प्रिय नेता को हँसते खेलते और देश की समस्याओं से जूझते हुए इस एलबम में देखिए। बचपन से लेकर शव यात्रा तक की सभी घटनाएँ चित्रों में, जीवनी तथा श्रद्धाजलियों सहित। मूल्य १·००

अमर जवाहरलाल

युग पुरुष नेहरू की अन्तिम क्षणों तक की जीवनी। मूल्य १·००

नेहरू के हास्य विनोद

राजनीति के उबा देने वाले वातावरण में भी नेहरू अपनी विनोदमय प्रकृति की झलकियाँ दिखाने से बाज न आते। उनके हास्य-विनोद के क्षण अब पुस्तक के रूप में। मूल्य १·००

प्राप्ति स्थान—

पंजाबी पुस्तक भण्डार, दरीबा कलाँ, दिल्ली-६

भारत-भर में प्रकाशित

सम्पूर्ण लाइब्रेरी-साहित्य

एक ही स्थान से प्राप्त करने के लिए पधारें अथवा लिखें

स्टार बुक सेण्टर

[मोती महल के पीछे]

२७१५, दरियागंज, दिल्ली-६

फोन नं० २७४८७४

पुस्तक-विक्रेताओं के लिए प्रकाशकीय कमीशन दरें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

113024
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी का ठोस ज्ञान प्राप्त करने के हेतु

आलोचनात्मक मासिकपत्र

साहित्य-सन्देश, आगरा

के लिये ५.०० मनीआर्डर से भेजकर वार्षिक ग्राहक बनें।

इसकी पुरानी कुछ फाइलों का संग्रह कीजिये। जो फाइलें उपलब्ध हैं उनकी विषय-सूची मुफ्त मँगाइये।

●

अपने विद्यालय के परीक्षा पेपर्स, पत्रिका तथा कार्यालय के अन्य सामान हमारे साहित्य-प्रेस, आगरा में छपवाइये।

●

अपने विद्यालय की लाइब्रेरी में जो भी हिन्दी की पुस्तकें क्रय करनी हों वे हमारे भण्डार को निम्न पते पर लिखें—

हिन्दी परीक्षाओं की सभी पुस्तकें भी हमारे यहाँ से मँगायें।

साहित्य-रत्न-भण्डार,

साहित्य-कुंज, आगरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी, अंग्रेजी की पुस्तकें तथा लैटर पेपर, परीक्षा प्रश्नपत्र, विद्यालय पत्रिका, रसीद बुक, कैशमीमो, बिलबुक आदि सभी प्रकार की छपाई का

छोटा-बड़ा काम वहाँ

दीजिए जहाँ

कि—

उचित दर पर शुद्ध और कलात्मक छपाई समय पर होती हो और यह सभी सुविधाएँ आपको मिलेंगी

साहित्य प्रेस आगरा में

परीक्षा प्रश्न-पत्र तथा विद्यालय पत्रिका छपवाने और डिब्बे आदि तैयार कराने का विशेष प्रबन्ध

उचित दरों पर पत्रिकाओं के लिए ब्लाक बनवाने की सुन्दर व्यवस्था

साहित्य-सन्देश आगरा का इस अंक के साथ १६६३–६४ का वर्ष समाप्त है। अतः हम पूरे वर्ष की विषय-सूची छपवा रहे हैं। जो सज्जन अपनी फाइल के लिये विषय-सूची चाहें वह डाक-व्यय के लिये दस पैसे के टिकट [illegible] मुफ्त मँगालें।

—व्यवस्थापक

साहित्य-सन्देश-कार्यालय, आगरा।

[illegible]रनलाल द्वारा साहित्य-प्रेस में मुद्रित तथा साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा से प्रकाशित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

REGD. No. L, 263. License No. 16. Licensed to post without prepayment.

देश की उन्नति टैकनीकल शिक्षा पर ही निर्भर है

इलै० इन्जीनियरिंग बुक	१५.००
इलैक्ट्रिक गाइड	१०.००
इलैक्ट्रिक वायरिंग	६.००
मोटर कार वायरिंग	४.५०
इलैक्ट्रिक बैट्रीज	४.५०
इलैक्ट्रिक लाइटिंग	८.२५
इलैक्ट्रिक सुपरवाइजर पेपर्स	१०.५०
सुपरवाइजर वायरमैन	४.५०
इलै० परीक्षा पेपर्स सम्पूर्ण	१५.००
आयल व गैस इञ्जन	१५.००
आयल इञ्जन गाइड	८.२५
क्रूड आयल इञ्जन गाइड	६.००
वायरलैस रेडियो गाइड	८.२५
रेडियो सर्विसिंग (मैकेनिक)	८.२५
घरेलू वि० रेडियो मास्टर	४.५०
ए० सी० मोटर वाइंडिङ्ग	१२.००
इलैक्ट्रिक मीटर्स	८.२५
इलैक्ट्रिक वायरगेज	१२.००
इलैक्ट्रिक डायग्राम्स	१२.००
टांका लगाने का ज्ञान	४.५०
छोटे डायनेमो इलै० मोटर	४.५०
प्रैक्टी० आर्मेचर वाइंडिंग	८.२५
रफरीजरेटर गाइड	८.२५
वृहत् रेडियोय विज्ञान	१५०.००
ट्रांसफार्मर गाइड	६.००
इलैक्ट्रिक मोटर्स	८.२५
रेलवे ट्रेन लाइटिंग	६.००
इलै० सुपरवाइजरी शिक्षा	६.००
इलैक्ट्रिक वैल्डिंग	६.००
ए० सी० जेनरेटर्स	८.२५
इले० मोटर्स आल्टरनेटर्स	१६.५०
आर्मेचर वाइंडर्स गाइड	१५.००
खराद शिक्षा (टर्नर गइड)	४.५०
वर्कशाप गाइड (फिटर ट्रेनिंग)	४-५०
खराद तथा वर्कशाप ज्ञान	६.००
प्रैक्टीकल घड़ीसाजी	४.५०
साइकिल रिपेयरिंग	२.५०
हारमोनियम रिपेयरिंग	२.५०
सिलाई मशीन रिपेयरिंग	२.५०
ग्रामोफोन रिपेयरिंग	२.५०
भवन-निर्माण-कला	१२.००
रेडियो मास्टर	४.५०
विश्वकर्मा दर्पण	७.५०
सर्वे इंजीनियरिंग बुक	[illegible]

इलैक्ट्रिक गैस वैल्डिंग	१२.००
फाउण्ड्री प्रैक्टिस (ढलाई)	८.२५
इलैक्ट्रोप्लेटिंग	४.५०
वीविंग गाइड	४.५०
हैण्डलूम गाइड	१५.००
प्रैक्टीकल फोटोग्राफी	७.५०
फिटिंग शाप प्रैक्टिस	७.५०
पावरलूम गाइड	५.२५
ट्यूबवैल गाइड	३.७५
लोकास्ट हाउसिंग टेकनीक	५.२५
टिम्बर केल्कुलेटिंग इंगलिश	२.००
जन्त्री पैमाइश चोब (हिन्दी)	१.५०
लोको शेड फिटर गाइड	१५.००
मोटर मैकेनिक टीचर	६.००
मोटर ड्राइविंग टीचर	४.५०
मोटरकार इन्स्ट्रक्टर	१५.००
मोटर साइकिल गाइड	४.५०
खेती और ट्रैक्टर	६.००
जनरल मैकेनिक गाइड	१२.००
आटोमोबाइल इंजीनियरिंग	१२.००
मोटरकार ओवरहालिंग	६.००
प्लम्बिंग और सेनीटेशन	६.००
सर्किट डायग्राम्स आफ रेडियो	३.७५
फर्नीचर बुक	१२.००
फर्नीचर डिजायन बुक	१२.००
वर्कशाप प्रैक्टिस	१२.००
स्टीम बायलर्स और इंजन	८.२५
स्टीम इंजीनियर्स गाइड	१२.००
आइसप्लाण्ट (बर्फ मशीन)	४.५०
सीमेंट की जालियों के डिजायन	६.००
रेडियो कम्यूनिकेशन	६.००
टेक्नीकल डिक्शनरी	४.००
एग्री० इण्डस्ट्रियल पम्पस	८.२५
कारपेण्ट्री मास्टर	६.७५
बिजली मास्टर	४.५०
ट्रांजिस्टर डेटा और सर्किट	१०.५०
टेप रिकार्डर	१०.५०
गैस वैल्डिंग	६.००
ब्लैकस्मिथी (लोहारी का काम)	४.५०
हैंडबुक आफ बिल्डिंग्स कन्स्ट्र०	३४.५०
हैंडबुक स्टीम इंजीनियर	२०.२५
मोटरकार इंजीनियर	८.२५
मोटरकार इंजन (पावर यू०)	८.२५
मोटरकार सर्विसिंग	८.२५

कम्पलीट मोटरकार ट्रे० मै०	२४.७५
कारपेण्ट्री मैनुअल	४.५[illegible]
मोटर प्रश्नोत्तर	६.[illegible]
स्कूटर और आटो साइ० गाइड	४.५[illegible]
इलैक्ट्रीसिटी	६.०[illegible]
मशीन शाप प्रैक्टिस	१५.[illegible]
आयरन फर्नीचर	१२.०[illegible]
मारबल चिप्स के डिजायन	[illegible].०[illegible]
मिस्त्री डिजायन बुक	२५.५[illegible]
फाउण्ड्री वर्क	४.५०
ट्रांजिस्टर रेडियो	४.५०
आधुनिक टिपीकल मोटर गाइड	४.५०
नक्काशी आर्ट-शिक्षा	६.००
बढ़ई का काम	६.०[illegible]
राजगीरी शिक्षा	६.०[illegible]
ट्रांजिस्टर गाइड	४.५[illegible]
सर्विसिंग ट्रांजिस्टर रेडियो	७.५[illegible]
रेडियो पथ-प्रदर्शक	५.५[illegible]
भारतीय बिजली नियम	२.५[illegible]
बेसिक रेडियो शिक्षक	[illegible]
जंत्री पैमा० चोब (गोल लकड़ी)	[illegible]
जंत्री पैमा० चोब (चिरी लकड़ी)	[illegible]
ट्रांजिस्टर रिसीवर्स	[illegible]
लेथ वर्क	६.[illegible]
इलै० लाइनमैन वायरमैन गा०	२५.[illegible]
आल्टरनेटिंग करैंट	२५.[illegible]
मिलिंग मशीन	८.[illegible]
पं ट्रीज गाइड	[illegible]
विद्युत् इंजीनियरिंग	१६.[illegible]
वैंच वर्क एण्ड डाईफिटर	८.[illegible]
माडर्न ब्लैकस्मिथी मैनुअल	८.[illegible]
खराद आपरेटर गाइड	८.[illegible]
हैंडबुक आफ इण्ड. एण्ड स्प्रे पेंटिंग	८.[illegible]
मशीनिस्ट	२५
सिनेमा मशीन आपरेटर	[illegible]
मशीन वुड वर्किङ्ग	[illegible]
एयर कण्डीशनिंग गाइड	१५.[illegible]
फिटर मैकेनिक	[illegible]
साबुन इण्डस्ट्री	[illegible]
कास्मेटिक इण्डस्ट्री	[illegible]
शीट मैटल वर्क	[illegible]
लाण्ड्री इण्डस्ट्री	१०.[illegible]
मशीन शाप ट्रेनिंग	१२.[illegible]
स्माल स्केल इण्डस्ट्रीज	[illegible]

पुस्तकालयों व पुस्तक-विक्रेताओं को पर्याप्त कमीशन !

देहाती पुस्तक भण्डार (S. S. A.)

चावड़ी बाजार, दिल्ली

(फोन २६१०३०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1[illegible]-9-2009

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri